टूटी हुई जमीन



विक्रम प्रकाशन
ई-5/13, कृष्णनगर, दिल्ली-110051

टूटी हुई जमीन

हरदर्शन सहगल

मूल्य 200.00 रुपये

प्रथम संस्करण : 1996

प्रकाशक : विश्व प्रकाशन
E 5/13 कृष्णनगर, दिल्ली 110051

मुद्रक : कमल प्रिंटर्स
9/5866 गांधीनगर दिल्ली 110 031

TOOTI HUI JA[illegible]
by [illegible] Price Rs. 200.00

श्रीमती मालती शर्मा
के लिए

क्रम

पहला भाग

बेदखल

धूप असाधारण रूप से तेज हो उठी थी। वे सब भारी सामान अपने अपने सिर पर लादे रेलवे स्टेशन से बाहर आ गये थे। एक जगह सामान को नीचे उतारकर, थोडा सुस्ताने लगे थे। उनके बदन पसीने से चिपचिपा रहे थे।

पजाब का इलाका था और सितम्बर के आखिरी दिन। शाम को इतनी धूप और गर्मी, इस मौसम मे, नही होनी चाहिए थी। मगर, जो न हो जाये इन दिनो, वही थोडा। मौसम का क्या दोष। पूरे देश का वातावरण और भाग्य चक्कर ही उल्टा हो गया था। जमना ने ठण्डी सांस खीची। साथ ही एक महत्वपूर्ण दृष्टि अपने बच्चो पर डाली।

दो-तीन तांगे वाले उनसे बार बार पूछ रहे थे—कहाँ चलना है? कौन से मुहल्ले कौन सी गली जाना है। ठोड (ठेठ) घर तक पहुँचा देंगे। तभी पसे देना। वालो तो मही बादशाहो।

मगर वे क्या बोलते। वे किसी मुहल्ले गली का नाम नही जानते थे। सच तो यह है कि जिस स्टेशन पर वे उतरे थे, उसका भी नाम उन्हें पता नही था। न ही उन्होने इसकी खास जरूरत ही समझी थी। यह शहर उनके लिए एकदम नावाकिफ और नया था। वे इस स्टेशन पर केवल इसलिए उतरे थे, क्योकि गाडी के तमाम मुसाफिर यही उतर गये थे। गाडी को आगे नहीं जाना था। सबसे अजीब बात यही थी कि उन्हे मालूम ही नही था कि उन्हें जाना कहाँ है। गाडी मे बठते वक्त वे इतना भर चाहते थे कि वे किसी तरह हिन्दुस्तान पहुँच जायँ। और अब वे इतना जान चुके थे कि हिन्दुस्तान आ गया है। असली हिन्दुस्तान। जो उनका हिन्दुस्तान था वह अब हिन्दुस्तान नहीं था। बल्कि अब वह एक विदेशी मुल्क का जामा पहनकर उन्ही पर जुल्मो सितम ढाने लगा था। इसीलिए वे वहाँ से भाग खडे हुए थे। और खुशकिस्मती से 'हिन्दुस्तान' पहुँच गये थे। इस वक्त स्टेशना, शहरो के नामो से अपरिचित प्राय। और अभी उनके महत्व की सोच उनके मन म नही उमगी थी।

गाडी से उतरते ही ज्यादातर लोग प्लेटफाम के बीचोबीच या फिर टी स्टालों वगरह के आसपास पसर गये थे। परिवार के लोग, जिनके पास चादर या दरी थी बिछाकर, उस पर सिमट गये थे।

इस परिवार के सदस्यो के साथ दिक्कत यह हुई कि गाडी से उतरने के बाद

जसे ही वे प्लेटफार्म के एक कोने में, अपने बैठने का बन्दोबस्त करने लगे, सामने, बीच प्लेटफार्म, एक फूले हुए पेट वाली, लाश दिख गयी थी।

—बेचारा ! जमना के मुह से आह निकल गयी।

—जरूर कोई मुसलमान है। मनोज कुमार ने अपने पतले होंठों को आपस में जकड़ते हुए, पूरे विश्वास के साथ कहा।

—क्या पता किस माई का लाल है। जमना ने फिर साँस छोड़ी।

—भाभी (माँ) अब तो मुसलमानों की लाशें देखने का वक्त आ गया है। गाड़ी में एक भाई कह रहा था। इधर हिंदुस्तान में हर जगह मुसलमानों की लाशें बिखरी पड़ी हैं, जैसे पाकिस्तान में हिंदुओं की। कुंदी ने अपने ज्ञान की डींग मारी।

उधर भी गन्द था और इधर भी वही हाल। कहते कहते अलका को उबकाई आने लगी।

कायदे से तो ठीक ही कुंदी का गणित बीच में दब गया। भाभी उसे डाँट रही थी।

—तू पिद्दी-सा बकवास भाभी का स्वर भी बीच में ठहर गया।

अलका ने आ आ करते हुए ढेर सारी उल्टी कर दी। प्लेटफार्म और गन्दा हो गया। सबकी नाक सड़ने लगी।

—मनोज काके ! बाहर चलें। इस नरक में नहीं बैठा जाता। जमना ने बड़े लड़के को सलाह दी, नहीं तो इस बेचारी का क्या हाल हो जाये कोख में बच्चे को भी खतरा है।

—ठीक है, भ्रा जी (भाई साहब) सबसे छोटा भाई हरमिलाप, समर्थन में जोर से बोल पड़ा, हमसे ऐसी गन्दगी में नहीं बैठा जाता।

—ओए तू अपनी कबूतर सी चोंच बन्द रख। आँखें हैं तो खोलकर देख हजारों लोग यहीं बठे हैं। कुंदी, हरिया से उलझने लगा।

—अलग रहो। नहीं तो दोनों को पीटूंगा, मनोज ने हथेली उठायी, चलो सँभालो अपने अपने हिस्से का सामान।

सब वे सब अपने-अपने सिर पर, अपनी-अपनी सामर्थ्यानुसार सामान लादकर स्टेशन से बाहर चले आये थे। हाँफ्ते-हाँफ्ते। अपना सामान उतारकर एक तरफ खड़े हो गये थे। ताँगे वालों से घिरे हुए, अपनी ना मालूम मंजिल के अहसास से पीड़ित।

एक ताँगे वाले ने फिर से पूछा तो मनोज ने कह दिया—अभी नहीं। जब चलना होगा, तुम्हें बुला लेंगे।

मनोज को लगा एंव वो वे सब तमाशा बनते जा रहे हैं। इसलिए उसने अपना सामान वापस उठा लिया। उसे ऐसा करते देख सबने अपने अपने हिस्से का

सामान सँभाला। तब वे ताँगा स्टैंड से जरा आगे बढकर बायीं तरफ आ गये थे। सामने एक घनी झाडी थी और साथ ही एक पेड। अलका ने, जो अपेक्षाकृत कम वजन उठाये हुए थी, सामान को रखकर, जल्दी से पेड के नीचे एक चादर बिछा दी। फिर सबने एक-दूसरे की मदद से चादर के किनारे पर सामान रख दिया और चादर या बक्सा पर बैठ गये।

सबका शरीर थका हुआ और पसीने से तर था। पेड के नीचे से गुजरती ठण्डी हवा से उन्हें राहत मिली। तब जमना ने सब बच्चो से कुछ खा लेने को कहा।

—भाभी (माँ) मुझे तो बिलकुल भूख नहीं है। मनोज ने उत्तर दिया और चादर को एक हाथ से थपथपाकर सलवटें हटाने लगा।

—ओह मेरे लाल की भूख ही मारी गयी। इस छोटी सी उम्र मे कितना बडा बोझ आ पडा है तुझ पर। कहते कहते जमना की आँखें गीली हो आयी।

—तुम तो लायलपुर से यही कहती आ रही हो, कैसा मुंह निकल आया है, बताओ तो भाभी। क्या हो गया मेरे मुंह को, मनोज ने अपना मनोबल दर्शाने के लिए अपने लम्बे कद को जरा ताना और घुंघराले बालो को अगुलियाँ फिरायी। ऐसा करते ही उसके गौरवर्ण मुख पर अनायास मुस्कान खेल गयी।

चारो ओर दृष्टि फैलाते हुए जमना बोली—हे भगवान, मेरे लाडले इसी तरह खिले खिले रहें।

—भाभी! तुम्हारे आशीर्वाद से एक बीहड और मुश्किल रास्ता तो हम पार कर आये! अब आगे के सारे रास्ते भी आसान हो जायेंगे। यह अलका थी जिसके चेहरे पर रौनक लौटने लगी थी।

काफी समय बाद बहन को खुश देखकर मनोज को भी बडी खुशी हुई। उसने अलका की चोटी पकडते हुए कहा—मोई यू क्यो नही कहती, भाभी एक जन्म तूने दिया है तो दूसरा मनोज भैया ने। यह मैं ही हूँ मनोज कुमार जो तुझे उस दहकती हुई आग से निकालकर ले आया हूँ। मैं यह सिर्फ शान मारने के लिए नहीं कह रहा हूँ। समझी। मनोज के चेहरे पर शरारत और गर्व के मिले-जुले भाव फैल गये।

—उई ई माँ—बाल खिंचने से अलका के मुँह से निकला। उसके चौडे गोरे माथे पर पसीने की बूँदें स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगी थी। ओए अब, तू कौन-सा बदला ले रहा है।

मनोज बडा भाई है। अलका उससे तीन एक साल छोटी। दोनो बहन भाई लम्बे, गोरे, देखने मे सुन्दर लगते हैं। कुन्दन कृष्ण और हरमिलाप अपेक्षाकृत बडे भाई-बहन से कुछ साँवले लगते हैं और ठिगने भी।

माँ ने इस वक्त सारा प्यार मनोज पर उँडेलते हुए कहा—कुछ भी हो। मेरा लाल कहता तो सच ही है। तुम्हारे बाऊजी के अलग पड जाने से सारा बोझ इसके

नाजुक कन्धों पर आ पड़ा है।

बाऊजी का नाम आते ही कुन्दन और हरमिलाप के चेहरे रुआँसे हो गये। बाऊजी का ओजपूर्ण प्यार उँडेलता चेहरा उनके सामने साकार हो उठा। हे भगवान वे उन्हें कब मिलेंगे। क्या पता कभी मिलेंगे भी या नहीं। कुन्दन दूसरी ओर मुँह फेरकर सिसकने लगा। माँ ने उसका सिर गोदी में रख लिया और उसे चुप कराने लगी।

रह-रहकर गम के बादल घेर लेते हैं। बाऊजी की चिन्ता के साथ जुड़ जाती है, मनोज की बड़ी बहन जी सुमित्रा, बड़े जीजाजी, छोटे जीजाजी, भांजे, दूसरे सभी निकट सम्बन्धियों, दोस्तों की दुश्चिन्ताएँ। न जाने वे सब कैसे होंगे। इस वक्त कहाँ होंगे। न जाने कब आयेंगे हिन्दुस्तान। आ भी पायेंगे या नहीं।

इस अन्दर तक हिलाकर रख देने वाली सोच ने सबको एकदम खामोश कर दिया, कुछ देर के लिए।



गर्मियाँ शुरू होने वाली हैं। कुन्दी के मन मानस में हर साल यह गर्मियाँ स्फूर्ति भर देती हैं। कुन्दी बेहद खुश है। बाल सुलभ कल्पनाओं में बहा रहा है। इम्तिहान होंगे। फिर अगली क्लास में। सुन्दर चमकीली रंग बिरंगी तस्वीरों वाली नयी नयी किताबें मिलेंगी। पाँचवीं से छठी क्लास में जायेंगे। पन्द्रह बीस रोज की पढ़ायी। फिर दो महीने की छुटि्टयाँ। हर तरह के नयेपन का आलम उसकी नस-नस में रच-बस जाता है, हर साल। एक तरह का नशा है, जिसमें वह झूमता है। डुबकियाँ लगाता है और स्वयं अपनी दृष्टि में अपने को नया-नया और तरोताजा पाता है।

मगर इस वर्ष कुन्दी के साथ एक बात अच्छी नहीं हुई। गर्मियाँ शुरू होने से पहले ही वह अपने प्यारे बाऊजी से बिछुड़ गया था। उनका तबादला मुलतान हो गया था। बीच सत्र में वे परिवार को साथ ले जा नहीं सकते थे। कुन्दी रोने लगा था। बाऊजी ने उसे सीने से चिपटा, पीठ पर हाथ फेरते हुए समझाया था—पगले इसी में तुम्हारा फायदा है। आदमी के लिए सबसे बड़ी नियामत पढ़ाई होती है। इसी के लिए तुम सबका यहाँ रुकना एकदम जरूरी है।

वह बाऊजी के उदास चेहरे को भाँप गया था और सिर्फ उन्हें खुश करने के लिए आँसुओं के बीच मुस्कराया था।

और कोई चारा नहीं था। सो, जमना, कुन्दन और हरमिलाप यहीं जिला शेखूपुरा रह गये थे।

कुन्दन बड़ी बेताबी के साथ, गर्मियों, परीक्षाओं और छुट्टियों की प्रतीक्षा कर

रहा था। छुट्टियाँ होते ही वह बाऊजी से मिलेगा। फिर हर साल की तरह अपने गाँव जायेगा। वैसे गाँव उसे बहुत अच्छा नही लगता था। गाँव के पिछडेपन से उसे मन ही मन अव्यक्त रूप से वितृष्णा-सी होती थी। हाँ गाँव मे उसे अपने मामा जी, चाचा जी बहुत अच्छे लगते थे। मामाजी उसे मोठ चावल खिलाते थे। चाचा जी उसे अपने हाथ से बहुत बडी-बडी पतगें बनाकर देते थे। चाचा-भतीजा दोनो मिलकर पतगें उडाते। सवेरे से शाम तक वह चाचा जी की पीठ पर सवार रहता। उनसे नयी नयी कसरतें सीखता। इस तरह वह बहुत जल्दी हाथो के बल चलना सीख गया था। इसके अलावा गाँव मे कुछ अच्छे लडके भी थे जो आयु मे तो उससे बडे थे किन्तु कुन्दी को 'शहरी' होने के कारण अधिक महत्व देते थे। उससे शहर की बातें सुनते। अखबारो मे पढी हुई या दूसरी बातो को लेकर कुन्दी से सवाल करते। इन वाद विवादो पर टिप्पणी करते समय कुन्दी को अपने निजी विचार प्रकट करने का अवसर मिलता। वे सब कुन्दी की अकल की दाद देते। इससे उसे बहुत अच्छा लगता।

वाद-विवाद, खेल-कूद, मनोरजन के अतिरिक्त कुन्दी को पढना भी बहुत अच्छा लगता। कुन्दी सोचता है, ओह नये सत्र की पढाई शुरू हो गयी होती। भले ही पन्द्रह-बीस रोज का स्कूल लगा होता, मगर मास्टर साहब ने लडको को 'घर का काम' इतना अधिक दे दिया होता, जो उन्हे बोझा लगने लगता। लेकिन फिर भी क्या। खूब मजे। गर्मियो के दिन तो गर्मियों के दिन ही होते हैं। लम्बे-लम्बे। बडे बडे। मन-मर्जी के दिन।

लेकिन, आह अबकी बार गर्मियाँ कुछ अलग तरह से शुरू हुई थी। गर्मियाँ शुरू होने से पहले ही उसके बाऊजी मुलतान चले गये थे और अन्त मे हुआ यह कि जब उसने पाँचवी कक्षा पास कर ली। छठी कक्षा मे आ गया। और छुट्टियाँ भी हो गयी। तब भी वह शेखूपुरा नही छोड सकता था।

बहन अलका की शादी सात माह पहले हुई थी। वह जीजाजी के पास, क्वेटा (बलोचिस्तान) म थी। उसकी चिट्ठियाँ लगातार आ रही थी कि वह उनके पास जल्दी किला शेखूपुरा आ रही है। उसे भी गाँव चलना है। उसका इन्तजार करें। अलका की बस चिट्ठियाँ ही आ रही थीं वह स्वय नही। उसके इन्तजार मे वे शेखूपुरा छोड नही सकते थे। उसे रह रहकर अलका पर गुस्सा आता।

सुबह-सवेरे कुन्दी बस्ता लेकर अपने दोस्त मन्जूर के घर चला जाता। दोपहर का घर लौटता। जल्दी जल्दी खाना निगलता। गिल्ली डण्डा उठाता। जेब मे कचे, लमन बोतलो की थालियाँ (ढक्कन) भर लेता। और घर से बाहर। माँ चिल्लाती रह जाती—अरे इतनी करारी गर्मी मे, थोडा तो आराम कर लिया कर। मगर कौन परवाह करता है।

इतनी मस्ती बेफिक्री लापरवाही के बावजूद कुन्दी बार-बार सोचता, इस बार की गर्मियाँ उसके साथ बड़ी बेरुखी के साथ पेश आयी हैं। अपशकुन या नामुरादी ने उसका पीछा करना शुरू कर दिया है। हर कदम पर, हर बात में एक ही चीज उसके सम्मुख अमूर्त रूप में उभरनी आरम्भ हो गयी थी। फसाद। इस लफ्ज से पहली बार उसका साबका पड़ा था। एक अव्यक्त सा आतंक, उसके शरीर में ठहर ठहरकर सिहरन पैदा करता रहता।

फसाद की खबरें रेडियो और अखबारों से आने लगी थीं। इसी प्रकार कई दूसरे शहरों से आने वाले लोग भी अपने साथ फसाद की तफसील ले आते थे कि अब बस पाकिस्तान बनने ही वाला है।

नौ-दस महीने पहले उसने आर्यसमाज मन्दिर में भगवा वस्त्र पहने किसी सन्त जी का प्रवचन सुना था। वहाँ सभा के अन्त में बड़े ज़ोर शोर से नारे भी लगे थे—आजाद हिन्दुस्तान, कभी बन सकता पाकिस्तान नहीं। कुन्दी ने भी बड़े जोश और भावुक स्वर में गला फाड़ फाड़कर यही नारा दोहराया था— 'आजाद हिन्दुस्तान, कभी बन सकता पाकिस्तान नहीं।" इतने जोर से कि सभी का ध्यान उसी की ओर आकृष्ट हो गया था। कुछ लोग हँसने भी लगे थे और कुछ लोग उस बच्चे की पीठ थपथपाकर शाबाशी भी दे रहे थे।

इससे कुन्दी को विश्वास हो गया था कि यह धरती सालम-की-सालम (साबत) रहेगी। टूटेगी नहीं। पाकिस्तान बनने का सवाल ही पैदा नहीं होता। इतने बड़े आर्यसमाजी सन्त जी यही तो कह गये थे।

लेकिन उसके ठीक पन्द्रह दिन बाद, मुस्लिम लीग के रजाकार हरे कपड़े पहने गलियों में जुलूस की शक्ल में नजर आये थे। वे भी बड़े जोश में थे। हाथों को आसमान की तरफ लहराते हुए वे भी गला फाड़ फाड़कर नारे लगा रहे थे—कौम के हर मुसलमान, ले के रहेंगे पाकिस्तान।

फिर एक ऊँचे कद के आदमी ने जो तुर्की टोपी पहने हुए था, बड़े जोशो-खरोश से लम्बी तकरीर की थी—हम कट जायेंगे। मर जायेंगे। मगर पाकिस्तान लेकर ही रहेंगे। हिन्दुओं को यहाँ से जाना होगा। नहीं तो हम उनको मार डालेंगे। उस शख्स के गले में अजीब किस्म की लोच थी। उसके पीछे पीछे सभी यही शब्द दोहरा रहे थे। नारे लगा रहे थे—"कायदे आजम का है फरमान, ले के रहेंगे पाकिस्तान।' कायदे आजम मुहम्मद अली जिन्ना—जिन्दाबाद। पाकिस्तान जिन्दाबाद।

ऐसी बातें और नारे सुन-सुनकर कुन्दी का मनोबल डोल गया था। उसे यह लोग बहुत मजबूत और खूँखार लगे थे। इनके सामने वह आर्यसमाजी सन्त कुछ भी नहीं थे।

कुन्दी को लगा था, इस तरह तो पाकिस्तान बन जायेगा। मगर फसाद और

दगा। इससे क्या मुराद है। हिन्दुओ ने मुसलमानो का क्या बिगाडा है। काहे का झगडा। पाकिस्तान माँगते हैं तो एक अलग बात हुई। मगर यह हिन्दुओ को मारेंगे क्यो ? वह हिन्दुओ को मारेंगे तो फिर हिन्दू भी मुसलमानो पर हाथ उठायेंगे। यह तो कोई बात नही हुई। वह तो किसी मुसलमान को नहीं मार सकता। कितने अच्छे-अच्छे दोस्त हैं उसके। शकील, मजीन, शौकत, मन्जूर। यह सब मुसलमान ही तो हैं। एक बार वह सघ (राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ) जा रहा था तो मन्जूर ने पूछा था—वहाँ क्या-क्या होता है तो कुन्दी ने उसे बताया था—वहाँ खूब मजे होते हैं। झण्डा लहराते हैं। परेड होती है। देशभक्ति गान होते हैं, तो मन्जूर ने पूछा था—मैं भी चलूँ ? मुझे भी साथ ले चलना।

कुन्दी उसे बडी शान के साथ वहाँ ले गया। मन्जूर को देखकर सघ चालक जी को कुछ शक हुआ। वे कुन्दी को एक ओर ले गये और पूछा—यह नया लडका कौन है ?

कुन्दी ने उसी शान से जवाब दिया—यह मन्जूर है। मेरा पक्का दोस्त।

उन्होने धीरे-से कहा—तो यह मुसलमान है। इसे मना कर देना यह कल से यहाँ नही आये।

यह तो कोई वजह न हुई, कुन्दी ने सोचा। दूसरे रोज से उसने भी सघ मे जाना छोड दिया था।

इतने प्यारे दोस्तो को क्या वह मार सकता है ? क्या वह उसे मार सकते हैं ? कुछ समझ मे नहीं आता था कुन्दी के।

समय गुजरता चला जा रहा था। और गर्मियाँ आ गयी थी। छुट्टियाँ बीत गयी थी फिर भी माँ उसे स्कूल नही जाने देती थी। अब भी वे अलका की प्रतीक्षा कर रहे थे। एक दिन यू ही खेलते खेलते शकील के घर चला गया था। वहाँ ड्योढी मे एक छोटी सी चारपाई पर बठे उसके दादा जी हुक्का 'गुड-गुड' कर रहे थे। उसे यह 'गुड गुड' की आवाज बहुत भाती थी। वह अक्सर उनके पास जाकर बठ जाया करता था। ड्योढी मे आँगन की तरफ जो हवा बहती थी, उससे उनकी लम्बी चोंच वाली दाढी लहराने लगती थी। यह दृश्य भी कुन्दी को खासा आकर्षित करता। सबसे बडी बात दादा जी उसे बहुत लाड करते थे। उससे मुहल्ल ओर स्कूल के बारे मे कई प्रश्न पूछते। आज कुन्दी ने ही उनसे कुछ प्रश्न पूछ डाले, जो दगा फसाद से सम्बन्धित थे। प्रश्न सुनकर दादा जी ने उसे अपने से और सटा लिया। अपनी धँसी हुई आँखो पर अँगुलियाँ फेरते हुए भर्राई हुई सी आवाज मे कह रहे थे—अरे तू इतना छोटा है। यह सब बातें सोचता रहता है। तेरी समझ और बहस भी कमाल की है लेकिन हमारे इतने बडे-बडे लीडरो की समझ को क्या हो गया है। क्या ले लेंगे, पाकिस्तान लेकर। क्या कर लेंगे पाकिस्तान पाकर। चलो हटो ले लो पाकिस्तान। तोड दो

जमीन को। तुम्हारी हो सही। मगर यह फसाद। दंगे। आखिर क्या तमाशा है? मार-काट की तैयारी। किसी का घर और चन क्यों उजाड़ते हो। जो जहाँ है उसे वहीं आराम से रहने दो। सदियों के प्यार और रिश्ता में दरार क्यों डालते हो।

कुछ देर तक दोनों एकदम खामोश बैठे रहे थे। फिर कोई कुन्दी को बुलाने आ गया था—चलो तुम्हारी माँ बुला रही है।

कुन्दी घर पहुँचा तो भाभी (माँ) ने हल्की पिटाई कर दी। पिटाई की तो कोई परवाह नहीं लेकिन भाभी के शब्द जस उसे घायल किये जा रहे थे—लाख दफा मना किया कि मुसलमानों के घर मत जाया कर। क्या लगते हैं वे तेरे। वह वक्त नहीं रहा। खबरदार जो फिर मैंने तुझे वहाँ देखा। अब वह पहले वाली बात नहीं रही।

कुन्दी हैरान परेशान। एक कोने में जाकर बैठा रहा। उसे बाऊजी की बहुत याद आयी। कुछ देर बाद भाभी आयी। उसकी उदासी समझ गयी। बोली—उठ। क्या शक्ल बना रखी है। मुँह हाथ धो। खाना डाल रखा है। खा ले। कुन्दी चुपचाप उठा, खाना खा लिया। किसी से कुछ नहीं कहा। गिल्ली डण्डा खेलने भी नहीं गया।

यह पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस का दिन था, या चौदह अगस्त का। अंधेरा घिरने लगा था। दिन भर की तपिश के बाद ठण्डी ठण्डी हवा के झोंके आने लगे थे। भाभी ने कुन्दी से कहा—करेले की सूखी सब्जी बनी है। नेकी राम हलवाई की दुकान से थोड़ा दही ले आओ तो अच्छा रहेगा। कुन्दी ने भाभी से पैसे लिए। एक गिलास उठाया और नेकी राम की दुकान पर पहुँचा। दुकान बन्द थी। मुहल्ले की एक-दो और दुकानें भी बन्द थीं। कुन्दी बाजार की तरफ निकल गया। एक हलवाई की दुकान पर उसने बहुत भीड़ देखी। छोटी सी दुकान, जो तीन तरफ से खुली थी लोगों ने उसे हर तरफ से घेर रखा था। कुन्दी घबरा गया। सोचा, दंगा फसाद? क्या लौट जाये। पर यहाँ तो कोई भी आदमी बोल तक नहीं रहा था। लगभग हिल डुल भी नहीं रहा था। कुन्दी ने हिम्मत की। आगे बढ़ा। एक आदमी से धीरे से पूछा—क्या है? वह आदमी मुँह पर अंगुली रखते हुए फुसफुसाया—चुप। नेहरू जी की तकरीर आने वाली है। इसके पास रेडियो है।

तभी रेडियो की आवाज तेज हुई। कुन्दी ने अनुभव किया। नेहरू जी का गला भर्राया हुआ है। उनकी आवाज में जैसे खुशी और अफसोस घुल मिल गये हैं। उस भीड़ में पीछे होने की वजह से, पूरे अलफाज कुन्दी की पकड़ से बाहर थे।

भाषण खत्म होने पर एकाएक खुसुरफुसुर, शोर और फिर बहस मुबाहसा शुरू हो गया। लोग-बाग इस भाषण की चर्चा कर रहे थे। इस भाषण के आधार

पर जैसे दो नये देशों के भविष्य का कोई जायज हल निकाल लेना चाहते थे।

कुन्दी ने जैसे-तैसे दही लिया। फिर भागता हुआ घर की तरफ बढ़ा। देर हो गयी थी। भाभी गुस्से होगी।

परन्तु घर पहुँचते ही कुन्दी ने भाभी को गुस्सा करने का मौका ही नही दिया। बड़े जोश से ऊँचे स्वर मे बोला—भाभी भाभी एक बात बताऊँ ?

जमना ने सिर उठाकर जिज्ञासा से कुन्दी की तरफ देखा—इस वक्त तू कौन-सी खबर लेकर आ रहा है। तेरे बाऊजी का या जीजाजी का कोई सन्देशा आया है क्या ? सच, मन मे हर वक्त बड़ी फिक्र बनी रहती है।

—नही भाभी ! मैं अपने कानो से नेहरू जवाहरलाल नेहरू की आवाज सुनकर आ रहा हूँ। वे रेडियो मे बोल रहे थे। अपने मुहल्ले मे तो किसी के घर रेडियो है नही। छोटू हलवाई की दुकान पर रेडियो है।

छोड़, अब सारी फालतू की बाते हो गयी है। जमना ने द्रवित वाणी मे कहा, अब किसी के पास कहने को रह ही क्या गया है। फिजूल लीपा पोती से क्या हासिल। पाकिस्तान बनवाना चाहते थे। बन गया पाकिस्तान। ले लो।

कुन्दी ने अपना जोश फिर भी ठण्डा नही होने दिया। वह नहीं चाहता था कि उसकी महत्वपूर्ण बातो को कोई कम करके आँके। बोला—नही भाभी नही। तू सुन तो। नेहरू जी ओह जवाहरलाल नेहरू ने बड़ी खुशी जाहिर की है। आज के दिन को तारीख का खास दिन बताया है। लोगो को मुबारकबाद दी है कि आखिर कार हमारी आजादी की जग कामयाब हुइ है। अग्रेज जा रहे ह। हम इस पर गव है। और भी हिन्दी के लफ्ज बोल रहे थे कि अहिंसा से यह आजादी हासिल हुई है। भाभी, यह अहिंसा क्या होती है ?

जमना ने थोड़ा झल्लाकर कहा—मुझे नही पता। सिर पर झगड़े मँडरा रहे ह। और तू है कि बात को फालतू खीचे चला जा रहा है।

—हाँ भाभी हाँ, जवाहरलाल जी ने यह भी कहा था कि मैं सभी लोगो स अपील करता हूँ कि आपस मे झगड़े नही। शान्ति से रहे। तो क्या अब भी पाकिस्तान हिन्दुस्तान बनने के बाद भी लोग आपस म लडत झगडत रहेगे।

जमना ऐसी लम्बी और विचलित करने वाली बातचीत से आजिज आ गयी थी। बोली—अब चुप हो जा। मुझे नही पता। बस इतना समझ लो जिनको लडे कटे बिना रोटी हजम नही होती, व झगडन के लिए कोई-न-कोई वजह तलाश करते रहते है।

कुन्दी चुप हो गया। अपनी छोटी सी बुद्धि पर जोर देता रहा। थोड़ी देर बाद फिर पूछ बैठा—पहले तो आजादी के लिए लड़ते थे सब। फिर मुस्लिम लीग वाले पाकिस्तान के लिए लड़ते थे। अब जब यह सब उन्हे मिल गया तो फिर किस बात का झगडा।

—यह लोग हम हमारे मुल्क से खदेड देंगे। इस वाक्य के साथ जमना के मुँह से आह निकल गयी और एक हल्की-सी सिसकी भी।

छोटा भाई हरमिलाप जो अंधेरा हो जाने के बावजूद धीमी लैम्प की रोशनी में आगन के बीचो-बीच गेंद टपकाता फिर रहा था और कभी-कभी, कान लगाकर भाभी और कुन्दी की बातें सुन लेता था, पहली बार जोर जोर से हँसता हुआ कुन्दी की ओर बढ़ा—ओए बेवकूफ, गधे। तेरी यादाश्त कमजोर है। बाऊजी कहते थे। चाहे मुल्क का कोई सा भी हिस्सा पाकिस्तान बने। जमीन तो नहीं बदल जायेगी। हमारा मकान तो वही का वही खड़ा रहेगा। हम तो वहीं रहेंगे जहाँ हमारा घर है। जायदाद है। मकान को क्या पहिये लगे हैं। जरा खिसकाकर तो दिखा।

इस पर जमना को कहना पड़ा—बच्चो! क्यों अपना दिमाग खराब करते हो—यह तो तब की बात है, जब सरकार ने नौकरी वालों से पूछा था कि वह कहां पर रहेंगे। हिन्दुस्तान में या पाकिस्तान में? तुम्हारे बाऊजी ने तब लिखकर दे दिया था कि हमें अपने पुश्तैनी मकान छोड़कर कहीं दूसरी जगह नहीं जाना है। भले ही वह धरती का हिस्सा पाकिस्तान में क्यों न आये। अब हालात बदल चुके हैं। हर कोई एक दूसरे की जान का गाहक बना है। यह पालिटिक (पालिटिक्स) है। तुम नहीं समझोगे।

दोनों भाइयों ने भाभी की बात की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया। कुन्दी को तो छोटे भाई पर जवाबी हमला बोलना था—ओए! उल्लुओं की क्लास का मानीटर। बड़ा आया, जमीन-जायदाद वाला। चला जा गाँव और वहाँ पर मकान को पकड़कर बैठा रह। अँधेरे में बाजार से दही तो ला नहीं सकता। तू कैसा उल्लू है। जरा रात को निकलाकर। यह पालिटिक्स है। पालिटिक।

—आ जा, तुझे बताता हूँ बच्चू। बड़ा आया पालिटिक वाला।

हरिया आगे बढ़ा। दोनों भाइयों में हाथा पाई होने लगी।

बड़ी मुश्किल से जमना ने दोनों को अलग किया—कोई मरे या जिये सुदघू घोल पतासे पिये।

फिर उन्हें किसी तरह खाना खिलाकर सुला दिया। खुद पता नहीं, कब तक जागती रही।

एक सुबह की बात है। कुन्दी आगन में सोया था। उसे लगा, अनायास ही उसकी आँख खुली है। घर के सामने गली में एक ताँगा खड़ा है। घोड़ा हिनहिना रहा है। घुंघरू बज रहे हैं। हरिया के पैर जमीन से उछल उछलकर नृत्य की ध्वनि पैदा कर रहे हैं। साथ ही वह शोर मचा रहा है—भैनजी आ गयी, अलका भैनजी आ गयी।

दरअसल इन्ही कारणो से ही कुन्दी की आँख खुली थी।

जमना और कुन्दी झट गली मे आ गये। जमना ने अलका को गले लगाया। वे ताँगे से सामान उतारकर अन्दर ले गये।

भाभी (माँ) ने पूछा—क्यो अकेली ही आयी।

अलका ने सिर पर चुन्नी ठीक करते हुए उत्तर दिया—हाँ। इनको तो छुट्टी मिली नही। ऐसे हालात मे मिल्ट्री वालो को छुट्टी कौन देता है। एक और फैमिली इधर आ रही थी सो इन्होन उनके साथ भेज दिया।

—तो पगली लडकी भाभी ने लाड से कहा—चिट्ठी तो डाल दी होती।

—क्या इनका टेलिग्राम नही मिला ? अलका ने हैरानी से पूछा।

—मिला होता तो क्या कोई स्टेशन पर भी न आता। टेलिग्राम मिलता तो सुबह के इन्तजार मे कुन्दी, हरिया, सारी रात ही जागते रहते। भाभी ने फिर अलका का सिर चूम लिया।

इस सरगर्मी के आलम मे पडोस के किशोर भाई साहब भी आ पहुचे। उन्होंने भी अलका के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—आ गयी मेरी निक्की भैण। (छोटी बहन) खैरियत से आ गयी। बस यही बहुत है। मारो गोली खत और तार को। सब बेकार। कुछ नही मिलता आजकल।

—हाँ भाई साहब। हमारी गाडी मे दगा होने लगा था। बस कह नही सकती कि कसे टल गया। भगवान् का लाख-लाख शुक्र समझो कि ड्राईवर होशियार निकला। एकदम से इजन को फुल स्पीड पर स्टार्ट कर दिया।

किशोर भाई साहब लम्बे तगडे, गोरे, जिमनास्टिक के चम्पियन थे। वे लाहौर कालेज म पढते थे। पुलिस ने उन्हें दो दफा पकडकर जेल में डाल दिया था। वजह सिफ इतनी थी कि वे काग्रेस वालो की तकरीरें सुन रहे थे। फिर भी वे इससे बाज नही आते थे। किशोर भाई के जेल जाने से कुन्दन को विशेष रूप से खुशी होती थी। सब लडके उसे किशोर का सगा भाई समझते और पूछते क्या कुन्दी तेरे भाई साहब जेल से होकर आये हैं ? वाह क्या बात है। अग्रेजो के दुश्मन !

किशोर भाई साहब भगवान् को नही मानते थे। वे अलका के वक्तव्य पर हँसने लगे—शुक्र भगवान् का। या ट्रेन ड्राईवर का ?

किशोर भाई साहब की, भाभी भी तब तक सबके बीच पहुँच चुकी थी। हमेशा की तरह उन्होन कहा—ऐवें (ऐसे) नयी (नही) बोलते पुतरा पाप लगदा है। भगवान नाराज होते है।

—किशोर भाई साहब ने बाँह ऊपर करते हुए और भरपूर अँगडाई लेते हुए कहा—अच्छा आप दोनो सयाणियाँ। बताओ तो, यह पाकिस्तान जिना और मुस्लिम लीग वालो न बनवाया है या भगवान ने ? भगवान यह खून खराबा क्यो करवा रहा है। रोकता क्यों नही। क्या उसको खूब मजे आ रहे हैं ?

—ले सुन ले अब, किशोर की भाभी ने जमना की तरफ देखते हुए अपने कान पकड़ लिए।

—हाँ इसने तो मेरे कुन्दी को भी खराब कर डाला। बस किशोर भाई साहब। वही है इसके लिए सब कुछ। जैसे भगवान भी। ये भी ऐसे ही सुर में बोलने लगा है कि भगवान है ही नहीं। जमना ने उत्तर दिया—अग्रजों को पाप क्या नहीं लगता?

अलका, हरमिलाप और कुन्दन कृष्ण कमरे में चले गये थे। अलका कपड़े बदलने लगी थी और दोनों भाई बिना किसी विवाद के बहन के आने की खुशी में स्टोव पर चाय बना रहे थे।

इधर किशोर और दोनों महिलाएँ बैठक में सोफा सैट पर बैठ गयी।

—गरमा-गरम चाय। कहता हुआ हरमिलाप बैठक में आ पहुँचा। वह हथेली पर रखी ट्रे को कन्धे से ऊँचा उठाये हुए था जिसमें बोन चायना के तीन सुन्दर कप रखे थे।

—ओए नखरे बन्द कर, भाभी ने चेतावनी दी, तोड़ेगा क्या, इतने कीमती कप।

—टूट जाएँ तभी अच्छा, हरिया चहकने लगा, नहीं तो मुसलमान लूटकर ले जाएँगे। कुसमा कह रहा था—अब यह लोग, हमारा सारा सामान लूट लेंगे। तब मैंने पूछा कि जैसे हम पतंग और डोर लूटते हैं क्या उसी तरह से यह लोग सामान लूटेंगे। तो वह मुझे मारने को दौड़ा था। तभी तो कल शाम मैं हाँफते हाँफते घर आया था। समझी। अब क्या बात थी, कल शाम की अन्तिम वाक्य उसने गाने की किसी तर्ज पर गाया। समझी अब क्या बात थी, कल शाम की।

—भाग यहाँ से, बड़ा आया, गवैया कहीं का।

हरमिलाप, कुन्दन और अलका के पास चला गया तो दोनों महिलाएँ गम्भीर हो गयी। कुछ देर बाद चाय का आखिरी घूट खत्म करते हुए जमना ने चिन्ता व्यक्त की—न जाने क्या बनेगा हम लोगों का। चलो ले लिया, तुमने पाकिस्तान। तुम्हारी जीत हुई। अब तो चैन से बैठो। हम भी चैन से बैठने दो। अब फिर झगड़ा किस बात का?

किशोर ने बड़े संजीदा स्वर में जवाब दिया—यही तो आप समझती नहीं चाची जी। पाकिस्तान इन्होंने ले लिया। अब इस पर वे एकछत्र हुकूमत करना चाहते हैं। इन्हें यह भी बहुत अच्छी तरह से पता [illegible] कि कोई भी आदमी हो, उसे अपनी धरती से बेहद प्यार होता है। वह क्योंकर अपना घरबार-कारोबार जायदाद छोड़कर किसी अनजान जगह की तरफ कूच करना चाहेगा।

—यह तो तूने लाख की बात कही काके। जमना ने किशोर की बात का समर्थन किया और दो-तीन मर्तबा गर्दन को 'हाँ-हाँ' में हिलाया, मानो किशोर के साथ मसले की गहराई तक पहुँच रही हो।

अब किशोर और भी सटीक ढंग से नतीजे की ओर आया—ज्यादातर यहाँ के रहनुमाओं का सोचना ही नहीं, साफ कहना भी है कि ऐसे सीधे-सादे तरीके से यह हिन्दू यहाँ से जाने वाले नहीं। इन्हें मारो-काटो कि दहशत के मारे दूसरे दिन ही यहाँ से भागते नजर आयेंगे। फिर इनके मकान, दुकानें और लड़कियाँ सब अपनी। हम राज करेंगे, यहाँ पाकिस्तान में। बहुत जुल्म सह लिए इन लाला लोगों के। अब मजे करेंगे।

इस पर डर के मारे दोनों महिलाएँ काँप सी गयी।

किशोर फिर बोला—चाची आप समझदार हैं। अलका का आप इंतजार कर रही थी। वह आ गयी। मनोज को किसी तरह जल्दी से बुलवा लो। मुलतान चले जाओ, चाचा जी के पास। फिर आगे का प्रोग्राम बनाओ। हमारा तो अपना मकान जालंधर में है। हम भी जल्दी से वहीं पहुँच जायेंगे।

जाने कितनी देर से सभी बच्चे भी बैठक में आकर चुपचाप बैठ गये थे और गम्भीरतापूर्वक सारी परिस्थिति का अवलोकन कर रहे थे।

जमना ने कहा—सो तो है ही। छुट्टियों में हमें गाँव तो जाना ही था, बस इसी का इंतजार था। उन्होंने अलका की तरफ संकेत किया। फिर कुन्दन की तरफ देखते हुए कहा—तू आज दोपहर तक स्टेशन पर जाकर गोकुल चाचा जी से कह आ कि फोन से या तार से मनोज को बुला दें।

कुन्दन एक पतली सफेद कमीज और खाकी नेकर पहनकर रेलवे स्टेशन की तरफ चल दिया। यह नेकर उसने खासतौर से संघ में जाने के लिए सिलवायी थी। और संघ में जाना उसने कब से छोड़ रखा था। सिर्फ एक मुसलमान दोस्त मंजूर की खातिर। तो क्या उसे मंजूर को छोड़ना पड़ेगा।

स्टेशन जाने के लिए दो छोटी गलियों को पार करके दाएँ तरफ एक विशालकाय मन्दिर को छोड़कर आगे बढ़ना पड़ता था। उसके बाद कम्पनी बाग आता था। एक बड़े फाटक में प्रवेश। फिर दूसरे बड़े फाटक से बाहर निकलना पड़ता था। तब चौड़ी साफ-सुथरी सड़क आ जाती थी और दूर से ही स्टेशन की बिल्डिंग दिखने लगती थी। और यह सारा रास्ता उसने स्कूल-सबक की तरह रट रखा था। आगे बढ़ते ही स्टेशन बिल्डिंग पर बहुत बड़े बड़े अक्षरों में लिखा हुआ दिखता था—'किला शेखूपुरा' उर्दू में। और साथ ही अंग्रेजी में भी। वह बारी-बारी दोनों जबानों में पढ़ने लगता। बड़े फख्र के साथ उच्चारण करता—किला शेखूपुरा। मगर आज ऐसा उच्चारण करते वक्त उसे फख्र नहीं हुआ। कहना चाहिए, अति भावुक हो उठा था वह। क्या हो रहा है उसके साथ। वह समझ न सका। अपनी अँगुलियों को आँखों के नजदीक ले गया। चारों ओर से स्पर्श करके देखा। कुछ

भी तो नही था। वह स्टेशन-आफिस मे न जाकर वेटिंग हॉल के एक बैंच पर बैठ गया। उसकी आँखो के सामने पूरे रास्ते की एक एक चीज बारी बारी आकर जसे सिमटने लगी। घर के सामने मजूर के मकान की ऊबड़-खाबड़ तरीके से उठती दीवार। डाक्टर गुलजार सिंह के दरवाजे पर बँधी मोटी-मोटी काली भूरी भैंस। शकील के घर ड्योढ़ी। उसमे पतले दुबले चारपाई पर बठे, शकील के दादा जी। हुक्के की गुड़ गुड़ के साथ लहराती उनकी नुकीली दाढ़ी। सकरी गलियाँ। उसके छोटे बडे दोस्तो के इशारा करते हाथ—आ जा कुन्दी। आ जा कुन्दी। खेल ले। खेल ले। आज उनके मकानो के दरवाजे बन्द थे। मन्दिर का बड़ा फाटक भी बन्द था। उसने सब की तरह, मन्दिर जाना भी छोड रखा था। (शायद किशोर भाई साहब से प्रभावित होकर) मगर आज रास्ते मे उसका मन करता रहा था कि मन्दिर मे घुस जाये। उछलकर घण्टा बजाये। मत्था टेके। पुजारी से तुलसी के पत्ते वाला चरणामृत ले। फिर पुजारी जी उसके माथे पर तिलक लगाएँ।

कुन्दन का छोटा सा दिमाग जैसे पूरे वातावरण की बारीकी से समीक्षा करता रहा। हाँ ऐसा ही होता है, हमेशा, उसके साथ। जब-जब पिताजी का तबादला होता है। घर, मुहल्ला, बाजार, स्टेशन छूटते हैं तो उसका दिल कचोटने लगता है। एक-एक चीज को वह बडी हसरत भरी निगाहों से देखता है। पर उसके मन में पहले थोड़ी-सी तसल्ली भी रहती थी कि चलो, ■ महीनो, साल या डेढ साल बाद वे यही इसी शहर मे वापस भी तो आ सकते है। कितनी जल्दी-जल्दी उसके पिताजी के तबादले होते रहते है। लेकिन इस बार उसके दिल पर पहले की अपेक्षा ज्यादा बोझ था, उसमे हूक उठ रही थी। साथ ही दिल बार-बार दहल जाता। जैसे कोई बम गिरेगा। नही नही एक बार उसने बहुत से फौजियो को लण्डी कोतल—बलूचिस्तान की पहाडिया को डाइनामाइट से तोड़ते उड़ाते देखा था। धरती का सीना चूर-चूर हो जाता। शायद वैसा ही कुछ होने जा रहा है अब की बार। धरती टूट जायेगी तो वह दुबारा फिर यहाँ कैसे लौट सकेगा। दिल किया गोकुल चाचा जी को सन्देशा दिये बगैर घर लौट जाये।

कुन्दन के बाल मन पर ऐसे ही चौंकाने हिलाने वाले ख्यालो ने जैसे धावा बोल रखा था जिसकी ठीक से कुछ भी व्याख्या नही थी उसके पास। इन्ही सब चीजो मे वह एकदम गुम था कि उसे एक थरथराती-सी आवाज सुनाई दी—ओए तू कुन्दी। इत्थे (यहाँ) बैठा है। की गल है।

—चाचा जी, चाचा जी आप ही के पास आया था, अब कुन्दन हड़बड़ी मे बोले जा रहा था। मनोज भा जी नू (को) बुलाना है। माँ ने भेजा है। खतरा है।

—चाचा गोकुल दास ने उसे पुचकारा—तो यहाँ किसलिए बैठा है। मैं तो खाना खाने घर जा रहा था। तेरे पर नजर पड़ गयी। तुम घर लौट जाओ। मैं पहले तुम्हारे भाई को इत्तला दे आता हूँ। फिर खाना खाने चला जाऊँगा।

भरजाई जी से कहना कल सवेरे तक मनोज आ जायेगा। किसी बात की फिक्र न करें। ज्यादा डर लगता हो तो हमारे क्वाटर (रेलवे क्वाटर) मे चले आओ। रात यही गुजारकर यही से सवेरे मनोज के साथ शोरकोट चले जाना।

इन शब्दो को सुनते ही कुन्दन का दिल डोल-सा गया। क्या सचमुच एसा खतरा हो गया है। वह यह कहता हुआ—"अच्छा चाचा जी सारी बात भाभी को बता दूगा। आना होगा तो आ जाएंगे'—वहाँ से ठीक उसी रास्ते से घर की तरफ लौट पडा। बाग, गलियाँ, दीवारो, मन्दिर से पूछता हुआ कि फिर अपन कब मिलेंगे। मिलेंगे भी या नही। अगर नही मिलेगे तो क्या होगा। तुम मुझे जरूर भूल जाओगे। मैं कतई तुम्हें नही भूल पाऊँगा। तब मेरा क्या होगा। तभी उसे गोकुल चाचा जी का प्यार भरा चेहरा, लम्बा कद, जो सफेद वरदी मे और, दमकता था, याद हो आया। कैसे तसल्ली दे रहे थे और पूछ रहे थे तू अकेला क्यो आया। तू उदास क्यो है?

कुन्दन ने हिसाब किताब लगाकर जैसे देखा, उदासी का कारण—'डर' तो कतई नही है।

कुन्दन ने आकर सारी बात भाभी से कह दी।

भाभी ने सुनकर कहा—ठीक है। देखो। इत्तिला भी मिलती है, या नहीं। फिर उसे छुट्टी भी लेनी होगी। आ ही जाये तो अच्छा। नही तो हम अकेले ही दो चार रोज मे निकल पड़ेंगे।

मगर दूसरे दिन सवेरे-सवेरे मनोज आ पहुँचा। पहुँचा क्या, आते ही डेढ घटे का अल्टीमेटम (समय सीमा) दे डाला। जय जमना ने कहा—पहले तुम्हारे लिए चाय बनाती हूँ तो बोला—रहने दो यह सब। डेढ घटे मे शारकोट के लिए गाडी चलने वाली है। बस तैयार हो जाओ। मैं बिना छुट्टी, सिर्फ ड्यूटी एक्सचेंज (बदल) करके आया हू। वापस पहुचते ही मुझे फिर ड्यूटी देनी है। यही डेढ घण्टा है, जो मर्जी हो कर लो।

किसी ने सोचा भी न था कि ऐसा होने वाला है। जैसे तैसे जो कपडा, रास्ते का सामान, हाथ आया, उठा लिया। बाकी बडे बडे बक्सो मे ठूस, उन्हे डबल वाले ताले लगाकर घर से निकल पडे। मालिक मकान राम रक्खा शाह जी उनके छोटे भाई शम्भू (सरदार जी) उनकी बहन बेबे आदि परिवारजन तथा मुहल्ले के बहुत से लोगो ने उन्हे विदाई दी। एक ने कहा—ऐसे ही घबराकर क्यो भाग रहे हो। हम भी तो बैठे हैं यहाँ। और यहाँ इस शहर मे हिन्दुओ की आबादी मुसलमानो से कितनी ज्यादा है।

इसका उत्तर शाह जी ने ही दिया—वक्त का कोई भरोसा नही इस वक्त तो सब ठीक ठीक सा लगता है। मगर वक्त अन्दर-ही-अन्दर कैसी करवटें ले रहा है। ऊपर से दिखायी नही देता। मैं बुजुर्ग आदमी, मुझे तो लगता है हमारी जमीन के

नीचे ही-नीचे भूचाल चल रहा है। किसी वक्त भी यह ऊपर आकर तबाही मचा सकता है। हमारी यह धरती दो फाड हो जायेगी। अलग-अलग पडे लोग, अपनो को देखने के लिए तरसते रहेंगे।

—शुभ शुभ बोलो शाह जी। जमचद नाई बोला।

—राम राम अच्छा राम राम। कई स्वर एक साथ हवा मे गूँज उठे।

न चाहते हुए भी जमना बहुत भावुक हो उठी। आँखो पर हाथ फेरती हुई बोली—अच्छा जीदे रए ते फेर मिलागे।

भावुक तो कुन्दन भी बहुत हो रहा था परन्तु उसने किशोर भाई साहब से सीख रखा था कि सब हालात का डटकर मुकाबला करना चाहिए। इसलिए वह सँभला रहा। साथ ही वह शाह जी की यथार्थपरक सोच से सहमत हो रहा था कि हमारी जमीन दो फाड हो जायेगी जो उसे और मन्जूर को अलग-अलग द्वीपो पर फेंक देगी। उसने शाह जी को पैरी पौना किया। किशोर भाई साहब से हाथ मिलाया, उनकी नजर मे ऊँचा और यथार्थवादी दिखने के लिए।

शारकोट पहुँचते ही उसका खूब स्वागत हुआ। सभी आसपास के रेलवे क्वाटरो से, मनोज की बनी हुई भाभियाँ, बहनें, भाई, छोटे भाई आ गये। शुक्र है। मनोज अपनी माताजी, बहन भाइयो को ले आया। हम सब कबसे कह रहे थे। मनोज ! अपने घरवाला को तो दिखा

तभी इन स्वरो के बीच बडी चाची महेन्द्रो ने लम्बी साँस खीचते हुए कहा—पर लाया कब ? जब पूरा मुल्क आग उगल रहा है। परसो रात हवा की छाती फाडते दमामो (एक प्रकार का बडा ढोल। इन्हें बजा-बजाकर पीट-पीटकर दगाई मुस्लिम मुजाहिदीन गाँवो, शहरो पर हमले करते थे।) की कैसी आवाज आ रही थी। न जाने किस गाव वालो की सख्ती (मुसीबत) आयी होगी।

—हा इन गुण्डो का कोई भरोसा नही। कल को यही पर आ धमकें। फिर इसके साथ तो नौजवान बहन भी है। एक-दूसरी बूढी औरत ने महेन्द्रो चाची का समर्थन किया।

इन दो वाक्यो ने सारे जोश पर ठण्डा पानी गिरा दिया। फिर भी "पहले हमारे यहाँ खाना। पहले हमारे यहाँ।" की होड उन सबके बीच लगी रही।

शाम को क्वाटरो के बीचोबीच वॉलीबाल का नैट लगा। कुन्दन को तो चाहिए ही क्या था। उसका सबसे प्यारा गेम वॉलीबाल। वह कद का छोटा था। पर दो हाथ अच्छे मार लेता था। सब स्टाफ वाला न मनोज का भाई मनोज का भाई कहकर उसे खेलने का समुचित अवसर दिया और उसके खेल की सराहना भी की, कि देखो इतना छोटा होकर भी कैसे अच्छी तरह बॉल उठाता है।

रात बारह बजे फिर दमामे बजने की आवाजें सुनायी देने लगी। अब की क्वाटर वालों को लगा कि आवाजें बहुत नजदीक से आ रही हैं। बस आज आफत

आयी। नौजवान लाठियाँ लेकर क्वाटरों का पहरा देने लगे। उनमें मुसलमान स्टाफ वाले और बढ चढकर थे—आएँ तो सही हरामी। सिर न फाड दिए, जे साडी धीयाँ भैणा वल तकन।

औरतें एक दो क्वाटरों मे सिमटकर इकट्ठी होकर बैठ गयी और राम राम करते रात कटी।

दूसरी रात भी यही हाल। तीसरे दिन सवेरे सवेरे सब्बीर, गनी और हनीफ ने आखिर मनोज से कह ही दिया—भापे (भाई) की करिए। मजबूर हाँ। कहीं सारी उम्र का कलक हमारे मत्थे पर न लग जाये। खतरा बढ रहा है। तुमसे क्या छिपा है। अपने भाई बहनो और माताजी को किसी सेफ (सुरक्षित) जगह पर छोड आओ।

मनोज ने बेदिली से हसते हुए कहा—सेफ जगह तो बस खुदा के पास ही है। जिसे वह बचा ले, सही सेफ है।

दिल छोटा न कर मेरे वीरा। (भाई) हनीफ की आँखें तर थी उसने मनोज को गले लगा लिया। क्या करें। चलने को तो बेशक हमारे गाँव चलो। वहाँ मजाल है कोई आँख उठाकर भी देख ले लेकिन फिर वहाँ से निकलना मुश्किल हो जायगा। अब हर आने वाला दिन ऐसी खतरनाक करवट ले रहा है लगता है कि अब तुम सबको यहाँ से हिंदुस्तान ही जाना पडेगा।

—इन्हे तो यहाँ ज्यादा रुकना भी नही था मनोज ने कहा। यह मा मुलतान पिताजी से मिलते हुए गाँव जाने की तैयारी करके निकले थे।

—हूँ मुलतान जाना तो खतरे से खाली नही है। शब्बीर ने कहा।

इतने मे सामने प्लेटफाम पर आकर एक गाडी रुकी। गाडी लायलपुर से आयी थी। उसमे से प्रेम प्रकाश अस्तव्यस्त कपडो के साथ उतरा और मनोज को देखकर सीधा उसकी तरफ बढ आया—तुम्हारे शेखूपुरे मे गजब का दगा हो गया। बस कोई कोई ही बचा है। तुम्हारे घरवालो का कुछ पता चला।

हनीफ ने बताया—यह इन्हें परसो चार बजे वाली गाडी से ले आया था।

—शुक्र भगवान का प्रेमप्रकाश ने हाथ को आसमान की तरफ लहराते हुए कहा, बस-बस वही आखिरी सेफ गाडी थी जो शेखूपुरे से चली थी—जिसम तुम आ गये।

—तुम्हे यह सब किसने बताया ? मनोज ने पूछा।

—मैं लायलपुर से आ रहा हूँ। वही तुम्हारे शेखूपुरे वाला सरदार सिह मिला था। वह किसी तरह बचकर आ गया। ऐसी ऐसी बाते बता रहा था कि सुनी नहीं जाती। अपनी नौजवान बहन को बचाते-बचाते चमन पहलवान मारा गया। तुम्हारे मालिक मकान राम रखा शाह की बुआ मारी गयी। स्टेशन पर तुम्हारे गोकुल चाचा और उनके घरवालो को भी मार डाला। तुम्हारा मोहल्ला

गुरु नानकपुरा तबाह हो गया।

यह सब बातें सुनकर मनोज का दिल दहल उठा। परन्तु वह अपने को संभाले रहा और यह भी तत्काल उसने तय कर लिया कि यह सब बातें भाभी को नहीं बतायेगा। मगर ऐसी बातें छिपाये कहाँ छिपती हैं।

फिर सभी दोस्त इकट्ठे होकर वेटिंग रूम में बैठ गये, और सलाह-मशवरा करने लगे। अब क्या हो? सभी असमंजस में थे। दिन ब दिन चलने वाली गाड़ियाँ कम होती जा रही थीं और आतंक चारों ओर फैलता-बढ़ता चला जा रहा था। और भी आने-जाने वालों से बातचीत हुई। फिर यह तय पाया कि इस तरफ सिर्फ लायलपुर ही बाकी शहरों के मुकाबले ठीक जगह है। न आगे मुलतान की तरफ बढ़ा जा सकता है और फेर शेखूपुरा लौटने को तो सोचा भी नहीं जा सकता। लायलपुर में मनोज की बड़ी बहन रहती थी सुमित्रा।

जब यह प्रस्ताव जमना के सम्मुख आया तो वह मना करने लगी—मन मैं धी (बेटी) के घर नहीं रह सकती।

इस पर मनोज ने कड़ा रुख अपनाया। बोला—भाई-बहन तो बड़ी बहन के पास रह सकते हैं। आप फिर यहीं पड़ी रहो या मुलतान चली जाओ, बाऊजी के पास। मैं तो इन्हें लायलपुर छोड़कर, वापसी गाड़ी पर आया।

कुन्दन को शाम वॉलीबॉल खेलने में खासा मजा आया था। वह नैट छोड़कर कहीं भी नहीं जाना चाहता था। अतएव उसने भाभी का पक्ष लिया तो क्या लायलपुर में देवता बसते हैं?

मनोज को गुस्सा आ गया—तू पिद्दी-सा तुझे खाक मालूम है। लायलपुर के कलेक्टर हमीद हैं। वह नेक दिल इन्सान। बिलकुल देवता की तरह हैं। जब तक वह वहाँ हैं, हिन्दुओं का कत्लेआम नहीं होगा। समझा।

मनोज रात की ड्यूटी देकर पायजामे-कुर्ते में खड़ा था। उसी हाल में सबको छोड़ने लायलपुर चल पड़ा कि वापसी गाड़ी से लौट आयेगा। उसे शाम को फिर ड्यूटी देनी थी।

कुन्दन को और जमना को भी मन मारकर गाड़ी में बैठना पड़ा।

वस्तुओं और व्यक्तियों को लेकर कुन्दन के अन्तरमन में जो सूक्ष्म सा ताना बाना बहुत जल्द निर्मित हो जाता था, वह उसी में खोने लगा। गाड़ी मन्द गति से चल पड़ी। जरा आगे बढ़ने के बाद आउटर सिगनल से पूर्व, वालीबाल का नैट बँधा था। गाड़ी ने गति पकड़ ली। लो यह भी गया। यहाँ दिल लगने लगा था तो यह भी छिन गया। बाकी परिवार वाले आपस में न जाने क्या बातचीत कर रहे थे, कुन्दी तो खिड़की में बैठा, कभी कराची देखता कभी सक्खर, कभी पेशावर तो कभी कुन्दियाँ, लाइनें, प्याऊ लीवर, सिगनल, क्वाटर, दोस्त। यह सब ऊपर से एक जैसे दिखते हैं, मगर उनकी बारीकियां अन्तःकरण को छूती रहती हैं।

सहलाती रहती हैं।

फिर से वही विचार, जो किला शेखूपुरा छोड़ते वक्त, दिल मे पैदा हुआ था कि पहले की तरह अब इन जगहो पर बाऊजी का ट्रासफर फिर कभी न होगा, वह इन कॉलोनियो, स्टेशनो को कभी भी ताउम्र न देख सकेगा, उसे बुरी तरह से कचोटने लगा।

इस बार तो उसके सम्मुख एक विकराल बवण्डर उठ खड़ा हुआ था जो उसे अनजान दिशाओ की ओर ले जाकर जैसे बुरी तरह पटक रहा था। नही-नही-नही कौन आने देगा मुझे वापस यहाँ ? उसकी साँस जैसे रुक रुक जाती। वह चारो ओर से शिकजो मे जकड़ा जा रहा था जैसे।

एकाध पूड़ी निगल, चाय का कप पी मनोज, सुमित्रा दीदी के घर से निकल पड़ा। माँ और बहन उसे असीसें देती रही। नसीहतें देती रही। अपना ख्याल रखना। किसी झगड़े-वगड़े मे नही पड़ना। जीजाजी ने भी कहा—मनोज मारो गोली ड्यूटी को। इन हालात मे ड्यूटियाँ होती है, भला। जान है तो फिर से सब-कुछ मिल जायेगा।

मनोज ने सबको तसल्ली दी—फिक्र मत करें जैसे हालात होगे वैसे निपट लूगा। वहाँ पर शब्बीर, हनीफ वगरह सब तो हैं। फिर वह तेज कदमो से लायलपुर का गोल बाजार मुहल्ला पार कर गया।

हरमिलाप का मन भाई से खेलने-लड़ने को कर रहा था। वह बार-बार उसे छेड़ रहा था। मगर कुन्दन छत पर जगले के पास गुम-सुम बैठा था। उसे लग रहा था जैसे पूरा लायलपुर एक जगले का पिंजरा हो और उसे उसमे बन्द कर दिया गया है।

हरमिलाप कह रहा था—यहाँ बैठा झल्ल (झक) क्यो मार रहा है। उल्के-उल्के । (चिढ़ाने का शब्द)

भाभी ने झिड़का—क्यो तुझे लड़े भिड़े कुछ हजम नही होता। तूने तो नाश्ता कर लिया। ओ कुन्दी तू भी उठ। हाथ मुह धोकर यह पूरियाँ हलवा खा ले।

कुन्दन ने कहा—मुझे कुछ नही खाना। मैं स्टेशन जाऊँगा। वहाँ पाजी (भाई साहब) से फोन पर बात करूँगा कि ठीक से पहुँच गये।

बस इतनी-सी बात पर ही जमना को गुस्सा आ गया। मन पहले मे ही खिन्न था। लगी कुन्नी पर चिल्लाने—अब तू भी सता ले। कोई कसर क्यो बाकी रहे। बोल कहाँ रुलना (आवारा गर्दी करना) चाहता है ?

सुमित्रा ने उन्हे चुप कराया। यह क्या बात हुई भाभी। बच्चा ही तो है। जरा ज्यादा जजबाती है। आप जाकर कमरे मे आराम करो।

फिर वे कुंदी की ओर मुड़ी। उसने दोनों बच्चों को हाथों से पकड़ अपने सामने खड़ा कर लिया—सुन मेरे प्यारे वीर। अब यह पहले वाला लायलपुर नहीं है कि आते ही जिधर दिल किया छूट निकले। शाबाश। फिर थोड़ा रुककर बोली—इसीलिए तो हमारा मकान छत पर है। खूब खुला हवादार। जहाँ मन हो खेलो। नीचे नहीं जाना मेरे वीर।

थोड़ी ही देर बाद गली में जोर-जोर से भागने दौड़ने की आवाज हुई। सभी घबराकर जंगले की तरफ आये। बच्चों को पीछे रहने को कहा।

देखा नीचे कुछ नहीं था। कुछ कुत्ते एक-दूसरे का पीछा कर रहे थे। कुन्दन भी चुपके से जंगले के पास पहुँच चुका था। बोला—नीचे लड़के कुत्तों के साथ खेल रहे हैं।

सुमित्रा मुस्कराती सी अलका से बोली—बच्चे भला कहाँ रह सकते हैं। इन्हें बन्द रखना बड़ा मुश्किल है।

तब सब मिलकर नीचे झांकते हुए गली की रौनक देखते रहे।

कुछ देर और बीती।

एकाएक कुन्दन चिल्ला उठा—वोह देखो भाजी आ रहे हैं। सचमुच मनोज बाजार के मोड़ से गली में प्रवेश कर रहा था। जमना जाकर कमरे में लेट गयी थी। अलका भी अपनी नारंगी चुन्नी सँभालती हुई आ पहुँची।

बड़े ढीले कदमों से मनोज सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ ऊपर आया। चेहरे पर बेहद थकावट थी। वह एक स्टूल पर बैठ गया। चुपचाप।

—क्या हुआ। कुछ बोल तो, जमना ने कहा। सब ठीक तो है ना।

सुमित्रा पानी का गिलास भर लायी—पानी पी मेरे वीर।

पानी पीकर मनोज ने बताया—शोरकोट जाने वाली गाड़ी लेट हो रही थी। मैं वक्त गुजारने के लिए ए० एस० एम० के दफ्तर आकर बैठ गया। कन्ट्रोल फोन पर शोरकोट था। मैंने कहा, जरा हनीफ से बात कराओ। हनीफ ने भरी आवाज सुनते ही कहा—चढ़े ता नहीं ना गाड़ी पे। लायलपुर ही हो ना। मन आना वास्त। यहाँ के हालात ठीक नहीं। फिर बारी-बारी से सबने बात की। सचमुच शब्बीर तो जजबाती होकर फोन पर ही रो पड़ा। कहने लगा। पता होता हमेशा के लिए जा रहे हो तो कसकर गले तो लग लेते। गनी ने जरूर तसल्ली दी। कहने लगा। हालात बिगड़ते हैं तो सुधरते भी हैं। अच्छा खुदा अच्छा वक्त लायेगा। फिक्र मत करना। तेरा सामान हम सँभालकर रख लेंगे।

सभी भारी मन से सारा वृतान्त सुन रहे थे। हरिया भी पूरे विवरण पर अपना कान अड़ाये था। बोल पड़ा—क्या पता सामान मारने के लिए ही आपको नहीं बुलाना चाहते हो।

—बकक उल्लू बकक, तुझे तो कमीनी बातें ही सूझेंगी। तेरी दोस्ती नीचों के

साथ जो है, कुन्दी की बात बीच में रह गयी। हरिया न उसकी गर्दन पकड़ ली थी—बताऊँ किसके दोस्त नीच हैं। दोनों भिड़ गये।

मनोज ने कहा—तो ठीक है। तुम लड़ो। मैं सामान लेने शोरकोट जा रहा हूँ।

इतना सुनते ही दोनों छोटे भाई लड़ना भूल गये—नहीं भाजी नहीं। उनकी एक टाँग हरिया ने पकड़ ली और दूसरी कुन्दी ने।

यह नजारा देखकर सब परिवार वाले हँसने लगे।

जमना बोली—मारो गोली सामान को। मेरा लाल तो आ गया। उसने मनोज का माथा चूम लिया।

अजीबोगरीब लपेट में आ गया था पूरा लायलपुर शहर। सुबह की हवा कड़े सद। दुपहर में चिलचिलाती धूप। शाम को हवा का थमना। जिस्मों में चिपचिपापन। रात की खामोशी को चीरती गोलियाँ चलने की आवाज। दूर-दूर तक दिखलायी देने वाली आग की लपटें। उजड़ने और मरने का व्यापक परिदृश्य, हर एक की नस-नस में खौफ पैदा करता रहता। कई बार दिन में हाय-हाय। मार डाला रे। भागम भाग। सीधी-उल्टी साँसें भी सुनायी दे जातीं और कर्फ्यू लग जाता।

मनोज सवेरे ही घर से निकल जाता सुमित्रा बहन जी की सलवार पहन, और शाम को ही घर लौटता। कभी-कभी रात को। और एक-दो बार तो रात को भी नहीं लौटा। सारे परिवार वालों की जान अधर में टँगी रहती।

लाला काशीनाथ सेठ जो मनोज के बड़े जीजाजी के बड़े भाई थे, की लड़की के साथ मनोज की मँगनी बहुत ही छोटी उम्र में हो चुकी थी। इसके विरोध में मनोज, भाभी से लड़ता भी था कि इस जगह में शादी हरगिज नहीं करूँगा। भाभी सोचती इसका बचपना है अभी। आगे जाकर सँभल जायेगा। इसलिए जो कुछ खाने पीने का सामान सेठ जी के घर से आता, जमना उसे स्वीकार कर लेती।

सेठ काशीनाथ मनोज को उसी दिन से दामाद रूप में देखते। और हर क्षण उसकी चिन्ता करते। मनोज के न लौटने पर अपनी दुकान से या घर से मनोज के दोस्तों खरख्वाहों के घरों में फोन कर करके पता लगाते रहते। जैसे ही मनोज की कोई खैर खबर पाते, इत्तिला देने भागे आते।

दरअसल मनोज के घर से निकले रहने का मकसद इस कैद से रिहाई की राह तलाश करना होता। अपने कुछ छड़े (अविवाहित) दोस्तों को ट्रकों या हवाई जहाज से रवाना करना होता। उसे मालूम हुआ था कि रेलवे वालों के लिए एक

स्पेशल ट्रेन जल्दी ही हिन्दुस्तान के लिए रवाना होगी, जिस पर वे आराम से जा सकेंगे। मगर इस जल्दी का अता-पता खोता रहता। कई बार वह कर्फ्यू की वजह से भी घर नहीं लौट पाता था।

जब भी आता, वही अस्त व्यस्त कपड़े। बिखरे बाल, रुक्ष चेहरा। माँ-बहन देखती तो कहती, कसे बन-ठनकर रहने वाला, सफाई पसन्द मनोज। हाय इसके खूबसूरत चेहरे को किसी की नजर लग गयी।

मनोज अपना मनोबल बनाये हुए यही कहता—हमें किसी तरह यहाँ से जल्दी भाग निकलना है। कुछ लोग हैं जो कलेक्टर हमीद साहब का यहाँ से ट्रांसफर कराने पर तुले हैं। कहते हैं—यह हरामी हमें कुछ करने ही नहीं देता। खुदा करता, हमारा कलेक्टर और एस० पी० किसा शेखूपुरे जैसा होता। चीमा जैसा कलेक्टर चाहिए हमें।

—सत्यानाश हो इनका। जमना कहती।

मनोज की भी, न चाहते हुए आह निकल जाती। कहता—और तो कुछ नहीं, यह अलका की तरफ इशारा करता। यह कोई अपने आदमी को छोड़ कर हमारे पल्ले आ बँधी है। आज किसी की नौजवान बहन न हो। अगर कोई हमला हुआ तो मैं ही इसकी गर्दन उतार दूंगा।

—सच भ्राजी यही करना। दिल पक्का रखना। अलका दिलेराना अन्दाज से कहती।

—मरें हमारे दुश्मन। मैं तो दुर्गा माँ का पाठ करती हूँ, सुमित्रा कहती, वही हमारी लाज रखेंगी।

सब कुछ ही तेरे भरोसे है मेरे गिरधर गोपाल। जमना आर्द्रकण्ठ से आकाश की ओर हाथ उठाकर कहती। फिर जैसे प्रार्थना की मुद्रा में बैठ जाती—न जाने तुझे क्या मन्ज़ूर है मेरे करतार। हम कौन हैं निर्णय लेने वाले। अगर शेखूपुरे गोकुल भाई साहब के क्वाटर चले जाते तो हम सब भी वहीं उनके साथ मारे जाते। न कोई तार आती है और न ही डाक का ठिकाना। तू ही रक्षा करना बच्चों के बाऊजी की और अलका के रोशनलाल की।

एक रोज सवेरे मनोज घर से निकला तो शीघ्र ही वापस आ गया। उतावली में कहने लगा—सब तैयार हो जाओ। आज दोपहर रेलवे वालों के लिए विशेष गाड़ी चलनी है। स्टेशन से नहीं। आऊटर सिगनल से बहुत आगे से लाइनों से चलायेंगे।

—हमने क्या तैयार होना है। हमारे पास कौन सा खास सामान है। एक ट्रंक हमारा एक अटैची अलका की और एक बिस्तरबन्द। और जो थोड़े बहुत गहने हार हैं वह तो पहले से ही हमारे नाड़ों से बंधे रहते हैं, जमना ने कहा, हे मालिक बेड़ा पार लगाना।

—ठीक है, बहन जी। जीजाजी आप भी तैयार हो जाओ। जो हल्का कीमती सामान है बांध लीजिय। मनोज न कहा।

जीजाजी ने उत्तर दिया—हम तो रेलवे वाले नही।

मनोज ने कहा—किसके माथे पर लिखा है, कौन क्या है। वहाँ पर अभी से पूरे शहर वालो की भीड जुटने लगी है।

इतन मे जीजा जी के बडे भाई सेवाराम और सेठ काशीनाथ भी आ गये। जीजाजी ने कहा—मैं मुसीबत की इस घडी मे अपने भाइयो को छोडकर नही जा सकता।

भाई ने कहा—अगर तुम अपने सालो के साथ जाना चाहते हो तो बेशक चले जाओ। दो चार रोज मे हमारा ट्रक वाला आयेगा ज्यादा से ज्यादा सामान लाद कर हमे हिंदुस्तान की सरहद पर खैरियत से पहुँचा देगा। वह बस मौके की तलाश मे है। आगा पीछा देखकर ही चलेगा वह।

—तुम लोग जाओ। जीजाजी ने निणय सुना दिया।

—सब आपस मे मिल मिलकर रोते रहे।

—सुमित्रा ने कहा—भाभी आप अपन दुहते रमश, सुदेश को बेशक अपने साथ ले जाओ। वैसे भी आपके पास रहते आये हैं।

—अब नही धीए (बेटी) जमना की आवाज मे अन्तहीन पीडा थी। किसका क्या भरोसा। कल को हम मारे जायें और तुम ठीक ठाक पहुँच जाओ तो यह तुम्हारी सारी उम्र का पछतावा बन जायेगा। न बीवी न। बच्च मावाँ कोल ही चगे। (बच्चे अपनी माँओ के पास ही ठीक)

वाक्य पूरा होते न होते दानो माँ-बेटी फिर से गल लगकर फफक फफककर रो पडी।

—अब और देर न करो। मनोज ने रुमाल से आँखें पाछते हुए कहा।

महीने भर की कैद से शायद उन्ह मुक्ति मिल रही थी। जसे कोई पक्षी पिंजरे से बाहर निकलने से पहले ही अपने पख फडफडान लगता है, वसे ही यह सब लोग 'फटाफट फटाफट की धुन पर अपना थाडा-सा सामान सम्भाल रलवे लाइनो की तरफ चल पडे।

मगर यह क्या। यह गाडी के डिब्बे तो छोटे-छोटे पिंजरा की शक्ल अख्तियार किये हुए थे। छत के निकट तक लोगो का सामान भरा था। लोग मुश्किल से अपने अपने सिर को डिब्बो की छतो से टकराने से बचान के प्रयास मे टढे मेढे बैठे थे। यहाँ भी तिल भर की जगह नही। यह लोग कई बार पहल डिब्ब मे आखिरी डिब्बो का निरीक्षण करते चले जा रहे थे। कही कोई गुजाइश नहीं थी। सिपाही डण्डे हिला हिलाकर सबको धमका धमकाकर भगा रहे थे—कोई जगह नही। भाग जाओ, नही तो माँ के (गालियाँ)

इतने में सेठ काशीनाथ अपने नौकरों और बच्चों के साथ बहुत सारा सामान लिए वहाँ आ पहुँचे।

मनोज ने पूछा—क्या आप सबकी सलाह पसन्द की आ गयी? मगर यहाँ तो कोई जगह ही नहीं।

—नहीं। बस हमारे यह पर्चे, मशीन वगैरह इन बक्सों में हैं। इन्हें तुम अपने साथ ले जाओ।

—मगर हमारे खुद का कोई ठिकाना नहीं है। कहाँ जायेंगे ... जमना परेशान में पड़ गयी।

—फिक्र मत करो, सेठ काशीनाथ ने कहा, अगर नहीं ले जाओगे तो कहीं भी फेंक देना। यहाँ भी तो हम फेंककर जाना पड़ेगा यह सब।

मनोज ने इधर-उधर देखते हुए एक क्षणकर कहा—वो तो ठीक है जी। हमारे पास खुद का कितना थोड़ा सामान है। इसे रखने और गुड्ड गाड़ी में चढ़ने का भी कोई ठिकाना नहीं। शायद घर वापस लौटना पड़े।

—ठहरो मैं देखता हूँ। सेठ काशीनाथ ने कहा।

वे एक सिपाही के पास गये। उससे बात करते रहे। मनोज को बुलाया। मनोज ने उस सिपाही को कोई पुराना रेलवे का पास दिखलाया। सेठजी ने सिपाही के हाथ में पाँच रुपये के दो नोट थमा दिये।

सिपाही पूरे जोश में आ गया। उसने लोहे लगे लम्बे डण्डे को जिस तिस पर बुरी तरह से घुमाना शुरू कर दिया। उसकी खाकी-लाल पट्टी वाली पगड़ी जैसे लहरा रही थी। उसने पिंजरों में बन्द लोगों को कोंच कोंचकर और पीछे कोना में धकेला। तीन चार डिब्बों में थोड़ी-थोड़ी जगह बनवाकर उस परिवार को तीन जगह विभक्त कर अन्दर ठूस दिया। एक में मनोज। एक में हुरिया, अलका और जमना। कुन्दी को भी सबसे अलग एक डिब्बे में चढ़ा दिया गया और सेठ जी का सामान भी। कुन्दी बुरी तरह से डर गया। उसका छोटा-सा दिल धक् धक् करने लगा।

उसने अपने स्कूल के रास्ते कई बार जिव्ह करने के लिए ले जा रही मुर्गियाँ, तीतर, बटेर देखे थे, जो बहुत छोटे छोटे पिंजरों में बन्द, एक-दूसरे के साथ गुत्थम गुत्था हो रहे होते थे। ... तो क्या हमें भी ...

गाड़ी टस से मस नहीं हो रही थी। उसे दुपहर को चलना था। शाम हो गई थी। अन्त क्या होगा? यह तो आरम्भ था।

—कोई मार या न मारे। यह घुटन ही हम मार डालेगी। यह स्वर किसी बूढ़े व्यक्ति का था। वह सिर पर सफेद पगड़ी लपेटे था। एक बक्से पर बैठा, वह बार बार थोड़ा इधर उधर करवट लेने की कोशिश करता। लाचारी में तिलमिला उठता—भइया जी थोड़ा खिसको तो

—जगह है कहाँ बाबा दूसरी ओर बिलकुल साथ चिपकी बैठी औरत ने कहा, बस लाख-लाख शुक्र करो तुसी (आप) वाहे गुरु दा, जे इत्थे (यहाँ) फँस गये।

अँधेरा हुआ गाड़ी की सीटी सुनाई दी। इंजन फूंका। गाड़ी रेंगी। थोड़ी दूर चलकर लायलपुर स्टेशन आया तो गाड़ी फिर खड़ी हो गयी।

स्टेशन पर होने वाली चहल पहल बार बार डरावनी हो उठती। हरी पोशाक मे कई नौजवान (रजाकार) दिखलायी दिये जो इन लोगो के लिए साक्षात यमदूत की तरह थे फिर किसी ने धीरे से कहा—घबराओ नही। देवदूत कलेक्टर आ गया है।

रात ग्यारह बजकर चालीस मिनट पर फिर से गाडी रवाना हुई। अबकी गाडी ने गति पकडी। लोग चाहते थे कि रात रात मे ही यह सीमा पार करा दे तभी खैरियत, वरना दिन किसने देखना है।

कुल मिलाकर अन्तहीन यातना, पीड़ा और आतंक का वातावरण गाडी रुकती तो जसे मौत, हर एक डिब्बे मे झाँकने आ जाती। सबके हृदय गति रुकने का आभास होने लगता। गाडी रेंगती तो थोडा दम-मे दम आता। साथ ही सभी अपने अपने बाजुओ, हथेलियो के द्वारा उसे अन्तरगति देने की चेष्टा करते, जिससे धीरे धीरे चलती हुई यह गाडी, एकदम तेज हो जाये और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करे।

मुश्किल से आठ-दस घण्टो की यह यात्रा राम-राम करते, दहशत भर नारो को सुनते, गार्डों, ड्राईवरो की ड्यूटी बदलते, ड्यूटी घण्टो सम्बन्धी झगडो के चलते और गोरखा मिल्ट्री की सतर्कता से, दो रोज म पूरी हुई।

बडो की भूख प्यास तो पहले भी खत्म हो गयी थी। बच्चो को क्या कसे कुछ खिलाया पिलाया। कैसे एक-एक करके बदबूदार शौचालय की ओर घिसट घिसटकर रास्ता बनाते रहे, बस वही भुक्तभोगी ही जानते हैं।

रात शुरू हुई थी। आसमान तारो से जगमगाने लगा था। अटारी रेलवे स्टेशन आ गया था। जो लोग कुछ देर पहले साँसें रोके बैठे थे, एकाएक बहादुर बन गये। बाहर से सुनाई देने वाले नारो के साथ, यह दुगने वेग से शामिल हो गये। हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। इन्कलाब जिन्दाबाद। हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। महात्मा गाधी की जय। जवाहरलाल नेहरू की जय।

—इन्होने ही तो सत्यानाश कराया साडा। सानू उजाड़ के रख दिता है। इन नारो के बीच मे एक अधेड का फुसफुसाता हुआ स्वर सुनाई दिया।

—ओए चुप बुड्ढे। आजादी ऐवे नई मिलदी। एक नौजवान ने उसे झिड़का, सैक्रिफाइस करनी पैंदी ए। (कुर्बानी देनी पडती है।)

—कोई गल (बात) नई पुत्तर। अग्गे (आगे) पता चलेगा।

—लओ छोले पूड़ियाँ। पाणी चाहि दे भणजी। बाहर से स्वय सेवक, डिब्बो की खिड़कियो से खाने-पीने का सामान बाँट रहे थे। बहुत से आदमी तो खुली

हवा में बाहर निकल आये थे। स्वयं खा-पी रहे थे और घर वालों को पूछ रहे थे।

गाड़ी फिर आगे बढ़ गयी। नारे हर स्टेशन पर बराबर बुलंद होते जा रहे थे। दो तीन स्टेशनों पर रुकने से गाड़ी की भीड़ में कुछ कमी भी आयी थी। शायद यह चौथा स्टेशन था। यहाँ पर आकर गाड़ी लम्बे समय के लिए रुक गयी थी।

नारे बुलन्द होते रहे—हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। पाकिस्तान मुर्दाबाद।

जब-जब, 'पाकिस्तान मुर्दाबाद' सुनाई देता, कुन्दन कसमसा सा उठता। उसने स्कूल में 'धरती से प्रेम' नामक पाठ पढ़ा था। उसमें अपने गाँव, अपने नगर, अपने प्रान्त, अपने देश के प्रति आभार प्रकट करना सिखाया गया था। धरती का सम्मान, आदर, रक्षा और उस पर मर मिटने की बात की गयी। 'मुर्दाबाद' का अर्थ वह समझता था। मुर्दाबाद एक गाली है। इसे लोग-बाग और सारे लड़के अंग्रेजी राज के लिए इस्तेमाल किया करते थे, जैसे कुछ और शब्द 'टोडी बच्चा—हाय-हाय' एक नज़्म भी, लड़के क्लास रूम में, एक-दूसरे से बढ़ चढ़कर अलापते थे—

या इलाही कर तबाही पहले इस फुतूर की।
ना दाढ़ी है, ना मूछ है, शक्ल है लंगूर की।

कक्षा में मास्टर साहब आ जाते तो झिड़कते—यह तुम्हारे घर की इमारत नहीं। सरकारी स्कूल है स्कूल। समझे कि देवां थप्पड़ (दू सात)

मास्टर साहब के जाने पर फिर से वे सक्रिय हो उठते—अंग्रेजी राज—मुर्दाबाद। हिन्दुस्तान को कभी किसी ने मुर्दाबाद नहीं कहा। अब क्या यह सब लोग सरहद पार करते ही पागल हो उठे हैं, जो अपनी ही धरती को मुर्दाबाद कह-कहकर शोर मचा रहे हैं।

भीड़ कम होने पर मनोज कुन्दन को पहले ही भाभी वाले डिब्बे में ले आया था। बाद में सबकी देखा-देखी वे भी प्लेटफार्म पर मामूली सा कोई कपड़ा बिछा कर, बैठ गये थे। गाड़ी चलने में अभी देरी थी। बहन और भाभी, उससे कुछ खा लेने का इसरार कर रहे थे। उसने आधी रोटी खा ली। पेट भरकर पानी पी लिया था। अचानक वह उठा—पेशाब करके आता हूँ, कहता हुआ, दूर अँधेरे में पेड़ा के नीचे चला गया था।

वहाँ पहले से ही एक लम्बा सा आदमी खड़ा था। अँधेरे में उसका अस्त व्यस्त ढीला पायजामा या सलवार और लम्बे लम्बे बाल तेज हवा की वजह से झिलमिला रहे थे। 'मुर्दाबाद' सुनते ही वह आदमी खिलखिला उठता।

उसे देखकर कुन्दन डर गया और वापस जाने लगा। उस आदमी ने उसे रोका—घबराता क्या है मुण्डया (लड़के) इदर कर ले मूती।

कुन्दन जल्दी जल्दी निवृत्त हुआ। अब वे दोनों थोड़ी रोशनी में आ गये। उस

आदमी ने पूछा—कियो आया है ?

कुन्दन ने कहा—जिला शेखूपुरा। देखो अपने ही शहरो को यह लोग मुर्दाबाद कह रहे है।

एक लम्बी आह खीचते हुए वह बोला—अब अपना कुछ नही रहा। सब कुछ लुट गया। खेल खतम। अपना ही देश अब विदेश हो गया, मेरे बच्चे। अब उसका स्वर वाक्य के अन्त तक आते-आते आर्द्र हो उठा था।

कुन्दन धीरे धीरे अपने परिवार की तरफ बढ चला—सोचने लगा—वह आदमी शायद ठीक ही कहता है—अब वह धरती अपनी कहाँ रही जिसे पूजा जाये। मगर एक प्रश्न फिर भी उसके गले मे काँटे की तरह फँसकर रह गया जिसे वह न तो उस आदमी से पूछ सका और न अपनो से ही। अपनी चीज अगर पराई हो जाये तो क्या उस चीज को गाली देना वाजिब है ?

तभी दूर आकाश मे उल्कापात हुआ। एक पिंड टूटकर न जाने किस तरफ जा गिरा। इससे कुन्दन बुरी तरह काँप उठा। वह रोता रोता भाभी के पास पहुँचा। उनकी गोदी मे सिर रखकर फूट पडा। माँ ने पूछा तो बोला—पेट फट रहा है।

सवेरे सात के करीब गाडी फिर से आगे बढी थी।



कुछ देर सुस्ता लेने पर, पसीना सूख गया था। दुपहरी सध्या की शरणस्थली मे विश्राम करने को बढ रही थी। थोडी देर मे धुधलका छाने वाला था। अब ?

जब से वे यहाँ बठे थे जमना बराबर बच्चो को कुछ न-कुछ खा लेने का इसरार कर रही थी। उसे वायुमण्डल मे तेल की गध का आभास हुआ। सामने देखा तो एक दुकानदार पकोडे तल रहा था—शाबाश मनोज पुत्तर जरा उठो। स्टशन के पास वाली दुकान पर भाई गरम-गरम पकोडे तल रहा है। उससे पकौडे ले आ। रोटियाँ बहुतेरी पडी है मेरे पास। बाद मे गरम-गरम चाय ले आना।

सीमा पार करते ही जो रोटियाँ उन्हें मिली थीं। उनमे से बहुत कम खायी गयी थी। बासी हो चुकने के बावजूद यह रोटियाँ नयी थी, ताजा थी। पाकिस्तान का अन्न तो पाकिस्तान मे ही फेंक दिया गया। कुछ भी तो नही निगला जा रहा था उस समय। जमना रोटियो की पोटली खोलने लगी तो मलका को दुबारा मतली होने-सा लगने लगा—हाँ मैं तो कुछ न खाऊँगी।

—कुछ भी न खाने से कैसे चलेगा। तुम सबकी भूख हमेशा के लिए मारी जायेगी और पेट अन्दर को चिपटा रह जायेगा। जमना ने डाँट-सी लगायी।

—फिक्र मत करो भाभी। हम इसके हिस्से के भी खा लेंगे, कुन्दन ने बहन

की तरफ शरारत से देखते हुए कहा, ड्रामा कर रही है।

—अहा ! हरिया ने भी होंठो पर जीभ चलायी। उसके मुह में पकौड़ो के ख्याल और गन्ध से पानी आ गया।

लेकिन तभी कुन्दन उदास सा हो गया। उसे मीरपुरे वाले 'पहलवान दी हटटी' की याद हो आयी। पहलवान उनके घर के ठीक सामने दुकान करता था और हर शाम को बड़े कड़ाहए मे गरमागरम बड़े-बड़े आलूओ और साबुत प्याजों के पकौड़ तला करता था। कुन्दन ने सोचा, पता नही पहलवान जिन्दा भी होगा या हे भगवान्! (भगवान को न मानने से क्या फर्क पड़ता है! बिना भगवान काम भी तो नही चलता।) मेरे पहलवान हलवाई को बचा ला। वह पहलवान मेरे साथ कितना हँसी-मजाक किया करता था और सब बच्चो के साथ सुर से-सुर मिलाकर जोर जोर से हँसता गाता था।

मनोज फुर्ती से जाकर पकौड़े ले आया था। सब मिलकर, अपनी-अपनी गति से खाने लगे थे।

सहसा उन्हें स्टेशन की ओर से बहुत हो-हल्ला, शोर शराबा सुनायी दिया। इसे सुनकर प्राय सभी के चेहरे फक पड़ गये। इस अप्रत्याशित हुड़दंग ने उनके मस्तिष्क तन्तुओ को फिर से 'दंगे' की परिकल्पना से थरथरा दिया।

—मैं जरा देखकर आता हूँ। बात क्या है? मनोज खड़ा हो गया।

—नई (नहीं) भ्राजी न। दोनो छोटे भाई बड़े भाई की टाँगो से लिपट गये और उसे जाने से रोकने लगे।

—यहाँ क्या खतरा है? मनोज ने कुछ कड़े स्वर मे कहा। फिर दोनो भाइयो को प्यार से थपथपाकर अपने से अलग किया और स्टेशन की ओर लपका।

—पाँच सात मिनट रुककर चले जाना। अमना ने तटस्थ स्वर मे बीच का रास्ता निकालना चाहा। परन्तु तब तक मनोज जा चुका था।

सभी एकटक उधर ही देखते रह गये जिधर मनोज गया था। वहाँ का वातावरण एक बार फिर से गम्भीर हो उठा। वे आपस मे ऐसी ही कोई बात छेड़ते जो बीच मे ही कही अटककर रह जाती। बचे हुए पकौड़े धीरे धीरे कोई उठा लेता और मुह म डाल लेता। लेकिन यह सब कुछ बड़ी बेदिली से हो रहा था। सभी यही चाहते थे कि बस मनोज जल्दी से वापस लौट आये। उन सबकी आँखें स्टेशन की ओर लगी हुई थी। उधर से आने वाले हर व्यक्ति को वे बड़े गौर से देखते रहे। देखते रहे।

प्रतीक्षा करते करते वे थक गये। सबको अकुलाहट होने लगी थी। उधर स्टेशन से आने वाला शोर निरन्तर बढ़ता जा रहा था और इधर उसी अनुपात में पूरे परिवार पर चिन्ता छाने लगी।

समय असहनीय बनता जा रहा था।

—मैं भाजी का देखकर आता हूँ। कुन्दन उठ खड़ा हुआ।

—अब तो सभी अपने आपको सूरमा समझने लगे है। बठ जा चुपचाप, भाभी (माँ) ने झिडकी देते हुए, उसकी बाह पकडकर बैठा लिया, तू जरा-सा, इतनी भीड मे खो जाये तो

अलका तटस्थ बनी बैठी थी मगर हरिया कुछ बालते-बोलत रुक गया। बस मुह चिढा दिया 'ले '।

इस सारी स्थिति को कुन्दन न बडी बारीकी से परखा। उसे बारी-बारी से सब पर कोफ्त होने लगी। भाभी उसे इस कदर छोटा समझती हैं। वैसे भाभी का बस चले तो ब्याहे बच्चो तक को गोदी मे बैठाये रखें। बहन भी ऐसी ही है। कुन्दी कुन्दी पुकारती रहेगी जैसे किसी पिल्ले को अपने पीछे चलाया जाता है—'कूर कूर'। और यह हरिया ?

यह तो बस घर पर, या मुहल्ले मे ही मुझसे लडने काटने पर आमादा रहता है। यही तक ही है इसकी बहादुरी। अब बस भाभी और बहन से नजर बचाकर चिढा दिया। वैसे इसकी नानी मरी पडी है अब।

फिर उसे अपनी सोच पर झेंप होने लगी—मेरी भी तो वही नानी है, जो इसकी। बेचारा अभी है भी तो छोटा। लेकिन नही ।

कुन्दन अपने से सवाद करता चला गया—जब मैं इतना बडा था। इस हरिया जितना तो बहुत कुछ कर गुजरता था। अपने हमलावरो पर घात लगाता। अपने छोटे कद के बावजूद, इस फुर्ती से उछलकर लम्बो-लम्बो के गालो पर अपना हाथ पहुँचा देता था। और फिर बेतहाशा भाग खडा होता बेशक बाद मे कितनी ही देर तक दिल धक-धक बोलता रहे मगर बहादुरी तो दिखा ही चुका होता। बाद म कई लडको से शाबाशी भी मिलती थी वाह कुन्दी वाह! शाबा (शाबाश) मजा आ गया। ओए फेर इक बारी (दफा) वैसा करके दिखा दे। सुखू क्या उसका बाप भी तुझे पकड नही सकता ।

इन्ही कारणो से मुहल्ले के कई बडे लडके भी उसे कुन्दन या कुन्दन कृष्ण भी पुकारने लगे थे। तब वह अपने इस 'ऊँचे दर्जे' से बहुत पुलकित अनुभव करने लगता था।

शुरू से ही उसके जिस्म से, गलत बातो के विरुद्ध, चिगारियाँ-सी फूटन लगती थी। और सही अवसर देखते ही वह उन चिंगारियो को आग मे तब्दील करन मे देरी नही करता था। मगर अब ? उसके मुह से एक आह निकल गयी। वह तिल मिला उठा।

मुसलमाना न उसे घर से ही बाहर धकेल मारा । किस हसरत से एक एक पौधा रोप रोपकर अपना बगीचा तैयार किया था। हर सुबह उठते ही आँखें मलता हुआ, पहल बगीचे मे घुसता था। एक-एक बीज-पौधे की प्रगति का बडी बारीकी

से निरीक्षण करता था। उन्हें बढ़ता देख कितना खुश होता था। हाए अब वह अपने प्यारे बगीचे को कभी नहीं देख सकेगा। उसके इतन सुन्दर एलबम, पुराने जमाने के इकट्ठे किये हुए सिक्के और टिकटें सब गयी। चाचा, मामा, खूब प्यार दुलार करने वाली ताई। हम उम्र दोस्त रिश्तेदार और बाउजी पता नहीं।

वह रोने रोने को हो गया। साथ ही अपनी बेबसी पर गुस्सा भी आने लगा। मन ही मन वह मुसलमानों को गालियाँ भी देन लगा। उसने गाली देने से अपने को रोका। बड़ों ने बताया था दूसरों को गाली देने से खुद को लगती है।

मगर क्या यह गलत नहीं था। किसी को बैठे बिठाये उसके घर से हमेशा हमेशा के लिए खदेड़ देना। (चिड़िया को उनके घोंसले से उड़ाने पर, माँ कहती थी—पाप लगेगा।) उन्हें जान तक से मार डालना, क्या गलत काम नहीं है। फिर उसने गलत कामों का विरोध क्यों नहीं किया। ऐसे ही बस अपने को बड़ा तीस मारखाँ समझता है। इस लूट-खसोट के सामने, बिना किसी एक भी मुसलमान को एक थप्पड़ मारे वह कैसे भाग खड़ा हुआ है।

तो भी क्या है। अब वह मुसलमानों को मारेगा। गाड़ी में लोग यही कह रहे थे। यहाँ हिंदू, मुसलमानों को मार रहे हैं। जितना हमारा नुकसान हुआ है वह अब हिन्दुस्तान पहुँचते ही, मुसलमानों के घरों को लूटकर पूरा कर लेंगे।

तो क्या तू भी यही करेगा? अबे हट यह तो और भी बुजदिली है। सरासर घटियापन है। बंधे चोर को तो सभी घूसा जमा देते हैं।

चोर? वह फिर से सोचने लगा। इधर के मुसलमान चोर कैसे हुए? उधर, जिन्होंने चोरी की। सीनाजोरी की उन्हें तो कुछ कह नहीं पाये और बदला लेंगे यहाँ वालों से। ले लो भाई। निहत्थे की हर जगह मौत होती है। यहाँ भी, सुना है निहत्थे लोगों को शेखूपुरा में सरकारी टैंकों तक से रौंदा गया। अब यहाँ तुम भी रौंद डालो। खा जाओ गरीबों, कमजोरों, बेबसों को। यह कहाँ की बहादुरी है? बुजदिली है। निरी बुजदिली।

अपने इस सोच विचार पर कुन्दन को अपने बड़प्पन का अहसास हुआ। अगर वह न्याय अन्याय ऊँच नीच की बातें जानता समझता है तो वह छोटा कैसे हुआ। इसलिए घर वालों को चाहिए कि अगर उसे कुन्दन कृष्ण नहीं तो कुन्दन तो कहें ही। यह क्या? सबने कुन्दी कुन्दी लगा रखी है। और तो और हरिया तक उसे भापा (भाई) तो छोड़ कुन्दन की श्रेणी में नहीं रखना चाहता। तो लो

सबने देखा कुन्दन बैठ-बैठे खड़ा हो गया और अचानक ऊधम-चौकड़ी मचाता हुआ भाग खड़ा हुआ है।

कुन्दी कुन्दी आए कुन्दी पीछे से कई आवाजें उस तक आती रहीं। परन्तु

उसने किसी की परवाह नहीं की।

पहले तो उसके कदम स्टेशन की तरफ बढ़े, लेकिन उसने जसे अपने कदमो को चेतावनी देकर रोका। फिर स्टेशन, और जहाँ वे लोग बैठे थे, के बीच का एक रास्ता काटकर गोल सा बनाता भागता रहा। फिर सबकी नजरो से गायब हो गया। पर उसे अब भी लग रहा था। कुन्दी-कुन्दी की आवाजें, बडी बेचनी से घनी झाडियो, पेडो की ओट से निकल निकलकर उसका पीछा कर रही हैं। लेकिन वे आवाजें उसे लौटा न सकी।

छोटा भाई हरमिलाप, थोडी दूर तक सहमे कदमो से उसे इधर उधर ढूढ आया था। लेकिन बेकार।

माँ का कुछ बस न चला तो खडी हो गयी। अब उनकी आवाज जसे कही अटककर रह गयी।

अलका ने उन्हें तसल्ली दी—अभी अपने आप आ जायेगा। इतना छोटा तो नही। डरपोक भी है।

—परदेस मे भी वही हाल। दुख देती जी (दु ख देने वाला जीव) बडबडाती हुई वे धीरे धीरे फिर से चद्दर पर बठ गयी और माथा पकड लिया, पता नही किस्मत मे क्या लिखा है।

फिर वे सब चुप हो गये। शायद मन ही मन भगवान से हाथ जोडकर विनती करने लगे। धुधलके वातावरण मे उन सबकी आँखें अपने चारो ओर दूर-दूर तक घूमती रही।

समय धीरे धीरे आगे सरक रहा था। और अधेरा, आसमान से जसे रिस रिसकर जमीन पर फैल रहा था।

—वह देखो आ गया। हरमिलाप ने रोमाचित स्वर मे कहा। सबने देखा, दूर से एक छाया उन्ही की ओर बढी आ रही थी। हरमिलाप अँगुली उठाकर इसे ही सबको दिखा रहा था। उधर छाया भी दूर से ही उन्हे हाथो के इशारे से जमीन से उठ खडे होने का बार बार सकेत कर रही थी। जल्दी जल्दी।

थोडी फूली हुई साँस थी मनोज की। बोला—जल्दी उठो अम्बाला जाने वाली गाडी छूटने वाली है। वही चलेंगे।

कुछ क्षणो तक उनमे से कोई हिला-डुला तक नहीं और न ही कुछ बोला।

—मैं क्या कह रहा हूँ। सामान समेटो।

—भाजी कुन्दी भाग गया। हरिया ने जीभ होठो पर फिराते हुए भयातुर स्वर मे कहा।

—कहाँ ? इस वक्त मनोज ने इधर उधर नजर दौडायी।

माँ ने मनोज की घबराहट को भाँपा और बोली—भागना कहाँ है। बच्चे हैं। शरारतो से बाज नहीं आते। इन्हें वक्त का भी होश नही रहता। जाकर जरा

देख। मिल जायेगा।

पर गाडी तो हमारा इन्तजार नही करेगी। वह तो समझो गयी। वहाँ सब मारा मारी है। इसीलिए इतना हो होल्ला हो रहा है।

—तू गाडी पकडेगा या भाई को ढूंढेगा। जमना का स्वर घोर निराशा में डूबा हुआ था, जो छूट गये सो छूट गये। इसे तो हम साथ लाये थे। पराई धरती का क्या भरोसा मेरे साईं रक्षा करना।

मनोज तेजी से वहाँ से चल पडा।

कुन्दन शुरू शुरू मे जब स्टेशन की ओर बढा था तो उसके मन मे एक सहज उत्सुकता थी कि अब जरा ढग से देखे तो सही कि उसके पहले से देखे हुए रेलवे स्टेशनो से यह स्टेशन किस किस स्टेशन से मेल खाता है। दूर से तो उसे सभी रेलवे स्टेशन एक से ही लगते थे। फिर वहाँ पहुँचकर बडी बारीकी से वह उनका निरीक्षण विश्लेषण करता। वेटिंग हॉल प्राय सभी के एक जैसे। मेन-गेट भी सभी के बीचोबीच। अन्तिम छोरो पर प्लेटफार्मों की ढाल। पीछे की ओर कहीं कम तो कही कुछ ज्यादा क्लास थी क्वाटर क्लास फोथ क्वाटर। हाँ अन्तर होता, दफ्तरो के क्रम का। प्याऊ, टी स्टाल्स का। कही बुक स्टाल होता। कही बिलकुल नही होता। खास समानता की बात हर कही यही होती—धुआ छोडता काला कलूटा मोटा इजन, आठ-बारह डिब्बो को खीचता हुआ प्लेटफाम पर आ खडा करता। फिर बडे-बडे आदमी भी डिब्बो की दो राडो को पकडकर उसकी गोदी मे ऐसे चढते जैसे वह अपने मामा, चाचा की बाँहे पकडकर उनके कधे तक जा पहुँचता था।

मगर स्टेशन का यह नजारा देखने से उसे डर लगने लगा एक तो उसे प्लेट फॉम पर देखी लाश की याद हो आयी। दूसरा भाजी का डर। स्टेशन की ओर से वह वापस होकर गोलाकार ढग से भागता रहा। फिर अचानक उसकी नजर एक ऐसी हलवाई की दुकान पर पडी जो पहलवान की दुकान से मिलती-जुलती थी। मगर आगे जो गली जा रही थी वह कुन्दियाँ की मन्दिर गली की तरह थी। इस हिसाब से आगे दो गलियाँ मुडकर 'बाहरी दी हटटी' आ जानी चाहिए, उसने कल्पना की और उधर ही किसी 'बाहरी' की दुकान की तरफ बढता चला गया।

आगे बढने पर उसे बस स्टैण्ड दिखायी दिया। एक दो बसें वहाँ ठहरी, कुछ यात्रियो को उतारा कुछ को चढाया और आगे बढ गयी। यात्रियो के सामान ढोने के लिए वहाँ बहुत सारे लडके और वृद्धो का ताँता लगा था। एक वृद्ध को कुन्दन ने गिडगिडाते स्वर मे कहते सुना—जो मर्जी हो दे देना बादशाहो। बच्चे नीदे रैहन। यात्री ने उसके सिर पर सामान रख दिया तो एक दूसरा मजदूर बडबडाया —इन रिफ्यूजियो ने तो हमारा धधा ही चौपट कर दिया। जो मिल जाये उसी में तैयार।

साथ ही एक हलवाई अपनी दुकान की चौकी पर बैठा था। बोला—पता नहीं, क्या हुआ जो अपने वतन मे खुद बादशाह थे, अब टके टके के मोहताज। वाह गुरू।

कुन्दन उसी दुकान के बाहर पडी बैंच पर बैठ गया। उसने वहाँ से एक कप चाय और एक प्लेट नमकीन सेवियाँ ली।

अभी उसने मुश्किल से आधा कप ही चाय पी थी कि नजदीक ही थरथराती आवाज के साथ आकर ट्रक रुका। ड्राइवर ने मुह खिडकी से बाहर निकाला। वह बडे उतावलेपन मे चिल्लाया—भाइयो मदद करो। हस्पताल किधर है? टक मे से रोने और कराहने की आवाजें आ रही थी। सभी आस पास के लोग उधर ही लपके। हलवाई भी अपनी चौकी से नीचे कूदा और टक पर चढ गया वही से उसने अपने नौकर को आवाज लगायी—ओए मुडू जल्दी आ। ड्राइवर साब दे नाल (साथ) बैठ जा। हस्पताल दा रस्ता दस (बता)। तोड (ठेठ) पहुचा आ।

लडके के ट्रक मे बैठते ही हलवाई नीचे उतर आया और फिर उछलकर अपनी (गद्दी) पर आ बैठा। कुछ और लोग भी ट्रक के रवाना होने ही उस पर चढ गये थे।

यह सब अजूबा कुछ ही मिनटो मे कुन्दन की आँखो के सामने से एक दु स्वप्न की भाँति गुजर गया। वह फटी फटी सी निगाहो से हलवाई की तरफ देखने लगा। हलवाई न इस लडके की आँखो में भय मिश्रित जिज्ञासा को पढ लिया और बोला —क्या सोच रहे हो। कहा के हो?

कुन्दन जैसे पशोपेश मे पड गया। एकाएक उससे कोई उत्तर नहीं बन पडा। बस—'हाँ जी' कहकर रह गया।

दुकानदार उसे आश्चर्य भाव से देखने लगा—क्या अकेला है।

इस पर कुन्दन ने न मे सिर हिला दिया। फिर जरा रुककर धीरे से पूछा —ट्रक मे कौन थे।

दुकानदार ने कहा—पाकिस्तान से हिन्दुओ को लेकर आ रहा था। रास्ते मे हमलावरो ने लूट लिया और घायल कर दिया। दो तीन जनो मे तो दम ही नही लगता था।

—कहाँ से? कुन्दन सहम गया।

—शोरकोट और लायलपुर का जत्था था।

—मुझको दिखाओगे भाये? (भाई) लायलपुर मे मेरी बहन जी जीना जी रहते हैं। कहते कहते कुन्दन का स्वर रोने वाला-सा हो गया।

—तो चल भाइया। हस्पताल साथ ही है। उसने साथ के दुकानदार से जरा दुकान देखते रहने को कहा कि तब तक उसका नौकर वापस आ ही जायेगा।

वह हलवाई कुन्दन को अपनी साइकिल के डण्डे पर बिठाकर अस्पताल ले

गया। कुन्दन ने यहां मे कुछ घायलो को बिस्तरों पर और कुछ को जमीन पर पड़े पाया। डॉक्टर, नर्स तेजी से सबकी जांच म लगे हुए थे। एक नर्स न हलवाई से कहा—किसे देख रहे हो लाला जी ?

हलवाई ने उसे बताया—इस लड़के के रिश्तेदार लायलपुर मे रहते हैं। जरा घबरा गया है। नर्स ने उन्हें सब लोगो के चेहरे जल्दी-जल्दी दिखला दिये साथ ही यह भी कहा—इन हाथो टांगो की तरफ ध्यान मत देना। हमों से ही नहीं देखा जाता। यह बच्चा तो और भी घबरा जायेगा।

वहां वार्डों के एक दो चक्कर काटकर वे दोनों फिर दुकान पर आ बैठे। हलवाई, अबकी उसे दुकान के अन्दर ले गया—अब तो तसल्ली हो गयी।

—हां, कुन्दन ने बड़ी उदासी से कहा, हमारे घर वाले न सही किसी के घर वाले तो थे ही।

—तू है तो छोटा-सा, पर बातें बड़ी-बड़ी कर लेता है। यहां तो भाया दूसरे चौथे रोज यही नजारा देखने को मिलता है। अमृतसर और नजदीक के स्टेशनों के अस्पताल पहले से भरे पड़े है, जगह नही होती तो यहां ले आते हैं। यह तो कुछ भी नही, हलवाई ने लम्बी सांस खींची, मैं तुझे बताता हूं, दो ट्रक तो मैंने खुद पूरी लाशो से भरे हुए देखे। औरतो, बच्चियो के अगो की बात तुमसे क्या बयान करूं। तुम छोटे-से बच्चे के सामने वह सब कहा ही नही जा सकता।

—और इधर से भी आपके लोग यही करते है। कुन्दी ने थके स्वर में पूछा।

—हां, यही तो बताने लगा हूं। इधर से भी ऐसे ही।

—यह तो बहुत गलत बात हुई।

—गलत क्या बहुत ही गन्दी बात। तू मान या न मान। पहले इधर से ऐसे जुल्म नही होते थे। बाद मे इधर से भी सिखों और संघ वालो की तरफ यह सब होने लगा। तभी यही जाकर उधर से अब हमारे लोग कुछ कुछ बचकर आने लगे हैं। सामान तो जरूर लूट लेते हैं। जख्मी करने से अब भी बाज नही आते।

—ऐसा करने वाले लोग यह क्यो नही सोचते कि इसमे इन लोगों का क्या कसूर है ?

—यहां पर एक लड़का है चड्ढा। लोकल अखबार निकालता है। मुझे तो उसकी लिखी बात भाई। उसने पूछा था—इन सब लूट खसोट, दंगे फसादो का असली कसूरवार कौन है ? वह आगे लिखता है। असली कसूरवार हैं, चोटी के कुछ लीडर जिन्होने अपनी बादशाहत हासिल करने की खातिर अपने मुल्क को ही बांट खाया। उसे दो हिस्सो मे तक्सीम कर दिया। इससे गुण्डों लुटेरो और छुटभये राजनीति करने वालो की बन आयी। अब जिसे आंसू बहाने हैं बहाते रहो —क्या होता है।

—बात तो समझ मे आती है। बिलकुल यही बात है।

—अरे तुम तो बडी बडी बातें बडे आराम से समझ लेते हो, उसने प्यार से कुन्दी का हाथ अपने हाथ मे लेकर कहा—लगता है अभी से तेरा बचपन तेरे से छिन गया।

इस वाक्य को सुनकर कुन्दी सचमुच बहुत भावुक हो उठा। कहने लगा—चाचा मेरे बहुत से दोस्त बिछड गये। पता नही बचकर आयेंगे भी या नही। पर मजूर, शकील, मजीद और शौकत कसे मिलेंगे।

—सब्र रखना पडता है काके। दुनिया मे बहुत उलट पुलट होता रहता है।

—चाचा तुम्हें बताऊँ, मैं बहुत अच्छे-अच्छे स्टेशनो पर रहा हूँ। कराची सक्खर, रावलपिण्डी, कुन्दिया, पेशावर, शेखपुरा। वहाँ की गलिया, बाजार, बाग मुझे बहुत अच्छे लगते थे। पेशावर का तो मैं कभी भूल ही नही सकता। वही मैंने थोडा बहुत होश सम्भाला। अपने को लुढकते खिसकते पाया। सब एक जैसे रेलवे क्वाटर। किसी का भी दरवाजा खट खट कर दो। किसी भी कमरे, रसोई मे चले जाओ। बहुत सी चाचियाँ, मासियाँ थी। बहुत-कुछ खाने को दे देती। चाची हसो चाची प्रकाशो से कहती—ले यह फिर आ गया। वारी जावाँ। माँ कहती हैं—तेरा जन्म यही इन्ही क्वाटरो मे हुआ था। फिर सक्खर बदली हो गयी। फिर अब यहाँ पेशावर आ गये। नौकरी वालो का क्या। पेशावर मे बाहरी हलवाई की दुकान मुझे बहुत अच्छी लगती थी। उसे ही ढूढते-ढूढते यहाँ आपकी दुकान पर आ पहुँचा। स्टेशन से एक जैसा रास्ता लगा था।

—तब तो मैं गलत कह गया था। तुम्हारा बचपना तुमसे सारी उम्र कोई नही छीन सकता। ह हैं वह जैसे अपने ही विरोधी मूल्याकन की थाह लेने के लिए हँसा।

कुन्दन उसे बडी गम्भीरता से देखने लगा।

वह बोला—तुम भी हँसो। बिना हँसे जिया ही नही जा सकता। असली न सही नक्ली हँसी। बनावटी हँसी। अपने लिए नही तो दूसरो के लिए। दूसरो पर, अपने ऊपर हँसते चले जाओ फिर देखो जिन्दगी का लुत्फ। इस बँटवारे से कुछ पहले ही मैं सरगोधा से इधर आ गया था। मैं एक हलवाई की दुकान पर नौकर था। मालिक डाँटता रहता था। मैं हँसता रहता था। इसी हँसने पर एक बार मालिक ने कुछ ज्यादा ही डाँट दिया और मैं कुछ ज्यादा ही हँस दिया। वह समझा मैं उसका मजाक उडा रहा हूँ। लो हो गयी छुट्टी। पढना लिखना मैंने कभी नही छोडा था। फिर सोचा दुकान हो तो हलवाई की हो। अब देखो वही मालिक पूरी तरह लुट-लुटाकर मेरे पास आया और कहने लगा—मुझे अपनी दुकान पर नौकर रख लो। यह भी कोई बात हुई। मुझे हँसी आ गयी। उसे अपमान जैसा लगा। मैंने उसके पाँव पकड लिए। चाहा तो चलो चलायी यह दुकान सँभाल लो। पर मुझसे यह पाप न कराओ। बडी मुश्किल से उसे डेढ हजार

रुपये उधार के नाम पर देकर दिल्ली भेजा कि अपनी किस्मत आजमाओ। पर मुझे लगता है वह अपने और किसी नौकर का नौकर ही बनेगा। उसका मनोबल पूरा टूटा हुआ था। ऐसी मिसालें हैं। रंक से राजा। राजा से रंक। अपनी जिन्दगी के उतार चढ़ाव की दास्तानें, फिर कभी मिले तो जरूर सुनाऊँगा। मेरा पता नोट कर ले। जहाँ कहीं ठिकाना बने चिट्ठी डाल देना। लछमन हलवाई, बस स्टैण्ड के पास, लुधियाना। अब तू जल्दी उठ तुझे पहुँचा आऊँ।

कुन्दन ने अस्पताल के रास्ते उसे संक्षेप में अपने तथा अपने परिवार वालों के बारे में सब बता दिया था।

कुन्दन बोला—आप तकलीफ न करो चाचा। मुझे स्टेशन का रास्ता बता दो आगे मैं खुद पहुँच जाऊँगा।

—तकलीफ वाली कोई बात नहीं। चल थोड़ी दूर तेरे साथ होर (और) यारी सही।

वे जरा सा ही आगे बढ़े थे कि कुन्दन भययुक्त स्वर में बड़बड़ाया—भ्राजी ! और मारे डर के भागने लगा।

मनोज ने भी कुन्दन को देख लिया। वह तेज कदमों से आगे बढ़ा। आते ही कुन्दन की गर्दन दबोच ली। इससे पूर्व कि लछमण हलवाई कुछ बीच-बचाव करता, उसने दो तीन तमाचे कुन्दी के गालों पर जड़ दिये।

—सोरी देया, किथे घर जवाई बन बैठे। (सुसर, कहाँ पर घर जमाई बनकर बैठ गया।)

तभी लछमण हलवाई ने मनोज के कंधों को अपनी मजबूत हथेलियों की गिरफ्त में ले लिया—बस बस बहुत हो लिया।

कुन्दन सहमा हुआ था। दाँतों और होठों का दमन आपस में जकड़ लिया था ताकि सरेआम रुलाई न फूट पड़े।

मनोज ने फिर उसकी टाँग खींची—क्यों हम सबको जलील करने पर तुला हुआ है।

अब तो कुन्दन की रुलाई फूट पड़ी। उसे लछमण हलवाई की उपस्थिति का अहसास जाता रहा—सच भ्राजी। मुझे हर वक्त आपका फिक्र सताता रहता है। आप लायलपुर गाड़ियों की तलाश में निकलते थे। मैं आग की लपटों को ऊँचा उठता हुआ देखता था। गोलियाँ चलने की आवाजें सुनता था। मेरा दिल धक धक करता था। अब मैं कहीं भी आपसे ज्यादा दूर नहीं रह सकता। अब वह सुबकते हुए धीरे धीरे बोलता रहा, मुझे डर था कि आप कहीं भीड़ में नयी जगह हमसे खो न जायें।

मनोज ने उसे उठाकर कंधे से लगा लिया था और पुचकार रहा था—इस तरह पागल नहीं बनते। ऐसे काम नहीं चलेगा। पता नहीं अभी हमें और कितनी

मुसीबतों का सामना करना है। अभी तो शुरुआत है। बहादुरी से काम लो।

यह दृश्य देखकर लक्ष्मण हलवाई का स्वर भी कुछ आद्र हो उठा। बोला—जिन्दगी जीने के लिए हमेशा ही बहादुर बनने की जरूरत होती है और याद रखो, हमेशा एक से दिन तो रहते नहीं। फिर मनोज से मुखातिब होकर बोला—तुम्हारा भाई बहुत जजबाती है। देर इसलिए हो गयी कि एक ट्रक जख्मी लोगों का लायलपुर से आया था, उसे ही देखने हम दोनों अस्पताल चले गये थे।

—पागल है। इतनी जल्दी कैसे आ सकते हैं हमारे रिश्तेदार

मनोज की बात को बीच में टोकते हुए लक्ष्मण ने कहा—खैर इसकी तसल्ली हो गयी।

कुन्दन ने हलवाई से भ्राजी का परिचय करवाया। फिर दोनों भाई चलने लगे तो लक्ष्मण ने कहा—इस लड़के ने तो मुझे अपना बना लिया। अच्छा हो आज रात हमारे घर रह जाओ।

मनोज ने कहा—हमारा कुछ पता नहीं। क्या पता रात को ही कोई गाड़ी रवाना हो जाये। इसलिए स्टेशन के पास ही बैठे हैं।

—मैं खाना पहुंचा जाऊँगा। इन्तजार करना।

—क्यों तकलीफ करते हैं।

—मैंने कहा ना, मेरा इंतजार करना।

दोनों भाई चल पड़े। रास्ते में एक बिसाती की दुकान आयी। वहाँ पर कुछ खिलौने भी सजे हुए थे।

मनोज ने कहा—अपनी मनपसन्द की कोई चीज ले ले।

—नहीं, नहीं, कुन्दन ने सिर हिलाते हुए कहा, मुझे कुछ नहीं चाहिए।

—कुछ तो ले ले यार।

कुन्दन ने दुबारा नहीं कहा, लेकिन शीशे के शो केस में सजी चीजों में उसकी निगाह माउथ आर्गन पर ठहर गयी।

मनोज ने उसे झट से माउथ आर्गन दिलवा दिया—और बोला—एक हरिया के लिए भी ले ले।

—नहीं वह तो बाँसुरी अच्छी बजाता है अब कुन्दन की आवाज खुलने लगी थी। उसने अच्छी तरह देखकर एक बाँसुरी छाँट ली।

उनके पेड़ के पास पहुँचते ही माँ कुन्दन पर चिल्लाने लगी—सत्यानाश करा दिया तूने तो। अच्छा मौका था। अब तक हम अम्बाला के लिए निकल चुके होते। तुम कम्बख्त को ढूढ़ते ढूढ़ते गाड़ी निकल गयी। इधर तो आ, उन्होंने उसे पकड़ने के लिए हाथ आगे बढ़ाया।

—बस बहुत हो लिया भाभी, मनोज ने माँ का हाथ प्यार से थामते हुए कहा — पागल है नालायक, पर दिल का बच्चा। इसने सुना सायलपुर से कोई जत्था आया है जख्मी लोगों का। उन्हीं को देखने हास्पिटल जा पहुँचा। और एक हलवाई से दोस्ती भी कर आया। वह शायद खाना लेकर आ जाये।

—हैं जमना बुरी तरह से चौंकी उसने पहले ही वाक्य की ओर अधिक ध्यान दिया। राम राम, ओए अच्छी तरह से देख आया ना।

—हाँ भाभी। बहुत अच्छी तरह से। फिर भ्राजी कहते हैं, इतनी जल्दी कैसे चल सकते हैं वे। अभी तो उनका कोई प्रोग्राम ही नहीं था। कुन्दन ने उत्तर दिया।

—यह तो तूने बड़ी बहादुरी दिखायी। जमना बोली।

इस पर हरिया ने तपाक से कहा—यह, ओर बहादुर, गुलेल से इससे एक भी चिड़िया तो नहीं मरती।

—अबे ज्यादा चें चें बन्द कर और यह ले बाँसुरी और मौज मार।

हरिया बाँसुरी पाकर चमक उठा। उसे बजाकर 'इक शहर की लौंडिया, नैनों के तीर चला गयी, दिल को निशाना बना गयी।' गाना निकालने लगा।

—शम नहीं आती, गन्दे लोफरों वाले यह गाने तो फौरन सीख जाते हो। मनोज ने डाँटा।

मगर इस डाँट से तो उलटा हरिया का उत्साह बढ़ गया। खुशी से बोला—वाह तो आपने मेरी निकाली हुई तर्ज पहचान ली। शाबाश हरमिलाप, वह अपने हाथ से अपनी पीठ ठोकने लगा—बिलकुल ठीक बजा लेता हूँ ना।

इस पर सब हँसने लगे। मनोज ने उसे प्यार से चपत लगायी।

कुन्दन ने अब भ्राजी का मूड देखकर पूछा—अम्बाला में हमारा कौन रहता है?

—कोई भी नहीं। मनोज ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

—तब फिर हम वहाँ क्या जायेंगे?

—क्यों तंग करते हो ऊल जलूल सवाल करके, बहन अलका ने बड़े भाई तथा माँ की उखड़ी उखड़ी मनःस्थिति को परखते हुए कुन्दन को मीठी झिड़की दी—बच्चों का काम होता है कि ऐसे काम करें, ऐसी बातें करें कि बड़ों का दिल खुश रहे।

—शादी के बाद तू भी तो बड़ी हो गयी है। तेरी भी पछ बनकर घूमे। कुन्दन ने कहा।

मनोज ने उसे घूरा तो कुन्दन को अभी थोड़ी देर वाली लताड़ याद आ गयी। वह सहम गया।

—भ्राजी आप अपना काम करो, अलका ने मनोज से कहा। अब तक अलका

की तबीयत काफी सम्भल गयी थी—हम लोग ऐसे ही खेल रहे हैं।

इस पर कुन्दन का हौसला बढा। वह अलका से लिपट गया—हाँ तो प्यारी भैन जी बताओ ना। हम अम्बाला क्यों जायेंगे?

कुन्दन की देखा-देखी हरिया भी दीदी स सटकर बैठ गया।

अलका ने बडे लाड से दानो भाइयों से कहा, तो सुनो मेरे वीरो, जैसे कोई कहानी सुना रही हो—जो जो लोग यहाँ हिन्दुस्तान आते जायेंगे। अपना अपना नया ठिकाना, काम ढूढेंगे। भगवान सबकी मदद करता है। जो महनत करता है उसे काम मिलता है। तुम लोग पढाई छोडकर आये हो, तुम्हें नये स्कूल में दाखिला मिलेगा। जो वहाँ जिस चीज की दुकान करता था, यहाँ वैसी दुकान खोलेगा। हमारे बाउजी, भ्राजी रेलवे मे नौकरी करते थे। यहाँ उन्ह रेलवे मे नौकरी मिलेगी। अम्बाला मे रेलवे रिफ्यूजियों का कैम्प लगा है, वहाँ से नये स्टेशनो के आर्डर जारी होंगे।

—और हमारे जीजा को? हरमिलाप ने पूछा।

—अरे वह तो मिल्ट्री मे है। उन्ह यहाँ की सरकार मिल्ट्री मे ही जगह देगी। —यह कहते कहते अलका थोडी अटक गयी—बस वह पहल आ जायें।

मनोज ने बहन के स्वर को समझा। उसका हौसला बढाने के लिए कहा—अब तो सभी जल्दी जल्दी आ रहे हैं। हम लोग अम्बाला कम्प से उनके बारे म पता लगा लेंगे।

—तो हम लोग रहगे कहाँ? कुन्दन ने पूछा।

मनोज ने उत्तर दिया—जब तक पोस्टिंग नही होती, हम लोग वहाँ टन्टो म रहेंगे। यही सब तो मैं पता करके आ रहा हूँ। तब तक तू गायब। उधर अम्बाला की गाडी गायब। मनोज ने जान बूझकर ठहाका लगाया।

कुन्दन ने भी ठहाका लगाया—अरे वाह, खूब मजे रहेंगे, वह उछलने लगा, टैन्टो मे बडे मजे आते हैं। मैं स्कूल की तरफ से शाहदरा (लाहौर के पास) स्काउट कैम्प मे गया था। पता है, वहाँ हम ट टो मे रहते थे। वहाँ मैंने एक नज्म भी पढ़ी थी इस पर हैड मास्टर साहब ने मुझे इनाम भी दिया था। रोज-रोज कितने खेल होते थे। सुनाऊँ वह नज्म।

—ओए अम्बाला के टैन्ट मे सुनाना, हरिया ने उसकी टाँग खींची।

यह वार्तालाप सुनता हुआ लक्ष्मण हलवाई आ पहुँचा। कहने लगा—तुमने तो पुत्रो यहीं कम्प लगा रखा है। जीत रहो। नमस्त बहन जी, उसने जमना को सम्बोधित किया। अलका के सिर पर हाथ फेरा, लो यह टिफन, पहले आराम से खाना खा लो। मैंने तो कहा था। घर पर ही आ जाते।

जमना ने कहा—आपने भाई साहब ऐसे ही तकलीफ की, पर देखो परदेस मे भी अपने तो मिल ही जाते हैं। आप क्या इधर के ही रहने वाले हो।

—पहले उधर सरगोधा में रहता था। गंगाराम हलवाई के पास काम करता था। मैं आपके कुन्दन से वही पुरानी बातें करता रहा।

—क्या केतकी को जानते हो ?

—हाँ क्यों नहीं। हमारे मालिक के रिश्ते में थी। आप कैसे जानती हैं बहन जी।

—हमारे भी दूर के रिश्ते मे पड़ती है। बच्चा की मुहबोली बुआ। फिर तो आप जानते ही होंगे उसे ससुराल वालों ने घर से निकाल दिया था।

—जानता क्यों नहीं बहन जी। मुकदमा हुआ। ससुराल वालों को झक मार कर केतकी को घर में रखना पड़ा था।

—केतकी हिम्मत वाली लड़की थी। उसने बड़े कष्ट उठाये थे। बाद में बहुत पढ़ लिखकर मास्टरनी बन गयी। जमना का स्वर भावुक हो चला था, अब हम सभी घर से बेदखल हो गये।

—सब्र करो बहन ऊपर वाला सब देखता है। लक्ष्मण ने उन्हें दिलासा दिया। वेटिंग रूम के नल से उनके लिए पानी भर लाया। सबको अपने सामने खाना खिलाने के बाद चलने से पहले याद दिलाया—मेरा पता कुन्दन के पास है।

जमना उसे तथा उसके घर वालों को आसीसें देती रही।

पूरे चाँद की रात थी। कुन्दन और मनोज उसे कुछ दूरी तक छोड़ने गये। वापस आकर फिर गुमसुम से बैठ गये।

कुछ देर में ही कुन्दन बोल उठा—प्राजी अब अम्बाला गाड़ी कब जायगी।

—कुछ पता नहीं। आजकल किसी चीज का कोई ठिकाना नहीं। गाड़ियों का हाल भी बेहाल है। तूने तो सूअर बेड़ा गर्क करा ही दिया। अब मेरा पीछा मत करना। अभी पता करके आता हूँ।

मनोज स्टेशन की तरफ बढ़ गया और पाँच मिनट में ही वापस आ गया। बोला—भाभी ! सुना है आज रात तो शायद सिर्फ फिरोजपुर ही गाड़ी जाये। अम्बाला वाली गाड़ी की उम्मीद कम है।

—ऊँह कहकर जमना किसी गहरी सोच में पड़ गयी।

मनोज चुपचाप अँगुलियों से अपने बालों में कंघी करने लगा। कितनी ही देर तक यही करता रहा।

—एक बात मैं सोचती हूँ पुत्तर, जमना ने मनोज को सम्बोधित किया, फिरोजपुर में ही तो अलका की ननद का घर है। उनका पता तो तेरे पास होगा ?

—सचमुच भाभी, यही सब तो मैं भी सोच रहा था, मनोज ने गम्भीरता से उत्तर दिया, पता तो सब लगा लेंगे।

माँ ने फिर से अपनी बात का क्रम जोड़ा—हाँ यही बात ठीक रहेगी। अलका तो अब उन लोगों की अमानत है। इस बेचारी को इस हाल में क्या अपने

साथ साथ जगह जगह के धक्के खिलाते फिरें जबकि

—हूँ अलका ने लम्बा स्वर निकालकर उन्हें बीच में ही टोक दिया, क्यों यह क्या योजना तैयार की जा रही है। अब मैं आप लोगों को भार लगने लगी हूँ।

—पराइयाँ होकर भी बेटियाँ पराइयाँ नहीं होतीं। न कभी माँ-बाप पर भार, जमना ने लम्बी साँस खींचते हुए कहा—पर तू वक्त को तो समझ। तेरा तो वहां एक तरह से घर है। तेरी निनाण (ननद) वहाँ रहती है।

—न मैं इस मुसीबत की घड़ी में अपने भाइयों को छोड़कर कहीं अलग रह ही नहीं सकती। मेरा मन कहीं नहीं लगेगा। अलका का स्वर एकदम रुआँसा हो आया।

—पगली ना बन। हम तुम्हारी भलाई की ही बात सोच रहे हैं। मनोज ने उसके कंधों पर हाथ रखकर उसे समझाना चाहा।

—मुझसे जान छुड़ा रहे हो ना। अलका एकाएक रो पड़ी।

—देख है न पगली छोएर (छोकरी)। हम भला कब तक तुझे अपने पास रख सकते हैं। भगवान् करे, जल्दी तेरा आदमी आये और हमारे कलेजे में ठण्ड पड़े। जब तक वह नहीं पहुंचता तू वहां अपनी निनाण के घर पर आराम से दिन गुजार लेना, माँ अलका के सिर पर हाथ फेरती रही, चुप हो जा। निक्की न बन।

अलका कुछ देर रो लेने के बाद चुप हुई और बोली—एक बात कहती हूँ। चलने को एक बार बेशक फिरोजपुर चल चलो। उनको अपने हिन्दुस्तान आने की सूचना दे दो ताकि उन्हें पता तो रहे। पर मैं उनके पास रुकूंगी हरगिज नहीं।

आखिरकार यही तय हुआ कि रात को जो भी गाड़ी पहले मिले, उसी में बैठ जायेंगे। इस प्रकार उन्होंने अपने आपको पूरी तरह से किस्मत के हाथों में सौंप दिया। और यह भी सोच लिया कि अगर फिरोजपुर पहुंच गये तो वहां भी अलका पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डालेंगे। हाँ, उसका दिल वहाँ लग गया तो, उसे वहीं छोड़ देंगे। वरना जहाँ जायेंगे अपने साथ ले चलेंगे।

इस निर्णय समिति में इन बच्चों को शामिल नहीं किया गया। वे दोनों बड़े ध्यानपूर्वक कान लगाकर आगामी योजना के विषय में सुन रहे थे। इस बात का उन्हें मलाल था कि उनकी कोई राय नहीं ली जाती। या तो उन्हें अपने इशारों पर चलाया जाता है या फिर झिड़क दिया जाता है।

—तो बोल हरिया किधर को गाड़ी पहले जायेगी?

हरिया बोला—फिरोजपुर।

—क्यों। कुन्दन ने पूछा।

—वहाँ फिरोजशाह जफर रहता था। उसका मकबरा देखेंगे।

—मक्क उल्लू। कौन से मास्टर साब का पढ़ा हुआ है।

—तो तू क्या अम्बाला जाना चाहता है?

—बिलकुल। सौ फीसद।

—क्यों ?

—अपन वहां राजाओं की तरह टैंटों में रहेंगे। रात को स्काउटों वाली सीटी बजायेंगे। मस्ती रहेगी मस्ती।

—तो तू लोगों की नींद हराम करेगा ?

न चाहते हुए भी जमना के मुंह से निकल ही गया। हमारे जैसों की नींद तो वैसे ही हराम हुई पड़ी है।

दोनों भाइयों ने इधर ध्यान नहीं दिया। एक कहता अम्बाला दूसरा कहता फिरोजपुर।

तो हो जाये फसला, कुन्दन ने जेब से जाज पंचम वाला एक पैसे का तांबे का सिक्का निकाला—मना लें अपने रब नू (को)।

—या इलाही बाशा (बादशाह) हरिया बोला। सिक्का उछलता हुआ नीचे गिरा तो बादशाह नहीं आया। हरिया बोला —तूने बेईमानी की है। उछाला ही ऐसे कि बादशाह नहीं आये।

—अच्छा तो तू उछाल ले। कुन्दन ने कहा—अल्लाह सन। सचमुच सन आ गया। तो हरिया बहुत बुरी तरह से बिगड़ उठा। कहा—तू पक्का बेईमान है। जब हवा में सिक्का लहरा रहा था तो तू उसे घूर रहा था। ऐसे तो सन आयेगी ही।

—वाह शाबाश बच्चू, कुन्दन ने कहा, अबकी मैं फिर उछालता हूँ। तू पैसे को घूरते रहना।

—हाँ ठीक है। उछाल। हरिया ने कहा।

अब की सिक्का दूर किसी झाड़ी के पीछे चूहे के बिल में जा गिरा। दोनों भाई ढूंढते रहे। पैसा मिला नहीं।

कुन्दन ने कहा—तेरी नजर काली है। नुक्सान करा दिया।

हरिया ने कहा—सिक्का हमसे पहले फिरोजपुर चला गया।

कुन्दन ने फिर प्रतिवाद किया—नहीं वे वह तो अम्बाला गया। अम्बाला। फिरोजपुर। अम्बाला। फिरोजपुर। अम्बा। अम्बा। फिरोज। फिरोज की आवाजें आपस में टकराने लगी।

बड़े भी बड़ी रुचि से बच्चों का यह खेल देख रहे थे। और बहुत सूक्ष्म रूप से उनके मन में, यही समा रहा था कि शायद बच्चों का यह खेल ही उनके आगामी गन्तव्य का निर्णय कर दे। उनके भाग्य को कोई सही गति दे दे।

मगर अब इस शोर शराबे से वे ऊबने लगे थे।

जमना खीजे हुए स्वर में बोली—बन्द करो यह झक-झक। तुम्हारा पैसा टूटी हुई जमीन में गर्क हो गया। टूटी हुई जमीन में सीता माई समा गयी थी।

जब जमीन टूटती है तो उसमे शहरो के शहर गक (तबाह) हो जाते है।

मनोज ने अलका को धीरे से कहा—देख हमारी भाभी फिलासफी पढा रही है।

जमना ने सिफ आह खींची और बच्चो से कहा—अब चुपचाप सो जाओ। जब कोई गाडी आयेगी तो उठा देंगे।



बेदी साहब द्वितीय श्रेणी के अफसर थे। पिछले कई वर्षों से लाहौर मे जमे हुए थे। अनारकली बाजार के निकट एक अच्छा पलट ले रखा था। पत्नी यशोदा, दो पुत्रियाँ तोपी और जीतो, आठ और सात वष की। और चार वष का लडका मुक्कू। यही बेदी साहब का परिवार था। वे जुबान के बहुत मीठे, व्यवहारकुशल आदमी थे। दुबले पतले और फुर्तीले। रग गोरा। बस ऊपर के होठ पर काला दाग था जिसे वे अपनी बडी-बडी काली मूछो से छिपाने का प्रयत्न किये रहते। मिल्ट्री को माल सप्लाई करने वाली किसी बडी फम मे सुपरवाइजर के पद पर कायरत थे। अपने अच्छे पद के अतिरिक्त वे होम्यापैथी का मुफ्त इलाज करते थे। हाथ मे कुछ ऐसी शफा थी कि आस-पास के तमाम लोगो के अलावा आला अफसर भी अपने को उनका अहसानमन्द मानते थे।

उन दिनो आजादी के चर्चे बडे जोर शोर से चल रहे थे। मगर इस 'आजादी' के साथ एक और शब्द आ जुडा था—'पाकिस्तान।' जिसका सैलाब दिन प्रतिदिन हिलोरें मारता निरन्तर आगे और आगे बढता चला आ रहा था। इसकी लहरें कई बार तो इतनी ऊँची और डरावनी हो उठती कि आँखें बुरी तरह से चुधिया जातीं। धुन्ध मे कुछ भी स्पष्ट दिखलायी न देता। दिमाग के सोचने की शक्ति क्षीण हो जाती।

'पाकिस्तान' का एक दूसरा पर्यायवाची शब्द था 'विभाजन'। बेदी साहब हर वक्त इन शब्दो से भुझलाये रहते थे—ऐसी-तैसी। उनके हमख्याल लोगो के बीच ऐसी ही चर्चाएँ होती रहतीं—फिर ऐसी आजादी हासिल करने से क्या मुराद। मातृभूमि की सेवा क्या इसलिए की जाती है कि उसे बाँट खाओ। जिला मुलतान के किसी गाँव के 'तूफान साहब' मशहूर शायर थे जो बेदी साहब के अधीनस्थ कर्मचारी थे, अक्सर बहुत जजबाती हो उठते और कहते दिल करता है जाकर जिन्ना जी के पाँव पकड लू। कहूँ क्यो भाइयो को जुदा करने के लिए आम मुस्लिमो को बरगला रहे हो। छोड दो यह पाकिस्तान की माँग। इससे किसी का भला नहीं होने का।

सरदार प्यारासिह कहता—तूफान साहब माना आप बहुत बडे, माने हुए

शायर हो पर गांधी जी से बड़े तो नहीं। जिसने गांधी जी की अपील को ठुकरा दिया वह किसकी मानने वाला है।

—वह तो एक ही बात कहता है उसे नेहरू पर, कांग्रेस पर ऐतबार नहीं। कांग्रेस एक हिन्दूपरस्त जमात है। हाँ अगर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को ले आओ तो वह पाकिस्तान की माँग छोड़ सकता है।

—अब भला नेताजी को स्वर्ग से कौन लाये। एक बुजुर्ग नारायणदत्त आह खींचते हुए कहते—लगता है उनके सीने में नेताजी के लिए बेइन्तहा इज्जत है।

एक नौजवान अनवर अली कहता—जवाहरलाल जी भी तो रुकने और धैर्य से काम लेने को तैयार नहीं। कहते हैं, हम जंगे आजादी में थक चुके हैं। हमें आज ही आजादी चाहिए। अन्जाम चाहे पाकिस्तान हो। अंग्रेज तो खर हैं ही तमाशबीन।

बेदी साहब कहते—वाकई इस बँटवारे से तो मैं इसी हाल में खुश हूँ। गुलामी से छुटकारे के नाम पर बड़े-बड़े लोग भी कैसे अपनी-अपनी स्वार्थसिद्धि में लग गये हैं।

तूफान साहब कहते—हमारे ही गाँव के महेश और बशीर को बीस साल पहले एक साथ अंग्रेजों ने फाँसी पर चढ़ा दिया था। उन बेचारों को क्या पता था कि आज यह हश्र होगा। क्या वे अलग अलग मुल्कों के लिए शहीद हुए थे?

उन्हीं दिनों ऑप्शन फार्म भरे जा रहे थे कि कौन पाकिस्तान में रहना चाहेगा और कौन हिन्दुस्तान जाना चाहेगा।

एक दिन कार्यालय पहुँचने के थोड़ी देर बाद, बास नफीस साहब ने बेदी जी को बुला भेजा। बेदी साहब हाजिर हुए तो पूछा—मि० बेदी अभी तक आपका ऑप्शन फार्म नहीं आया।

—मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि क्या भर कर दूं, वे भावुक हो उठे, मैं तो हिन्दुस्तान का बाशिंदा हूँ। बस को अगर कोई कह दे कि लाहौर या गुजरांवाला, जहाँ मेरा घर है पाकिस्तान बन गया तो मैं कैसे कबूल कर पाऊंगा। मेरे दिल पर क्या गुजरेगी। इतने साल हो गये मुझे लाहौर में रहते कि अब मैं सोच भी नहीं सकता कि लाहौर के सिवा और भी कहीं रहा जा सकता है।

नफीस साहब ने चाय मँगवायी। उन्हें अपने साथ एक कुर्सी खींचकर बैठाया। उनके कन्धे पर हाथ रखते हुए बोले—इस तरह जजबाती बनने से फायदा? फैसला हमारे-तुम्हारे हाथ में नहीं है। जिनके हाथ में है खुदा उन्हें नेक अक्ल अता करे।

—वह तो खैर है ही। बेदी साहब ने सम्भलते हुए हामी भरी।

नफीस साहब फिर बोले—लाहौर के पाकिस्तान में ही आने की पूरी-पूरी उम्मीद है और ऑप्शन भरते हुए आपका मन दुखता है। इसलिए मैं आपका तबादला किये देता हूँ।

—मगर इस वक्त मेरे लिए ट्रांसफर अफैक्ट करना बड़ा मुश्किल काम है। मेरे साले साहब बीमार हैं। मेरी मास उन्हें इलाज के लिए यहीं मेरे पास ले आयी हैं।

—ऐसे हालात मे तो आपका यहाँ से वक्त रहते निकल जाना निहायत जरूरी है। जैसा कि डर है, दगे होंगे। उस वक्त बीमार को लेकर किधर जायेंगे। आप फिक्र न करें जहाँ आप जायेंगे वहाँ हस्पताल के साथ साथ सारी सहूलियतें मुहैया रहेंगी।

बहुत ही बेमन से बेदी परिवार ने, दूसरे ही दिन से सामान बाँधना आरम्भ कर दिया था। पाँचवें दिन दफ्तर की एक जीप आयी और एक ट्रक भी। सामान लदने लगा। पूरे परिवार का मन बहुत भारी हो आया। हवा जैसे बिलकुल थम गयी। उनके चारो तरफ भीड़ ही भीड़ थी।

—तो आप भी चल दिये बरखुरदार। सफेद कुर्ता पायजामा पहने हाथ की घड़ी को देखते हुए बूढ़े हाजी साहब ने बेदी साहब के कन्धे पर ममता भरा हाथ रख दिया। इस हाथ के हल्के से दबाव ने बेदी साहब की पलकें भारी कर दी। उन्होंने कमीज की जेब से रुमाल निकाल लिया। मुँह को दूसरी तरफ फेरते हुए उत्तर दिया—हाँ

—तो कल की मुलाकात । हाजी साहब भी शब्दो को ठीक से हलक से निकाल नही पाये।

वे दोनो ही सवेरे सैर को निकलते थे। आते जाते एक-दूसरे को इस्लामालेकम करते। बेदी साहब आदाब की मुद्रा मे रुक जाते तथा चन्द मिनट उनकी चाँदी की मूठ वाली छड़ी को छूने खड़े रहते। खैरियत जानने के साथ अगर कोई घरेलू या दूसरी समस्या होती तो बुजुग होने के नाते वे बेदी साहब को सही राय देते।

—इन्हें भी जाने दो, दूसरे बुजुग मुश्ताक अली भी पास खड़े थे, जाओ भई जाओ फकीरा राम भी गया। दुर्गा सेठ भी गया और सन्ता सिंह भी। धीरे धीरे सब हमे छोड़े जा रहे हैं। बस दुआ माँगो। दुआ। एक्टर, अफसर सब जा रहे हैं।

बेदी साहब के गले से 'आ आ' की-सी आवाज पैदा हुई, मगर वे कुछ बोल नहीं पाये। आस-पास छितराये लोगो पर नजर डालते रहे।

कुछ देर के लिए वहाँ सभी लोग एकदम खामोश खड़े रह गये। कोई क्या कहे? कौन सी बात? इस अनचाही स्थिति एव इस यथार्थ को कोई कैसे किन शब्दो मे तर्कसगत ठहराये। खुद को या बेदी साहब को कैसे तसल्ली दे। क्षण प्रतिक्षण लगता पूरा माहौल ही कुछ अजीब तरह से गड़बड़ा गया है। यह मजर तबादले का है या कि देश निकाले का?

फिर जब सब सामान लद चुका तो वेदी साहब ने सबकी तरफ हसरत से देखा और बहुत जोर लगाकर हँसने लगे—इजाजत हो तो अब हम भी अपने आपको लाद लें। फिर वे सबसे बारी-बारी से हाथ मिलाने लगे। पर छूने लगे। सिर पर हाथ फेरन लगे।

चारों तरफ से अभिवादन के स्वर भी सुनाई देने लगे—अच्छा पैरी पोना। नमस्ते। सतसिरी अकाल। अच्छा भूल नई जाणा। चिटठी जरूर लिखना। जींदे रए तो मिलागे। अच्छे मौके सिर निक्ल चले ओ। रब्ब दी मर्जी। छता माफ।

अबकी वेदी साहब ने अपने साथ सबको इस उदास वातावरण से उबारने के लिए लगभग ठहाका-सा लगाया—मुझे यू लगता है, इस आखिरी चलने के वक्त कोई फरमान लेकर हाजिर हो आयेगा—वेदी साहब पाकिस्तान नही बनेगा या कम से-कम यह लाहौर पाकिस्तान मे नही आयेगा तो मैं परिवार सहित जीप से नीचे उतर आऊँगा।

कुछ लोगो ने भी वेदी साहब के साथ हँसने की कोशिश की किन्तु यह स्थिति तुरन्त धूमिल हो गयी।

—अच्छा जीदे रए ते फिर मिलागे रह रहकर यही वाक्य। अबकी एक बुढिया बोली थी।

यशोदा ने भरे गले से उत्तर दिया—माँ जी दिल छोटा न करो।

पहले ट्रक चला। फिर जीप। उस शाम के धुधलके मे सब कुछ जैसे गायब होने लगा। लोगो के हाथ। हाथो मे लहराते रूमाल। और कुछ लोगो की उस फिजां मे गूजती आवाजें, धीरे धीरे बैठ गयी। हवा के रुख के साथ इधर उधर डोलती हुई न जाने किधर खो गयी। वेदी साहब की आँखो के सामने अँधेरा-सा छाने लगा, यहाँ तक कि साथ बैठे अपने परिवार के सदस्यो को भी ठीक से नही देख पा रहे थे। बार-बार यही एहसास कचोटता कि जिन्दगी के बेहतरीन कई कई साल एक झटके के साथ उनसे कोई अज्ञात हाथ छीनकर चला गया है। वह उस दहशत भरी हस्ती का मुकाबला नही कर सकते। ओह मेरे वतन, मेरे लाहौर, क्या मैं फिर तुझे कभी देख भी पाऊँगा ?

इस घटना का गुजरे एक साल से ऊपर हो चला है। अब 1947 है।



—वेदी साहब।

—पाऊजी-पाऊजी (बाऊजी-बाऊजी) पाहर (बाहर) कोई है। कोई आपको बुला रहा है। मैंने आप सुना है, पेती साप्। पेती साप्। अन्दर से किसी बालिका का बहुत तीखा स्वर सुनायी पड़ा।

कुछ ही क्षणो मे टाई की नॉट ठीक करते हुए वेदी साहब ने दरवाजा खोला। वे दफ्तर जाने की तैयारी कर रहे थे। सामने खडे परिवार को देखकर वेदी साहब एकदम से चहक उठे—अरे अलका बेटा, ओ मनोज! शाबाश भई कब पहुचे हिदुस्तान। माता जी पैरी पोना। अरी यशोदा इधर आ देख तो सही, कौन कौन आया है। कुदी, हरि बेटे आओ-आओ।

यशोदा रसोई मे थी। आटे से चिपचिपे हाथो से मुख्य द्वार की ओर भागी आयी। उन्ही हाथो को थोडा बचाते हुए अलका की गर्दन मे बाहे डालकर खुशी से चहक उठी।

—ओ मेरी निक्की जयी (छोटी सी) भरजाई (भाभी)। क्या हाल बना रखा है। कब चली थी नाइरा से ? भापा जी (भाई साहब) की कोई खबर है चिट्ठी पत्री आजकल

वेदी साहब ने उसे टोका—मुझे पता है तेरे अन्दर सवालो गिले-शिकवो का अम्बार भरा पडा है। इन्हे पहले अन्दर ढग से बिठाओ खिलाओ फिर यह सब कुछ।

इस तरह बडी गर्मजोशी से पूरे परिवार का स्वागत हुआ। दोनो तरफ के बच्चे बडी जिज्ञासा से एक दूसरे को देखते घूरते रहे। पर बोले कुछ नही। फिर जल्दी-जल्दी सामान अन्दर ले जाया गया। इसमे बच्चो ने भी अपने बलबूते से योगदान दिया।

—कौन आया है अन्दर के कमरे से बूढ़ी औरत की आवाज आयी। यह अलका की सास थी जो अपने बडे लडके (अलका के जेठ) की पसली पर मालिश कर रही थी।

—आओ तो माँ जी, देखो अपनी नयी बहू को, वेदी साहब का उत्साह बराबर बना हुआ था।

बुढिया लडखडाती सी उसी दम भागी आयी। आते ही अलका को गले लगाकर बहुत देर तक रोती रही—हाये क्या शक्ल बन गयी तेरी। अभी तो चडा भी भला नहीं हुआ। कैसी मुश्किल आ पडी। रोशन (अलका का पति) का कुछ पता है ? तेरे हँसने-खेलने, पहनने के दिन थे। क्या सूरत निकल आयी। उन्होने बहू को चूम लिया। वे उसे अब भी कसकर पकडे हुए थी।

बडी मुश्किल से यशोदा और वेदी साहब ने उन्हें अलग किया।

—यह खुश होने का वक्त है कि रोने का। यशोदा ने कहा।

—माता जी इन्हें मेरे पास भी लाओगी या मैं उठ। अन्दर से कराहने के साथ आवाज उभरी।

—आ तुझे रोशन के बडे भाई से मिलवाऊँ। बेचारा कब से इस हाल मे पडा तडप रहा है। लाहौर के डाक्टर हुसैन साहब का इलाज रग लान लगा था

तभी जैसे किसी ने धक्का देकर लाहौर से ही निकाल दिया। इसे तो उसी हुसन साहब पर विश्वास था।

—तसल्ली रखो माँ जी, बेदी साहब ने भी कुछ दुःखी स्वर मे कहा, आप ठीक कहती है, पर भला हुसैन साहब को कोई यहाँ ला सकता है। या कि अब कोई लाहौर जा सकता है।

यह सब कहते हुए वे सब आत्मप्रकाश की चारपाई तक पहुचे।

सबसे पहले अलका ने उनके पाँव छुए। फिर सारे परिवार ने आदरपूर्वक उन्हें हाथ जोड़कर नमस्कार किया। मनोज ने कहा—अब यहाँ पर आपके दर्शन हमे लिखे थे।

—कब से इसका यही हाल है। तभी तो रोशन की शादी मे न जा सका, माँ जी ने फिर कहना शुरू कर दिया—यहाँ कोई इलाज लगता ही नही। इसके टब्बर (परिवार) का भी कुछ पता नहीं। पता नहीं मिंटगुमरी हैं या मैके चले गये थे।

—तसल्ली रखो बहन जी, जमना ने उनके कन्धो पर हाथ रखते हुए कहा, सब ठीक हो जायेगा। धीरे धीरे सभी आ जायेंगे। देखो हम भी आ गये। आपकी छोटी बहू आ गयी। बड़ी भी आ जायेगी। बस आप तो भगवान का नाम जपते रहो जो सबकी मदद करता है।

इस माहौल से निजात पाने के लिए अलका ने न जाने कैसे हिम्मत जुटायी। जेठ जी के करीब होकर धीरे से मुह खोला—कुछ फर्क पड़ा आपको।

यशोदा ने उसाँस छोड़ी—पता नही किसकी नजर लगी है मेरे वीर को।

—ऐसी बात नही है। मुझे बहुत फर्क है, मेरी छोटी सी भाभी, आत्मप्रकाश ने अलका के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, तुझे देखकर तो और अच्छा हो रहा हूँ। यह सब कहते कहते उनकी आँखो से आँसू की कुछ बूदें टपक पड़ी।

—इतने बड़े और समझदार होकर हौसला हारते हैं भाई साहब। मनोज ने उनके हाथ सहलाते हुए कहा।

—क्या करें लाल, अलका की सास बोली। पेट मे बार-बार पानी भर जाता है, उनके मुह से ठण्डी साँस निकली, हम दोनो एक लम्बी मुद्दत से धी (बेटी) के घर पड़े हैं।

—मुझसे ही पूछ लो बहन जी, जमना ने ऊपर हाथ उठाते हुए कहा, वह जिस हाल मे रखे। मैं भी तो पूरा महीना धी के घर लायलपुर काटकर आ रही हूँ।

—क्या धी का घर धी का घर लगा रखा है दोनो समधिनियो ने। माता जी लडकी-लडके दोनो ही तो माँ-बाप की एक सी औलाद होती हैं, बेदी साहब थोड़ा रुके और फिर से अजीब-सा मुँह बनाकर कहा, धी का घर छोटा होता है क्या ? इस व्यग्य से सबको हँसी आ गयी।

आत्मप्रकाश ने हँसने की चेष्टा की तो उन्हें खाँसी आ गयी।

माँ जी ने कहा—यह तो हाल है इस बेचारे का। फिर अलका को गले लगाती हुई बोली—इसे तो हर वक्त यही मलाल बना रहता है कि तेरी शादी में भी न जा सका।

इधर सास, बहू को भावातिरेक में प्यार किये जा रही थी, उधर कुन्दन हरिया छिपे तरीके से एक दूसरे की जाँघों पर हल्की हल्की चिकोटी काटते हुए इस दृश्य को एक दूसरे को दिखा रहे थे। साथ ही थोड़ा छिप छिपकर इशारों से बहन अलका को चिढ़ा रहे थे।

रोकते रोकते भी अलका की हल्की सी हँसी फूट पड़ी। उसने फौरन हँसी को यत्नपूर्वक दबाया। आँखों को तरेरा। मानो आँखों के द्वारा भाइयों पर मीठी कड़वी झिड़की फेंकी।

इस पर तो दोनों भाई पूरी शैतानी पर उतर आये। एक दूसरे के बगलगीर होकर, धीरे धीरे अलकू अलकू' की धुन-सी निकालने लगे।

बेदी साहब ने यह सारा दृश्य देख लिया। कृत्रिम रोष प्रकट करते हुए बोले—ठहरो बदमाशो। बड़ी बहन को नाम से पुकारते हो और वह भी नाम बिगाड़कर।

कुन्दन बोला—कितनी बड़ी है, अभी तो इसने दसवीं पास की है। शादी हो जाने से कोई बड़ा थोड़े ही हो जाता है। इसकी शरारतों से तंग आकर बाऊजी ने इसकी शादी कर दी।

इस पर बेदी साहब ठहाका लगाये बिना न रह सके। फिर बोले—हम इन दोनों की खबर लेंगे, देखना अलका बेटे। इसलिए आज अपनी छुट्टी। वे तुरन्त राइटिंग पैड पर छुट्टी की अर्जी लिखने बैठ गये।

—लो तोषी! उन्होंने कागज उसे पकड़ाते हुए कहा, यह हुकमचन्द चाचा जी को दे आओ और उनके लड़के नरेश को भी जरा बुला लाना। कुछ मिठाई-वगैरह मँगवायेंगे।

मिठाई का नाम सुनते ही तोषी में कुछ ज्यादा ही फुर्ती आ गयी—अच्छा पाऊजी (बाऊजी) कहा और होठों पर जीभ फिराती हुई तेजी से भागी।

कुन्दी और हरिया ने एक-दूसरे से निगाहें मिलायीं और मुस्कराने लगे।

—ला! कुन्दन ने हाथ आगे बढ़ाया।

—लो हरिया ने उसकी हथेली पर एक आने का सिक्का रख दिया।

—यह देख सुनकर बेदी साहब में उत्सुकता पैदा हुई। पूछा—यह क्या हो रहा है?

कुन्दन ने इकन्नी पकड़ते हुए कहा—यह बेचारा शर्त हार गया।

—कैसी शर्त? बेदी साहब की उत्सुकता और बढ़ गयी।

कुन्दन ने उत्तर दिया। यह कहता था—जब हम आये थे, दूसरी बहन चिल्ला

रही थी—पेदी साहब-बेदी साहब। पाऊची पाऊची। मैंने कहा नहीं यही तोपी थी। मेरी बात सच निकली और यह हार गया च च। उसने हरिया पर बनावटी तरस खाया।

—ठीक है, ठीक है जुआरियो। थोड़ा सब्र रखो। आने दो तोपी को। फिर सबका ढंग से परिचय कराते हैं। तब तक तुम्हारे बड़े भाई साहब से कुछ बातें कर लें।

फिर सब जने बैठक में आ गये। बेदी साहब, मनोज और जमना से जल्दी जल्दी सारा हाल जानने का प्रयत्न करने लगे। कब आये। कैसे पाकिस्तान से निकले। बाऊजी और रोशनलाल का कोई पता ठिकाना है या नहीं ? आदि आदि।

मनोज ने बताया—बिलकुल नहीं। वहाँ तो चिटठी क्या तार तक नहीं मिलता था। आठ दस आदमी कभी कभार गुट बनाकर साहस दिखाते हुए पोस्ट आफिस चले जाते तो कुछ चिटिठयाँ, तारें, हफ्तों पहले लिखी हुई ले आते और मुहल्ले में बाँट देते। शायद आप अन्दाजा नहीं लगा सकें, जिनको कोई चिटठी नहीं मिलती थी, उनके दिल पर क्या बीतती थी। हाँ, हमें लायलपुर छोड़ने से पहले मुलतान से बाऊजी का एक खत जरूर मिला था जिसमें लिखा था—ड्यूटी छोड़कर एक गुट सा बनाकर रैस्ट हाउस में वक्त गुजार रहे हैं। हमें ताकीद की थी कि बिलकुल ठीक मौका देखकर सँभलकर हिन्दुस्तान पहुँचो। हम सभी हिन्दू भी ऐसे ही किसी महफूज मौके की तलाश में हैं। फिक्र मत करना। भगवान पर भरोसा रखना।

यह सब बताते-बताते मनोज का गला भर आया—न जाने किस हाल में होंगे।

—उन्होंने ठीक कहा—हौसला बनाये रखो। जैसे आप सब आ गये, वे भी जरूर जल्दी आ जायेंगे। देख लेना। मेरा कहा हमेशा ठीक निकलता है। और हाँ रोशनलाल ?

रोशनलाल का नाम सुनते ही मनोज के मुखमण्डल में परिवर्तन हुआ। थोड़ा जोश से बोला—वह ठहरे फौज के जवान। कराची से एक लम्बा तार उन्होंने काफी पहले भेजा था। वही अदाजे बयाँ मिल्ट्री वाला—हम यहाँ कराची में पूरी तरह से सेफ हैं। चाहे तो आज ही निकल आयें। मगर नहीं पहले अपनी सारी जनता को रवाना करेंगे। फिर खुद आयेंगे।

—यह हुई न फौजी शान यशोदा ने कहा, अपनी वाइफ के बारे में एक लफ्ज भी नहीं।

—देख लो बेदी साहब बोल उठे—भई हम तो ऐसे हरगिज न थे। वाक्य के अन्त तक आते-आते उन्होंने यशोदा की तरफ देखा। यशोदा ने अलका की तरफ देखा।

अमरा शरमा गयी।

यशोदा ने जरा कडे स्वर मे कहा—आपको तो हर वक्त मजाक ही सूझता है। लगे परेशान करने मेरी अच्छी भरजाई को। इधर आओ भरजाई मेरे पास।

इतने मे चाय नमकीन और मिठाई की प्लेटें परोसी जाने लगी।

तोपी और जीतो दोनो अलका को घेरकर बैठ गयी। तोपी ने कहा—मैं तो अपनी मामी जी के पास बैठूगी।

जीतो ने प्रतिक्रियास्वरूप कहा—तेरी जादा मामी जी है, मेली कुछ नयी। मैं बी पैंठागी।

हरिया ने कुन्दन से कहा—जरा इधर आ। वह उसे आँगन के कोने मे ले गया, फिर बोला निकाल मेरा आना (इकन्नी)।

—क्यो?

—यह दूसरी बहन भी तो वैसा ही बोलती है। इसलिए मैं शर्त कहाँ हारा?

—हार गया सो हार गया। और गौर से देखेंगे। कौन ज्यादा पाऊची पाऊची मामी बी मामी चो करती है।

—वह बाद की बात है।

इधर इन भाइयो का विवाद चल रहा था। उधर अलका इस नये परिवार मे अपना सन्तुलन खोती जा रही थी। एक तरफ सहमी, सिकुडी बैठी थी। ज्यादातर प्लेटें उसी के पास रखी गयी थी, परन्तु मारे सकोच के वह कुछ खा नही रही थी।

—खाओ न मामी चो, तोपी ने कहा, और अपने मुह मे गुलाबजामुन डाल लिया।

—ए मामी चो ता खादे पए नईं। खाओ ना कुलाप चामन। जीतो ने कहा और खुद गुलाबजामुन खा लिया।

—ले देख और अपने कान खूब चौडे करके सुन ले। लौटा मेरे पैसे। हरिया बोला।

—जल्दी क्या है। और देखेंगे। अभी तो कुछ दिन यही रहना है। मैं कौन सा फिरोजपुर छोडकर भागा जा रहा हूँ। कुन्दन ने टाला।

—तेरा क्या भरोसा, कब भाग खडा हो। क्या लुधियाना मे नही भागा था?

—भकक।

—तू भकक।

खुसर-फुसर के बाद आवाजें ऊँची हो उठी।

—पोला ता लओ मामी चो। कहती हुई दोनो बहनें बर्फी की प्लेट भी साफ कर गयी।

चौथा मोर्चा बडो ने खोल रखा था। फकत बहस-मुबाहसे का। क्यो बना पाकिस्तान। किसने बनवाया यह नया मुल्क। क्या जरूरत थी। कौन कौन है इस बँटवारे का गुनाहगार। हमारे तो मुसलमान दोस्त हिन्दू दोस्तों से कही बढ़ चढ़ के

थे। पता नही क्या भूत सवार हुआ। हमे खदेड मारा। किसी को किसी का शौक नही। इन पापी राजनेताओ को कुदरत कभी माफ नही करेगी। असली तवारीख तो बहुत बाद मे लिखी जाती है। वह फिर किसी को नही बख्शती।

क्या भविष्य होगा नये राष्ट्रो का, और उन सबका, जिन्होने इस तरीके से बड़े मुल्क को तोडकर, आजादी हासिल की है। सवाल दर-सवाल तलवारो पर टकराते गये।

किसी तरह बडी मुश्किल से आत्मप्रकाश भी एक कुर्सी पर आ बैठे थे। मौन तटस्थ। मगर यह दृश्यावलियाँ देखकर उनके होठो पर मुस्कान आये बिना न रह सकी। वे बोले—एक तरफ यह अलका बुद्ध का रूप धारण किये बैठी है। उधर दो भाई दगल कर रहे हैं। इधर तुम सब भी भयानक युद्ध छेडे हुए हो। और यह छोकरियाँ भी हाथ धोकर मिठाई के पीछे पडी हैं। खत्म करके ही दम लेंगी। शाबाश मेरी बहादुर भाजिया।

इससे दोनो लडकियाँ कुछ शरमा गयी। तोपी बोली—मामा जी, यह मामी जी तो कुछ खाती ही नही मुह भी नही खोलती।

आत्मप्रकाश फिर बोले—यह तो स्कालर है। स्कालर बोलते बहुत कम हैं। पढते-सुनते ज्यादा है। यह पाकिस्तान हिन्दुस्तान पर रिसर्च करेगी। रही बाकी कुछ खास किस्म के लोगो की बात तो वह कुछ खास नहीं सोचेंगे। वह सोचेंगे तो सिर्फ यही सोचेंगे, कल तो गुलछर्रे उडाये जाये और आम जनता पर राज कैसे किया जाये।

आत्मप्रकाश को फिर से खाँसी का दौरा उठने लगा था।

माँ जी ने कहा—शुक्र है आज कुछ खुश तो हुआ सबके बीच बैठकर। अब चलकर आराम से लेट लो।

सबने उन्हे सहारा देकर कमरे मे खाट तक पहुँचाया।

उधर देखा, दोनो भाई टेरिस के छोटे जगले को लाँघकर आग बनी पौन फुट की पट्टी पर उछल-कूद करने लगे—तू मेरे देश मे क्यो आया। भाग पाकिस्तान। यह मेरा इलाका है।

मनोज ने शोर सुना तो चीखा—सीधे गली मे जा गिरोगे क्या इरादा है तुम्हारा।

दोना सहमे-सहमे से वापस टैरिस मे आ गये तो मनोज ने दोना के एक एक चपत जमा दी—देश-परदेस कही का होश है तुम्हें? बदतमीज।

—इसने मुझसे शर्त क्यो लगायी थी? हरिया बोला।

मनोज को गुस्सा आ गया—बेवकूफ

बेदी साहब ने टोका—अरे जा यार उन्होने ड्रेसिंग टेबल की ओर इशारा करते हुए कहा—कब से दाढी निकाल रखी है। तू उधर जाकर शेव बना। इन्हे हम

चूहो वाली कोठरी म ब द करेंगे।

मनोज बिना कुछ कहे ड्रेसिंग-टेबल की तरफ चला गया।

तब बेदी साहब ने दोनो भाइयो को अपने पास बिठाते हुए पूछा—क्या शत लगी है दोनो के बीच।

दोनो भाई जमीन ताकने लगे।

हमारी बात का जवाब नही दोगे तो हम नही बोलेंगे, तुम दोनो के साथ।

—अच्छा जो हमारी बात का पहले जवाब देगा उसे हम, चार आने इनाम देंगे।

कु दी बाला—पैसो की हमे कोई कमी नही है, उसने नेकर की जेब से पसो की खान पदा की।

हरिया भी अपनी जेब बजाने लगा। बोला—बहुत भन घड (रेजगारी) है। वडो के लिए यह सब भी पाकिस्तान मे भार बन गया था कि कैसे ढोएँ। हमे खचने के लिए बहुत पैस मिलते थे। अब भी है। इसने तो लायलपुर और लुधियाना के होटलो मे खूब उडाये, उसने कु दन की ओर इशारा किया।

—अच्छा अच्छा तो नवाबो, हमारी बात का तो जवाब दोग? क्या शत लगी थी?

—यह कहता है हमारे आने की इत्तिला तोपी ने आपको दी थी। मैंने कहा जीतो ने।

इस पर बेदी साहब जोर से हँसे—बदमाशो। यह तो दोनो ही ऐसे ही बोलती हैं।

—हाँ, हरिया बोला—जब यह बात पता चली तो कहता है कि हि दुस्तान के सभी बच्चे ऐसे ही बोलते होगे। पर पैसे लोटा नही रहा। कहता है पाकिस्तान जा।

—ओह, बेदी साहब के मुह से आह-सी निकली, बच्चो अब भूल भी जाओ, उस पाकिस्तान को।

कुन्दी चुप रह गया और सोचता रहा। क्या कभी कोई अपने घर को भूल सकता है।

कु दी के गुमसुम होने के भाव को बेदी साहब ने समझा। तोपी, जीतो और कुक्कू को बुलाया और बोल—अब मैं तुम सबका परिचय ढग से करवाता हूँ।

हरिया बोला—हमन इनको भन जी की शादी मे देखा था।

तोपी बोली—हमन पी तेखा था।

कुन्दी ने कहा—पर इतनी प्यारी आवाज नही सुनी थी।

तोपी जीतो उसे घूरकर देखन लगी।

कु दी ने फिर कहा—बुरा क्यो मानती हो बहन। हमे तो यही बोली अच्छी

लगती है। पाऊची-पाऊची।

—पाऊची भी यही कहते हैं।

बेदी साहब ने कुन्ती के गाल को हल्का सा थपकते हुए कहा—वाह रे, अपनी बड़ी दीदी को नाम बिगाड़कर बुलाते हो और इन्हें बहन बना लिया। हो पूरे शातिर। और झगड़ना नहीं। मिल जुलकर खेलो।

देखते ही-देखते सभी बच्चे घुल मिलकर खेलने लगे और बेदी साहब की उपस्थिति को भुला दिया। फिर वे गली में निकल गये। गली की औरतों ने जाना कि बेदी साहब के रिश्तेदार पाकिस्तान से आये हैं तो देखते-ही देखते उनके घर पर भीड़ सी होने लगी। सभी जानना चाहते थे कि ये कौन से शहर से आये हैं। अगर उसी शहर से आये हैं जहाँ पर उनके सम्बन्धी हैं तो क्या ये उनको जानते हैं और उनकी खैर खबर बता सकते हैं।

बाद में यह आलम कुन्दन ने और ही ढंग से देखा। वह जहाँ कहीं भी टोली बनाकर जाता, वहाँ जिन लोगों को उसके रिफ्यूजी होने की भनक पड़ती, उससे ऐसे ही सवाल जरूर करते। कहाँ से आये हो। उस परिवार को जानते हो। कुन्दन बहुधा उत्तर देता कि उसे नहीं मालूम। हो सकता है कि बड़े भाई साहब या माता जी जानती हों, तो बहुत से लोग फौरन बेदी साहब के घर का पता नोट कर लेते।

ऐसे ही घूमते घामते लोपी और जीतो उसे लेकर कहीं बहुत दूर के इलाके में निकल गयीं। उधर एक रिफ्यूजी कम्प था। वहाँ बहुत से लोग खस्ता हाल में जमीन पर यूँ ही बैठे या पड़े थे। छोटे बच्चों को उनके बड़े भाई या बाप गोदी में उठाये, उन्हें रोटी के टुकड़े या भुने हुए चने खिला रहे थे। मायें अपने बहुत छोटे बच्चों को निचुड़े हुए स्तनों से दूध पिलाने का यत्न कर रही थीं। बच्चे फिर भी रोये जा रहे थे। तब कई बच्चों को चपतों का सामना करना पड़ रहा था।

इस सबके चलते बीच बीच में अचानक बहुत जोर की एक-दो या कभी कभी एक साथ तीन-तीन आवाजें सुनायी देतीं—कोई सरगोधे तो (से)? कोई रावलपिण्डी तो? कोई मिन्टगुमरी तो? ऐसे ही अनेक जगहों, गाँवों, स्टेशनों के नाम ले लेकर लोग पुकार रहे थे। ऐसे पुकारे गये नामों में बहुत से स्टेशनों, गाँवों के नामों से कुन्दन एकदम अपरिचित था। उसने तो कभी ऐसे इन जगहों के नाम भी नहीं सुन रखे थे। तब कुन्दन के मन में यह बात आयी ओह। इन लोगों ने हमसे धरती का कितना कितना बड़ा हिस्सा छीन लिया। जमीन को तोड़कर पाकिस्तान बना लिया। हिन्दुस्तान बना लिया। रिश्तेदारों, दोस्तों को एक दूसरे से अलग थलग कर दिया। बिखेरकर रख दिया। या गायब कर दिया। लो अब ढूंढो, एक दूसरे को क्या यह खेल है? ढूंढो ढूंढो अगर वे जिन्दा हैं। सही-सलामत आ पहुंचे हैं तो। उधर पाकिस्तान में भी तो जरूर ऐसा ही हाल होगा। वहाँ पर भी तो

जरूर रिफ्यूजी कैम्प बने होंगे। ऐसे ही चिल्ला चिल्लाकर लोग अपने अपने सगे सम्बंधियों को ढूढ निकालने की कोशिश कर रहे होंगे।

तभी एक गूजती सी थरथराती आवाज कुन्दन के कानों में पडी—कोई शेखूपुरे तो ?

ऐसी आवाजो मे करुणा, उत्सुकता और घबराहट एक साथ शामिल हुआ करती थी। ऐसी आवाजो के उत्तर मे कुछ लोग हाथ ऊपर उठा देते थे और धीरे-से उनके मुह से 'हां' भी निकलता था। फिर वह पुकारने वाला तथा हाथ ऊपर उठाने वाला, दोनो अलग अपेक्षाकृत कम शोर शराबे वाले कोने मे चले जाते और खुसुर-फुसुर शुरू हो जाती।

शेखूपुरे का नाम सुनते ही कुन्दन के समूचे शरीर मे एक अजीब सी लहर उठी। क्षणाश मे इस एक शब्द ने उसे जैसे सिर से पाँव तक हिलाकर रख दिया, स्टेशन, शहर, गलियो समेत पूरा किला शेखूपुरा उसके अन्दर एक छोटी सी गेंद की तरह समा गया। वह खुशी से झूम उठा, जैसे किसी प्रश्न का उत्तर आने पर विद्यार्थी बैंच से खडा होकर जल्दी-से जल्दी हाथ उठा देता है—हाँ मास्साब। मैं मास्साब।

वैसे ही जोश के साथ कुन्दन ने हाथ खड़ा कर दिया।

—हाँ मैं। जीतो और तोषी उसे हैरानी से देखती खडी थी।

प्रश्नकर्ता एक अधेड स्त्री थी। थोडी सांवली। नीली सलवार-कमीज पहने। कमीज ऊपर से कुछ छीज गयी थी। अन्दर उसके बडे-बडे स्तन झूल से रहे थे। उसे देखकर कुन्दन के सामने मुहल्ले की बेबे का व्यक्तित्व साकार हो उठा। बेबे कुन्दन को बहुत प्यार करती थी। उसके सख्त कडे बालो पर हाथ फेरती थी। कभी-कभी उसे अपने सीने से भी लगा लेती थी। इससे कुन्दन को अजीब सी झुरझुरी महसूस होती थी। वह जल्दी-से-जल्दी अपने को उनसे अलग कर लिया करता था।

इस अधेड औरत ने कुन्दन का उठा हुआ हाथ देखा तो लपककर इधर बढ आयी—बच्चे तू ? तेरी झाई (माँ) बऊ (बाऊजी) किधर हैं वे ? औरत ने सशय के साथ पूछा।

—माँ घर पर है यहीं इसी शहर मे। बाऊजी का पता नही। मुलतान थे। वाक्य को पूरा करते करते कुन्दन का स्वर रुआँसा हो गया।

औरत ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए उसे सीने के साथ सटा लिया—फिकर न कर पुत्तर। वह भी रब दी दया नाल जल्दी आ जानगे। कितनी ही देर तक कुन्दन इस नयी बेबे के सीने के साथ लगा रहा। वह कुन्दन को दिलासा देती रही। साथ ही वह शेखूपुरे के कुछ मुहल्लो के नाम ले रही थी। किसी कन्हैया लाल चोपडा को पूछ रही थी। सरदारनी जितिन्दर कौर को पूछ रही थी।

इन प्रश्नो को सुन-सुनकर कुन्दन निराश हो रहा था, एक नालायक विद्यार्थी की तरह। बहुत से मुहल्लो के नाम उसे पता नही थे। कन्हैयालाल चोपडा को वह नही जानता था। जितिन्दर कौर के बारे मे उसने जरूर सुन रखा था कि साथ के मुहल्ले के गुरुद्वारे म वह बहुत सुरीला पाठ करती है। पर इससे अधिक उसे कुछ पता नही था। उसने इस नयी बेबे को विस्तार से बताया कि वे लोग दगा होने स दो रोज पहले जिला शेखूपुरा छोड आये थे। इसलिए अगर माँ भी उन्ह जानती होगी तो उनकी किस्मत के बारे मे क्या बता सकेंगी। सुना यह भी है कि अठारह हजार की हमारी आबादी मे से सोलह हजार लोगो को मार डाला गया। लोग किले मे जा छिपे तो किले के बडे दरवाजे को टैंक से तुडवा दिया गया।

यह बातें सुनकर उस औरत का कलेजा थर थर करने लगा। हाथ आसमान की ओर उठाकर बोली—वाहे गुरु, उन दो हजार मे से भी तो बचकर आ सकते हैं मेरे लाडले।

—जरूर सही-सलामत आ जायेंगे बेबे। जाने कैसे कुन्दन के मुह से बडो वाली बोली आप से आप निकली।

औरत ने उसे फिर प्यार किया। चलते वक्त कुन्दन ने कहा, माता जी से पूछूगा। अगर कोई जानकारी हुई तो यही पर आकर आपको बता जाऊँगा।

उसी रात की बात है। एकाएक रात को शोर और लोगो के चिल्लाने की आवाजो ने पूरे मुहल्ले को जसे हिला दिया। रात के अधेरे म कुन्दन चारपाई से कूद पडा। नीद काफूर हो गयी। दगा। हाय फिर दगा हो गया। यही सब उसके दिमाग की नस-नस मे भर गया। वह अनाप शनाप तरीके से कुर्सियो और पलगो के पीछे छिपने लगा।

बडी साहब ने आवाज लगायी—यशोदा। उठो। बिजली नही है जरा टार्च टूढकर दना दखू तो सही यह कसा शोर है।

जसे ही टार्च की रोशनी हुई कुन्दन ने बडी साहब का बुरी तरह से जा जकडा कि एकबारगी तो वह घबरा से गये—कौन, फिर उसके चेहरे पर टार्च की रोशनी फेंकी, अरे कुन्दी तू? तू भी जाग गया पुत्तर।

—मैं आपको बाहर नही जाने दूगा, उसी प्रकार कुन्दन ने उन्हे जकडे हुए कहा।

—क्यो, क्या हुआ? उन्होने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा।

—बाहर फसाद हो गया है। कुन्दन न घबराये हुए स्वर म कहा।

—पागल, यहाँ तो कोई मुसलमान ही नही। बेचारे सभी अपना अपना घर बार छोडकर चले गये। चलो मेरे साथ। वे सीढ़ियाँ उतरने लगे। कुछ बच्चो को

छोडकर सभी जाग गये थे। सभी उनके पीछे पीछे टार्च की रोशनी में मुख्य द्वार तक पहुँचे। देखा इसी प्रकार बहुत-से लोग भी अपने-अपने दरवाजों पर खडे हैं। किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। पाया यह भी गया कि यह चिल्लाहट, चीत्कार कहीं बहुत दूर से, इस सोयी हुई रात का सीना फाडकर इस मुहल्ले तक आ रही है। माजरा जानने के लिए कुछ नौजवानों को भगाया गया। दिल तो सबके धडकने शुरू हो ही गये थे।

—क्या अब भी उनको सन्तोष नही हुआ ? जमना की भर-भराई आवाज जैसे अपने से ही प्रश्न कर रही थी।

—कैसी बातें करती हैं आप ? यशोदा ने उनकी बात का आशय समझ लिया था, इतनी हिम्मत नही कि वे अब पाकिस्तान से लडने के लिए आ सकें।

—कहीं आग वाग तो नही लग गयी। भीड में से किसी ने संशय प्रकट किया।

—ऐसा होता तो, इस अँधेरी रात में लपटें जरूर दिखायी देती, उत्तर किसी नारी स्वर ने दिया, जरूर कोई और बात है। वाहे गुरू रहम करीं।

तभी नौजवानों का झुंड लौट आया।

कुछ औरतें घरों से लैम्प जला लायी थी। लडकों के आने की आहट सुनकर एक ने लम्प उठाकर देखा और बोली—पता चला ?

—हाँ, एक लडके ने घबराये हुए स्वर में कहा—बाढ आ गयी है।

—कहाँ ? किसी ने पूछा।

दूसरा लडका बोला—बस साथ के गाँव में पहुँच गयी है। पानी इधर ही आ रहा है, शहर की तरफ। बाढ से पहले दहशत का सैलाब अगले से अगले मुहल्ले तक बढता आ रहा है। जिसे पता चलता है शोर मचाता हुआ अपना बोरी बिस्तर सँभाल रहा है।

—हे भगवान तू ही रक्षा करना। किसी स्त्री ने भगवान से हाथ जोडते हुए विनती की।

—फिकर न करो बहन जी, एक अधेड व्यक्ति ने तसल्ली दी, यह अपना मुहल्ला इतनी ऊँचाई पर है यहाँ तक पानी पहुँचता नही।

—यह बाढ़ आ कैसे गयी ? किसी ने पूछा।

—पता नही, कोई कह रहा था, पाकिस्तान ने दुश्मनी निकालने के लिए सतलज दरिया का पानी छोड दिया है। उसी लडके ने उत्तर दिया। वह लडका चन्द रोज पहले कसूर लाहौर से यहाँ आया था।

—यह सब बकवास है। मैं नही मानता। बेदी साहब बोले।

—छोडिये इस बहस को, यशोदा बोली। पहले अपना कीमती सामान सँभाल लीजिये। खास तौर से राशन कार्ड और जरूरी कागज।

लगभग सभी लोग अपने अपने घरो मे चले गये। इस वक्त रात के करीब तीन बजे थे। साढे चार के करीब बेदी साहब के बडे भाई कैलाशनाथ बच्चों समेत अपने सिर पर कुछ सामान उठाये आ पहुँचे। बोले अरे हमारी तो नींद तभी खुली जब घर मे पानी घुस आया।

जमना बोली—भाई साहब आप तो यहीं बैठे बैठे ही रिफ्यूजी बन गये।

—यही समझिये। उन्होंने उत्तर दिया।

फिर दौर शुरू हुआ कैलाश जी के घर से सामान यहाँ तक उठाकर लाने का। इसमे मनोज सबसे आगे था। भाभी ने इशारे से उसे मना किया। धीरे से बोली भी—इतने गहरे पानी मे कहीं पैर वर फिसल गया तो ।

मनोज ने भी धीरे से कहा—हमे मुफ्त की रोटियाँ नहीं तोड़नी। कुछ तो वफादारी दिखाने का मौका आया है।

इतना बडा घर नहीं था। इस पर और सामान। अतिरिक्त सदस्य। घर में एक मरीज का होना। सब कुछ अपनी जगह। बेदी साहब का हौसला अपनी जगह। रिफ्यूजियों के आने और उस पर बाढ के प्रकोप से पानी दूषित। खाने की चीजें बाजार से गायब। महामारी भी फैलने लगी थी। रिफ्यूजी राशन कार्ड के साथ कुछ जाली राशन कार्डों की व्यवस्था बेदी साहब ने न चाहते हुए भी की।

बाढ हट जाने के बावजूद जीवन अस्त व्यस्त था। हैजा फैलने का डर, महँगाई हद से ज्यादा। प्याज ही छ रुपये सेर। बिल्डिंगो मे पानी ठहरा था। स्कूल की छुट्टियाँ। बच्चो का मन घर के इस वातावरण मे लगता नहीं था। वे सब टोली बनाकर बाजारो, मुहल्लो की सैर को निकल जाते।

छोटे छोटे लडके जवान औरतें, मर्द, बूढे भी भीगी हुई मूगफली, सीलन भरे बिस्कुट आदि पटरियो पर बैठ बेच रहे होते। बाढ ने सब कुछ भिगो दिया था। कुन्दन इन लोगो से खडा खडा बहुत देर तक बतियाता रहता।

कभी कोई कह रहा होता—ये अपन-अपने घरो के सब बादशाह यहाँ फकीरी के भेष मे। लेकिन किसी के आगे हाथ फैलाना उन्हें गवारा नहीं है।

एक दिन कुछ लोग एक सिपाही को घेरकर खडे थे। सिपाही धीरे धीरे बोल रहा था। कुछ उत्साही युवक उसे उकसा रहे थे—डरता क्यो है। जोर से कह।

कुन्दन भी बडी तन्मयता से सब कुछ समझने की कोशिश करने लगा।

—तू तो हर कहीं पर जानवरो की तरह खडा हो जाता है। हम नहीं आया करेंगे तेरे साथ। चलो घर। जीतो कह रही थी।

उन लोगो की बातें सुन लेने के बाद कुन्दन का मन उचाट हो गया था। उसने जीतो को धक्का दे दिया। वह गिर पडी और मुश्किल से खडी हुई तो लँगडाने

लगी।

हरिया ने कुन्दन के चपत लगा दी—क्यों गिराया इस बेचारी को।

—मैं तो इसे साथ लाना नहीं चाहता था। यही कह रही थी चरूर (जरूर) पसार (बाजार) से कोई चीच (चीज) खानी होगी जो मुझे साथ नहीं ले जाते। तब मैं ही था जो इसे साथ ले आया। अब चलो घर ऐसी जगहों पर मेरा मन नहीं लगता।

मगर घर पहुँचें कैसे। घर गायब हो गया था। जिस दिशा से आगे बढ़ते, जिस बाजार को जल्दी से लांघते, जिस गली मे जाते वहाँ घर-ही घर थे, लेकिन अपना घर कहाँ था। घर खो गया था। इस मटरगश्ती मे वे रास्ता भूल चुके थे। सभी बच्चे बुरी तरह से घबरा गये। उनके चेहरों से हवाइयाँ छूटने लगी। घर किधर गया ? अपने घर को कैसे ढूंढा जाये। यही विकट समस्या थी। इस समस्या से जूझते उनके चेहरे बे रौनक और खौफ-जदा हो गये थे।

जीतो ने रुआंसे स्वर मे कुन्दन से कहा—तू, तू ही है चिमेदार। (जिम्मेदार) हमे इतनी दूर (दूर) क्या ले गया ?

तोपी ने क्रोध निकाला—घर पर मेरी पिटाई होगी। मैं तेरा नाम लूगी। भुगतना।

सहसा कुन्दन का चेहरा मुर्झा गया। वह मुह लटकाये, पास के पीपल के चबूतरे पर बैठ गया। एक मुलजिम की तरह।

कुन्दन के ऐसे हाव भाव देखकर हरमिलाप को बहुत तरस आया। वह दोनों बहनो से उलझ गया।

—यह बेचारा क्या करे। शहर तुम्हारा है या हमारा। लानत है तुम्हें। घर तक का रास्ता पता नही। नशा करके चली थी ? अपने मुहल्ले का नाम तक याद नहीं। तो मरो।

भाई को पक्ष लेते देखकर कुन्दन का हौसला लौट आया। शरारत से बोला—जैसे पाकिस्तान मे हमारे घर खोये, रब करे सारे के सारे लोगों के घर खो जायें।

यह वाक्य सुनते ही तोपी रोने लगी जैसे कुन्दन ने उसको भारी भरकम गाली दे मारी हो। घर से बेदखल कर दिया हो।

—रोती क्यों है भूखी। हरमिलाप ने कहा—तू तो हमारे साथ कोई चीच (चीज) खाने को निकली थी। यह कहते कहते उसने नेकर मे हाथ डाला और सिक्कों से खनक पैदा की।

फौरन से पेशतर कुन्दन ने भी दुगने वेग से अपने सिक्के बजाये। फिर बोला—घर कोई पाकिस्तान मे तो है नहीं जो सोरी दा (सुसरा) नहीं मिलेगा। घर का बाप भी मिलेगा। चलो पहले कोई चीच खाते हैं।

—तू हमे चिढ़ा रहा है। जीतो बोली।

—नहीं। तुझे चिढ़ा रहा है। तोपी बोली।

—नहीं, चलो गोल-गप्पे खाते हैं। कुन्दन ने कहा।

एक खोमचे वाले से उन्होंने खड़े खड़े गोल गप्पे खाये।

पता नहीं यह गोल गप्पों का असर था या कुछ और। तोपी चहककर बोली—मुझे मुहल्ले का नाम याद आ गया।

—पोल पोल पता चलती। (बोल बोल बता जल्दी) जीतो ने कहा।

—नाम तो नहीं पता। पर इक दिन कुछ जनानियाँ माजी से बहुत धीरे धीरे बातें कर रही थी। कह रही थी एथ्ये (यहाँ) पहले कजर रहते थे।

—कजर कौन होते हैं। कुन्दन ने जिज्ञासावश पूछा।

—पता नहीं। तोपी ने उत्तर दिया।

—हमें क्या मतलब कजरों से। हमें तो घर पहुँचना है।

तब वे सभी बच्चे जिस तिस के सामने रुक रुककर पूछते—कजरों का मुहल्ला किधर है?

लोग बाग अल्प आयु बच्चों को ऐसा पूछते देख हँसते। पर कुछ बता न पाते।

फिर एक लम्पट सा युवक सामने आया। पूछा—किसे पूछते हो।

—कजरों का मुहल्ला।

—कजरों का या कजरियों का? वह हँसा, तुम वहाँ क्या करोगे? हमें ले चलो। फिर उसने कोई भद्दी सी गाली दी।

इस युवक के हाव-भाव देखकर जीतो रोने लगी। वहीं सामने अपने मकान के चबूतरे पर एक बुजुर्ग बैठे थे। वे एकदम से आ गये। युवक खिसक गया। उन्होंने बच्चों से पूरी बात जानी। दिलासा दिया। बाप का नाम पूछा।

—मनोहर लाल जी बेदी। कुन्दन ने कहा।

—ओह, मैं जानता हूँ। बड़े सज्जन आदमी हैं।

इस प्रकार वह व्यक्ति उन्हें घर तक छोड़ गया। खोया हुआ घर मिलने की खुशी से बच्चे उछलते कूदते हुए एक बनावटी-सी लड़ाई लड़ते हुए मकान में दाखिल हुए। बड़ों के सामने अपनी अपनी प्रशंसा करने लगे कि हम सभी होशियार हैं। खूब घूमे फिरे। ऐश की।

मनोज ने उन्हें मना किया—ऐसे आलतू-फालतू मत घूमा करो। घर में रहो। मिलकर खेलो और थोड़ा पढ़ो भी।

—हमारा भी तो यहाँ दिल नहीं लगता हरमिलाप धीरे-से ऐसे बोला कि भाईसाहब बुरा न मान जायें आप भी तो दिन में घर पर नहीं रहते।

जमना ने हल्के से डाँटा—बड़े भाई से बहस नहीं करते। यह बेचारा तो बाऊजी और अपनी बड़ी बहन का पता लगाने निकलता है। साथ ही अपनी

नौकरी के बारे में पता करता है। फिर मनोज से कुछ डरी हुई सी आवाज में पूछने लगी—कुछ पता चला ? मुझसे कुछ नही छिपाना। काई बुरी खबर तो नही। सच सच बोल देना। सब सह लूगी। वे रोने लगी।

मनोज ने उन्ह तसल्ली दी—ऐसे क्या सोचती हो भाभी धीरे धीरे सब ठीक हो जायेगा। अब तो गाडियां लगभग सेफ (सुरक्षित) आ रही हैं।

रात को अचानक, पहले तो कुन्दन कुछ थरथराया। फिर जोर जोर से रोने लगा—मत मारो, मत मारो। बेचारे को। छोड दो, छोड दो।

पूरे घर के सदस्य उसके पास आ इकट्ठे हुए।

यशोदा कहने लगी—काका (बच्चा) डर गया। लगता है कोई बुरा सपना देखा है।

—क्या हुआ, क्या हुआ कुछ बोल तो सही, जमना ने उसे गोदी मे लेते हुए पूछा, अरे यह तो पसीने से नहाया हुआ है।

अलका गिलास मे पानी भर लायी। उसके गाल थपथपाते हुए पूछा—मुझे बता मेरे वीर। क्या हुआ ?

कुन्दन सुबकते हुए, धीरे धीरे, अटक अटककर कहने लगा—एक मुसलमान को आज जेल से छोडना था। वह कहता था मुझे अभी और रख लो। जेलर ने कहा। मियाद पूरी हुई। इससे ज्यादा हम रोक नही सकते।

जेल से छूटत ही हिन्दू, सिख छुरे-तलवारें लेकर उसके पीछे शिकारी की तरह झपट। मुझे नींद मे यही दिखायी दिया था।

—यह बात तुझे किसने बतायी, मनोज ने पूछा।

—कल बाजार मे एक सिपाही को बहुत से लोग घेरे खडे थे तब वह यही बता रहा था। मैंने भी सुन लिया था।

—ठीक बता रहा है, बेदी साहब ने आह खीचते हुए कहा, यही हो रहा है आजकल। इन्सानियत की तबाही हो गयी। मुजरिमो की रिहाई का दिन उनकी मौत का दिन बन जाता है।

—राम राम, दोनो बडी औरतें भगवान का नाम लेन लगी।

—हां, हां लोग जेल जा जाकर पूछते रहते है कि कौन से दिन कितने मुसल मान कैदी रिहा होगे। मियाद पूरी होने के बावजूद कैदी गिडगिडाते है। हमे मत छोडो। बाहर निकलते ही जालिमो से फरियाद करते है। हमारे बच्चो पर तरस खाओ। हमे मत मारो।

इस घटना के बाद कुन्दन उदास-उदास और खोया खोया सा रहने लगा। जब तब उसे बुखार भी आ घेरता।

इसी प्रकार एक रात फिर कुन्दन ने बड़ा अजीब-सा ऊट-पटांग सपना देखा। बाऊजी अभी मुलतान में ही हैं। कुछ लोग छुरे लेकर बाऊजी का पीछा कर रहे हैं। बाऊजी बड़ी फुर्ती से एक पेड़ पर चढ़ जाते हैं। आततायी लोग भी पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करते हैं। बाऊजी बड़ी जोर-जोर से पेड़ को झकझोरते हैं। पेड़ गिर पड़ता है। जमीन उखड़ जाती है। उन लोगों के पाँव जमीन में धसक जाते हैं जो बाऊजी का पीछा कर रहे हैं। जैसे ही पेड़ गिरने को होता है, बाऊजी ऊपर ही ऊपर लाँग जम्प लेते हुए दूसरे पेड़ पर पहुँच जाते हैं। पीछा करते लोग फिर से पेड़ को चारों तरफ से घेर लेते हैं—नीचे उतर, यह पेड़ भी हमारा है। पाकिस्तान में पड़ना है। बाऊजी उस पेड़ को भी पूरे दम से हिलाकर गिरा देते हैं और अगले पेड़ को लपक लेते हैं। जमीन उजड़ती जाती है। पेड़ गिरते जाते हैं। लोग गालियाँ बक रहे हैं। छुरे दिखा रहे हैं। पर उनका बस नहीं चलता। बस यही कहते चलता है—यह हमारा पेड़ है। यह पाकिस्तानी पेड़ है। इन पर मत बैठो। तूने हमारी सारी जमीन को तोड़कर रख दिया। पाकिस्तान को तबाह करके छोड़ेगा। भाग नहीं तो ... । पेड़ के साथ धरती उखड़ती है और बाऊजी अगले पेड़ पर। फूट लो। बाऊजी की देखा देखी पक्षी भी अगले पेड़ों पर शरण लेते हैं। पेड़ों के गिरने और जमीन के उखड़ने से वे पक्षी चीत्कार कर उड़ते हैं। हवा की साँय-साँय की आवाज ऐसे निकलती है जैसे सवेरे भाभी, दीदी और माँ जी की रोने से गन्दली-सी आवाज पैदा हो रही थी।

अंत में बाऊजी एक बड़े वट वृक्ष पर लम्बी कूद से पहुँच जाते हैं। पीछा करते लोग हाँफने लगते हैं। लो यह तो बच गया। यह हिन्दुस्तान का पेड़ है। वहाँ जाना अब हमारे लिए खतरे से खाली नहीं है। लौट चलो। पर ऊबड़-खाबड़ जमीन पर उनसे ठीक से चला नहीं जाता। वे बार-बार गिर जाते हैं। उनके मुंह से गन्दी गन्दी गालियाँ निकल रही हैं।

बाऊजी बहादुर हैं। वे हाथ को उठाकर हवा को रोकने की कोशिश करते हैं। हवा रुक जाती है। लोग तड़पने लगते हैं। पर वे फौरन हाथ को गिरा देते हैं। हवा बहने लगती है। शायद उन्हें ध्यान आ जाता है कि वहाँ पाकिस्तान में बहुत से उन्हें चाहने वाले उनके मुसलमान दोस्त हैं।

हवा चल पड़ने के बावजूद पक्षी बेचैन हैं। वे बराबर क्रन्दन किये जा रहे हैं। एक उड़ान इधर की भरते हैं तो दूसरी उड़ान फौरन उधर की भरते हैं, जैसे समझ नहीं पा रहे। उनका कौन सा देश है।

कुन्दन को बाऊजी की बहादुरी पर गरूर होता है। पक्षियों की हालत पर वह निराश होता है। जमीन के टूटने का दृश्य देखता है तो जैसे उसके कलेजे से कुछ निकलकर अदृश्य की ओर भागता है। छटपटाता है। उसका कलेजा जमीन पर गिरकर तड़पड़ा रहा है।

तभी वह चिल्ला उठता है। बाऊजी बचकर आ गये। बाऊजी आ गये। कहते-कहते वह माँ की चारपाई तक पहुँचता है। माँ उसे सीने से लगा लेती है। कुन्दन का बदन बुखार से तप रहा है।

सवेरे डॉक्टर आता है। कुन्दन का उपचार हो रहा है—डरपोक लड़का है। यह बार-बार नींद में दहल जाता है—माँ डॉक्टर से कहती है।

—नहीं, नहीं, डरपोक नहीं बहादुर। क्या? डॉक्टर हल्के हाथों से कुन्दन के कंधे थपथपाता है क्या हुआ था?

—सपने बहुत आते हैं। कुन्दन धीरे से कहता है।

—सपने तो शूरवीरों को आते हैं। अच्छे भी बुरे भी। इन्हीं से जिन्दगी की खुशहाली की राह निकलती है। अभी नहीं समझोगे। सोये रहो। पहले ठीक हो जाओ। मेरे पास आना। बैठना। समझाऊँगा।

डॉक्टर साहब चले गये। दवाई लेने से कुन्दन को कुछ चैन मिला। फिर भी बीच नींद में कभी बाऊजी को पुकारता है। कभी कहता है डाक्टर साहब की दुकान पर जाऊँगा। अच्छी बातें करते हैं। सपनों का पूछूँगा। सपने सच्चे होते हैं कि झूठे?

कुन्दन की ऐसी मनोदशा देखकर तमाम घर वाले बहुत चिन्तित थे। विशेष रूप से अलका और जमना। जमना हर समय हनुमान जी की तस्वीर के सामने झोली पसारकर दुआयें माँगती रहती—दया करना। तुम ही पर मेरा पूरा भरोसा है। अलका भी चुपके चुपके आँसू बहाती।

मनोज बार-बार आने-बहाने डॉक्टर के पास दवाई के बारे में पूछने चला जाता मगर असली मकसद मन का वहम मिटाना होता। वही पूछता—डाक्टर साहब यह क्यों हो रहा है?

बच्चे को ऐसे सपने बार-बार आने से दिमाग पर कोई बुरा असर तो नहीं पड़ेगा? कब तक इस बच्चे की सेहत दुरुस्त हो जायेगी।

डाक्टर तसल्ली देता—ऐसा होता है। अक्सर जब हम अपने माहौल पर काबू नहीं रख पाते। उसे लाँघने की कोशिश करते हैं तो ओवर सेनेटिव (अति संवेदनशील) लोगों के साथ ऐसा होना मामूली बात होती है। यह कोई बीमारी नहीं। तुम्हें घबराने की जरूरत नहीं बल्कि माता जी का भी हौसला बढ़ाओ। डर है ऐसे में उन्हें कुछ हो न जाये।

बाढ़ चली गयी मगर अपना विकराल रूप छोड़ गयी। कुछ ऊँची जगह बसी कॉलोनियों को छोड़कर, हर कहीं बाढ़ के पुख्ता निशान मौजूद थे। स्टेशन भी डूबा

था लिहाजा बहुत जगह रेलवे लाइनें अपनी जगह छोड़कर धँस गयी थी। स्टेशन तक कोई भी गाड़ी नहीं पहुँचती थी। वैसे भी इन दिनों गाड़ियाँ बहुत सीमित और अनिश्चित समय पर चलती थी। अब तो इस हालत में गाड़ियों का कोई ठिकाना था ही नहीं। दो एक गाड़ियाँ आउटर सिगनल से भी बहुत पहले ही आकर रुक जाती और वहीं से वापस चल पड़ती। ऐसा ही हाल सड़कों का था। वे भी टूट फूट की शिकार हुई थी। कुछ घोर व्यावसायिक लोग अनाप शनाप किराया वसूल करके बसें चलाते थे।

गाँव तो उजड़ से गये थे। कई व्यक्तियों, पशुओं की लाशें झाड़ियों से उलझी हुई दिखती। बक्से और घरों का साधारण सामान भी लावारिस हालत में इधर उधर बिखरा था। बक्सों आदि को लुटेरे खाली करके छोड़ गये थे।

सफाई कर्मचारियों का मुहल्ला तक आना बिलकुल बन्द हो गया था। जिन दूर दराज की बस्तियों में उनका बसेरा था, वह सब बाढ़ की भेंट चढ़ चुकी थी। वे अपने घरौंदे के पुनर्निर्माण में अपने को लगाये थे। घर का न होना कितना यातनापूर्ण और आदमी को तोड़कर रख देने वाला होता है। बिना हिन्दुस्तान पाकिस्तान से विस्थापित हुए कई लोगों ने भी उस कचोट को झेला। वे संघर्ष कर रहे थे। यह उनके अस्तित्व की लड़ाई थी। जैसे वे अपने आपको दाँव पर लगाये थे।

इन लोगों के मुहल्लों में सफाई कर्मचारियों के न आने पर मुहल्ले सड़ने लगे। हर जगह, घरों से लेकर गलियों-नालियों में दुर्गन्ध की लहरें उठने लगीं। सम्भ्रान्त लोग और भगत स्त्रियाँ जो सफाई वालों का सामना होते ही अपना मुँह-नाक सिकोड़ने लगती थी, अब इसके बिना आये ही बार बार अपने रूमाल धोती आदि से अपनी नाक बचाते फिरते। सारी उम्र यही लोग अपनी नाक बचाते हैं। नाक छिपाते हैं। नाक ऊँची करते हैं। मगर नाक है कि बार बार नीची हो जाती है। पता भी नहीं चलता आपसे आप किसी भी क्षण कट तक जाती है और अगर पता चलता भी है तो वे पता न चलने का ढोंग करते हैं। एक से एक सुगन्धित, खूबसूरत रूमाल मुहैया करते फिरते है ताकि आम और खास लोगों के सामने नाक रह जाये। मगर नाक फिर भी धोखा देने से बाज नहीं आती।

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो न आम लोगों की परवाह करते हैं, न खास लोगों की। वह सिर्फ अपनी नाक की परवाह करते हैं। जैसी शक्ला-सूरत पर नाक होती है उसे वैसा ही बना रहने देते हैं। यही उनकी नाक का दम-खम होता है।

ऐसी ही एक नाक वाला अपने घर के सामने झाड़ू लगा रहा था, नाली साफ कर रहा था। अलका की सास ने उसे दूर से देखा तो उन्हें कुछ राहत सी मिली कि शायद मुद्दत बाद कोई सफाई वाला आया तो सही। तेज कदमों से

उसकी तरफ बढी। जाकर प्रश्न किया—भाई जमादार हो ?

उस व्यक्ति ने बडी शालीनता से उत्तर दिया—अभी तक तो नही। पर क्या पता माँ जी कल को यही सब करना पडे। इन हालात मे क्या कहा जा सकता है।

—मुझे माफ कर देना पुत्तर। उन्होने उसके सामने हाथ जोड दिये।

—क्यों शर्मिन्दा करती हैं माँ जी। हाथ जोडकर मुझे पाप का भागीदार बनाती हैं।

—जुगो जुगा तक जीदा रएँ। आशीष देती हुई, जमादार न मिलने की निराशा, पर एक अच्छा इन्सान मिलने की खुशी समेटती हुई वह लौट आयीं।

—आज छुट्टी थी। दोपहर भोजन के समय उन्होने यह सारी बात अपने बच्चो को बतायी।

—माँ जी दुनिया मे हर तरह के लोग रहते हैं। शुक्र है आपका वास्ता ठीक आदमी से पड गया सयोग है। मनोज ने कहा।

यशोदा बोली—मनोज ठीक कहता है। तीसरे मकान का पप्पी बता रहा था कि एक नौजवान दुबली-पतली लुटी पिटी लडकी पाकिस्तान से आकर अपने दूर के रिश्तेदारों के यहाँ रह रही है। घर वालो की कोई सुध बुध नही। जिस तिस से पूछती फिरती है—कहाँ से आये हो ? जैसाकि आजकल रिवाज सा हो गया है। दो अनजान कही भी मिलते हैं तो यही तहकीकात करते है—आप कहाँ से आये हो ?

उस बेचारी ने एक बूढे से आदमी से पूछ लिया—भाईया जी कहाँ से आये हो ? उस आदमी ने पलटकर जवाब दिया—तेरी माँ दे घरो। ऐसे आदमियो को न अपनी नाक की लाज होती है, न दूसरो की।

वे लोग खा पीकर अपने-अपने बरतन समेटकर टकी के पास रख रहे थे कि जीतो जो पहले ही खा पीकर बाहर खेलने भाग गयी थी, दौड लगाती हुई आयी—पाऊची पाऊची बाहर चनाप आया है।

कुन्दन तो जीतो तोपी की भाषा सबसे अधिक समझने लगा था। फिर भी बडी मासूमियत से बोला—हे भगवान बचाना ! पहले सतलज (नदी की बाढ) आया था अब चनाब (दरिया) आ गया। भागो।

बेदी साहब ने कुन्दन की गर्दन पकड ली—चुप बदमाश ! फिर जीतो से पूछा —कौन है। है कहाँ।

जीतो फिर अपनी बात स्पष्ट करने लगी—चनाप है। कसम मैंने खुद सुना था। आपको एक आवाज लगायी थी पेदी साप। गली का कोई आदमी उसे पहचानता है। उसने ही उसे चनाप कहा। अपने पास बुलाकर बोला—कहो चनाप (जनाब)। तो वह चनाप उनसे ही बातें करने लग गया है।

—देखता हूँ। कहते हुए बेदी साहब बाहर गली मे चले गये।

दो मिनट बाद वापस आये। उनका चेहरा खिला हुआ था—बधाई। माता जी खुशखबरी। खिलाओ मिठाई। बाऊजी हिन्दुस्तान पहुँच गये हैं। मुश्किल से इतना कहकर मनोज को बैठक में ले गये। जहाँ तथाकथित चनाप या जनाब महोदय बैठे हुए थे।

वेदी साहब के इन चार पाँच शब्दों से पूरा घर रौनक और उत्साह से लबालब भर गया—हे मेरे राम जी जमना भावातिरेक से इससे अधिक कुछ नहीं कह पायी। उसके हाथ आसमान की तरफ उठे हुए थे और आँखें आँसुओं से भर गयी थीं। यशोदा ने जाकर उन्हें अपनी आगोश में जकड लिया। और अपनी हथेलियों से उनकी आँखें पोछती रही। बार बार। अलका भी अपने आँसू नहीं रोक पा रही थी। हरिया और कुन्दन तो उछलने कूदने लगे और चिल्लाने लगे—बाऊजी आ गये। बाऊजी आ गये।

जीतो झट से बैठक से होकर लौट आयी—कहाँ हैं तुम्हारे पाऊजी। वहाँ तो चनाप बैठा, पाऊची और भ्राजी से बातें किये जा रहा है। झूठे तुम्हारे पाऊची नहीं आये।

यशोदा ने पहले उसे डाँटा—ऐसा नहीं कहते। फिर गोदी में बैठाकर समझाने लगी, इनके बाऊजी के पाकिस्तान से निकल आने की खबर आयी है।

उस आदमी को चाय-नाश्ता कराया गया। उसे विदा करके जसे ही वेदी साहब और मनोज आँगन में आये तो सभी पूरा विवरण जानने के लिए उतावले हो रहे थे।

जमना ने उसी उतावली से पूछा—कहाँ हैं बाऊजी। यही प्रश्न अलका ने भी माँ के साथ किया। दोनों की साँसें बहुत तेजी से चल रही थीं।

मनोज न कुछ असमजस में पडते हुए कहा—पता नहीं।

—क्या ? यशोदा ने भी धीरज खोते हुए पूछा।

—आ तो गये है, पर पता नहीं कहाँ पर है।

—किसने देखा। कहाँ पर देखा, उनको। क्या ठीक से देखा। अलका और जमना के सशयग्रस्त प्रश्न उलझ रहे थे।

वेदी साहब ने हस्तक्षेप किया—ऐसे आपकी समझ में कुछ नहीं आयेगा। धीरज रखो और धीरज से इसे पूरी बात कहने दो।

—हाँ हाँ ठीक है। कहो कहो। जमना की जबान में अब भी धय कहाँ था।

—सुण मेरी भाभी सुण, तू भी सुण काकी। (छोटी बच्ची) अलका पर मनोज को जब प्यार आता तो उसे काकी कहता। कुन्दी, हरिया जीतो, तोषी, कुकी सभी आ गये। मनोज के एक एक शब्द से मधुरता एव उल्लास टपक रहा था।

छोटे बच्चा, खासतौर से तोषो, जीतो कुकी की समझ में पूरी बात बठ नहीं रही थी फिर भी वे पूरी निष्ठा के साथ बठे थे, मानो गीता प्रवचन सुन रहे हो।

मनोज ने बताया—बाऊजी का सहकर्मी—पक्का यार सरदार गुरबख्श सिंह (बाऊजी उसे ऐसे ही पुकारते थे) मुझको थोड़ी सी देर के लिए लुधियाना स्टेशन पर मिले थे। तब मैंने उन्हें फिरोजपुर का पता दे दिया था कि हम फिलहाल बेदी साहब के यहाँ जा रहे हैं।

यह वाला आदमी (चनाप) फिरोजपुर आ रहा था और चाचा गुरबख्श सिंह दिल्ली जा रहे थे। गुरबख्श सिंह ने इससे ताकीद की कि जरूर-जरूर इस पते पर इत्तिला कर देना कि उन्होंने (चाचा गुरुबख्श सिंह ने) जालन्धर या अमृतसर स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर चलती गाड़ी से मनोज के बाऊजी को देखा था।

—यह तो कोई खास पक्की खबर न हुई। जमना ने सारी घटना जान लेने के बाद लम्बी साँस छोड़ी। साँस के साथ संशय झूल रहा था।

—दिल छोटा न करो माताजी, बेदी साहब ने दिलासा दिया, हौसला रखो। मेरे से लिखवा लो। यह खबर पूरी तरह सच है। पक्के दोस्त रात के अँधेरे में भी एक दूसरे को पहचान लेते है। भूल का कोई सवाल ही नहीं है।

—मैं कल ही अमृतसर जालंधर चला जाता हूँ। मनोज ने कहा।

—रास्ते हैं कहाँ? अलका जैसे वहीं बैठी-बैठी उलझी स्थितियों से जूझने लगी, कैसे जाओगे प्राजी।

—कुछ रास्ता पैदल, कुछ बस से और कुछ ट्रेन के जरिये तय करूँगा और पहुँच जाऊँगा। बैठे रहने से तो यही बेहतर होगा।



दो सगे भाई थे। विष्णु और रामचन्दर। नौजवान। खूबसूरत इतने कि देखने वालों की आँखें ही चुंधियाने लगें। दोनों की उम्र में फासला मुश्किल से ढाई-तीन साल का था। दोनों ही नौशेरा में बैंक में नौकरी करते थे। दोनों की दो-दो औलादें ढाई और सात साल के बीच की थीं।

सवेरे का वक्त था। फिज़ां एकदम से भारी। कोहरे की वजह से कम। अफवाहों की वजह से ज्यादा। दस-बारह रोज से उन्होंने बैंक जाना छोड़ दिया था।

सवा नौ बजे के करीब किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। जाकर देखा। बैंक का चपरासी था—लियाकत अली। बोला—मनेजर साहब बुलाते हैं। कहा है, थोड़ी देर के लिए ही सही, दस-सवा दस बजे जरूर आ जायें। रजिस्टर समझने हैं। बैलेंस ठीक नहीं बैठ रहा। आप हिन्दुस्तान चले गये तो पीछे मुश्किल हो जायेगी।

—बैठो लियाकत। लस्सी पीकर जाओ।

—नहीं, जल्दी में हूँ। पर सोचता हूँ कैसे जायेंगे आप लोग। हर तरफ

खौफ है। रास्ता भी थोड़ा लम्बा है। ताँगा भिजवा दूं।

—ताँगा तो खैर मिल ही जायेगा। विष्णु ने कहा।

—मैं ही लेने आ जाऊँ ? लियाक्त ने पूछा।

—नहीं अरे नहीं। चार पाँच दिनों से तो कोई वारदात सुनने को नहीं मिली।

—खुदा का शुक्र। ऐसा-वैसा कुछ न हो। पर सोचता हूँ आप न ही जायें तो बेहतर। मनजर साहब से कह दूंगा आप नहीं मिले।

—आजकल सभी तो घरों में दुबके पड़े हैं। कौन नहीं मिलता। खामखाह तुम पर खफा होंगे। विष्णु ने कहा।

—कई दिनों से घर में पड़े हैं। आज सैर ही सही। आते वक्त मौका लगा तो सब्जी मण्डी से फल सब्जी भी ले आयेंगे। रामचन्दर बोला।

दोनों भाई ढंग से तैयार होने लगे। प्रेस किये हुए कपड़े पहनने लगे। टाई बाँधी। कोट पहना।

सीधी देवी रामचन्दर की पत्नी थी। वह बार-बार कहे जा रही थी—मेरी आँख फड़क रही है। मैं कहती हूं। मत जाओ। क्या कर लेगा मनेजर तुम्हारा।

—कर तो क्या लेगा। बात विश्वास की है। विष्णु ने कहा—ऐसे वहम नहीं करते।

—विश्वास तो छलनी हो गये। गोली मारो मनजर को। बैंक और नौकरी को। विष्णु की पत्नी कौडी बाई की आवाज में गुस्सा था।

—अरे भाई, बाहर नहीं निकलेंगे तो पता कैसे चलेगा। हिंदुस्तान जाने का जुगाड़ घर में बैठे।

दस बजे दोनों भाई घर से निकले। दरवाजे तक उनकी पत्नियाँ आयीं। बच्चे जिज्ञासावश सामने के मैदान तक अपने पिताओं के साथ साथ पहुँच गये। इसी मैदान में शाम को बच्चे तरह-तरह के खेल खेला करते थे। चिनार के छोटे पड़ों पर चढ़ने की कोशिश किया करते थे। अपने से बड़े बच्चों की देखा-देखी।

उनके मन खेल खेलने को मचलने लगे।

मगर सामने आठ दस भारी भरकम आदमी पेशावरी पोशाक सलवार शेरवानी कुल्ला पगड़ी में आते दिखायी दिये। आते ही उन्होंने उनके पिताओं को घेर लिया। उनसे गुफ्तगू करने लगे। बच्चों ने अपने पिताओं के चेहरों पर दहशत देखी। वे बच्चों को इशारों से भाग जाने को कह रहे थे।

बलवाइयों का हजूम बढ़ता जा रहा था।

बच्चे भागे भागे घर तक पहुँचे। उनकी ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गयी।

—तभी चीखों की आवाज बुलन्द हुई—हाय! हमें मत मारो। हमारे

बच्चो पर रहम खाओ।

पिच्च पिच्च जैसे एक साथ खून की कई पिचकारियाँ छूटी हो। लाठियाँ नेजे, तलवारें भाँजने और साथ ही कुछ बन्दूकें चलने की आवाजें बुलन्द हुइ। और इन सबसे ऊपर डरे सहमे खौफजद परिन्दो की फटकारियाँ और च चैं। चारो ओर से कुत्ते भौंकने लगे। वे बलवाइयो की तरफ काटने को दौडे तो उन्होने तलवारो से कुत्तो के सर कलम कर दिये। उनके लिए जानवर और आदमी एक समान थे। इधर उधर रह रहकर चारो ओर आग के शाले उठने लगे।

कौन कहाँ गया। किसी को किसी का होश नही रहा। जिसको जिधर राह या कोना मिला, जाकर वही दुबक गया।

देवरानी जेठानी सन्नाशून्य बन गयी। फिर घटे एक बाद शोर शराबा थमा तो धीरे से दरवाजे मे से झाँककर बाहर देखा कि शायद आदमियो की कोई सुध बुध मिले।

दरवाजे पर काफी मैली कुचैली सी चिक टँगी हुई थी। इसे देखकर अचम्भित हुइ। आदमी तो आदमी बच्चो तक कोई पता नही चल रहा था।

कहाँ जायें, किधर जायें, उन्हें कहाँ ढूढें ? दिल जसे फटने को हो रहा था। औरत जात, ऊपर से बाहर निकलने की हिम्मत नही। इसी प्रकार पौन घण्टा और गुजर गया।

तब दरवाजे पर हल्की सी आहट हुई। डरते-डरत दरवाजे के छेद मे से झाँका। लियाकत अली था। दरवाजा खोलें न खोलें। पशोपेश मे पड गयी। सज्जन शत्रु की पहचान के तमाम मापदण्ड बेमानी हो गये।

—खोलो, दरवाजा खोलो, बहन।

नही भी खोलें, तो दरवाजा टूटते कौन सी देर लगती है।

'चर चर की ध्वनि के साथ दरवाजा धीरे धीरे आधा खुला।

लियाकत अली के हाथ मे एक गठरी थी। उसने फौरन दरवाजा बन्द कर दिया—मैंने ही यह चिक किसी तरह टाँग दी थी ताकि हिन्दुओ का घर न लगे।

फिर उसने कमरे मे जाकर, चुपचाप गठरी खोली। उसमे दो बुरके थे—पहन लो इन्हें और मेरे साथ चल पडो। बस जेवर नकदी रख लो।

—क्या हुआ । मीधी का वाक्य जसे तलवार की धार से कटकर रह गया।

—मैं आपका गुनाहगार हूँ। मैं ही तो भाई साहबान को घर से निकालने का सबब बना।

—हे दोनो औरतो की साँसे धौंकनी हो गयी।

—अभी ठीक से कुछ पता नही। शायद अच्छा न हुआ हो। सब्र रखो। खुदा पर भरोसा। बच्चे तो मेरे घर हैं।

जल्दी जल्दो दोनो ने किसी प्रकार उल्टे-सीधे हाथ मारे। कुछ उठाया। कुछ

रह गया। उन्हीं उल्टे-सीधे हाथों से बुर्के पहने। पिछले दरवाजे से निकलीं। लियाकत अली अन्दर की साँकल, चटखनिया कसकर सामने के दरवाजे से बाहर आया। ताला लगाया। वह आगे आगे चलने लगा। उसके पीछे पीछे दो बुरका पोश औरतें चल रही थी।

लियाकत अली के घर मे मीढ़ी-कौडी के बच्चे फटे कटे काले भूरे कपड़े पहने हुए खडे हुए थे। उनके सिर के बाल बेतरतीबी से कटे-छटे हुए थे ताकि साधारण मुस्लिम बच्चो की तरह दिखें।

बुरका उतारने पर बच्चे उनसे लिपटकर सिसकने लगे।

—क्या हुआ मेरे लालो। सब ठीक हो जायेगा। कौडी ने उन्हें अपने से चिपटाते हुए तसल्ली देनी चाही।

—मार डाला छुरे से, मैंने देखा। एक बच्चे ने कहा।

—लाला जी चीख रहे थे। दूसरा बच्चा रोने लगा।

इतना सुनते ही दोनो देवरानी जेठानी गश खाकर गिर पड़ी।

लियाकत अली की बीवी और उसकी विधवा बहन उनके मुह पर पानी के छीटे मारने लगी।

आधे घण्टे के उपचार के बाद उन्हे थोडा होश आया तो कहने लगी—पता लगाओ भाई।

—अभी कुछ समझ नही आ सकता, बहन। खतरा टला नही है। हमे कुछ दिखाई नही दे सकता। दूसरी जगहो के शातिर थे। पहले से ही हुकूमत के साथ पूरा इन्तजाम था। मरे कटे लोगो को ट्रक लादकर ले गया। खुदा चाहेगा वह ठीक-ठाक होंगे। कभी भी चुपके से आ पहुचेंगे। या रिफ्यूजी कैम्प पहु च जायगे।

चार रोज तक पूरे शहर की जमीन खून से नहाती रही। मकान गिरते तो जमीन थर्रा उठती। मासूमो की चीखो से हिल हिल जाती। इस दौरान लियाकत अली उन्हें मुसलमानी वेश मे रखे रहा। लोगो से कहता कि सरगोधा से खालाजान और उनके बच्चे आये हुए हैं।

फिर एक दिन वह उन्हे किसी तरह शरणार्थी शिविर तक पहुँचा आया। अलविदाई से पहले और बाद मे सभी फूट फूटकर रोते रहे। लियाकत ने अगुली आसमान की जानिब उठाते हुए कहा—जो मुकद्दर म लिखा है। आप उनके आने की उम्मीद मत करना। इतना कहते न कहते वह फिर से बुरी तरह से फफक पडा।

बाबू जयदयाल आज सुबह अमतसर पहुँचे थे। हाल बाजार मे उनका भतीजा भरत रहता था, जो इन्श्योरेंस कार्पोरेशन मे बतौर एजेण्ट काम करता था।

बस इतना-सा यह खतोखिताबत का पता था, जो उन्हें मालूम था। इससे पहले वे कभी अमृतसर नहीं आये थे। वे पूछते पुछाते एक-डेढ घण्टे मे ठीक ठिकाने आ पहुचे। उन्हें देखते ही भतीजा और उसकी धमपत्नी रगती खुशी से पागल से हो उठे। उनके पाँव छुए और प्रश्नो की बौछार कर दी। अब आये? क्या मुलतान से ही आ रहे हैं? और कौन-कौन आया? बाकियो के बारे मे समाचार?

बाबू जयदयाल ने बताया कि बताने लायक कुछ भी नही है। अपने सिवा किसी के बारे मे कुछ नही बता सकते। खुद उन्ही के डिब्बे की उसी खिडकी मे गोलियो की बौछार हुई थी जहाँ यह बैठे थे। बस समझिये चाय ने ही बचा दिया। वे किसी तरह भीड भरे डिब्बे मे से रास्ता बनाकर टी स्टाल तक पहुचे थे तभी गोली चली वरना वे आज यहाँ होते। अब इतना ही बता सकते हैं कि वे बचकर आ गये हैं और उनके सामने खडे हैं। न भाइयो की खबर है, न अपने बाल-बच्चो की।

—खैर आप तो आ गये। धीरे धीरे सभी ईश्वर-कृपा से सकुशल आ जायेंगे।

सात घण्टों का सफर उन्होंने टुकडो-टुकडो मे चार रोज मे बिना नहाये, बिना ठीक से कुछ खाये तय किया था। रगती ने उनके नहाने के लिए पानी गम कर दिया। खूब आव भगत की।

दोपहर का खाना हुआ। जयदयाल जी कैसे निकलकर आये यही सब घर के सदस्यो को बता रहे थे। भतीजा उनके पाँव दबा रहा था और पत्नी को हिदायत दे रहा था कि रात के खाने म क्या-क्या बनेगा।

तभी बाहर से किसी लडकी की जोर जोर से रोने की आवाज सुनाई दी। स्वर इतना हृदय विदारक था कि एकबारगी जयदयाल जी का कलेजा जैसे हिल गया। उन्होने भरत से पूछा—कौन है।

बाहर से कुछ बडे बूढो के दिलासा देने स्वर भी सुनाई दिये—चुप हो जा, बच्ची चुप।

रगती ने थाली मे कुछ चावल दाल डालकर दरवाजा खोल दिया था। किसी की आवाज सुनाई दे रही थी।

—जो होना था हो गया। ओस दी करनी ओस दे नाल। (उसकी करनी उसके साथ) जितना चाहे रो लो। रोने से कुछ हाथ नही आयेगा।

—क्या हुआ? जयदयाल जी ने भरत से दुबारा पूछा।

भरत से फौरन बोला नही गया। जरा रुककर लम्बी साँस ली और बताने लगा—चाचा जी। यह लडकी किसी तरह अपने बाप के साथ पाकिस्तान से बचकर आ गयी थी। बाकी का सारा परिवार मारा गया था। बाप बूढा था और बीमार भी। जेब मे पैसा नही। सो कई रोज से दाढ़ी नही बनी थी। किसी शोहदे ने, मुसलमान समझ लिया और बस छुरा घोप दिया। बूढा चिल्लाता ही रह गया

—अरे भई सुनो, मैं, मैं हिन्दू हूँ। हिन्दू ही नहीं ब्राह्मण हूँ। पूरा कमकाण्डी ब्राह्मण।

लड़की भी चिल्लाती रह गयी—छोड़ दो मेरे बापू को, हम हिन्दू हैं। पर कौन सुनता है। जिन पर एक बार जुनून सवार हो जाये, कहाँ सुनते हैं। उनके न कान रहते हैं, न दिल। सारे जजबात मर जाते हैं। वह सामने वाले को मारते हैं और भागते हैं।

वह भी मारकर भाग गया। लोगों को जरा बाद में पता चला। बस शोर मचाने रह गये—भाग गया, भाग गया, हरामी। अब क्या होता है, दिल दिमाग की तरह ही कायदे कानून भी ताक पर रखे हैं। बिलखती हुई बेसहारा लड़की को देखकर सबके दिल दहल जाते हैं—कहाँ जायेगी। किस के पास रहेगी?

—सब मिलकर हर तरह की मदद करो भाई। जयदयाल जी का भर्राया हुआ स्वर निकला।

—वह तो सब सोच ही रहे हैं। मगर किस किस के बारे में सोचेंगे। चाच जी। चारों तरफ बेबसों बेसहारों की भीड़-ही-भीड़ है।

यही दृश्य प्राय हर रोज सवेरे, दुपहर, शाम दिखलायी दे जाता। बिलखती हुई लड़की, दिलासा देते लोग।

जयदयाल जी को यहाँ आये यह तीसरा या चौथा दिन था वह अब अमृतसर छोड़कर फिरोजपुर जाने की सोच रहे थे ताकि बच्चों का कुछ पता कर सकें। साथ ही उन्हें दुबारा पोस्टिंग के लिए आवेदन भी करना था।

दुपहर को रमती ने अभी उसी बदनसीब लड़की को कुछ खिला पिलाकर विदा किया ही था कि उसी वक्त कोई पूछता पुछाता वहाँ पर आया। कुछ देर तक बाबू जयदयाल के भतीजे भरत को एक तरफ ले जाकर खुसुर पुसुर करता रहा। फिर भरत दहाड़ें मार मारकर रोने लगा।

वह आदमी भरत के कंधे थपथपाता हुआ गर्दन नीची करके चला गया।

रोते रोते ही भरत ने अपनी पत्नी और चाचा जी को बताया—भाई विष्णु और रामचन्दर को नौशेरा में जालिमों ने मार डाला। कौड़ी और मीघी भाभियाँ बेवा होकर बहादुरगढ़ अपने भाइयों के पास पहुँच गयी हैं। यही बुरी खबर लाया था, वह भला आदमी।

यह हृदय विदारक सूचना सुनकर बाबू जयदयाल भी जोर-जोर से रोने लगे। फिर दिलासा दिया—पता नहीं खुद को या सबको। सब्र से काम लो। यह खबर, भगवान करे, झूठ साबित हो।

उसी शाम पूरा परिवार, बाबू जयदयाल सहित बहादुरगढ़ के लिए चल पड़ा।

पूरे पाँच राज इधर उधर भटकने के बाद मनोज फिरोजपुर वापस पहुँचा। उसे अकेला आते देख, सबके चेहरे मलिन हो गये। मनोज का अंग प्रत्यंग थकावट से चकनाचूर था। शरीर पर खुश्की छायी थी। बाल अस्त व्यस्त। चेहरे पर कोमलता के सारे चिह्न एकदम लुप्त थे। आते ही उसने सूटकेस को एक कोने मे रखा और सामने रखे स्टूल पर बैठ गया।

सबसे पहले कुन्दन ने हिम्मत की—बाऊजी कहाँ हैं ?

—बताता हूँ। इतना कहकर वह चुप हो गया।

अलका जल्दी से पानी का गिलास भर लायी। यशोदा चाय का पानी चढ़ा आयी। और जमना के ही पास जमीन पर बैठ गयी।

जमना की कुछ पूछने की क्षमता जैसे जवाब दे गयी थी। जबान जकड़ सी गयी थी। यशोदा ने उनकी ऐसी हालत देखी तो बोली—जैसे जमना की ओर से ही पूछ रही हो—बोल वीरे (भाई) सब ठीक तो है ? आगे वह भी कुछ न पूछ सकी। पूरे परिवार मे किसी अनर्थ की आशंका व्याप्त हो रही थी।

—हाँ, मनोज ने इतना कहा और रोने लगा। सबकी हालत चिन्ताकुल देख, रोते रोते ही बोला—बाऊजी ठीक से पहुंच गये हैं, पर लौटती में विष्णु-रामचन्दर भाई साहब मारे गये।

—हाय कहकर जमना ने अपनी छाती कूट ली, क्या हुआ मेरे बच्चों को, किन जालिमों के हत्थे चढ़ गये, वह दोबारा दहाड़ें मारकर रोने लगी।

बेदी परिवार, इन विष्णु रामचन्दर नामों से अपरिचित था। सारे सदस्य असमंजस मे पड़ गये—कौन ?

अलका ने बताया—हमारे बड़े ताऊजी के बड़े लड़के। हमारे भाई साहब इतने शब्द कहते ही वह भी माँ के गले लगकर रोने लगी। देखा-देखी कुन्दन, हरमिलाप भी उनमे सम्मिलित हो गये।

माँ जी और यशोदा सबको चुप कराने लगी। बड़ी मुश्किल से आत्मप्रकाश भी अपने कमरे से उठकर बाहर आये और बोले—तुम्हीं मेरे सब कुछ हो। मेरी तरफ देखो। मेरी खातिर चुप हो जाओ। कहते-कहते उनकी साँस तेजी से चलने लगी। वे अपनी खुरदरी हथेलियो से गालो पर छाये आँसू पोंछने लगे।

—चुप हो जाओ मेरे बच्चो, माँ जी ने कहा, इसके लिए ही चुप हो जाओ। यह बेचारा पहले से ही कितना दुखी है। क्या पता किसकी किस्मत मे क्या लिखा है। ऊपर वाले की मर्जी समझकर सब्र करना पड़ता है। तू भी चुप हो जा मेरी बहन। उन्होंने जमना को अपनी तरफ खींच लिया, तू ही ऐसा करेगी तो इन न्याणों (छोटों) का क्या हाल होगा। उन सबको सब्र का पाठ पढ़ाते पढ़ाते वे स्वयं भी रोने लगी।

अलका उठी। यशोदा के साथ मिलकर सबको पानी पिलाने लगी। किसी

तरह से मनोज को थोड़ा नाश्ता कराया।

घण्टे एक बाद मनोज ने पूरा विवरण कह सुनाया कि यह सब बातें उसे भरत भाई साहब के पड़ोसी से पता चली हैं। बाऊजी अमृतसर भरत भाई साहब के यहाँ रुके थे। जिस रोज वे पहुंचे उसके तीसरे-चौथे रोज इस दुर्घटना का समाचार भरत भाई साहब को घर मिला। तब बाऊजी भी उनके साथ बहादुरगढ़ चल गये। रुक कैसे सकते थे। पर गाड़ियाँ कौन सी ठीक से चल रही हैं। मैं भी पूरे तीन दिन में वहाँ पहुँचा। और पड़ोसी से पूरा हाल जानकर लौट पड़ा। बाऊजी के नाम चिट्ठी लिखकर दे आया हूँ। चिट्ठी में बेदी साहब के दफ्तर का पता भी लिख दिया था। जैसे ही व वापस अमृतसर आयेंगे, उन्हें हमारा पता चल जायगा।

—ठीक किया। और तू वहाँ पर कितना इन्तजार कर सकता था। जमना ने लम्बी साँस लेते हुए जैसे अपने को तसल्ली दी, जैसी हरि इच्छा।

इसके बाद पूरा घर हर क्षण बाऊजी के आने की प्रतीक्षा करने लगा। सभी जरा सी आहट पर चौंकते। बच्चे गली पार करके सड़क तक हो आते। शाम को सभी बड़े भी सैर के बहाने दूर तक निकल जाते। घर लौटते तो घर में भी बड़ी उत्सुकता से झाँकते कि शायद कहीं दूसरे रास्ते से बाऊजी आ तो नहीं गये।

एक दिन, तीन या चार बजे का समय रहा होगा, दरवाजे पर दस्तक हुई। कुन्दन चौंककर उठ बैठा—बाऊजी।

मनोज की थकावट अभी तक दूर नहीं हुई थी। वह चारपाई पर लेटा था। उठकर आँखों को मलता हुआ, दरवाजे तक जा पहुँचा।

बेदी साहब थे। साइकिल को गलरी में रखते हुए पूछा—क्या हाल है कुन्दी का ?

—बेहतर है, जमना ने कहा, यह तो बाऊजी-बाऊजी की रट लगाये है। आप इतनी जल्दी कैसे ?

—बस इसी के बाऊजी को लेकर आ रहा हूँ। बधाई हो। देखो तो बाहर। ताँगा आ रहा है।

सभी बाहर को लपके।

इतने तपे शरीर के बावजूद कुन्दन ने जैसे चारपाई से ही लम्बी उड़ान भरी और बाऊजी से ऐसे जा लिपटा जैसे उनमें समा जायेगा। पहले कुछ सिसका, बाऊजी ने उसके बालों में अँगुलियाँ फेरी तो वह गर्दन को पूरी तरह पीछे को मोड़ कर बाऊजी के चेहरे को देखकर हँसने लगा।

इस स्वप्निल दृश्य को देखकर सबकी आँखें नम हो आयी। जमना पहले बहुत आगे थी। अब इस भीड़ में उसे सकोच होने लगा। वह सिकुड़ती सी धीरे धीरे

पीछे होती गयी। वे कुछ क्षणो के लिए पति से आँखो से ही मिली थी, दोनो की आँखो ने एक-दूसरे से उन्ही एक दो क्षणो मे ही, महीना की यन्त्रणा, त्रासदी, गिले शिकवे, प्यार, वियोग सयोग का पूरा इतिहास कह डाला।

कुन्दन की देखा-देखी हरमिलाप भी उसी प्रकार बाऊजी को लिपट रहा था जैसे दोनो भाई उनसे कुश्ती लड रहे हो—हमे छोडकर क्यो गये थे। इतने दिन क्यो लगा दिये।

—बस बाबा बस बेदी साहब ने कहा और किसी को भी नम्बर लेने दोगे या नही। पहले कुर्सी लाओ इन्हे बैठने तो दो।

यशोदा कुर्सी ले आयी थी। वे बैठे और बारी-बारी सबका हालचाल पूछने लगे।

तब जमना धीरे से आगे सरकी। अटकते अटकते कुछ बोली। सिफ दो शब्द सुनाई दिये—विष्णु, रामचन्दर और फूट पडी।

—मत रुला और। बहुत रो धोकर आ रहा हूँ। कहते कहते वे रो पडे। फिर धीरे धीरे कौडी-मीधी से सुना नोशेरा का पूरा वृत्तान्त सुना डाला।

कुछ ही क्षणो मे, खुशी का जो माहोल बना था, मातमी हो उठा। अलका, मनोज, कुन्दन, हरमिलाप आँसू बहाने लगे। पानी के गिलास आये। ढाढस बँधाया गया। होनी को कोई नही रोक सकता। जिस पल जो और जसे जिसके मुकद्दर मे लिखा होता है, वही होकर रहता है। फिर चाय पीते समय जयदयाल जी ने उस पण्डित का वाकया भी कह सुनाया जो किसी तरह पाकिस्तान से मुसलमानो के हाथो से तो बचकर आ गया था पर यहाँ हिन्दुस्तान मे अमृतसर आकर हिन्दुओ के ही हाथा मारा गया। फूट गये नसीब उस यतीम लडकी के।

बाऊजी के मुह से नौशेरा मे हुए भाइयो के कत्ल की दुखद घटना को सुनकर कुन्दन को ऐसे लगा जैसे सब कुछ उसी के सामने घटित हुआ हो, जिससे अब वह कभी उबर नही पायेगा। इसी प्रकार बेदी साहब से उनक लाहौर छोडने की दास्तान ने भी उसे बहुत तक्लीफ पहुँचाई थी। और आह! वह अमतसर वाली मासूम लडकी यह सब तो उसके जेहन मे उम्र भर की तक्लीफो के समान थी।

उसने आँखें बन्द कर ली और चारपाई पर लेट गया जैसे नीद आ गयी हो। कुछ देर तक वह यू ही लेटा रहा और सोचता रहा।

इन वेदनाओ और उदासी के बावजूद, धीरे-धीरे उसमे सुरक्षा की भावना से शिथिलता दूर होने लगी और थोडा उत्साह भी पैदा हुआ—हाँ बाऊजी आ गये है। प्यारे बाऊजी।

वह उठा और कमरे से उर्दू की कुछ किताबें उठा लाया। एक एक किताब

बाऊजी के सामने रख रखकर बताने लगा—यह सब यहीं से खरीदी हैं। यह देखिये—वीर रानियां की कहानियाँ, मुगलों की सल्तनत, जादू का आईना। यह पाँच आने की, यह सवा पाँच आन की और यह साढ़े पाँच आने की।

—वाह खूब। बहुत अच्छी हैं। तू ने तो पूरा रुपया ही खर्च कर डाला। बाऊजी ने कहा।

—शेखूपुरे में शाह जी मास्टर साहब कहते थे—किताबें खरीदने में कभी कंजूसी नहीं करनी चाहिए। और कहते थे कहते-कहते कुन्दन एकदम से चुप हो गया और इधर-उधर देखने लगा।

—और क्या कहते थे, मनोज ने भाई को अच्छा होते देखकर प्यार किया। तू बार बार उदास क्यों हो जाता है। मास्टर साहब की याद आ गयी ना। वह तो बहुत मारते थे।

—सबक याद न करने पर मारते थे। प्यार भी बहुत करते थे। मेरी सारी किताबें और रिसाले शेखूपुरे में रह गये। मैंने तो उठाये थे। भाभी ने रखवा दिये। कहाँ कहाँ ढोता फिरेगा। वापस आकर पढ़ लेना। अब चलो वापस शेखूपुरे।

बच्चे की बात से एकबारगी सभी स्तब्ध रह गये। कौन जाता है वापस। किसमें दम है वापस जाने का। कुछ लोगों के बारे में पता चला था कि वे पाकिस्तान के रिफ्यूजी कैम्पों में हिन्दुस्तान आने के इन्तजार में रह रहे थे। मन में तृष्णा जागी। कैम्प से बस थोड़ी देर के लिए अपने घरों को लौटे थे, अपना गढ़ा खजाना उठाने के लिए और फिर नहीं लौटे। हमेशा के लिए गर्क हो गये।

ऐसी ही अनेक बातें थीं जिनका कोई अन्त नहीं था, जिस जिस ने जिस रूप में देखी सुनी थी, एक दूसरे को बताते-सुनाते रहते थे। इन दिनों ऐसी ही चर्चाओं की भरमार थी। कुल मिलाकर दोनों तरफ के मार काट के किस्से, जिन्हें कहते कहते जबानें लड़खड़ा जाया करती थी, मगर दबाये नहीं दबती थीं। हृदय की चीत्कार को कौन कब तक दबा पाया है। अवसर पाते ही फूट पड़ती है। इस पर कब किस इन्सान का बस चला है।

दूसरे दिन थोड़ा आराम करने के बाद, मनोज और जयदयाल जी आपस में धीरे धीरे गम्भीरता से बातचीत करने लगे। जमना भी बीच में आ बैठी। वे एक दूसरे से पूछ रहे थे—किसके पास कितने पैसे बचे हैं। इतने दिन लड़की की ननद के घर रहे किसी तरह कुछ भार उतारा जाये और आगे निकलने की योजना बनायी जाये।

इतने में बहुत जोर का अन्धड़ तूफान आया। सर्द हवा के झोंके और साथ बारिश भी शुरू हो गयी।

बेदी साहब उनके पास आये। दो कम्बल पकड़ाते हुए बोले—कौन-सा मसला हल किया जा रहा है। मैं सब समझता हूँ। फिलहाल छोड़िये इसे और चलिये मेरे कमरे मे। अपनी होम्योपैथी की लाइब्रेरी दिखाता हूँ। वे उन सबको अपने कमरे म ले गये। अपने सर्टिफिकेट दिखाने लगे। अपनी उपलब्धियाँ गिनाने लगे कि कितने कितने मरीजो को ठीक किया। लेकिन कुछ मज इन्सान के काबू से बाहर होते हैं जिन्हें सिर्फ ईश्वर ही शफा बख्श सकता है। मेरे साले साहब का केस ही लें। जा किसी भी फिजिशियन के काबू मे नही आ रहा। मेरी दवाई भी बेअसर। डिग्रियाँ बेकार यह एक नयी दवाई आयी है।

बेदी साहब साहित्य सगीत और औषधि के ज्ञाता थे, इन विषयो की चर्चाओं में घण्टो व्यतीत कर सकते थे लेकिन वे सोचते, आजकल विस्थापितो की समस्या के अतिरिक्त किसी अन्य विषय पर बात करना बेमानी, सन्दर्भहीन हो चुका है, शीघ्र ही वे सारी स्थिति को भाँप गये। वे एकदम से चुप हो गये। बाहर रुक रुककर बारिश दरवाजो खिडकियो से टकरा रही थी। समूचा वातावरण डाँवा डोल हो रहा था।

बेदी साहब ने महसूस किया कि उनकी बातो मे वे सब पूरी रुचि नही दिखा पा रहे। बस एक बार जमना के मुह से आह के साथ यह शब्द निकले—मैं तो हर वक्त सवेरे शाम बसी वाले के सामने हाथ जोडती रहती हूँ कि हे कृष्ण कन्हैया हम सबके पालन हारे, इस बेचारे को जल्दी ठीक कर। इसके बाल-बच्चो को इससे जल्दी मिलवा। इसी से इस बेचारे की सेहत का सुधार हो जायेगा। मेरी लडकी सुमित्रा, बच्चो और जवाइयो का भी बेडा पार करा दे। हे हनुमान जी तेरे परशाद चढ़ाऊँगी।

बेदी साहब ने जमना के वक्तव्य के बाद कुछ नही कहा था। वे एकदम मौन हो गये थे। बाकी सब भी खामोश, चुपचाप इस बेढगे मौसम को परख रहे थे, उससे डर रहे थे, उसे कोस रहे थे।

कुछ अन्तराल से फिर बेदी साहब ने ही शुरू किया—आप सब चुप क्यो हो गये। पहले तो खूब गुपचुप बातें हो रही थी। मैं ऐसा नादान भी नही हूँ जो कुछ समझूँ नही।

सच बताइये कि आप सब यहाँ से चुपके से खिसक जाने की बात नही कर रहे थे ?

—हाँ वह तो है ही—इतना कहने के बाद जमना अटक गयी फिर बोल पडी—भला हो आपका। कितना बडा दिल है आपका। बच्चे जीदे रैहन। बडा भार डाला है आप सब पर।

—वह तो है ही माँजी, बेदी साहब ने मजाक मे कहा—मैं कब इनकार करता हूँ कि आपने भार नही डाला। इसीलिए सोचा है जब तक आपसे [पूरी वसूली न

कर लू, आपको जाने नहीं दूगा।

जयदयाल जी मुस्कराये—क्यो शरमिन्दा करते हो काके, हमारी हैसियत ही क्या है और फिर इस प्रेम का बदला तो दुनिया मे आज तक कोई चुका ही नहीं पाया। बस अब हमे इजाजत दो।

अभी तो आप थके मांद आये है बाऊजी, क्या मेरा इतना भी हक नही कि कुछ रोज आपके साथ रह सकू।

—देखिये भाई साहब, मनोज ने हस्तक्षेप किया, आपको याद है, आपने ही कहा था—जब तक बाऊजी नही आते आप सबको यहाँ से हिलने नहीं दूगा और जैसे ही बाऊजी आये सबको चलता करूँगा।

—ओए तू मेरे तो छोटा। मेरे से बहस। तुमने यहाँ रेलवे आफिस मे अपना नाम लिखवा रखा है ना। कल जाकर बाऊजी का भी लिखवा आ। जब आप दोनो के आडर किसी स्टेशन के हो जायेंगे तो फिर मेरी क्या मजाल जो किसी को भी रोक सकू। तब रेलवे के आडर चलेंगे या मेरे?

—बस वीरा लख लख असीसाँ, जमना बोल पडी, हमारे मन मे अभी तक दहशत है। हम बाडर पर रहना नही चाहते। अम्बाला से ही आडर लेंगे। आपको भी सलाह देती हूँ, दिल्ली या और कही तबादला करा लो।

—क्या ऐसे मौसम मे जाओगे? बेदी साहब ने खिडकी से बाहर झाँकते हुए पूछा, जहाँ बेतरतीब मौसम की वजह से कुछ भी स्पष्ट नही था।

अब हमारे लिए मौसम क्या मायने रखता है मनोज ने नाटक के भाव मे मुट्ठी कसते हुए कहा तूफानो से टकराना हमारा काम हो गया है। आगे न जाने क्या कुछ देखना है।

बेदी साहब ने ताली बजायी—वाह-वाह! फिर बोले—अब चुपचाप बैठ जा।

जयदयाल जी बोले—बस तब यह बारिश तूफान थम जायेंगे। ज्यादा नही कहलवाना बीबे। हम बस निकल लेंगे। मजिल दुश्वार सही, पर पाकिस्तान से निकलने के मुकाबले तो बहुत आसान है। फिर हम नौकरीपेशा लोगो के लिए तो यह कुछ भी नही। दूसरे बहुत से लोगो को तो यह डगर उन्हें जाने कहाँ-कहाँ भटकने के लिए मजबूर करेगी। हमे तो आते ही आपका सहारा मिल गया। अब आगे भी हरि इच्छा से जल्दी किसी किनारे जा लगेंगे।

—क्यो शर्मिन्दा करते हैं बाऊजी! सहारा तो हमेशा छोटो को बड़ो का ही मिलता है—यशोदा भी वहाँ आ पहुंची थी। सबको खाने के लिए बुला ले गयी।

दूसरे दिन सूरज निकला था। सद हवा मे थ्द्रे गरमी पैदा हुई थी। मुन्दन, हरमिलाप खासे जोश मे थे। सामान बाँधन बँधवाने मे एक-दूसरे से अव्वल रहने के चक्कर मे एक दूसरे से उलझ ही अधिक रहे थे और एक-दूसरे की अक्ल पर हँस रहे थे। हरिया कहता—गधे के सिर पर सीग नही होते इसीलिए तेरे सीग नही हैं तो इससे नतीजा निकला—तू सौ फीसद गधा है।

कुदी कहता—सौ फीसद शेर के सर पर सीग नही होते इसलिए मैं शेर हूँ और तुझे खा जाऊँगा। ओहक्क उसने पूरा मुह खोला।

मनोज ने दोनो की तरफ हाथ उठाया। तुम्हारी इन हरकतो से तो सौ फीसद गाडी छूट जायेगी। तुम लोग अलग हो जाओ तो हमारा काम आसान हो जायेगा। भागो।

जीतो ने उन्हें गली मे खेलने के लिए आमन्त्रित किया—आ चाओ आ चाओ। चितने पसे मुझे पाऊची से मिले है, सप तुम तोना को ते तूगी। (सब तुम दोनो को दे दूगी)

—और मैं भी, तोपी ने कहा और पैसे ले आयी।

बजाय खेलने के चारो बच्चे एक कोने मे रुँआसे से बठकर धीरे धीरे आपस मे बतियाने लगे। वे बाहर नही गये बल्कि उदासी भरी नजरो से एक दूसरे को देखते रहे और अपनी अपनी खेलने की चीजें एक-दूसरे का भेंट करते रहे।

बेदी साहब ने उनकी उदासी समझी बोले—तुम लोग हमे भूल तो नही जाओगे। जब भी मौका मिले यहाँ घमने आना।

कुन्दन ने कहा—फिरोजपुर तो आने से हमे कौन रोक सकता है। मै तो यहाँ जरूर आऊँगा।

मनोज ने कहा—जल्दी से तयार हो जाओ। तीन मील पदल चलना पड़ेगा। जगल से एक मालगाडी मे चढना पडेगा।

—मजा आ जायेगा। अरे वाह मालगाडी। ठन ठन ठा ठू बोलेगी। तुम दोनो भी हमारे साथ चलो। कुन्दन ने जीतो तोपी को आमन्त्रण दिया।

—सचमुच पाऊजी चाऊँ। तोपी ने पिता से अनुमति चाही।

बच्चो की नादानियो पर सब हँसने लगे।

एक हाथगाडा आया। उस पर सामान लादा गया। उसे गाडे वाला जोर लगाकर धीरे धीरे खीचने लगा। आँ हूँ आँ हूँ, जसे वह बल को हाँक रहा हो।

दोनो परिवार वाले एक दूसरे से बार बार मिल मिलकर विदाई लेते रहे। अलका की सास और जेठ आत्मप्रकाश रोने लगे। अलका भी रोत रोत पूछने लगी—कहो तो न जाऊँ।

सास ने कहा—हम लाख अपने हैं फिर भी तुम्हारे लिए नये हैं। मुझे पता है यहाँ तेरा मन नही लगेगा। तू खुश खुश अपने भाइयो के साथ जा और जल्दी

खुशखबरी भेजना। सास ने भरे गले से कहा।

आखिर काफिला रवाना हुआ। बाढ़ की वजह से धरती बुरी तरह से छितरायी हुई थी। जगह जगह लावारिस खाली ट्रंक या बैग और दूसरी चीजें बिखरी पड़ी थीं और कहीं-कहीं जानवरों और आदमियों की लाशें भी दिख जाती थीं।

अलका पहले से ही बुरी तरह थक गयी थी तिस पर अब मालगाड़ी के हिचकोले खा रही थी। गाड़ी जगह जगह शंटिंग करती। धक्के लगते धड़ाम धड़ाम। कुन्दन और हरमिलाप इन हिचकोलों के साथ उछलते और मस्ती मारते—'वाह' 'वाह' की ध्वनियाँ निकालते। मगर अलका का बुरा हाल था उसे रह रहकर उबकाइयाँ आ रही थीं।

अलका ने धीरे से माँ के कान में कुछ कहा। सुनते ही माँ एकदम से अकबका गयी। वह पति के पास गयी और स्थिति स्पष्ट करने लगी। विचार विमर्श चलता रहा।

—हे भगवान लाज रखना, हम तो जंगल से गुजर रहे हैं। जमना धीरे-धीरे बड़बड़ाने लगी।

तभी गाड़ी एक ठीक-ठाक से लगने वाले स्टेशन पर रुकी। जयदयाल जी फुर्ती से उतरे। स्टेशन मास्टर से मिले। अपना परिचय दिया और अपनी समस्या बतायी। स्टेशन मास्टर की सलाह पर वे वहीं उतर पड़े।

—क्या अम्बाला इतनी जल्दी आ गया? हरमिलाप ने कहा।

—लगता तो कोई दूसरा स्टेशन है। यहाँ क्यों उतर रहे हैं। कुन्दन ने पूछा।

मनोज ने उन्हें बुरी तरह से घूरा और डाँटा—खबरदार जो तुमने मुँह से कोई और लफ्ज निकाला।

दोनों बच्चे सहम गये। उन्होंने ऐसा क्या कह डाला कि सारा परिवार उनके विरुद्ध हो गया।

कुन्दन बुरी तरह से घबरा गया। छोटे भाई को एक तरफ ले जाकर खड़ा हो गया। जैसे छोटे भाई की शरण में पहुँच गया हो—लगता है, आगे दंगा हो गया है। मार-काट मची है।

—पर हिन्दुस्तान में हमें अब क्या खतरा?

—खतरा है तभी तो बाऊजी ने हम सबको यहीं उतार लिया है।

खतरा था। अलका को अस्पताल में दाखिल करा दिया गया। बाकी सब वेटिंग रूम में बैठे रहे।

रात का करीब एक बजा होगा, जब मनोज और बाऊजी ने वेटिंग रूम में प्रवेश किया।

जमना तो जैसे पहले से जाग रही थी। उसने हड़बड़ाकर पूछा—क्या हाल है?

—अबॉर्शन हो गया।

—हाय मेरी बच्ची। जमना रोने लगी।

—जयदयाल जी ने उसे तसल्ली दी —शुक्र मना। बच गयी।

मनोज ने कहा—हाँ भाभी डाक्टर साहब कह रहे थे। बड़ा सयानापन किया जो यही वक्त सिर उतर लिये। वरना अनर्थ हो जाता।

—मैं चलकर देखूंगी।

—उसे दवाई दी है। अब आराम से सो रही है।

—क्या हो गया भैनजी को। कुन्दन भी सोये सोये सब सुन रहा था, उठकर रोने लगा।

—पेट में दर्द था। अब ठीक है। सुबह सब चलेंगे।

करीब तीन दिन वहाँ रुकने के बाद सब लोग अम्बाला के लिए चल पड़े।

पुराना देश, नये रूप में जसे अँगड़ाई लेता हुआ उठा था। सब कुछ अव्यवस्थित था। किसी को किसी बात या गाड़ी की सुध-बुध नहीं थी। किसी ओर छोर का पता ठिकाना नहीं था। इसलिए यात्रा कई खण्डों में सम्पन्न हुई। एकदम बेगानेपन के साथ।

अम्बाला आ गया था।

हर कहीं मारा मारी थी। टैन्टों की कतारें ही कतारें थीं। एक तरफ कुछ बड़े शामियाने लगाकर उन्हें आफिस मैस अस्पताल की संज्ञा दी गयी थी।

सब तरफ लाइनें ही लाइनें लगी हुई थीं। मैस के सामने। अस्पताल के सामने। आफिस के सामने तो और भी लम्बी लाइन थी। जमना अलका को लेकर अस्पताल वाली लाइन में लग गयी। इधर जयदयाल जी और मनोज आफिस वाली लाइन में।

करीब पौने घण्टे में जमना, सिर को चुनी से ढकती हुई जयदयाल जी के पास आयी और कहा—वे तो दवाई दे ही नहीं रहे। कहते हैं पहले कार्ड बनवाओ। फिर कम्पाउण्डर यह भी कह रहा था कि लड़की ब्याही हुई है तो दवाई नहीं मिलेगी।

मनोज भी अपने पिता के साथ लाइन में खड़ा था। बोला—खाक दवाई देंगे यह लोग। मुझे पता है इन सरकारी अस्पतालों के पास क्या कुछ रहता है। हाँ मिल्ट्री हास्पिटल की बात अलग है। इसे वहीं ले जाऊँगा।

—वहाँ भी तो कोई सबूत चाहिए।

—कोई बात नहीं देखी जायेगी। बाजार से ले लेंगे। मुझे बेदी साहब ने पूरे दो सौ रुपये दिये हैं। मनोज ने कहा।

—है तूने क्यों लिए नादान, जमना ने पूछा—बताया तक नहीं।

—सो (कसम) दे दी थी। उधार हैं। तनख्वाह् मिलते ही दो चार किश्तों में लौटा देंगे।

तभी लाइन में खडे लोगों के बीच धक्का मुक्की होने लगी।

—आते पीछे हैं, खडे आगे हो जाते हैं।

—क्या पिछले जनम से यह जगह लिखवाकर लाया था।

—पाकिस्तान में डटे रहते, यहाँ क्या माँ आया है।

अपशब्दों का शोर और मारा-मारी शुरू हो गयी। जैसे तेज तूफान की लहर बार-बार उठती और लाइन को तोड मरोड देती।

—तौबा तौबा, जमना बहुत दूर छिटक गयी थी और कह रही थी—सत्यानाश और हाथ हिला हिलाकर लडके और पति को इस झगडा स्थल से बाहर निकल आने के संकेत कर रही थी।

तभी दो सिपाही डण्डे हिलाते हुए आये और भीड को नियन्त्रित करने लगे।

एक एक आदमी से बारीकी से तहकीकात होती जो पन्द्रह से बीस मिनट तक चलती। कहाँ से आये हो? किस पद पर काम करते थे। क्या रेलवे में होने का कोई प्रमाण पेश कर सकते हो? किस तरफ सर्विस करना पसन्द करोगे। सारी की-सारी कही गयी बातें, एक बडे रजिस्टर में नोट कर ली जातीं। प्रत्याशी के हस्ताक्षर लिए जाते और अन्त में उसे चेतावनी भी दी जाती कि यदि कोई तथ्य गलत निकला तो नौकरी से बर्खास्त कर दिये जाओगे, मुकदमा चलेगा सो अलग। हम पाकिस्तान गवनमेंट से खतो खिताबत कर रहे हैं। इस मामले में दोनों सरकारें आपस में सहयोग कर रही हैं।

अन्तत जब धूल मिट्टी से स्नान कर जयदयाल जी लाइन से बाहर आये तो बुरी तरह से हाँफ रहे थे। वे दमे के मरीज थे। पिछले कई दिनों से ठीक ठाक चल रहे थे। आज फिर साँस उखड गयी। वे आकर परिवार वालों के साथ एक ट्रंक पर बैठ गये। उनसे कुछ बोला नहीं जा रहा था।

बीस-एक मिनट और गुजर तो मनोज भी अपनी डिटेल्ज (विवरण) लिखवा कर आ पहुँचा। उसने बताया— एक-दो घण्टे इन्तजार करना पडेगा। तब हमें टैन्ट अलॉट हो जायेगा।

शाम हो चली थी। हवा में ठण्डक समा गयी थी। वे बैठे रहे, बैठे रहे। समय अपनी पूरी कटुता के साथ धीरे धीरे सरकता रहा। अँधेरा होने लगा था।

अदालत के फरमान की मानिन्द जोर से स्वर उभरा—कोई जयदयाल मनोज कुमार है।

—हाँ-हाँ हम हैं। दोनों पिता पुत्र खडे होकर उधर को लपके जिधर से आवाज आयी थी।

—आइये मेरे पीछे। आप दोनो को 345 नम्बर टैंट अलॉट हुआ है, चलिये मेरे साथ, दिखाता हूँ। खुश किस्मत हैं। आप आज दोपहर को पहुँचे और आज ही टैंट मिल गया।

मैदान मे सबसे पिछली कतारो के बीच उस आदमी ने उन्हे एक टैंट के सामने ला खडा किया—ले आइये अपने टब्बर और सामान को। यह रहा 345 नम्बर।

—345 तो अगला है, पडोस के टैंट से आवाज सुनायी दी।

—मैं ज्यादा जानता हूँ या तू, उस आदमी ने जैसे उसकी बात को चुनौती के रूप मे लिया और जयदयाल से बोला आप अपना असबाब इसमे रखिये।

—बाद मे कोई दूसरा दावेदार बनकर झगडा न करे। आप देख लीजिये।

—हम कोई मजिस्ट्रेट तो लगे हुए नही जो आप सबके झगडो का फैसला करते फिरेंगे और भी बहुतेरे काम है हमारे सिर पर। मैं जो कहता हूँ उस पर अमल कीजिये, वरना इससे भी हाथ धोना पडेगा। इतना कहता हुआ वह आदमी चला गया।

जब वे लोग सामान लेकर वहाँ पहुँचे तो अन्दर कुछ भी ठीक से दिखायी नही दे रहा था। देखना भी क्या है। कपडे की तिरछी दीवारो के बीच धरती है। इसी पर बैठना, सोना है, और गुजारा करना है।

पहले जमना अन्दर घुसी और बोली—अन्दर सीलन है और लगता है दीमक और कीडे है। ठीक से कुछ दिखलायी नही देता। कहाँ क्या रखू।

वही पडोसी बाहर निकल आया। बोला—बहन सब जगह ऐसा ही है। नरक मे डाल दिया, दो गवनमेटो ने मिलकर।

—शायद भगवान यही चाहता है। हमारे पिछले जन्मो के पाप कम हमे यहाँ खीच लाये। जमना ने आह भरी, सब-कुछ तितर बितर हो गया।

—क्या बकवास लगा रखी है, जयदयाल जी ने हाँफते हुए जमना को डाँटा मेरी तबीयत ठीक नही है और रोने लगी मेरे कर्मों को।

—अन्दर आइये बाऊजी, चादर बिछा देती हूँ, बठ जाइये, पर कोई जानवर-वानवर न हो डरती हूँ, अलका जमीन टटोलते हुए कह रही थी।

उसी पडोसी ने कहा—अगली से अगली कतार मे इसी सीध मे एक औरत एक तख्ते पर दुकान लगाये हुए है। उससे जाकर मोमबत्ती ले आओ।

—मैं जाऊँ? कुन्दन ने माँ से पूछा।

—मैं भी? हरमिलाप ने भी उसी लहजे मे पूछा, दोनो ही भाई कुछ घूमन-फिरने का आनन्द लेना चाहते थे।

—खो जाओगे, अलका ने कुछ सहमते-सहमते कहा, एक जसे टैंटो म इस वक्त किसे फक पता चलेगा।

—बनने दो इन्हे थोड़ा होशियार। मनोज ने कहा और कुछ पैसे निकालकर उनके हवाले कर दिये।

वास्तव में वहाँ टेंटों का जंगल था। पूरी तरह नापते-तोलते कदमों से दोनों भाई, वहाँ से चले और एक एक इंच जमीन के मोड़ों का ध्यान दिमाग में बैठाते चले गये। निशानी के तौर पर इधर उधर से उठाकर कुछ ईंट, पत्थर भी रास्ते में रखते गये, ताकि वापसी पर कोई परेशानी न रहे। रास्ते में जो भी लड़के नजर आते उनसे दुकान का पता पूछते। हरमिलाप यह पूछना न भूलता कि क्या वहाँ पतंगें और कंचे भी मिलते हैं।

एक लड़का बड़े उत्साह से बोला—बड़े गजब की दुकान है यार। जमीन पर ही सिर्फ एक लकड़ी के तख्ते पर दुकान सजी हुई है। या अल्लाह क्या बात है! ऐसी दुकान तो जिन्दगी में नहीं देखी। बड़ा होकर मैं भी ऐसी दुकान खोलूँगा।

—वाह खूब बातें करता है तू, मगर जो पूछा वह तो बताया नहीं। कुन्दन ने उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा। क्या नाम है तुम्हारा?

—जहाँगीर।

—हूँ कुन्दन चौंका। तू क्या मुसलमान है?

—नहीं तो। मुसलमान होता तो यहाँ पर कैसे आ पाता।

—ऐसे अपना नाम बोलेगा तो कोई तुझे काटकर बोटी-बोटी कर देगा। जहाँगीर नाम कहकर।

—हाँ, तुझे कैसे पता चला। यही मेरा पूरा नाम है। बताऊँ कैसे पड़ा।

—हाँ, हाँ जल्दी बताओ या हमारे साथ चलो, हरमिलाप ने कहा—देर होने से घर वालों को चिन्ता होगी और भाजी पिटायी कर देंगे। समझे जहाँगीर भाई। पतंगें दिलवायेगा।

—पतंगें यहाँ कौन लेता है। वहाँ नहीं है, चलो दुकान दिखला दूं। जहाँगीर साथ-साथ थोड़ा आगे बढ़कर चलने लगा।

मोमबत्ती लेने से पहले तीनों ने बहुत सारे कंचे खरीदे। और दूसरे दिन एक दूसरे को खेलने का निमन्त्रण दिया। जब जहाँगीर का टेंट आ गया तो कुन्दन ने कहा, कल कब आयगा खेलने। जगह तो समझ ली ना।

—हाँ, हाँ। बेफिक्र रहो। सवेरे ही आ जाऊँगा।

बड़े आराम से दोनों भाइयों ने अपना टेंट ढूंढ लिया। घर वाले टेंट के सामने ही बैठे थे। मोमबत्ती जलाकर सबने अन्दर प्रवेश किया। वास्तव में जमीन की हालत खराब थी। सीलन, दीमक और जगह-जगह ढूंढ निकले हुए थे।

किसी तरह चादरें बिछायी गयी। कोनों में सामान जचाया गया। जयदयाल जी ने कहा—सवेरे कम्प इंचार्ज से बात कर देखूंगा अगर कोई और ढंग का टेंट मिल सके। यह टेंट तो जगह जगह से फटा पड़ा है।

—हैं तो सारे उस्ताद, मनोज ने कहा, आजकल कोई किसी की नहीं सुनता।

—हमें हर हाल में खुश रहना चाहिए, जमना ने कहा, चलो कुछ ठिकाना तो मिला। बिलकुल रड़े (खुले) में तो नहीं बैठे। कई लोग तो उसी हालत में हस-जी रहे हैं।

अलका ने भी बातचीत में भाग लिया—अगर किसी अकेले पर यह मुसीबन ढहती तो उस अकेले का बहुत बुरा हाल होता। अब सब जने एक दूसरे को देखकर जी रहे हैं कि यह विपदा सबके साथ बराबर है, कट जायेगी।

मनोज को अलका का बोलना बहुत अच्छा लगा। दारुण कष्ट के बाद, उसने पहली बार ढग से बात की थी। मनोज ने कहा—तू तो पूरी फिलासफर हो गयी है। सुख दुख तो जिन्दगी के उतार-चढ़ाव हैं। और उथल-पुथल समझदार आदमी को और समझदार बना देती है और तब तेरी तरह फिलासफर बन जाता है।

—वाह भ्राजी जो फिलासफी आप झाड रहे हो उसके सामने मेरी फिलासफी पानी भरे।

बडे भाई-बहन का अच्छा मूड देखकर हरमिलाप बोला—हम स तो किसी ने पूछा तक नहीं। मोमबत्तियाँ कैसे लाये। हम तो अपना एक दोस्त भी बना आये। उसका नाम बताऊ ?

—क्या ? अलका ने पूछा।

मत बताना हरिया। नाम सुनकर यह सब जने डर जायेंगे।

—क्या ऐसे भी नाम होते हैं जिन्हें सुनकर आदमी को गश आ जाये। अलका ने पूछा।

—तो बता दू ? हरमिलाप ने जसे अनुमति माँगी।

—हाँ बता दे, मैं नहीं डरती। अलका ने कहा।

—मत बताना, कुन्दन ने कहा, पहले यह पैसे दे। कचो पर हमारे बहुत सारे पैसे खच हो गये।

—तो बदमाशो तुम फिर से कचे खरीद लाये। फिरोजपुर मे भी तुम्हारा यही धन्धा था। मनोज ने डाँटा।

—भ्राजी हम भैनजी से बात कर रहे हैं। इसके पास बहुत सारे पसे हैं। कोहटा से लेकर आयी थी।

अलका ने दोनो भाइयो को दो-दो आने दिये।

कुन्दन ने कहा—अब बता दे।

—जहाँगीर। हरमिलाप ने अपने नये दोस्त का नाम उगल दिया।

नाम सुनकर कोई बेहोश तो नहीं हुआ, हाँ सभी चौंक पडे।

—क्या मुसलमानो के कम्प मे चले गये थे ? घबराकर जमना ने पूछा।

—नहीं, नहीं। यहीं इन्हीं टप्टो में रहता है। पूरा नाम है—जहाँगीर नाथ।

ऐसा नाम तो कभी सुना नहीं। क्या हिन्दू है ? जमना ने पूछा।

—हाँ हाँ, पूरा हिन्दू है कुन्दन ने बताया, पाकिस्तान में इसका बहुत ही पक्कम पक्का एक दोस्त था आलम जहाँगीर। दोनों दोस्तों ने अपने-अपने नामों के टुकड़े बाँट लिए। इसका नाम प्रेमनाथ था। यह जहाँगीर नाथ हो गया। और उसका नाम जहाँगीर आलम से प्रेम आलम हो गया। कह रहा था उसने प्रेम आलम को पाकिस्तान में खत भी लिखा है। दुबारा पक्का ठिकाना होने पर फिर लिखेगा।

सुनकर सबको आश्चर्य के साथ हर्ष और विषाद की भी अनुभूति हुई।

जयदयाल जी बोले—कमाल है। बड़ी उम्र के दोस्तों की पगड़ी बदलते देखा है जो कुछ अर्से बाद फट जाती है पर इनके नाम तो ताउम्र इनके साथ जुड़े रहेंगे। वक्त ने सबसे ज्यादा खिलवाड़ किया है तो बच्चों की कोमल भावनाओं के साथ।

तभी घण्टा बजने की आवाज सुनायी दी।

पड़ौसी ने बताया—साहब जल्दी से जाकर अपना खाना ले आइये। बहुत भीड़ हो जायेगी। हम लोग तो अपने लड़कों को घण्टा बजने से पहले ही कार्ड के साथ भेज देते हैं। लाइन में पहले से ही लग जाते हैं तो पहले नम्बर आ जाता है। बाद में धक्कम धक्का से हालत खस्ता हो जाती है।

—हमें तो कार्ड मिला ही नहीं।

—पहले दिन वैसे ही दे देंगे। बता दीजियेगा। पर आपको खुद जाना पड़ेगा।

मनोज और जयदयाल जी जल्दी से बर्तन उठाकर मैस की तरफ रवाना हो गये।

आधे घण्टे बाद लौटे तो उनके हाथों में जली हुई कच्ची पक्की रोटियाँ थीं। कंकर वाली दाल। और बैंगन की सब्जी। सबने मिलकर, खाना अपने-अपने अन्दाज से खाया या चखा।

दूसरे रोज जयदयाल जी कैम्प इचार्ज से मिले। अपनी शिकायत रखी कि टैन्ट जगह जगह से फटा पड़ा है। जमीन भी टेढ़ी मेढ़ी है। कोई ठीक जगह दिलवा दीजिये तो आपका बड़ा अहसान होगा।

सुनकर कैम्प इचार्ज पहले तो मुस्कराया फिर गम्भीर स्वर में किसी पाश कालोनी का नाम लेते हुए बोला—सुना है वहाँ एक फ्लैट खाली हुआ है। कहिये तो कोशिश कर देखूं।

इस व्यंगोक्ति को सुनकर एक बार तो जयदयाल जी तिलमिला गये। फिर अपने आपको नियन्त्रित करते हुए बोले—भाई वक्त की बात है। वक्त ने ऐसा पलटा खाया है कि लोगों के पैरों की जमीन खिसक गयी। कई धन्ना सेठ जमीन जायदाद खोकर कंगाल हो गये। राजनेता तो खैर राजनेता ही हैं उनकी ताकतें रातों रात बढ़कर आसमान छूने लगीं। उन चन्द ताकतों के टुकड़े, उन्होंने कुछ

चापलूस कगालो को भी डाल दिये। उनको थोड़ी-सी ताकत क्या हासिल हुई कि टुच्चा बोलने लगे।

पहले एकदम तो इचाज की समझ मे कुछ ठीक तरह से नही आया। जब समझ मे आया तो बोला—आपको बिना कुछ मिले, पख लग गये हैं। मैं देखता हूँ, तुम्हें पोस्टिंग आडर कैसे मिलते हैं।

उसी दिन जयदयाल जी ने पूरी घटना और टैटो की हालत एक स्थानीय अखबार के सम्पादक को लिखकर दे दी। खबर मिच मसाले के साथ छप गयी।

तीसरे दिन पोस्टिंग ऑफिसर ने जयदयाल जी को तलब किया और कहा—आपने रेलवे का आपसी मामला अखबार को क्यो दे डाला। आपके विरुद्ध अनुशासनात्मक कारवाई होगी।

—और कम्प इचाज के खिलाफ कुछ नही होगा जो हर एक से बदसलूकी करता है।

—वह भी देखेंगे। आप समझदार पढे लिखे आदमी हैं। जानते ही है ऐसे म किसी से बिगाडकर रखने से कुछ हासिल नहीं हागा।

—आप हमे इस नरक से निकालें। यह भले आदमियो के रहने लायक जगह नही है।

—ठीक है। आप जाइये। अबकी छोड देता हूँ। अफसर ने चेतावनी दी और मुह एक फाइल मे फँसा लिया।

चौथे रोज मनोज अलका को मिल्ट्री अस्पताल ले गया। वहाँ कुछ दवाइयाँ मिली और टानिक्स भी। वहाँ से चले तो आस पास की कुछ रेजिमेंटों मे रुक रुक कर मनोज ने अपन जीजा जी के बारे मे पता किया।

कुछ सनिको ने कहा था कि उन्हें तो रोशनलाल का पता ठिकाना कुछ पता नही। कुछ ने कहा—नाम तो सुन रखा है पर अब कुछ पता नही। तीसरी जगह एक पसनल ऑफिसर ने बताया—सुना है उनकी यूनिट जल्दी कराची छोडने वाली है।

—हैं तो ठीक-ठाक ना, अपना सकोच छोडते हुए अलका ने धीमे से पूछ डाला।

—हाँ बेफिक्र रहो बहन। मैं कराची से ही आ रहा हूँ।

सुनकर अलका के जैसे पर लग गये। वह उस आफिसर को धन्यवाद देकर आगे निकल गयी। आफिसर बोला—मुझे ठीक नालेज नही है। फिर भी इस बच्ची को हौसला देना जरूरी समझा सो कह दिया। आप कल इसी वक्त फिर आइये तब तक फोन करके उनकी यूनिट से पूछने की कोशिश करूँगा।

सुनकर मनोज रोमांचित हो गया—ठीक है साहब। उसे उस अफसर के झूठ पर जसे गव हो आया और कम पर विश्वास।

रास्ते मे कुछ इमली के पेड़ थे। दोनो भाई-बहन छोटे बच्चे बन गये। इक्की दुक्की इमलियो को पत्थरो का निशाना बनाने लगे। इमली न सही, पत्तो में भी कितना स्वाद होता है, जो हाथ लगे वही ठीक।

सामने से मार्च पास्ट करता हुआ वर्दी मे लैस जवानो का ग्रुप सड़क पर बूटों के द्वारा ताल देता हुआ आ रहा था। जिसे देखकर अलका की आँखें एक साथ हर्ष और विषाद से भर आयी। डबडबाई आखें कही भाई न देख ले, इसलिए बराबर इधर उधर दूर क्षितिज मे देखती, भाई के अगल बगल चलती रही।

अलका का दिल जोर जोर से हस देने को हुआ और उसी क्षण गला फाड़कर रो देने को भी। वह अपनी भावनाओ को भरसक नियन्त्रण मे रखती हुई, भाई से छिपाये रही। ऐसी बातें भला कोई बहन अपने भाई को कैसे बता सकती है। शादी के बाद, एक ही बार थोडा समय उसने कोइटा के कैंटोनमेंट एरिया मे गुजारा था। ऐसे ही दृश्य। हर तरफ बर्फ। मिल्ट्री क्वाटरज। जगह जगह चैक पोस्टें। बरियज। रह रहकर जवानो के मार्च पास्ट करते ग्रुप, अटेंशन और पूरे दम-खम से लगते सल्यूट। धप्प-धप्प धप्प धप्प।

ऐसी ही तो वर्दी पहनता था, उसका गबरू पति। सजीला जवान। कसी कसायी वर्दी मे जसे सूरज की तरह उसका तेज दमकता रहता। परेड से लौटता। वह दरवाजा खोलती। कब तो दरवाजा खुलता और कब वह उसे अपनी सशक्त भुजाओ मे भर लेता। वह जैसे पाँच बरस की गुडिया रानी हो जाती। कलफ लगी वर्दी मे उसका कोमल शरीर छिलता रहता मगर वह सिमिटती सकुचाती उसमे समाती चली जाती। उसे लगता अनन्त ससार मे उसके जीवन की यही सार्थकता है। यही गति है, जिसमे अपूर्व प्रवाह है। कभी न थमने वाला अलौकिक सौंदर्य।

क्या वह दिन फिर लौटेंगे। हे भगवान् मेरे वे दिन जल्दी लौटा दे। जल्दी लौटा दे। वह जसे प्रार्थना की मुद्रा मे रास्ते मे खडी हो गयी।

—रुक क्या गयी ? मनोज ने पूछा।

—अच्छे लगते हैं। वह बोली।

सामने से और लोग मार्च-पास्ट करते हुए आ रहे हैं।

—भोई! तेरी यह बात जीजा जी को बता दूगा। मनोज उसके मनोभावो से नितांत अनभिज्ञ नही था। वैसा ही अनुकूल वातावरण पाकर स्मृतियाँ, पख लगाकर उडती हुई सामने आ खडी होती हैं। स्मृतियाँ पखडिया की तरह खिलने लगती है। उसने देखा बहन पर स्मृतियों के रगो से उल्लास छा रहा है तो उसने उसे और प्रोत्साहित करना चाहा—अब तो खुश खुश रहाकर। कमांडर कह रहा था ना कि हमारे जीजा जी जल्दी आने वाले हैं। मनोज ने कमाडर के झूठ पर, अपनी तरफ से झूठ की एक और परत चढ़ा दी कि बस बहन हँसती हुई नजर आती रहे।

मगर यह क्या, अलका फफक फफककर रो पड़ी।

—अरे क्या हो गया तुझे, पगली, मैंने ऐसा क्या कह दिया।

—नहीं-नहीं । आगे वह कुछ भी बोल पाने मे असमर्थ हो गयी। रुलाई रुक नहीं पा रही थी।

—कुछ बता तो सही पगली। मनोज ने हाथ से उसके आँसू पोंछते हुए कहा।

—उनको क्या दिखाऊँगी रोने के बीच अटक अटककर वह बोल पायी। जानकर कितनी ठेस लगेगी उन्हे।

मनोज बात की तह तक जाने की कोशिश करने लगा।

—वह कितने खुशी खुशी घूमते थे। खिलौना खिलौना कहते थे। मुझे हर वक्त आराम से लेटे रहने की सलाह देते थे। आप लोगो का कहना माना होता। फिरोजपुर रुक जाती तो यह हाल नहीं होता। रास्ते मे खिलौना नहीं खोता।

मनोज ने उसे तसल्ली दी—हम भी कहाँ चाहते थे, तू वहाँ रुकती। हमारा मन तेरे बिना हर वक्त बेचैन रहता। जैसे जो लिखा होता है, वसा ही होता है। इस बात को चाहे कोई माने, या न माने, मैं मानता हूँ।

—हाय, मैं भी उसी के साथ मर जाती। डॉक्टर ने मुझे क्यो बचा लिया।

मनोज ने देखा कि अलका चुप होने का नाम ही नहीं ले रही तो सख्त लहजे मे बोल पड़ा—बेवकूफ सरे आम सड़क के किनारे यह क्या नाटक कर रही है। कोई फौजी मुझे छोकरी भगाने के जुर्म मे एक दफा तो धर ही सकता है।

बात बहुत सख्त और कड़वी थी। इसने अलका पर करट लगने का-सा असर किया। वह सब कुछ भूल गयी। गालो पर आँसू वहीं-के वहीं सूखकर रह गये।

दोनो बहन भाई फिर तेज कदमो से चलने लगे। कैंटानमेंट एरिया (छावनी क्षेत्र) खत्म होते ही मनोज ने पूछा—थक गयी होगी। कोई ताँगा करते हैं।

—नहीं, चलना अच्छा लग रहा है। पता नहीं यह सच था या मात्र पैसे बचाने के लिए, वह ताँगे के लिए मना कर रही थी।

टैंट मे पहुँचकर उन्होने देखा। भाभी अकेली बैठी है। और कोई नहीं है।

—कहाँ गये बाकी सब ? मनोज ने पूछा।

—बाऊजी तेरे तो रोटियाँ लेने गये हैं। कुन्दी और हरिया महाराज का सवेरे से ही कोई पता ठिकाना नहीं। जरूर नये दोस्त जहाँगीर के साथ कंचे खेल रहे होंगे।

—उस छोकरे को उसका नाम ले डूबेगा और साथ मे यह दोनो भी कभी लपेट में आ जायेंगे। जाकर देखता हूँ।

—तू चुपचाप बठ जा। आयेंगे तो समझा देना।

अलका बोल उठी—कोई किसी को नहीं समझा सकता। कुन्दी ने उससे कहा तू अपना नाम वापस जहाँगीर नाथ से प्रेमनाथ रख ले। वह नहीं माना। कहने

लगा—यह हो ही नही सकता उम्र भर। नाम बदलू तो मुझे दो दो सौए (इसमें) लगें। एक हनुमान जी की सौं (सौगध) लगे। दूसरी उस खुदा की भी। मैंने हरिया कुन्दी से कहा—फिर तुम दोनो भाई उससे कुट्टी कर लो। तो कुन्दा कहता है क्यो ? वह तो गजब का लडका है। ऐसो को ही तो दोस्त बनाना चाहिए।

अलका द्वारा पूरा वृतात सुन लेने के बाद, जमना ने मनोज से कहा—सुन लिया ?

—ठुकाई करूँगा।

—तुझे तो बस यही आता है। अपने बचपन की जिदें क्या भूल गया ? इसा तुझे अगर किसी न पोटा हो तो। मेरी तो खैर छोडो। तेरे बाऊजी भी तुझे रतन की तरह रखते थे।

तभी टैन्ट का पर्दा झूला। इसके साथ जयदयाल जी ने प्रवेश किया। दोनो हाथो से किसी प्रकार रोटियो का थैला और कमण्डल मे दाल सम्भाले हुए थे।

—बहुत देर लग गयी ? जमना ने कहा।

पर जयदयाल जी ने अजीब तरह की मुस्कराहट के साथ, मनोज की तरफ देखते हुए कहा—यार आज फिर झगडा हो गया।

जमना घबरा गयी—किसके साथ ?

—और किसके साथ—रोटियाँ बाटने वाले शहशाह आलम के साथ।

मनोज ने कहा—बाऊजी आप तो हर एक के साथ उलझ जाते हैं। वक्त की नजाकत को देखिये। पीछे से हमारे पोस्टिंग आडर आने पर भी यह लोग अगर रोक लें, दबाये रखें तो हमे क्या पता चलेगा। हम लोग यही सडते रहेंगे।

—कुछ नही होगा पुत्तर जयदयाल जी ने कहा, आज हमे एक अच्छा टैंट दिया जा रहा है। शाम तक शिफ्ट करना है। दबने रहने से लोग ज्यादा दबाते हैं।

—सब टैन्ट एक से हैं, उसमे कुछ और नुक्स निकल आयेगा तो क्या फिर झगडेंगे। मनोज ने कहा।

—इस रोटी वाले से क्या बात हुई, जमना ने थला खोलते हुए कहा, अच्छी तो हैं।

—पहले वाली देखती तो देखते ही फेंक देती। एकदम कच्ची या पूरी तरह जली हुई। मैंने जब बदलने के लिए कहा तो बोला यही हैं। लेनी हैं तो लो नहीं तो चलते बनो। मैंने कहा तू कोई खैरात बाँट रहा है। बुला अपने इचार्ज को। बोला मैं ही इचार्ज हूँ। मैंने कहा, तो ठीक है। इन्हो रोटियो को मेरे सामने तू ही खाकर दिखा। भीड थी। लम्बी लाइन। शोर मच गया। मेरे पीछे वाला आदमी बोला—लाओ बाऊजी यह मुझे दे दो। मैंने कहा तू क्या जानवर है। दब कर रहने से काम नही चलता बरखुरदार। बात बढ़ती देख मैस के और लोग आ गये।

मुझे अच्छी रोटियाँ छाँटकर दी और पहले वाली को आसपास मंडराते कुत्तों को डाल दी। सो य तो मैं पुण्य कमाकर आ रहा हूँ।

कुन्दन और हरमिलाप आ पहुँचे। पालथी मारकर बैठ गये, बिना हाथ पर धोये—लाओ खाना। बड़ी भूख लगी है।

—सवेरे से बड़ी मेहनत मशक्कत करने पर लगे हो बच्चू।

मनोज ने उन्हें घूरा तो जमना ने उसे टोक दिया—खाना खाते वक्त किसी को कुछ नही कहते। ग्रन्थो मे लिखा है।

ग्रन्थो की बात सुनकर मनोज के साथ बाऊजी और अलका भी मुस्करा दिये।

रोटियाँ और दाल देखते ही कुन्दन और हरमिलाप की जैसे बाछें खिल गयी। कुन्दन माँ से बोला—भाभी ऐसा खाना बनाना सीख। शेखूपुरे के गुरुद्वारे वाले भाई जी की तरह। क्या तदूर की रोटियाँ और माह छोलयाँ दी दाल। दोनो भाई लपक-लप खाना खाने लगे।

सभी उन्हें देखकर हँसने लगे। जमना ने पति से कहा—आप खामखाह ऐसे लजीज खाने के खिलाफ प्रचार करते हो?

तभी एक ककर हरमिलाप के दाँतो मे—'करर करर' बोला। टीस उठी। उसने हथेली पर निवाला उगल दिया और बाहर फेंकने चला गया। आकर कुन्दन से बोला—खाक अच्छा खाना है। तुम तारीफ करते हो तो यही रहते रहना।

कुन्दन ने उत्तर दिया—मामूली भूल चूक तो सभी से होती है। हाँ शेखूपुरे वाले लगर वाले सरदार जी से कोई भूल नही होती थी। सब सुन लो। अगर वह भाई जी किसी को कही दिखाई दे जाये तो बता देना। मैं उसी शहर मे रहने लगूगा।

हरमिलाप ने कहा—भाभी यह बड़ा चटखोरा (चटोरा) है। भूखा। घरवाला को छोड़कर गुरुद्वारे वाले भाई के पास रहेगा।

कुन्दन को कोई माकूल जवाब नही सूझा तो उसने आक्रामक स्वर निकाला—मक्क।

अब तुम खा चुके। हमे खाने दो। लड़ो नही। भाभी ने दोनो को प्यार किया। और सबका खाना परोसने लगी।

हालाँकि मनोज जानता था कि इतनी जल्दी कुछ पता नही चल सकता फिर भी वह दूसरे दिन छावनी गया। कमाण्डर साहब नही थे। उनके मेज पर चिट लिखकर छोड आया। चौथे दिन कमाण्डर साहब कुछ प्रतीक्षा के बाद मिले। खाली मूड मे थे। बड़े उत्साह से मनोज से हाथ मिलाया। बैठाया। चाय भी मँगायी। कहा—यगमैन तुम्हारी चिट्ठी मिली थी। मैं पूरी तरह तो तुम्हारे

बहनोई की कोई डेंफिनेट इन्फरमेशन कलक्ट नहीं कर सका। फिर भी तुम्हें यकीन दिलाता हूँ, यह बेशक मुझसे लिखवा लो, हमारी सारी ब्रिगेडस वहाँ पूरी तरह से सेफ है।

—जी मैं मानता हूँ, उन्हें कोई क्या कह सकता है। पर हम चाहते थे। कोई ठीक इत्तिला मिले और उन्हें भी हमारे यहाँ सही-सलामत पहुँच जाने की खबर मिले। मनोज ने कहा।

—यकीनन-यकीनन यगमैन। मैं कब इनकार करता हूँ। पहले यह काम सिर्फ—सिर्फ दो मिनट का हुआ करता था। अब दो मुल्कों का। कराची-कोइटा सब हमसे जुदा हो गये। एकदम दूर जा पड़े।

—जी हाँ, मनोज ने हामी भरी दूसरे देश की बात ठहरी।

—ओह नहीं-नहीं, उनके वतन की टेलिफोन लाइनें, अपने वतन की टेलिफोन लाइनें सब टूटी जली पड़ी है। दंगाई कहाँ नहीं बसते। आजकल हर कहीं इन्हीं का बोलबाला है यगमैन। उन्होंने घनी काली मूछ मरोड़ते हुए वाक्य पूरा किया।

—जी बजा फरमाया आपने

—हाँ यह तो तब, जब यहाँ की अपनी गवनमेंट बॉडी, जवाहरलाल, गाधी जी वगैरह पूरे दमखम के साथ मोहम्डन्स को बचाने मे लगे हुए हैं, फिर भी यहाँ के दंगाई बाज नही आते। मौका देखकर उन पर हमला बोल देते हैं। उनकी और अपने देश की जायदाद को भी आग लगा देते हैं। क्या तमाशा है। कहते कहते उन्होंने रूमाल से अपनी नाक को रगड़ा।

—ठीक साहब, आपको तकलीफ देने चला आता हूँ।

—नो-नो, जब वक्त मिले आ जाया करो। तुमसे बात करने पर मुझे अच्छा लगता है। हमारे खुद के दो कजन कराची मे हैं। हाँ अपने कम्प का ठीक-ठीक पता लिख जाओ। पता लगते ही मैं जीप मे आऊँगा। आप सबके साथ चाय पीऊँगा।

—सो काइंड ऑफ यू। कहता हुआ मनोज वहाँ से चला आया। वह मिल्ट्री के अफसरों के खुलेपन और दिलदारी से प्रभावित था।

इन सब हालात के बावजूद अब जैसे वहाँ रह रहे सभी परिवारों का मन कैम्प मे लगने लगा था। सभी अपने जैसे मात खाये हुए उठने की कोशिश मे लगे हुए लोग। सबकी मिलती-जुलती एक सी कहानियाँ। साझा तकलीफें। पहाड़ जैसी तकलीफो को जैसे सब मिलकर उठाये हुए थे। सबसे बड़ी बात यह कि धीरे धीरे सबके अपने पुराने संगी-साथी भी मिल रहे थे।

चार बार तो धान और चाय का घण्टा लगता था, इसके अलावा ढाई-तीन के बीच, सबसे महत्वपूर्ण घण्टा बजता था। इस घण्टे के लगते ही सारे मर्द तुरत

फुरत ऑफिस के सामने भीड़ लगा देते। अपने-अपने कागजो के साथ। वहाँ रिपोस्टिंग आर्डर (नये नियुक्ति आदेश) जारी होते थे।

तीन बड़े ओहदेदार अपनी अपनी मेज पर दरबार लगाये होते थे। कभी कभी तो वहाँ का सबसे बड़ा पर्सनल ऑफिसर, पहले देशभक्ति और रेलवे का पूरा वफादार बने रहने का लेक्चर झाड़ देता। भाषण दिये बिना वह अपने को कभी रोक न पाता—जवाहरलाल नेहरू के गुण-गान जैसे किसी तराने के अन्दाज मे कहता—एक रहमदिल इंसान। रहमदिल जिसके सीने मे हजारो नही लाखो नही करोड़ो दीन-दुखिया का दर्द समाया हुआ है। उसका एक ही शब्द है, एक ही लक्ष्य है। मदद फक्त मदद। गिरे हुओ को उठाना। उजड़े हुओ को बसाना। कभी-कभी तकरीर लम्बी खिचती तो भीड़ मे शोर मचने लगता। नाम बोलिये नाम।

—हमे एक बात सच्चे मन से समझ लेनी चाहिए, वह शोर की परवाह किये बिना दुगने उत्साह से राग अलापता, हमे, मेरा मतलब हम सबको, भाइयो! इसमे मैं खुद भी शामिल हूँ, हाँ तो यही मन्त्र समझ लेना चाहिए कि हम कभी भी एहसान फरामोश न हो। जो एहसान फरामोश होते हैं वे वे कहते कहते वह अटक गया।

—बताइये जनाब, एक आदमी भीड़ मे से चीखा, बताइये आप क्या कहना चाहते हैं।

दूसरा एक ठिगना आदमी भी उछलता हुआ चीखकर बोला—यह कहना चाहते हैं एहसान फरामोश कुत्ते होते हैं।

पूरी भीड़ मे हँसी का सैलाब फैल गया। मगर उस अफसर का मुंह फक था। वह कह रहा था—हरगिज नही, हरगिज नही। मैं कुत्तों को वफादार मानता हूँ।

तो सबसे बड़े वफादार आप हैं श्रीमान। अब कृपया नाम बोलिये, जयदयाल जी ने पूरी गम्भीरता से कहा।

लोग चाहते थे यह काम जल्दी से खत्म हो।

इस मीटिंग के बाद वे सब मिल जुलकर आपस के दुःख सुख बाँटते। जिन्होंने कभी पाकिस्तान मे किसी स्टेशन पर साथ साथ काम किया होता—पुरानी यादो में खो जाते। और सबसे बड़ी बात नये आदमियो से सम्पर्क साधने पर लाभ भी होता। कुछ-न-कुछ सूत्र हाथ लग जाता जिससे प्रायः उन्हें अपने-अपने रिश्तेदारों, दोस्तो के बारे मे, अच्छे बुरे समाचार पता चल जाते।

वहीं बैठे-बैठे जयदयाल जी सोच मे डूब गये कि ऐसी ही एक मीटिंग के बाद तीन रोज पहले, उनको एक पुराना साथी द्वारकानाथ मिला था। उसने उन्हें बताया था कि उसने उनकी बड़ी लड़की सुमित्रा को ग्वालियर स्टेशन पर देखा था। फौरन पहचान गया मगर उनको अपना आगे का पता-ठिकाना मालूम नही था कि कहाँ जायेंगे।

जयदयाल जी उसे अपने टैन्ट मे ले गये। द्वारकानाथ ने वही बात जमना के सामने दोहरायी।

सुनकर जमना खुशी से पागल हो गयी थी—लख लख शुक्र तेरा वसी वाले। फिर भी पूछ डाला। पक्की बात है ना।

—कच्ची कैसे भरजाई। आपको याद होगा, उस लडकी को मैंने बचपन में खिलाया था। भूल कैसे सकता हूँ। वह भी चाचाजी चाचाजी करती रही। उसने बताया था, अपने जेठो और पूरे टब्बर के साथ ठीक ठाक आ पहुंची है। बस उसे आप सबकी फिक्र लगी हुई थी।

जयदयाल जी का ध्यान अधिक शोर की वजह से टूटा—नाम, नाम बोलिये।

मगर वह अफसर फिर भी एक छोटी-सी भूमिका के साथ ही बोला—आज बडा खुश किस्मत दिन है। आज पूरे पैंतीस जनो के नाम आये हैं। बालिये बाबू।

बाबू ने ऊंचे स्वर मे पुकार लगायी—केवल कृष्ण मिटगुमरी।

—हाजिर-हाजिर। हाथ को ऊपर उठाता हुआ, भीड को चीरता एक आदमी आगे बढा और बाबू के पास पहुँचा। बाबू ने उसके कैम्प काड पर दस्तखत किये और पास बैठे दूसरी मेज पर इन्स्पेक्टर के पास भेज दिया। उसने कागजी कार्रवाई पूरी की और दूसरे अफसर के पास जाने को कहा।

इस प्रकार यह प्रक्रिया बहुत देर तक चलती रही। बीच-बीच मे जरा-सा मौका पाते ही वही अफसर फिर से भाषण पर उतर आता—उतावली न करो। हडबडी न मचाओ। जल्दी का काम शैतान का। श्री कृष्ण भगवान दी जय बोलो जो इतने अच्छे लीडर बख्शे। अच्छा होया पाकिस्तान बना—इधर नयी-नयी जगह देखने को मिलेगी। नही तो उधर एक ही रेलवे मे पडे पडे सड जाते। सारी लाइफ स्पायल हो जाती। इसी वास्ते पाकिस्तान बनने से बहुत पहले मैं पूरे सामान के साथ इधर आ गया था

—सत्यानास होए, गदन को नीचे दबाये किसी ने ऊँची आवाज निकाली।

—भाई जी आप नाम बोलो।

—हाँ अगला नाम अब लाइफ के नये नये एक्सपीरिएन्स मिलेंगे।

—नाम नाम नाम।

—हाँ जी, हाँ जी नाम, नाम सच्चे वाहेगुरु दा हाँ कीर्ति नाथ कितना सोहणा (सुन्दर) नाम है। हाजिर है?

एक हाथ उठा—जी हाजिर।

शाम हो चली थी। उस दिन का अन्तिम नाम जयदयाल जी का घोषित हुआ।

दुपहर मे खाने के बाद मनोज, बहन भाइयो को बाजार घुमाने ले गया था।

आकर देखा। टैन्ट के अगल-बगल मे कुछ आदमियो का झुण्ड खडा है।

मनोज लपककर आगे बढा तो एक स्वर सुनायी पडा—बधाई हो। तुम्हारे बाऊजी के आडर मुरादाबाद डिवीजन के हुए है।

अँधेरा छा रहा था। वैसे भी मनोज सबको पहचानता नही था। बोला—अच्छा-अच्छा। ठीक रहा।

दूसरा स्वर उभरा—है तो कमाल ही। सिर्फ पन्द्रह दिन हुए आये और यह लो आडर। लोगो को पडे पडे महीना हो चला।

—इनकी कोई सिफारिश होगी। अँधेरे मे तीसरी आवाज सुनायी दी।

एक और स्वर सुनायी दिया—अजी नही। यह झगडते रहते थे। उन्होने सोचा दूसरो को भडकाकर कही दगा खडा न कर दें। इसलिए स्पेशल कोटे से आडर थमा दिये।

—खूब मनोज ने सबकी बातो मे रस लेते हुए कहा, अच्छा कल मिलेंगे। वह बाऊजी को लेकर टैन्ट मे दाखिल हो गया, जहाँ बच्चे अपना अपना नया खरीदा सामान मोमबत्ती की रोशनी मे फलाये बैठे थे।

दूसरी सुबह थोडा सामान छोडकर बाकी का सारा सामान समेटा-बाँधा गया। टैन्ट पर कब्जा जमाये रखा। टैन्ट मनोज के नाम से भी था। अभी उसके आदेश होने बाकी थे।

पडोसी को सामान सँभलवाकर मनोज ने उन्हे समझा दिया कि अगर मेरा नाम पुकारा जाये तो नोट कर रखना। घरवालो को पहुँचाकर मैं जल्दी ही लौट आऊगा।

बाबू जयदयाल के साथ लाला केदारनाथ और हरिचन्द के भी मुरादाबाद डिवीजन के आडर हुए थे। यह दोनो किसी जमाने मे उनके साथ रावलपिंडी मे नियुक्त थे।

अबकी बार भी तीनो को मालगाडी का डिब्बा मिला। सवारी गाडियो के लगभग सारे डिब्बे मुस्लिम स्पेशल ट्रेन्स मे लगे हुए थे। नेहरू जी की अपील के बावजूद वे डर के मारे पाकिस्तान जा रहे थे।

हिचकोले खाते, शटिंग की मार सहते, खाली लाइनों का इन्तजार करते आखिरकार मालगाडी ने दूसरे दिन सुबह ग्यारह बजे तक मुरादाबाद का रास्ता तय कर लिया।

इस बार के सफर की विशेषता यह रही—और इसी के कारण यात्रा सुखद बनी रही—तीनो ही परिवार पूर्व परिचित थे। सभी पुरानी स्मृतियो को ताजा करके आनन्दित होते रहे। दूसरी बात थी लाला केदारनाथ की लडकी सत्या।

यह लड़की गाती बहुत अच्छा थी। उसे लगभग सभी फिल्मों के गाने याद थे। हरिचन्द जी काफी होशियार किस्म के आदमी थे। उन्होंने रास्ते में किसी स्टेशन मास्टर से लोहे की अँगीठी कबाड़ ली थी। ड्राइवर से कोयला भरवा लाते। उस पर चाय बनाते। शंटिंग के दौरान अँगीठी गिर जाती। कोयला बिखर जाता। सभी हँसने लगते। ऊई ऊई कहकर तितर बितर होने लगते। यह उनके लिए एक खेल बन गया था। लाला केदारनाथ बार बार चेतावनी देते। बहुत खल चुके आग से, और नहीं खेलो। पहले तो इल्जाम आततायियों के गले मढ़ते थे। अब कौन दोषी होगा।

—चलो छोड़ो आग को। राग की बात करो। सत्या शुरू करो। हो जाय फिर कोई गाना। हरिचन्द की पत्नी कहती।

—चाची जी अब मेरा गला थक गया।

—खूब! हमारे कहने से गला थकता है। मनोज जिस गाने की फरमाइश रखता है वह तुम्हें फौरन याद आ जाता है।

इससे सत्या और मनोज कुछ शर्मा जाते और इधर-उधर छिटक जाते। थोड़ी देर बाद मनोज ने अलका के कान में कुछ कहा।

अलका ने सत्या से आग्रह किया। सत्या ने जगमोहन का गाना शुरू कर दिया —तुम मेरे सामने आया न करो।

इस तरह के मनोरंजक खेलों के बीच जैसे जल्दी ही मुरादाबाद आ पहुंचा है। सबको ऐसा आभास हुआ। सभी ने अपने-अपने बूते का सामान उतारा और वेटिंग रूम में ले गये।

चाय आयी। सबने पहले चाय पी। फिर किसी ने सिर्फ हाथ मुंह धोये। किसी ने अपने जिस्म को रगड़ रगड़कर स्नान किया।

नाश्ते के बाद तीनों पुराने साथी डी० एस० आफिस चले गये। बच्चे स्टेशन के बाहर। बच्चा का लीडर था मनोज। सत्या, अलका हाथ में हाथ पकड़े कभी बच्चा पार्टी में शामिल हो जाती। कभी किसी गम्भीर विषय पर विचार विमर्श करने लगती। कुल मिलाकर उन सबको समूचा वातावरण सुखद एवं उन्मुक्त लग रहा था। हल्की-हल्की धूप खिल रही थी। अब तक पाकिस्तान से आने के बाद जितने भी स्टेशन उन्होंने देखे या पार किये थे, उनके मुकाबले यही पहला स्टेशन था जो पूरी तरह स्वच्छ और तरो-ताजा लग रहा था। इससे सभी में स्फूर्ति आ गयी थी।

जब दोनों सहेलियाँ अपने तईं किसी बात का उत्तर खोज पाने में असमर्थ हो जातीं तो मनोज का सहारा लेतीं। सत्या मनोज से कोई प्रश्न पूछती तो बीच में अलका का सहारा लिए रहती। यह पूछ, पता लगा।

एक बार पूछा—अब हम कहाँ जायेंगे? पूछ।

अलका ने कहा—यह पूछ रही है—अब हम कहाँ जायेंगे ?

मनोज ने हँसकर उत्तर दिया—जहाँ पर हमारी किस्मत आकर हमे ले जायेगी।

उत्तर सुनकर सत्या और अधिक सकुचा गयी। जीभ काटी और हल्के से मुस्करा दी।

दरअसल उन दिनो एक फिल्म चली थी—दो राही एक मंजिल। इसमे एक गाना था—

पूछते हैं हम अपनी ही किस्मत से अपना अता पता।
इधर जायें, उधर जायें, किधर जायें, हमे बता।

सत्या ने ऐसे उत्तर की अपेक्षा नही की थी। इस किस्मत वाली बात को सुनकर फिर से अधिक सकुचाकर बोली—हम नही बोलते। ठीक ठीक बताइये।

—ठीक-ठीक बतायेंगे मगर पहले इतना कहकर मनोज चुप हो गया।

अलका ने सत्या को कोहनी मारी—सुना दे, सुना दे। जब भाई साहब चाहते हैं तो फिर क्या।

—हट, यह कोई जगह है, गाना सुनाने की। सत्या बहुत धीरे से बोली। इसके बावजूद गाने की पखुडियाँ उसके लबो पर तैरने लगी थी।

—वह देख, उधर पेडो का झुरमुट, वहाँ तो कोई नही दिख रहा। अलका ने दूर इशारा किया।

—चलो जालिमो। 'जालिम' सत्या का तकिया कलाम था जिसे उसने काफी समय से, कम बोलने के कारण, बहुत प्रयोग किया था।

—तो उधर ही बुला लो, सबको। मनोज ने कहा।

मगर आने को न तो हरमिलाप कुन्दन राजी हुए और न ही सत्या का भाई बसी। बसी ने कहा—आपको जहाँ जाना हो जाओ। हम यही इसी पार्क मे जगले के पास मिलेंगे। हमे अभी नयी चीज और खानी है। दरअसल वे गाडे वाले से बार-बार सिंगाडे खरीदकर मजे से खा रहे थे।

हल्की हल्की धूप पेडो से छनकर आ रही थी। साथ ही रह रह-कर हवा के झोंके चल रहे थे। पेड के नीचे, जैसे सर्दी-गर्मी का मिलन स्थल बन गया था।

—तो शुरू हो जाओ सत्या। अलका ने वहाँ पहुँचते ही कहा।

—जालिम बसी नही आया ना, सत्या ने पीछे देखते हुए कहा, जिधर से वे लोग अभी आये थे।

—जालिमों को अब पाकिस्तान ही रहने दो। और भगवान से प्रार्थना करो कि यहाँ के लोग जालिम न बनें। आप बस गाना कहे। मनोज हँस दिया।

—पहले आप सुनायें। आप भी तो अच्छा गाते हैं। कहा अलका।

अलका बोली—बहस से फायदा नही भ्राजी। पहले आप ही सुना दें।

'जालिम' कहकर अलका हँस पड़ी।

मनोज ने सहगल का गाया हुआ गाना गाया—

मैं किस्मत का मारा भगवन मैं किस्मत का मारा।

गाना खत्म करते ही मनोज ने अँगड़ाई ली और जालिम कहा।

—कह दो छेड़ेंगे तो हम नही सुनायेंगे। सत्या बोली।

—अच्छा बाबा हम न कहेंगे जालिम। 'जालिम' पर पूरा पूरा हक आप ही का रहा। मनोज ने गाना सुनने के लिए आँखें बन्द कर ली।

सत्या पूरी तन्मयता के साथ बहुत धीरे धीरे गा रही थी ताकि दूर के लोगों को सुनायी न दे—

पूछते हैं हम, अपनी ही किस्मत से अपना अता पता।

सत्या का मधुर स्वर पेड़ो की टहनियों को छू छूकर जमीन की धूप तक लौट आता था। टहनियों से जमीन पर गिरते उड़ते पत्ते साज का काम कर रहे थे। सत्या की आवाज मे उतार चढ़ाव और कम्पन लाजवाब था।

मनोज की फरमाइश पर सत्या ने एक गाना और भी सुनाया—

भटके हुए मुसाफिर मंजिल को ढूढ़ते हैं।

दिल खो गया हमारा इस दिल को ढूढ़ते हैं।

गाना खत्म होते ही जल्दी से उठती हुई बोली। देर हो गयी, जालिम। बाऊजी खफा होंगे। और खुद ब-खुद शर्मा गयी।

सत्या की माँ बचपन में ही गुजर गयी थी। छोटा भाई बसी था। पिता ने रिश्ते की किसी औरत की सहायता से बच्चो को पाल-पोसकर बड़ा किया था। दोनो ही बहन भाई खूब गोरे और लम्बे कद के थे। सत्या दसवीं पास कर चुकी थी जबकि बसी छठी कक्षा का विद्यार्थी था। बहन को हर वक्त भाई की चिन्ता लगी रहती कि खेलता बहुत है। बसी कहता लड़कों को हमेशा घूमते फिरते रहना चाहिए, इसी से दुनियादारी का पता चलता है। मैं अगर उस दिन बाहर न खेल रहा होता तो मुझे कैसे पता चलता कि उस दिन हमारे मुहल्ले पर हमला होना है। शफी अहमद ने मेरे कान मे बताया। मैंने बाऊजी के कान मे बात डाली और सत्या को लेकर हम दोनो 'मर्द' मकान छोड़ आये। इसको तो कुछ पता ही नही था।

तीनो बच्चे उनके पास आ गये थे। बसी फिर से अपने 'मर्द' होने की शेखी बघार रहा था।

—तो चलें मेरे मर्द दोस्त। मनोज ने आगे बढ़कर बसी से हाथ मिलाया।

दुपहर बाद जब यह सभी वापस वेटिंग रूम मे पहुँचे तो दोनो औरतें उतावली से मर्दों की प्रतीक्षा कर रही थी।

जमना ने कहा—तुम लोग कहाँ चने गये थे। अभी तक तुम्हारे बाऊजी, इनके बाऊजी वापस नही आये। फिक्र हो रही है।

—किस बात की फिक्र ? मनोज ने पूछा।

—पुतर तू ही साथ चला जाता। तीन जनो का जाना शुभ नही माना जाता। हरिचन्द जी की पत्नी बोली।

—वाह चाची जी वाह ! मनोज ने उनके कधे पकडकर झिझोड दिये। तीन जना को आडर देने से क्या रेलवे का भटठा बैठ जायेगा ? चाची ने कहा—तू तो मजाक म ले गया। कुछ समझाकर।

—चाची, दफ्तरो मे वक्त तो लगता ही है। कहो तो अब जाकर देख आऊँ ? मनोज ने पूछा।

—पहले क्या करत रहे ?

—सरया दीदी से गाने सुनते रहे। वसी बोल पडा।

—और तू—बताऊँ, सरया झल्ला पडी—सारा वक्त सिगाडे चरता रहा।

—अच्छा अच्छा लडो नही। थोडी देर और इन्तजार करो, नही आते तो जाकर देख आना। जमना, मनोज से सम्बोधित हुई।

हम भी साथ जायेंगी, अलका ने कहा, हमे भी रेलवे का बडा दफ्तर देखना है।

—लडकियो का वहाँ कोई काम नही। हम जायेंगे वसी ने कहा।

शाम हो चली थी। सभी सुस्ताने लगे तो नीद-सी आ गयी।

तभी खाँसी का स्वर उभरा। सबसे पहले जयदयाल जी ने प्रवेश किया और फिर अगल-बगल लाला केदारनाथ और हरिचन्द ने।

तीनो दोस्त गलबहियाँ डाले हस रहे थे। भई गजब हो गया—कैसे बोल रहा था पतली धारदार आवाज मे लम्बू बाबू, हरिचन्द बाबू दफ्तर का हाल सबको सुना रहे थे। कहता था आज आडर नही मिल सकते। तब जयदयाल ने पूछा, क्यों आज दफ्तर मे ग्रहण लगा है क्या ?

—मैंने कहा था तीन जनो का एक साथ जाना ठीक नही रैदा। हरिचन्द की पत्नी कमर को सीधा करते हुए बोली।

—यह सब वहम है भरजाई, लाला केदारनाथ ने कहा—हम तीनो सीधे जाकर डी० एस० से मिले। इतना आला अफसर और इतना सिम्पल। हमे बठाया। फौरन लम्बू बाबू को बुलाया और कहा—कोई फार्मिलिटीज हैं तो बाद मे पूरी होती रहगी। रिफ्यूजीज को हम रोक नही सकते। अभी आडर निकालो और इन्हें दो।

—कौन सा स्टेशन मिला चाचाजी, पहले यह बताओ। मनोज ने पूछा।

—बरेली और शाहजहाँपुर।

—एक स्टेशन नही मिला।

—बरेली दो वेकेंसीज थी और शाहजहाँपुर एक। हमने बहुतेरा कहा, हम पुराने बेली है, एक ही स्टेशन दे दो। वाकई वह मजबूर था। तब हमी ने नामों की लाटरी निकाली। हरिचन्द शाहजहाँपुर और जयदयाल, केदारनाथ बरेली।

—मैंने कहा था ना तीन जनो का जाना शुभ नही होता। मारे गये ना। हरिचन्द की पत्नी ने अपने विश्वास पर विश्वास जमाये रखा।

—कोई बात नही। कौन से दूर हैं। दूर पर ही आते-जाते मिलते जुलते रहेंगे।

सत्या, बसो, अलका कुन्दन और मनोज सभी एक दूसरे का साथ पाकर बहुत खुश थे।

यही फैसला हुआ—शाम यही घूमा फिरा जाये। बच्चे चाहे तो बेशक कोई फिल्म देख आयें। सुबह की गाडी से ही रवाना होंगे।

दूसरा भाग

बसेरा

एक एक स्टेशन गिना जा रहा था—दलपतपुर। मुण्डा पाण्डे। रामपुर। सवेरे सवेरे मुरादाबाद से सवारी गाड़ी रवाना हुई थी। जब बाऊजी मर्दाने डिब्बे में जाने लगे तो बच्चों ने उनके हाथ से टाइम टेबल छीन लिया था। वे हर आने वाले स्टेशन का नाम पहले ही जपने लगते—शाहजाबाद। धमोरा। मिलक। जैसे वे भविष्य वक्ता हों, आगत की सूचना से पूरी तरह से अवगत। और साथ ही वे जन साधारण को अपने ज्ञान का लाभ दे रहे थे आजा आजा अब अब हाँ धनेटा धनेटा। देखो आ गया न धनेटा। वे सब खिडकियों से बाहर देखते स्टेशनों का नाम पढ़ पढ़कर पुष्टि करते।

गाड़ी की चाल में उन्हें मस्ती का आभास होता। हरमिलाप कहता—यह गाड़ी घोड़ी है। ठुनक-ठुनक गाँव की घोड़ी की चाल चलती है। नखरे वाली। चल मेरी घोड़ी छेती (शीघ्र) चल। बरेली पहुँचा दे। तनू अल्लाह रखे।

कुन्दन कहता—रब तैनू सलामत रखे चगी गडिए। तेज होर तेज। शाबा।

कुन्दन, हरमिलाप और बसी सभी जनाने डिब्बे में बैठे थे। डिब्बे की अन्य स्त्रियाँ भी बच्चों का खेल देखकर मुस्करा रही थीं। उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि यह सब लोग पाकिस्तान से आये हैं। वे इन स्त्रियों से प्रश्न पर प्रश्न पूछने लगीं। कब? कैसे? क्या बशा? ठीक-ठाक?

अन्त पूर्व गाड़ी क्लटटर बकगज स्टेशन पर आकर रुक गयी। सभी बड़ी बेताबी से फिर से गाड़ी के चलने की प्रतीक्षा करने लगे। अब बीच में कोई स्टेशन नहीं था। बरेली आना था। गाड़ी चली तो सभी बच्चों ने खिडकियों से गर्दन बाहर निकाल ली। मना करने पर चन्द लम्हों के लिए ठीक से बैठते फिर से बाहर झाँकने लगते।

बरेली जक्शन, अचानक ऊँची आवाज में कुन्दन चिल्लाया।

—पागल हो गया क्या? जमना ने झिड़का।

—देख लो! उस बेंडिल पर क्या लिखा है, 'बरेली जक्शन वह वैसे ही उत्साह से साथ चिल्लाता रहा।

उसकी देखा-देखी बसी और हरमिलाप ने भी दोहराया—बरेली जक्शन।

गाड़ी रेंगती हुई ठहरने लगी तो फिर दूसरी बुलन्द आवाजें सुनायी दीं—बरेली का सुरमा। सुरमा ले लो। बरेली का खास सुरमा। हाजी साहब का

खालिस सुरमा। चाय पकौड़े समोसे।

तभी गाडी पूरी तरह रुक गयी। सभी बच्चे झट से गाडी से कूद गये। मर्दाने डिब्बे से लाला केदारनाथ मनोज और बाऊजी आ पहुँचे। सामान निकाला। एक लम्बे अर्से बाद किसी ढग के स्टेशन की शक्ल दिखलायी दी। कुली से सामान उठवाया और प्रतीक्षालय पहुँचे।

बच्चो को बैठाकर दोनो, जयदयाल जी और लाला केदारनाथ, स्टेशन मास्टर के कमरे मे पहुँचे। स्टेशन मास्टर एग्लो इण्डियन था। नाम था टी० टी० डनियल। उन्होने अपना परिचय दिया और आडरज की प्रतिलिपि दिखलायी।

स्टेशन मास्टर ने गमजोशी से उनसे हाथ मिलाया और कहा—बस घण्टा भर पहले आप लोगो के आने का टेलिग्राम आया है। कहिये और क्या सेवा करूँ।

—सिर छिपाने को साया इतना भर कहने से ही जयदयाल जी का गला भर आया।

पता नही जयदयाल जी की आवाज कैसी निकली थी कि स्टेशन मास्टर ने कहा—डोट बी सो सेंटिमेंटल। पर यह कहते-कहते वह स्वय भावातिरेक मे बह गया। अपनी कुर्सी से उठ आया और दोनो को दिलासा देने के लिए उनके कन्धे थपथपाने लगा। हर रोज अखबार पढता हूँ साहब। बहुत बुरा हुआ। आप लोग सब ठीक ठाक जैसे आगे कुछ पूछने की हिम्मत जवाब दे गयी हो।

—जी हाँ, जी हाँ बिल्कुल सब खरियत से पहुँच गये हैं।

—वैरी लक्की। स्टेशन मास्टर ने घण्टी बजायी। चपरासी को रेस्टोरेन्ट भेजा। उनके साथ खुद चाय पी और वेटिंग रूम मे भी चाय भिजवायी।

—चाय खत्म होने पर, उन्होने अँगडाई सी लेते हुए कहा—अब आपको किसी तरह की फिक्र नही करनी। हमे आडज हैं कि हर आनेवाले रिफ्यूजी एम्पलाई को पूरी पूरी फैसिलिटीज मुहैया करायी जायें। मगर मजबूरी है आज के दिन हमारे पास सिफ एक क्वाटर खाली है। क्या आप दोनो फैमिली दो-तीन दिनो के लिए एक ही क्वाटर मे एडजस्ट कर सकेंगे।

—बडे आराम से साहब। नो डिफिकल्टी। जयदयाल जी ने पूरी गति से भावुक स्वर मे कहा।

—वैरी गुड वैरी गुड। मैं यकीन दिलाता हूँ। दूसरा क्वाटर मिलने मे ढील नहीं होगी।

इस बीच कुन्दन, बसी और हरमिलाप को लेकर बरेली स्टशन का चप्पा चप्पा छान आया। वह बडे जोश से ढालू (बिना सीढी के) पुल पर चढता और फिर रेंगता सा उतरता। मगर कुछ देर बाद ही उसका उत्साह फीका पडता गया। कही भी यह स्टेशन शेखूपुरे से मेल नही खाता था। इससे वह बार-बार उदास सा हो उठता। मगर दूसरी बात उसे जरूर अच्छी लगी कि यहां पर बडी लाइन के

साथ साथ दूसरे प्लेटफार्म पर छोटी लाइन (मीटर गेज) भी थी। यह नयापन वास्तव में उसे लुभाने वाला था। उसने जिन्दगी में ऐसे छोटे छोटे एक ही बफर के डिब्बे कभी नहीं देखे थे।

वह अपनी इस खुशी और सुख में बसी और हरिया को बराबर का भागीदार बनाने की कोशिश कर रहा था—देखो देखो। गुड़िया जैसी गाड़ी रानी। लॉंग जम्प लायक छोटी लाइन। हैं सा।

तभी इस टीम को डॉट के सुर का सामना करना पड़ा—तुम लोग कभी आवारागर्दी से बाज नहीं आओगे? मनोज था। उसने कुन्दन का तो कान ही उमेठ दिया—तू ही रिंगलीडर है।

—उई, कुन्दन ने पीड़ा प्रदर्शन किया, लेकिन अन्दर से मजे आ रहे थे—अहा! क्या छुटकी गाड़ी है।

मनोज उन्हें वापस प्रतीक्षालय ले गया। वहाँ से वे सब दो कुलियों और एक स्टेशन पोर्टर के साथ बाहर आये। पुल पर चढ़े। छोटी लाइन के प्लेटफार्म पर उतरे, और फिर उन्हीं छोटी छोटी लाइनों को लाँघते सामने के कच्चे रास्ते की चढ़ाई चढ़े। सामने रेलवे कॉलोनी थी। क्वार्टर ही क्वार्टर।

थोड़ा आगे बढ़ने पर पोर्टर ने उन्हें इशारे से रोका और बगल के एक क्वार्टर का ताला खोलने लगा—यही है आपका क्वार्टर। उसी तरह बड़ी फुर्ती दिखलाते हुए, कुन्दी, बसी, हरिया क्वार्टर के अन्दर घुसने लगे तो पोर्टर बोला—बच्चो एक मिनट। वह पड़ोस से एक झाड़ू माँगकर ले आया। जल्दी से झाड़ू लगाकर फिर बोला—अब आइये। और कोई खिदमत हो तो बताइये। सामने चौक वाले ब्लाक में मेरा क्वार्टर है ए/215/टी याद नहीं रहे तो, रफ़ीक का क्वार्टर पूछ लेना।

—तुम मुसलमान हो भाई। जमना कहे बिना न रह सकी। उन्होंने हमें बहुत तंग किया।

मनोज ने गुस्से से कहा—भाभी!

—कोई बात नहीं, माता जी आप तो हमें तंग नहीं करेंगे। यहाँ के मुसलमानों में दहशत है। गाड़ियों में लद लदकर पाकिस्तान जा रहे हैं।

जमना ने कहा—मेरा बस चले तो वहाँ के उन मुसलमानों को भी यहाँ ले आऊँ जो हिन्दुओं से भी हमारे लिए कितने अच्छे थे। यह वाक्य खत्म करते ही जमना के मुँह से आह निकली।

—सब्र रखो माता जी। फिर मिलूँगा। इतना कहकर वह चला गया।

साफ-सुथरा सादा फर्श। अगल-बगल दो कमरे। आगे बरामदा। उससे आगे खुला आँगन। सिर पर एक तरफ रसोई दूसरे सिरे पर शौचालय। दोनों तरफ दरवाजे। आम क्वार्टरों जैसा एक क्वार्टर। फिर भी कितना खुशगवार, जैसे

उपहार मे मिला हो। कुन्दन पैरो से फर्श पर फिसल रहा था—वाह बिलकुल पेशावर जैसा है। हां इसमे एक और खासियत है सिरे का है। बेशक दीवार कूदो और गली मे।

सत्या ने अलका से कहा—शटापू खेल ले। कोने मे एक कोयले का टुकडा पडा था उससे लाइनें खींचने लगी और बाहर से एक ठीकरी उठा लायी।

जमना ने कहा सबको अपनी अपनी पडी है। साहब लोग ट्रको पर बठे हैं जैसे कुर्सियाँ हो। यहाँ तो आते-आते ही चारपाइयाँ आयेंगी। अभी जरा ढग से दरी और चादरें तो बिछवा दो। मनोज बेटे तू ही पूछ कर। कही से घडा तो खरीद ला। नल तो अन्दर है नही। गली मे देखकर आ।

मनोज बाहर निकला तो मुहल्ले का एक लडका उत्सुकतावश साथ हो लिया—कहाँ चलना है, भाई साहब! बजरिया? चलिये मैं रास्ता दिखलाता हूँ। इधर उधर की बातें करते हुए वे बाजार से दो घडे खरीदकर जल्दी ही वापस आ गये।

दीवार के सहारे घडे रखते हुए, मनोज ने देखा, अडोस पडोस की दो-तीन औरतें, भाभी के पास बैठी बतिया रही थी।

एक औरत बोली—पानी तो कुएँ से लाना होगा। रस्सी हमारे घर से ले लेना।

दूसरी औरत ने कहा—हमने तो अपना हैंडपम्प लगवा लिया। अभी तो वही से पानी भर लो। फिर जरा रुककर बोली—सकोच मत करना बहन। जो जो चीज जरूरत हो बता देना।

जमना ने कहा—क्यो नही। आखिर अडोसी-पडोसी तो काम आते है। हमारा यहाँ है ही कौन।

पहली औरत ने कहा—आज खाना हमारे यहाँ खा लेना।

जमना ने उत्तर दिया—हमारे पास सामान है। बना लेंगे। अभी तो सारा सामान ठीक करना है। दरअसल वह आगे होने वाले बोझल प्रश्नो से बचना चाहती थी। उन्होने बिस्तरे की रस्सी खोलनी शुरू कर दी। वे यह भी नहीं चाहती थी कि जरा जरा से काम के लिए दूसरो से सहायता लें।

उन्हें काम करता देख, वे औरतें 'फिर आयेंगी कहकर चली गयी।

मुश्किल से आधा घण्टा बीता होगा, जब थोडा आराम करने के बाद जयदयाल जी ने अँगडाई ली तो जमना बोली—उठिये। पहले हम सबको जरा नजदीक वाला बाजार दिखला लाइये।

बाजार देखने का तो बहाना था। वहाँ उन्होने सभी को उनकी मर्जी मुताबिक खिला पिला दिया।

रात का खाना रेलवे रेस्टोरेंट से आयेगा, ऐसा उन्होंने पहले ही कह दिया

था। फिर कल से अपने ही घर पर खाना बनने लगेगा। इसके लिए जैसे भी हो, छोट मोट बतन, चकला बेलन दाल मसाले वगैरह आ जाने चाहिए। बाल्टी, हाँ एक बाल्टी भी आ जानी चाहिए। ये बातें वे न जाने किस तरह की आवाज म कह रही थी। साथ ही बार बार सूने घर को देखे जा रही थी। सूने घर को देखते देखते उनकी आखें सूनेपन से घिर गयी। फिर यही सूनापन एकाएक सलाब बन गया। यह सैलाब रुकने का नाम नही ले रहा था। वह फफक फफककर रोये जा रही थी।

वे बरामदे के बीचोबीच खुली जमीन पर बैठी थी।

सभी घर वाले हैरान। परेशान। एकाएक क्या हो गया। किसी ने कुछ कहा तो नहीं। वजह तो बताओ। सभी अपने अपने सम्बोधनो से उनसे पूछ रहे थे।

जमना कुछ नहीं कह पा रही थी।

अन्त मे जयन्याल जी हिम्मत कर उनकी पीठ पर थपकी देते हुए बोले—तुम तो बहादुर औरत हो। इतना झेल लिया। अब क्या। वे दिन नही रहे तो समझो बुरे दिन भी कट गये। अच्छे दिनो की शुरुआत म रोना, अपशगुन होता है।

—हाय मैं इतने इतने भरे पूरे तीन तीन मकान छोडकर कगाल हो गयी। जिसको तवा, चकला, बेलना भी चाहिए।

यह गहरा सताप दिल से निकलकर पूरे वातावरण को द्रवित किये जा रहा था। उन्हें रोता देख सारे बच्चे भी रोने लगे।

तब जयदयाल जी ने अपने आपको पूरी तरह मजबूत करते हुए डाँट लगायी—क्या हो गया तुझे बेवकूफ। आस पड़ोस वाले न जाने क्या कुछ समझ बैठे। तेरे बच्चो की जान बच गयी। इससे बढकर धन क्या चीज है। बताओ तो सामान किस गिनती मे आता है। धीरे धीरे सब कुछ बन जायगा। यह कहने के साथ उन्होंने हरमिलाप और कुन्दन को उनकी गोदी मे बैठा दिया।

इस उपाय ने अपना प्रभाव दिखाया। वे बेतहाशा दोनो को चूमने लगी। अलका और मनोज को भी पास बैठाकर प्यार करने लगी।

—चाची जी असी (हम) पराये हाँ? सत्या ने कहा। वह स्वय उनके पास बैठ गयी और बसी को भी बिठा लिया।

इसस जमना को वास्तव मे बहुत बल मिला। उन्होंने सत्या को भी चूम लिया—नही नही तू भी मेरी धी (बेटी) है। कहते हुए उसकी तथा बसी की पीठ थपथपाती रही—मैं ही कमी मूरख तीवी (औरत) हाँ। जो इतने बच्चो के होते हुए अपने को कगाल कह बैठी। हे बसी वाले मुझे क्षमा करना।

—मैं बसी हूँ। बसी वाला नही। कहते हुए बसी को कुछ सकोच हुआ, मगर नयी चाची की खातिर कह गया।

इससे वातावरण कुछ और खुला। सभी लोग पूरी हसी न आने पर भी जोर

से हँस पड़े।

—तू भी तो कुन्दी हरिया से कहा कम है। कहते हुए जमना उसे प्यार करने लगी।

सभी जने बहुत थके हुए थे। लेटे तो पता भी न चला कि कब शाम हो गयी।

रात का खाना आया तो बरे को सुबह के नाश्ते तथा दोपहर के खाने का भी आडर दे दिया।

दूसरे रोज दोपहर बाद मनोज शहर के बडे बाजार (शहामत गज) मे जरूरी सामान खरीदने गया ताकि ऐसी किसी चीज की कमी भाभी को न अखरे जो खास जरूरत की हो और बहुत मामूली भी हो। साथ मे थे, कुन्दन, बसी और हरमिलाप। सडको को कूदते फांदते और सब तरफ फैली सामान्य नवीनता को बडी हैरत से देखे जा रहे थे। जन जीवन यहा पूरी तरह सामान्य था और चहल पहल मे कोई कमी नही थी।

—यहाँ कोई रिफ्यूजी कैंप नही ? कुन्दन ने मनोज से पूछा।

—नही यहाँ पर अभी तक और पुरुषार्थी नही आये।

—रिफ्यूजी का मतलब शरणार्थी बताया था जहाँगीर ने। यह पुरुषार्थी कौन हैं ?

—तेरे उस दोस्त को भी पता चल जायेगा।

—कैसे ? तीनो बच्चे एक साथ बोल पडे।

हमारे अम्बाला से चलने के दो दिन बाद, वहाँ के बडे मैदान मे एक जबदस्त मीटिंग होनी थी। उसमे सबने शपथ ली होगी कि आइदा हम सब न तो अपने-आपको शरणार्थी कहेंगे और न ही किसी दूसरे को अपने लिए यह लफ्ज इस्तेमाल करने देंगे। अच्छा तुम लोग पुरुषार्थी का मतलब समझते हो ?

—नहीं तो। तीनो बच्चे फिर से एक साथ बोल पडे।

—तो सुनो, शरणार्थी वह । मनोज ने रास्ते में एक पेड के नीचे खडे होकर, बारीकी से दोनो शब्दो का अथ समझाया। और कहा यहाँ पर न तो हमे किसी से मदद लेनी है और न किसी की कृपा पर जीना है। जो कुछ करना है अपने स्वाभिमान और बाहुबल के सहारे।

कुन्दन ने स्वाभिमान, बाहुबल जैसे शब्द सघ वालो से सुन रखे थे। वह बडी जल्दी जोश मे आ गया। हाथो को आसमान में लहराते हुए बोला—ठीक है। तो हम हैं परशरथी (पुरुषार्थी)।

बसी और हरमिलाप ने भी ऐसा ही नाटक किया।

मनोज ने बच्चों को चाट पकौडी वगरह खिलाया। फिर चौका-बतन का सामान खरीदा और खरीदी बाँस की साधारण चारपाइयाँ।

—चलो उठाओ एक एक। मनोज ने दोनो भाइया से कहा।

—तांगा कर लो न भ्राजी, हरमिलाप ने कहा—पूरे चार मील है स्टेशन। आती बार भी पैदल आये हैं।

—तो क्या हुआ हम हैं पुरुषार्थी। हमें एक एक पैसा बचाना है और सिर्फ अपने बलबूते पर अपने घर का पूरा सामान जुटाना है। शाबाश उठाओ तो।

—वाह भ्राजी हो पूरे चार सौ बीस। पहले चाट पकौड़ियाँ खिला दीं। और फिर हमने भी सोचा आज क्या सैर कराने अपने साथ ले जा रहे हैं? अब पता चला मजदूर बनाने के लिए। कुन्दन ने कहा।

—मजदूर भी तो हमारी तरह इन्सान होते हैं, बसी बोला—ऊपर से हम पुरुषार्थी भी हैं।

—तो बच्चू पहले तू ही उठा। कुन्दन ने ललकारा।

बसी ने कहा—रख दे मेरे सिर पर।

इस प्रकार वे सब बारी बारी से, बदल-बदलकर, सारा सामान उठाते, कहीं कहीं पर थोड़ा रुककर सुस्ताते, सारा रास्ता बड़े मजे से पार कर आये।

घर पहुँचे तो इतना सारा, तरह तरह का सामान देखकर जमना एकबारगी तो अचम्भित हुई। फिर उठकर चीजें परखती हुई बारी-बारी से सब बच्चों को आसीसने लगी।

माँ को इतने दिनों बाद खुश देखकर मनोज की आँखें नम हो आयीं। उधर से ध्यान हटाता हुआ, वह भाइयों से बोला—देखो मिस्टरो! मैं एक दो दिन में अम्बाला लौट जाऊँगा। मेरे पीछे भाभी को तंग नहीं करना। जो कहें कहना मानना। हाँ बाजारों के रास्ते और दुकानें तो तुमने समझ ही ली न।

बड़े तपाक से जवाब बसी ने ही दिया—फिकर ई न करो भापा जी। असीं (हम) सब पुरषारथी (पुरुषार्थी) हाँ।

—शाबाश तू भी तो मेरा वीर है, मनोज ने बसी को बगलों में पकड़ थोड़ा ऊपर उछाल दिया, हाँ यह दोनों अगर कोई बदमाशी करें तो मुझे लिख देना। पोस्टिंग आर्डर होते ही मैं अपना पता लिख भेजूँगा।

माँ रसोई के कामों में लग गयी थी, साथ में अलका भी। एक अँधेरे कोने में चुपचाप खड़ी सत्या यह सारी वार्ता सुन रही थी। वह थोड़ी आगे बढ़ी। मनोज के सामने आकर ससंकोच बोली—आप किसी तरह की फिकर नइ रखना। चाचीजी को मैं देखती रहूँगी। वसे बाऊजी और चाचा जी ने तय कर लिया है कि अब जो दूसरा क्वाटर मिलना है, उसमें हम लोग जायेंगे। यह वाला क्वाटर आपके पास रहेगा।

—वह तो है ही मनोज बोला दो फैमिलियों के लिए एक क्वाटर तो छोटा ही पड़ता है। भगवान करे दूसरा क्वार्टर नजदीक ही मिल जाये।

—रेलवे कालोनी में ही तो मिलेगा। यह पूरी कालोनी इतनी बड़ी तो नहीं।

आते जाते रहेंगे। और यहाँ अपना है ही कौन ?

मनोज और सत्या को बात करता देख बच्चे गली मे खेलने भाग गये थे।

आज पहला दिन था जब जयदयाल जी तथा लाला केदारनाथ ने ठीक से ड्यूटी शुरू की थी। एक बहुत लम्बी मुद्दत बाद वे दोनो पाकिस्तान के पुराने स्टेशनो की ही तरह खाली सदियां मे लैंस गाडी लेकर गये थे। उन्हे अपनी पुरानी टी० टी० ई० (ट्रैवलिंग टिकट एग्जामिनर) की नोकरी मिली थी।

सत्या अपनी बात दुहरा रही थी—आपको अलका की चिट्ठियो से यही खबर मिलती रहेगी कि सत्या यहाँ पर रोज आती है। हमारा यहाँ कौन वाकिफ है। यही आती रहूंगी। चाचीजी को उदास नही होने दूगी।

हमेशा अपना का ही सहारा होता है, सत्या।

पहली बार प्रत्यक्ष रूप से मनोज के मुह से अपना नाम सुनकर सत्या को थोडा सुखद सकोच हुआ। शरीर मे झुरझुरी सी हुई।

—आप क्या कुछ दिन और नही रुक सकते ? सत्या सकुचाते हुए खुलन लगी थी।

—ऐसे तो सब चौपट हो जायेगा। उधर अम्बाला कैम्प वालो का गला 'मनोज मनोज' पुकारते सूख जायेगा और इधर मनोज साहब फरार। तब गुस्से मे आकर वे लोग मेरे पोस्टिंग आर्डर रद्द कर देंगे। फिर इन्तजार करो और नये सिरे से उसी खूबसूरत टैंट मे रहकर बढ़िया-बढिया रोटियाँ तोडते रहो। मेरी तौबा। लम्प की झिलमिलाती रोशनी मे सत्या ने मनोज को कान पकडते देखा और हँसन लगी।

हँसन की आवाज सुनकर, अलका ने रसोई से आवाज लगायी—भ्राजी कोई लतीफा सुना रहे हैं क्या ? आऊँ ?

मनोज ने जोर से उसी प्रकार हँसते हुए उत्तर दिया जो मजाक हमारे साथ हुआ, उससे बढकर कौन-सा बडा चुटकुला हो सकता है भला।

—कौन सा मजाक ? किसने किया आपके साथ मजाक ? सत्या का स्वर थोडा विचलित था।

मनोज सहज रूप से बोला—मजाक अग्रेजो ने किया और साथ ही हमारे प्यारे नेताओ ने किया। देश को तोडकर रख दिया। भागो, मनोज साहब तीन कपडो के साथ। एक बार पूरी तरह उजड जाओ। फिर देखो, नये सिरे से दुबारा बसने मे क्या आनन्द आता है।

—आप बातें तो बहुत जोरदार कर लेते हैं।

—बातें करने से जिन्दगी मे उत्साह बढ़ता है। तभी फिर काम करने को मन करता है। मुझे कितने ही काम करने हैं। असल मे मैं जल्दी वापस जाना भी नही चाहता। पीछे बाऊजी को अकेले तकलीफ होगी।

जमना का रसोई से स्वर सुनायी दिया—सारे कामों का तूने ठेका तो नहीं ले रखा। जरूरी तो नहीं तुम्हारी नौकरी हमारे पास लगे। फिर क्या रोज रोज आ पायेगा?

—वह देखी जायेगी। अभी तो यहाँ घर में एक हैंडपम्प लगवाना है। छोटे भाइयों को स्कूल में भर्ती कराना है। घर की छोटी-बड़ी बहुत सी चीजें लानी हैं।

जमना की आह भरने की आवाज सुनायी दी।

मनोज ने दूसरे लहजे में कहा—अहा कितना मजा आता है जब घर में एक से एक नयी चीजें आती हैं। पुरानी चीजें बस कायदे से फेंक ही देनी चाहिए।

—हाँ पुत्तर तू भी मजाक कर ले। मैं तुम्हें अपनी आँखों देखी एक बात बताती हूँ, कहते कहते वे रसोई से बाहर आकर नये आये हुए मामूली से एक मूढ़े पर बैठ गयी, सत्या तू भी सुन। हमारे रावलपिण्डी वाले क्वाटर के साथ सटा हुआ पीपल का एक पेड़ था। वहाँ एक चिड़िया हर रोज आती। एक एक तिनका लाती। जिस दिन उसका घोसला पूरा बना उसी रोज बहुत जोर की आँधी चली। सारा घोसला बिखर गया, अलका सुन रही है ना तू और मनोज भी उन दिनों बहुत छोटे थे। बात बहुत पुरानी हो गयी, मगर नजारा मेरी आँखों के आगे से हटता नहीं। चिड़िया कई कई रोज तक उसी पेड़ के आल-द्वाले चक्कर काटती रहती थी। फिर और तिनके लाने शुरू किये थे कि तभी वहाँ तीन चार डोडरका (बड़े काले कौवे) आ गये। उस चिड़िया को भगा दिया। वहाँ चिड़िया फिर कभी दिखलायी नहीं दी। पता नहीं कहाँ गयी बेचारी।

सत्या ने कहा—चाची जी आप ठीक कहती हैं जब वैसी ही घटनायें अपने पर बीतती हैं तभी ज्यादा चुभती हैं।

—यह मनोज तो ऐसे ही बोलता है। एक एक रुपया जमा करके जब कोई चीज बड़ी हसरत से खरीदी जाती है। उसे सहेजकर रखा जाता है तो वही चीज हमारे जिस्म का अंग बन जाती है। इसके बाऊजी हर रोज अपने ग्रामोफोन और हारमोनियम को याद करते हैं।

—नुकसान होना होता है तो हो जाता है। उसे कोई रोक नहीं सकता। मनोज बोला।

—तुम ठीक कहते हो पर मेरी बात को सही ढंग से समझ नहीं रहे। भगवान की मार का आदमी आसानी से सह जाता है—हरि इच्छा कहकर। कोइटा के भूचाल ने कितनी तबाही मचायी थी पर कोई जबरदस्ती, आपकी आँखों के सामने आपका लूटे जुल्म ढाये और आपका कोई बस न चले तो यह दोहरी मार होती है पुत्तर। आदमी अन्दर-ही अन्दर कितना तिलमिलाता है टूटता है। लेकिन कोई पेश नहीं जाती। यही तो समझा रही हूँ। जब चिड़िया का घोसला पहली बार बिखरा तो उसने सहा, और जब कौवों ने उसे अपने ही पेड़ से बेदखल कर

दिया, तो दोनो बातो मे फर्क है समझ रहे हो। जब इस तरह का कहर किसी पर टूटता है तो उसे झेलना ज्यादा मुश्किल हो जाता है।

—छोड़ो भाभी कोई और अच्छी बात करो। अलका की आवाज सुनायी दी। स्वर भारी था।

—हाँ हाँ, आज इतनी अच्छी बात हुई। इतनी अच्छी कि उसे जिन्दगी भर भूल नही पाऊँगी। कहते कहते जमना भावातिरेक मे आ गयी।

—तो जल्दी बता भाभी। मनोज और अलका एकसाथ उतावले होकर बोले।

जमना बोली—एक जमाने के बाद आज तुम्हारे बाऊजी को बन ठनकर वर्दी पहने देखा।

—सच भाभी बिलकुल ठीक बताया। मुझे भी बहुत अच्छा लगा, अलका ने कहा। दिल किया बाऊजी से लिपट जाऊँ। लिपटी भी। बाऊजी ने बहुत प्यार किया। कहने लगे—जब तू 'इत्ती' सी थी तो तुझे अपने ओवरकोट की जेब मे डाल लेता था। क्या सच भाभी?

—बिलकुल सच। तेरे बाऊजी तो शुरू से हैं ही ऐसे। हर वक्त कोई न कोई तमाशा किये रहते हैं।

मनोज भी अपने भाव प्रकट करने से न रह सका। बोला—जब चाचाजी और बाऊजी हाथ मे हाथ पकड़े कसी कसायी वर्दी मे स्टेशन की तरफ जा रहे थे तो मैं भी लगातार उन्हे देखता रहा। मेरे सामने सारे के सारे पुराने स्टेशनो पेशावर, सक्खर, कराची, कुन्दिया वगैरह वगैरह के नजारे उभर उठे थे।



एक चाँदी का गिलास था। यह चाँदी का गिलास ही कुन्दन और शफी की गहरी दोस्ती का सबब बना।

दरअसल यह गिलास कभी किसी कारणवश या गलती से जमना की बड़ी लड़की सुमित्रा, शेखूपुरे से लायलपुर ले गयी थी। हिन्दुस्तान चलते वक्त यही गिलास सुमित्रा ने माँ को सम्भलवा दिया था कि अपना गिलास ले जाओ। अब वही गिलास हर वक्त हर तरह का काम दे रहा था।

उस दिन जमना ने कुन्दन से बजरिया से सब्जी मँगवायी। वह चलने लगा तो यही गिलास भी पकड़ा दिया कि दही भी लेते आना। हरमिलाप भी साथ हो लिया। दोनो भाइयो ने बड़े उत्साह से ताजी सब्जिया, फल खरीदे। आती बार कल्लू हलवाई की दुकान पर उसका लड़का बैठा था। दही डालने से पहले उसने गिलास को घुमा घुमाकर परखना शुरू किया। फिर बोला—यह चाँदी का गिलास है? तुम्हारे पास कहाँ से आया? चोरी का लगता है।

कुन्दन ने कहा—बकवास बन्द करो। दही दो या गिलास वापस करो।

लड़का बोला—क्या कर लोगे ? सबको बताऊँगा कि तुम रिफ्यूजी कहलाते हो ताकि लोग तुम पर तरस खायें। पर तुम चोर हो इसीलिए मुसलमानों ने तुम्हें मार भगाया।

कुन्दन मुट्ठी तान दुकान पर जा चढ़ा और अपना गिलास छीनने लगा।

लड़का बोला—दम था तो मुसलमानों से भिड़ते।

दोनों गुत्थमगुत्था हो रहे थे। उधर हरमिलाप रो रोकर भाई की मदद करने लगा।

भीड़ इकट्ठी हो गयी। कल्लू हलवाई भी आ पहुँचा। उधर से राजेन्द्र प्रसाद टिकट कलैक्टर भी निकल रहे थे। उन्होंने दोनों भाइयों को पहचाना। पूरी बात जानकर कल्लू हलवाई से बोले—सम्भाल के रख अपने छोकरे को। तुम्हारे साथ ऐसा होता तो भीख माँगते नजर आते। जाकर शहर में शरणार्थियों को देखो। कैसे मेहनत से कमा खा रहे हैं।

कुन्दन के बाजुओं में कुछ साधारण खरोंचें लगी थीं। उसने घर वालों को इस घटना के बारे में कुछ नहीं बताया। सिर्फ सस्ती सब्जी, सिंघाड़ों की तारीफ करता रहा पर रह रहकर यह साधारण खरोंचें टीस पैदा करती रहीं।

रात को खाने से पहले माँ ने सब बच्चों से कहा—पहले आरती कर लो। आरती होने लगी। ललवा और सत्या कुछ अधिक ऊँचे स्वर में गा रही थीं। तभी कुन्दन चुपके से बाहर खिसक गया। वह बहुत उदास था। वह किशोर भाई साहब की बातें याद करने लगा। भगवान वगवान कोई नहीं होता। वह करता क्या है। आज उस दो कौड़ी के लड़के ने, मेरी कैसी बेइज्जती की।

वह बाहर अँधेरे में गुमसुम खड़ा था। मुहल्ले के दो-तीन लड़के आये और उससे बोले—हम लोग लुक्का छिपी खेलेंगे। तू खेलेगा ?

कुन्दन ने कहा—मैं किसी के साथ नहीं खेलूगा। आज एक लड़के ने मुझे गालियाँ दीं। पाकिस्तानी कहा।

शफी थोड़ा लम्बा चेचक के दागों वाला लड़का था। उसने पूछा—कौन था साला ?

कुन्दन ने कहा—नाम नहीं पता। कल्लू हलवाई का लड़का है।

—अभी देखते हैं साले को। वह है ही बदमाश। शफी ने कहा। चलो उसे पाकिस्तान पहुँचा आयें।

—झगड़ा बढ़ेगा। बाऊजी गुस्से होंगे।

—तुझसे साथ चलने को कहता कौन है। मैं अकेला ही बहुत हूँ। इतना कहते न कहते वह भाग गया। दस-बारह मिनट बाद वापस आया तो बोला—लो पीट आया उस हरामजादे को। अब उसके रोने की आवाज सुननी हो तो चल

मेरे साथ। सुना लाऊँ। अब तो खेलेगा ?

उस दिन से शफी कुन्दन का पक्का दोस्त हो गया। कुन्दन ने अजीब तरीके से सोचा— भगवान से तो शफी अच्छा, जिसने हाथो हाथ बदला चुकाया।

लाला केदारनाथ को अपना क्वाटर अलॉट हो गया। क्वाटर ज्यादा दूर नही था। पुल के पास था। दूर से देखने पर पुल के नीचे दिखता था। दूसरी तरफ से देखने पर बड़े पाकड़ के पेड़ के नीचे।

एक-दो कुली आये और बच्चो ने भी मिल जुलकर सारा सामान नये क्वाटर मे पहुँचा दिया। सामान था ही कितना। हाँ, कुछ नया सामान चारपाइयाँ वगरह थी जो मनोज ने ही लाकर दी थी। वापस अम्बाला जाने से पहले वह दोनो ही परिवारो को जितना हो सके व्यवस्थित देखना चाहता था। इसी कारण उसे पाँच रोज ज्यादा लग गये।

बच्चो के दाखिले भी रेलवे विक्टोरिया स्कूल मे हो चुके थे। एक एक कक्षा पीछे की कक्षाओ मे उन्हें लिया गया था। अब यहाँ उर्दू की बजाय हिन्दी मे पढाई करनी थी।

क्वाटर मिल जाने के बावजूद, बसी सत्या यही इन्ही बच्चो के साथ जमे रहते थे।

दूसरे रोज सुबह दस बजे की गाड़ी से मनोज को वापस अम्बाला रवाना होना था। अत बच्चो ने मिलकर रात्रि के खाने का बढिया प्रबन्ध किया। खूब खाया पिया। हँसी मजाक, चुटकुलो के बाद गानो का दौर चला। यह तय हुआ कि सभी को कुछ-न कुछ सुनाना पड़ेगा, दूसरा यह कि अब कोई फिल्मी गीत नही गायेगा। गजलें बिना तर्ज भी चलेंगी। पहले पहल मनोज ने लय के साथ गाया— सहर का वक्त है जाम मे शराब नही गुनाह गिन के करूँ या बेहिसाब करूँ सुना है तेरी रहमत का कुछ हिसाब नही।'

मनोज ने गाना खत्म किया तो सभी उसी लय-ताल मे खोये उसी लरजती हुई आवाज को जैसे ढूढने लगे। फिर तालियाँ बजाने लगे खूब खूब। इसके फौरन बाद सबका ध्यान सत्या की तरफ था। सत्या को तो इन सबमे महारत हासिल थी। सत्या ने पूरी शोखी के साथ गाया— मैं ते चली आ पेक्डे तुसी पिछे पिछे आ जाइयो।' (मैं तो मैके जा रही हूँ आप पीछे पीछे चले आना।) इस लोकगीत को सुनकर सभी हँसी से लोट पोट होने लगे। फिर तो औरो के बाद जल्दी जल्दी उसी की बारी आने लगी। सत्या न हार सुनायी— डोली चडदयाँ मारियाँ हीर चीखाँ मनू ले चले ।' इसे सुनते ही सभी की आँखें नम हो आयी। उसे बीच मे ही टोक दिया गया—नही नही। कोई और लोकगीत, ठेठ पजाबी

लोकगीत ।

सत्या ने 'काला डोरिया', 'मडवे-मडवे जादिये' इत्यादि सुनाये। फरमाइश और बढ़ने लगी तो वह बस बस हुण होर नई (अब और नहीं) कहने लगी, परन्तु मजबूर होकर उसने अंतिम गीत कुछ रुक रुककर ऊंची-नीची आवाज के साथ सुनाया—

मैं ता नई चाहुँदी माहिया नजरा तो दूर होवे।
पर करा ते की करा मैं, इस डाडे रब दा॥
गम हुंदे हेन कंडे वाकुण, हरदम करदे बेचन सानू।
जेड़ा सहवदा ओही जाणदाए, दूजा समझे कंज ते कामूं॥
इक इक पल इक इक दिन जिन्दगी बीती जाऊंदीए।
अगले जनम होएगा मिलाप, सोच ऐ हो ही मनू आंवदीए॥[1]

यहाँ तक आकर सत्या अटक सी गयी आगे उसकी साँस साथ नहीं दे रही थी।

इस गीत को सुनकर अलका की आँखें भर आयीं। वह उन भारी पलकों से अपने अतीत को जैसे भय के साथ देख रही थी—कब होगा मिलन।

दूसरे दिन दस बजे से पहले लगभग सभी स्टेशन पर मनोज को विदा देने गये थे। गाड़ी कुछ देरी से पहुँची। फिर आकर ठहर गयी। चलने का नाम ही नहीं ले रही थी। बातों का सिलसिला खत्म होने मे नहीं आ रहा था—चाहे आडर हो न हो, नयी बात हो न हो, एक पोस्टकार्ड हर रोज जरूर डालते रहना भाजी। अलका बार बार ऐसी कुछ हिदायतें दे रही थी। बातें करते हुए अलका के साथ सत्या भी डिब्बे के अन्दर चलकर बैठ गयी थी। तीनों लड़के प्लेटफॉर्म पर गश्ती करते फिर रहे थे। जब डिब्बे के नजदीक से गुजरते तो खिड़की से अन्दर झाँककर कहते—अब उतर आओ। गाड़ी चल पड़ेगी। मगर गाड़ी टस से मस नहीं हो रही थी। मनोज भी कह रहा था कि तुम सब घर जाओ। भाभी इन्तजार कर रही होगी। मगर फिर से बातें शुरू हो जातीं। पुराने शहरों की। स्कूलों की। स्कूल के साथियों की। यहाँ पहुँचने के अनुभवों की। फिर सत्या ने वही बात दोहरायी कि खत आते रहने से एक दूसरे का हौसला बंधा रहता है।

अचानक एक झटके के साथ गाड़ी चल पड़ी। हड़बड़ी में अलका ने छलांग

---

1 मैं तो नहीं चाहती साजन नजरों से दूर हो
पर करूँ तो क्या करू इस निर्दयी ईश्वर का।
गम तो काँटो के समान होते हैं जो हमें हरदम बेचन करते हैं
जो सहता है वही जानता है दूसरा कैसे समझे और क्या समझे।
एक एक पल एक एक दिन करत जीवन बीतता जाता है
अगले जन्म में ही मिलन होगा, यही सोच मुझे आती है।

लगा दी। गिरी और उठ खड़ी हुई। अब सत्या भी कूदने लगी तो मनोज ने उसकी बाँह पकड़ ली—वह तो बच गयी। तू जरूर मरेगी। फिर बाहर झाँककर जोर से कहा—क्रासिंग होने पर इसे पहुँचा जाऊँगा।

मनोज ने सामने वाली बथ पर सत्या को बिठा लिया। सत्या का चेहरा भय के मारे सफेद पड़ गया था। इस पर थोड़ा छेड़ने के लहजे मे मनोज ने धीरे से कहा—अब क्या हो गया। तुम तो जान-बूझकर गाडी से नही उतरी। मेरे साथ चलने का मन बना लिया था ना। साफ साफ बताओ। कहते कहते मनोज मुस्कराने लगा। इस पर सत्या जकड-सी गयी।

खिड़की दूर थी। हवा बिलकुल नही आ रही थी। वह उसे दरवाजे के पास ले गया। थोडी देर दोनो यू ही खडे रहे। मनोज ने पूछा—मुझसे डर लग रहा है ?

—नहीं, आप नही जानते बाऊजी को। बडे जालिम हैं। खफा होगे।

जालिम शब्द सुनते ही मनोज हँस पडा। बोला—यह टी० टी० लोग सिर्फ विदआउट टिकट पसिंजर्स के लिए जालिम होते है। बेटियो के लिए नही।

—क्या सोचेंगे ?

—तुम क्या सोचती हो ?

सत्या इस अप्रत्याशित प्रश्न के लिए तयार नही थी। कोई उचित उत्तर नही सूझा। चुप रही। फिर हड़बड़ी मे बोल पड़ी—मैं तो अच्छा ही सोचती हूँ।

—नेक आदमी को हमेशा अच्छा सोचना चाहिए। उसका दूसरो पर भी माकूल असर पड़ता है। सोचने वाले की मनोकामना पूरी होती है।

—कौन-सी मनोकामना ? सत्या फिर अचकचा गयी।

—यह तो याचक ही जाने। दूसरा कसे जान सकता है।

—मैं समझी नहीं ।

—तब मैं कसे समझ सकता हूँ। नितान्त अज्ञानी हूँ।

—आज तो खूब हिन्दी बोल रहे हैं।

—जितनी जल्दी सीख लें अच्छा है। अब यह हमारी राष्ट्रभाषा है। कल का इसके बगर किसी का गुजारा नही होगा।

तभी गाडी रुकी। मनोज ने उतरते हुए कहा—जरा ठहरना, पूछकर आऊँ क्रास कहाँ होगा।

—न न न न घबराहट मे सत्या चार बार 'न' बोल गयी। वह भी गाडी से नीचे उतर आयी। कही गाडी चल पडी और आप यही रह जाओ।

—तब मेरा सामान तो तुम सँभाल लेती। अब तो उतारना ही पडेगा। मनोज ने कहा और सीट से सामान उठा लाया।

वे ए० एम० एम० के पास पहुचे। उसने सुझाया—क्रास अगर किसी रोड साइड स्टेशन पर हुआ तो कही के न रहोगे। यही उतर लो। शाम चार बजे

बरेली के लिए गाड़ी मिल जायेगी।

ए० एम० एम० के कमरे के बाहर आकर मनोज बोला—सोच लो।

—क्या ? वह कुछ समझ नहीं सकी।

—बरेली जाना है या अम्बाला। अभी गाड़ी खड़ी हुई है।

—ठीक है मैंने सोच लिया। सत्या ने अबकी दृढ़ भाव से कहा।

—क्या ? मनोज चौंका।

—बाहर। स्टेशन के बाहर। जेब में पैसे हों तो पकौड़े ही खिला दो।

—मेरे पल्ले धेला भी नहीं। तुम तो मुझे ठगने पर तुली हो।

—बस इतने से ही, और दम भरते हैं अम्बाले तक ले जाने का।

बाहर दुकान से जरा दूर एक बेंच पड़ी थी। उस पर सत्या को बठाकर मनोज पकौड़े ले आया।

—इतने सारे ?

—क्या खाना भी खाओगी ?

—साथ लाकर भूखा मारोगे।

—साथ तो तुम जबरदस्ती हो ली।

—घर जाकर कहीं ऐसा मत कह देना।

—कहूँगा क्यों नहीं, तुम्हारे जालिम बाऊजी को।

इस बार सत्या हल्की सी मुस्कराकर चुप रह गयी।

—और यह भी कह दूगा कि मेरी मँगनी हुई है।

यह सुनकर सत्या अजीब ढंग से चौंकी—हैं, क्या सच ?

—और नहीं तो क्या झूठ ?

—आपको मजाक करने की आदत मुझे अच्छी लगती है।

—और मैं ?

—मुझे नहीं पता।

—खैर जो कुछ मैंने कहा। वह गलत नहीं है।

—कब ?

—बचपन में। जब मैं इत्ता सा था। मनोज ने हथेली को जमीन से दो फिट दर्शाया।

—यह कोई कुड़माई हुई ?

—हुई। हुई थी। लम्बी आवाज के साथ मनोज हँसा।

—आपने लड़की देखी है ?

—मुझे देखते ही छिप जाती थी। कैसे देखता। हां मेरी दोनों बहनों ने उसे खूब देखा है। अलका से पूछ लेना।

—रिश्ते में है ?

—हाँ। उन्हीं में बड़े बड़े बक्से हमारे कमरे में रखे हैं उनमें पड़े हैं। ऐसे मौके पर कौन किसका इतना भारी सामान लाता है?

—अच्छे दामाद की छाप छोड़ने के लिए?

—नहीं। कुछ अपना बोझा और कर्ज कम करने के लिए। हमारी माँ उनके यहाँ के शगन और पूरी हलवे खाती रही है।

—इसका मतलब, आपको मामला जँचा नहीं।

—अब बस इससे ज्यादा पूछना हो तो अलका से पूछ लेना। तुम्हारी नॉलेज के लिए मैंने बहुत सारी बातें बता दी। जरा सा रुककर वह फिर बोला—अब सिर्फ एक बात पूछता हूँ। बुरा नहीं मानना। मनोज ने धीरे से उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

सत्या ने हाथ वैसे ही रहने दिया और कहा—पूछिये। क्या पूछते हैं?

—जो गीत लोकगीत के नाम पर तुमने रात को आखिर में सुनाया था, क्या था—हाँ मैं ता नईं चाहुँदी माहिया नजरां तो दूर होवे।

—हाँ

—वह सिर्फ तुम्हारा ही बनाया हुआ है। लोकगीत नहीं है ना?

—क्या फर्क पड़ता है आपको कैसे पता चला?

—इसके लिए पता लगाने की जरूरत नहीं होती। आपसे आप बात ठिकाने पर पहुँच जाती है। तुम तो सिर्फ हाँ कहो या न।

—हाँ। कहकर बड़ी मुलायमियत से उसने अपना हाथ खींच लिया।

इसके बाद गाड़ी आने तक दोनों लगभग मौन बने रहे। गाड़ी आने से पहले, एक-एक चाय का कप पिया। पाँच साढ़े पाँच के बीच वे बरेली पहुँचे। स्टेशन पर बसी और कुंदन के साथ जयदयाल जी भी खड़े थे। उन्हें देखकर सब मुस्कराये तो सत्या की जान में जान आयी।

—आपने भी तकलीफ की चाचा जी। सत्या ने कहा।

—हमने सोचा क्या पता तुझे अकेला रवाना कर दे। है तो बच्चा ही न आखिर।

इस पर मनोज ने अजीब-सा मुँह बनाया। बच्चे उसे चिढ़ाने के अन्दाज में मुस्कराये—'बच्चा।'

जयदयाल जी आगे-आगे चलने लगे। सभी बच्चे पीछे-पीछे।

सत्या ने बसी से धीरे से पूछा—बाऊजी कहाँ हैं?

—तेरे सामने ही तो सवेरे गये थे। लौटे नहीं हैं।

—उन्हें बतायेगा तो नहीं जालिम।

बसी ने उत्तर दिया—बताऊँगा क्यों नहीं। जब मैं और कुंदी आवाजें देते थे तो उतरती क्या नहीं थी। अलका बहन जी को तो चोट लगी है। लँगड़ाकर

चल रही है।

—हाए मैं मर जावां, जालिम।

सीधी वह अलका के पास पहुँची और उसे गले से लगा लिया। कसी है?

—चल के दिखाऊँ?

—कूदी क्या?

—इसलिए ताकि तेरा रास्ता साफ रहे।

—चल हट।

दूसरे दिन एक बार फिर सुबह दस बजे सभी स्टेशन पर मनोज को छोड़ने के लिए गये। अबकी मनोज के सिवा कोई भी गाड़ी में नहीं चढ़ा।

कुछ रोज बाद की बात है। एक दिन कुन्दन स्कूल से रोते रोते घर पहुंचा। बाऊजी अभी अभी गाड़ी से आये ही थे। बस कपड़े बदले थे। कुन्दन से पूछा—क्या हुआ? किसी लड़के से झगड़ा हुआ?

—नहीं मास्टर जी से झगड़ा हुआ। कुन्दन ने आँसू पोंछते हुए बताया। संस्कृत के मास्टर साहब हैं। मुझसे जब भी कोई सवाल का जवाब पूछते हैं, तो नाम लेने की बजाये कहते हैं—ओए पाकिस्तानी! तू बता। मैंने कई बार कहा भी—पण्डित जी ऐसे न पुकारा कीजिये। दूसरे लड़के चिढ़ाने लगे हैं। पाकिस्तानी, पाकिस्तानी कहते हैं। कभी पण्डित जी पूछते हैं—तुम गोश्त खाते हो। मैं जवाब देता हूं—हाँ। कहते हैं—तुम मलेच्छ हो। मैंने कह दिया—पण्डित जी आप खाकर दिखाइये। बहुत महँगा आता है। इस पर और चिढ़ गये। मेरा धर्म भ्रष्ट करता है।

दूसरे लड़के मुझसे कहते हैं। हम भी मीट खाते हैं, पर कह देते हैं नहीं खाते। तुम भी ऐसा बोल दिया करो। मैंने कहा—झूठ क्यों बोलूं।

—तूने तो लम्बी कहानी कह डाली। इतना कहकर रुके और सोचने लगे। बच्चा के स्कूल में उनकी कई समस्याएँ होती हैं। डर के मारे छिपाये रहते हैं। हम बड़े इधर ध्यान ही नहीं देते। तब फिर से पूछा—हाँ तो आज क्या हुआ?

कुन्दन ने बताया—आज फिर भरी क्लास में मुझे पाकिस्तानी कहा। मैंने पलटकर उन्हें मुसलमानी कहा। तब बेंत लेकर मेरी तरफ लपके और मुझे खूब मारा। जयदयाल जी ने देखा सचमुच कुन्दन की बाँहों पर बेंत लगने के निशान उभर आये थे।

उन्होंने फिर से कपड़े पहने, उसे साथ लेकर स्कूल की तरफ चल दिये। हैड मास्टर के कमरे में पहुँचे। विस्तार में बात बताने की कोशिश की पर हैडमास्टर ने बात को सरसरी तौर पर लिया कहा—रौब नहीं रहे तो विद्यार्थी पढ़ते नहीं हैं।

—यहाँ पढने न पढने का मुद्दा कहाँ है ? बच्चे भी स्वाभिमानी होते ह। अपना अपमान किसी का भी सहन नही होता। अगर अध्यापक ही अपशब्द बोलेंगे तो शिष्य क्या सीखेंगे।

—अच्छा मैं उनसे पूछ लूगा।

—मैं जाकर उनसे क्लास मे मिल लू ?

—नही, इससे वह चिढ जायेंगे।

—ठीक है तो मैं ऊपर रिपोट भेजूगा।

—आप यह भी करके देख लीजिये। हमारे हाथ मे बहुत कुछ है।

इसके बाद जयदयाल जी ने और बहस करनी उचित नही समझी।

तीन दिन तक उन्होने कुन्दन को स्कूल नही भेजा। तीन रोज के बाद हफ्ते भर की छुट्टियाँ होनी थी। उन्होने सोचा ठण्डे मन से कोई समाधान निकालना चाहिए।

पिछले दिनो मनोज का खत आया था। उसकी नियुक्ति बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे मे बोम्बे सन्ट्रल स्टेशन पर हुई थी। वहाँ पहुचकर ही उसने खत लिखा था। स्वाभाविक था कि इतनी दूर चले जाने से वह किंचित उदास था। इन्ही कारणो से घरवालो समेत, जयदयाल जी का मन खिन्न था। सबसे अधिक परेशान जमना थी। कुछ न कुछ बोलती रहती—उसकी किस्मत म इस छोटी-सी उम्र मे कितने धक्के लिखे हैं। पहल लाहौर दो तीन कम्पनियो की नौकरियाँ छूटी। सबका बोझ सँभालकर पाकिस्तान से हम सबको निकाला। आदि आदि। जमना के ज्यादा बोलने से जयदयाल जी चिढ जाते। कहते—छुडवा दे उसकी नौकरी और अपने पास बठा ले।

—अगर शादी हुई होती तो रोटियो की तकलीफ तो न होती।

—तो बुलाऊ लाला काशीनाथ को। सुना है दिल्ली म पहुँच गये हैं। दू अखबार मे। पता है आजकल रेडियो और अखबार के जरिये लोग-बाग पूछताछ करते हैं। ऐसी सूचनाए सभी सुनते पढते है।

—पर मनोज मानता नही।

—तब बोलो मैं क्या करूँ। इतना समझ लो मुझे लाला जी को मुह दिखाना मुश्किल हो जायेगा।

—क्यो की थी उसकी सगाई।

—तुमने ही कहा था। घर अच्छा है।

—अच्छा तो अब भी है।

—पर शादी तो उसने करनी है।

—सारा कसूर तेरा है।

—मैं आपके कहने मे आ गयी थी।

इस प्रकार का विवाद पति पत्नी मे प्राय होता रहता था। बीच म कभी अलका कह देती—सत्या लडकी अच्छी है।

—नादान लडकी सम्भलकर बोला कर। मेरी जबान का क्या होगा। जयदयाल जी बुरी तरह परेशान हो उठते।

परशान सत्या भी थी। जीवन मे कब ऐसा अवसर आता है जब परेशानियां किसी मनुष्य के चारो ओर से अपना घेरा पूरी तरह से उठा लें। हां कुछ परे शानियो का घेरा साधारण और स्पष्ट दिखलायी देने वाला होता है। इसे हटाने मे वह अपने प्रयत्नो के अतिरिक्त इष्ट मित्रो की भी थोडी बहुत सहायता ले सकता है। परन्तु कुछ परशानियो का दायरा इतना सूक्ष्म और व्यापक होता है और साथ ही उसकी कई कई परतें झीनी झीनी होती हैं जिन्हे छूना, पार करना तो दूर स्पष्ट देख पान म भी आदमी अपने को असमथ पाता है। देखने का यत्न करता है तो आंखें मुद जाती हैं।

सत्या चाहती थी कि जिस तरह उसके भाई वसी का स्कूल दाखिला करा दिया गया है उसी तरह उसे भी लडकियो के इण्टर कालेज म एफ० ए० फस्ट ईयर मे प्रवेश दिलवा दिया जाये। पर तु लाला केदारनाथ इस प्रस्ताव को किसी भी सूरत मे मानने को तयार नही थे। उनका कहना था दसवी तो बहुत बडी पढाई होती है। खासकर लडकियो के लिए—वह तू न कर ली। आगे पढकर क्या करना है। घर पर भी तो किसी को रहना चाहिए। सत्या कहती—बुआ (रिश्ते की औरत) आकर रह लेगी। जसे मरदान मे रहती थी। केदारनाथ कहते—अब उस औरत का कोई भरोसा नही है। उसके पर लम्बे निकल आये है। पसो का लालच भी बन गया है।

सत्या कहती—अपनी गरज को आयेगी। पाकिस्तान बनने से जो बिखराव आया है उससे सबकी हालत पतली हुई है। कोई किसी को नही पूछ रहा। हमारी तरह सबको नौकरी थोडे ही मिल गयी है। चलो नही भी आयी तो मैं कालज की पढ़ाई क साथ साथ घर का काम भी पूरी तरह सम्भाले रहूँगी।

मगर केदारनाथ एसे तक सुनने को राजी नही थे। लडकियो के ज्यादा समय घर से बाहर रहन म पूरे खानदान का अहित देखत थे। वह यह भी कह रहे थे—तीन चार जगह तरे लिए लडका देख रहा हूँ। चुनाव होते हो, तू अपने घर। पढ़ाई म क्या रखा है।

इस परेशानी म सत्या ने अलका की मदद चाही तो उसने भी प्रयत्न किया।

चाचा जी का अच्छा मूड देखकर कहा—चौबीस घण्टे आदमी के लिए बहुत होते हैं। आदमी चाहे तो क्या कुछ नही कर सकता। क्या कुछ नही बन सकता।

—जो तू बन गयी। वक्त आते ही यह भी वही बन जायेगी।

—चाचा जी अगर आप सत्या को कालेज भेजने को राजी हो जायें तो मैं भी इसके साथ ज्वाइन कर लूगी।

—क्यो बेवकूफ बनाती है लडकी। कल को तेरा खसम आया तो तू उसके साथ चल देगी और इसे लटका जायेगी।

लाला केदारनाथ के उत्तर किरकिरे और सूखे सूखे से होते तो भी उसे उनके 'खसम' शब्द मे रस का अनुभव होता। वह उदास मन से सोचती चाचा जी की वाणी कल क्या अभी सच सिद्ध हो जाये। न जाने वह इस वक्त कहाँ और किस हाल मे होंगे। वह सत्या को तसल्ली देती—फिक्र न कर, फिर प्रयत्न करूँगी। बाऊजी या प्राजी से कहलवाऊँगी।

प्राजी शब्द सुनते ही, या मनोज के विषय मे सोचते ही सत्या अन्तद्वन्द्व की शिकार हो जाती। कितनी दूर बोम्बे जैसे बडे शहर मे उसको रेलवे ने भेज दिया है। यह भी नही सोचा, इतनी छोटी उम्र के लडके का वहाँ अकेले मन कैसे लगेगा। शरीर से भी वह नाजुक है। कुछ हो जाये ता कौन है वहा उसकी देख-भाल करने वाला। बार बार उसके ख्यालो मे मनोज की सलोनी सूरत उभरकर सामने आ खडी होती जो मुस्कराती रहती। मुस्कराये चली जाती। वह धीरे से होठ खोलकर उसकी तरफ देखता और कहता—'जालिम।' इस कल्पना मात्र स वह लाज मे डूब जाती। इस डूब से निकलते ही वह फिर से परेशान हो उठती। इस परशानी मे वह किसी की सहायता नही ले सकती। न अपनी और न अलका की।

पाकिस्तान बनने के बाद से ही स्थितियाँ कितनी तेजी से करवट ले रही थी। सब देखते भालते हुए भी बाऊजी उनसे अनभिज्ञ थे। कुछ लडकियाँ स्कूलों मे पढाने जाने लगी थी। कुछ लडकियाँ अपने घर या दूसरे बच्चो के घरो मे जाकर ट्यूशनें करने लगी थी। कुछ औरतो ने अपने घरो के सामने छोटी-मोटी हर समय काम आने वाली चीजो की दुकानें लगा रखी थी। वे अपन घरा की आर्थिक दशा सुधारने मे पुरुषो का साथ दे रही थी। उसने सुना था दिल्ली मे तो औरतें मुहल्ले मुहल्ले म ढाबे भी चला रही हैं।

यहाँ क्या था। पकी पकायी खीर। आते ही बाऊजी को नौकरी मिल गयी थी और बेफिक्री भी। उनके लिए न किसी की समस्या थी और न किसी की भावनायें।

ऐसी भावनाओ से सत्या की परेशानी अधिक सघन होती जाती थी जिसे वह सीधे किससे बाँटती। मनोज को वह खत लिख नही सकती थी।

इससे हासिल भी क्या होना था। वह इतनी दूर बैठा, उसकी क्या सहायता कर सकता था। और वह उससे क्या आशा कर सकती थी। वह एकदम स्पष्ट और बेबाक युवक था। वह उसकी 'नालज' में सब कुछ डाल गया था। अब किस बात की कसर बाकी थी। उससे किस बात की आशा की जानी चाहिए थी। और क्याकर उसकी प्रतीक्षा करने की जरूरत थी। फिर भी वह उसके आन की आहट ले रही थी। हर रोज उसके घर जाती। काम काज में चाची जी और अलका की सहायता करती। ट्रंक, मेज और मूढों को झाडती। एक एक कागज को साफ करके अपनी जगह रख देती। कुछ नहीं मिलता तो निराश सी हो उठती और अन्त में पूछ ही लेती बोम्बे से कोई चिट्ठी आयी।

कभी कभी अलका, उसे बम्बई से आयी मनोज की चिट्ठियां पढवा भी देती। यह लम्बी चिट्ठियां होती जो विशेष रूप से अलका को लिखी होतीं। जिनमें बम्बई के ठाठ-बाट, रहन-सहन और वहां के रमणीय स्थलों का चित्रण होता था। कभी कभी रिफ्यूजियों के बारे में भी बहुत विस्तार से लिखा होता। यह लोग जिन्दगी की जद्दो-जहद में कैसे जुटे हुए हैं। जिन्दगी को बनाना और सँवारना तो कोई इनसे सीखे। सवेरे कपडे के थान ले आते हैं। पटरियों पर खडे-खडे 'अमीर' बनने लगते हैं। सही मानें में पुरुषार्थी तो यह लोग हैं।

सत्या का कहीं पर नाम न होता। हां, कभी कभी कोई छोटा-सा निशान मिल जाता—बसी और तेरी सहेली ठीक होगी। इन निशानों से उसकी परेशानी घट जाती या बढ जाती, उसकी समझ में यह नहीं आता।



बाबू कामेश्वर नाथ धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। रामचरितमानस का एक एक शब्द उनके मन-मस्तिष्क में रचा बसा था। धार्मिक ग्रन्थों की व्याख्या करने में उन्हें दक्षता प्राप्त थी। जिस्म से 'पहलवान' का आभास देते थे। रंग एकदम साफ। मध्यम आकार की काली सफेद मूछें। चेहरे पर हर वक्त रौनक बनी रहती। कुल मिलाकर एक सुलझे हुए व्यक्तित्व के प्रतीक थे कामेश्वर बाबू।

जिस दिन बाबू जयदयाल जी ने ड्यूटी ज्वाइन की थी और पहले पहल जिस ट्रेन में चढे थे, उसी में उनकी भेंट हुई थी, बाबू कामेश्वर जी से। उन्होंने पूछा था—आप, आप जयदयाल हैं या केदारनाथ?

—मैं जयदयाल।

जयदयाल जी के सामने स्थिति स्पष्ट थी। कारण यही था कि दोनों नये टी० टी० ई० तो दूसरे स्टाफ से अभी अपरिचित थे। बाकी सारा स्टाफ तो जान ही चुका था कि बरेली में दो नये टी० टी० ई० आये हैं। कामेश्वर बाबू भी टी०

टी० ई० थे। बोले—माफी चाहता हूँ। औपचारिकतावश यह सब नही कह रहा। जिस दिन आप लोग यहाँ पहुँचे। मैं यहाँ पर था ही नही। आज ही छुट्टी से आया हूँ और यह गाडी मिली। वरना पहले दिन ही मुझे आपके यहा हाजिर होना चाहिए था।

—अब तो मिलते ही रहगे। जयदयाल जी ने कहा।

—वह अलग बात है। आप किसी भी प्रकार का मुझे काम बतायें। खर वह तो मैं घर पर ही आकर पूछूगा। और दूसरे सज्जन कहा हैं?

जयदयाल जी ने बताया—वह भी इसी गाडी मे चल रहे हैं। तब कामेश्वर बाबू उनको साथ लेकर, केदारनाथ से भी मिले।

इसके बाद, प्राय प्रतिदिन शाम को वे, यदि बरेली मे होते तो आपस मे जरूर मिलते। अधिकतर कामेश्वर बाबू ही आया करते। उनसे गाने सुनते। जयदयाल जी का गला गजब का था। कामेश्वर बाबू रामचरितमानस की चौपाइयाँ सस्वर सुनाते। जिस दिन हारमोनियम बजाने सुनने की धुन होती उस दिन महफिल कामेश्वर बाबू के घर जमती।

कामेश्वर बाबू जयदयाल परिवार की सुख सुविधा को लेकर चिन्तित से रहते। कहते—पूरा शहर अपना है। कही से कुछ भी उठाया जा सकता है। पैसे धीरे धीरे देते रहगे। मेरे बैंक की किताब मे जो कुछ भी है, उसे अपना ही समझो।

जयदयाल जी कृतज्ञता तो प्रकट करते परन्तु इस प्रकार की कोई सहायता सुविधा लेने से बचते रहते। कहते—मित्र पर सबका अधिकार होता है पर उसके पास तभी जाना चाहिए जब और कही कोई चारा ही न हो। आपकी दया से सब मजे से चल रहा है। और बताइये तुलसीदास जी ने क्या कहा है।

कामेश्वर बाबू चौपाइया गाते और अर्थ समझाते। कभी-कभी कुन्दन भी उनके बीच आ बैठता उसे कामेश्वर बाबू के सुर राग तो मन को भाते थे परन्तु कुछ व्याख्याओ को सुनकर उसे अटपटा लगता। वह कुछ-कुछ आक्रामक स्वर मे बहस करने लगता—यह सब क्या जादूगरी के खेल थे । पत्नी को घर से निकालना। विमाता का पुत्र को निकालना अत्याचार सहना क्या रामायण मे पाप नही कहलाता?

बाऊजी उसे टोकते—बड़ो से ऐसे पेश नही आते।

कामेश्वर बाबू कहते—नही-नही, इसे कहने दो। कुशाग्र बुद्धि है। दूसरे बच्चे तो बस रट लेते हैं। लिखे हुए या पढे हुए अक्षरो पर कुछ सोचते विचारते ही नही। फिर उसे पंक्तियो मे निहित भावो पर अपनी ओर से स्पष्टीकरण देते। मर्यादा, लोक लज्जा, कुदृष्टि के परिणाम का मम बताते ।

जयदयाल जी कहते—यार किससे माथा खपा रहे हो। यह तो पूरा नास्तिक

है। एक एम० ए० के विद्यार्थी ने इसका दिमाग ही पलट दिया।

मगर दाऊजी मैं उनकी बातें सुनता था। दूसरो की भी सुनता था। अब भी सुनता हूँ। मगर मुझे अब भी किशोर भाई साहब की बातो मे ज्यादा दम लगता है।

—भई ठीक है। यह तो सबका अधिकार है कि वह अपने-अपने तरीके से सोचे। कामेश्वर बाबू बडे प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले।

कामेश्वर बाबू उस दिन भी शाम को आये थे, जिस दिन कुन्दन का स्कूल मे विवाद हुआ था। उससे पिता पुत्र दोनो का ही मिजाज थोडा गडबडाया हुआ था। वे खुलेपन से बात ही नही कर पा रहे थे।

कामेश्वर बाबू ने पूछा—सब सुख शान्ति तो है ना। सम्बंधियो का पता चल रहा होगा। मनोज की चिटठी पत्री आती है।

—मित्रो की दया से सब ठीक है। जयदयाल जी ने ढीले स्वर मे उत्तर दिया।

—सब ठीक तो नही लगता। मित्र कहते हो तो उससे कुछ छिपाना कहाँ तक ठीक है। यह वाक्य उन्होने इतनी आत्मीयता से कहा कि जयदयाल जी सब कुछ क्रमश कह गये। यह भी कहा कि जब मास्टर लोग ऐसा व्यवहार करेंगे तो दूसरे बच्चे तो बच्चे ही ठहरे। पाकिस्तानी, पाकिस्तानी कहकर टोन्ट कसना, जसे कोई शातिर मुल्जिम हो। इससे बच्चो के भविष्य पर बुरा असर पडता है। फिर हमारे बच्चो या इनके मित्रो की तरफ से तीखी प्रतिक्रिया हो तो, बच्चो मे एक दूसरे के प्रति द्वेष भाव बढेगा ही। कहते हुए वे भावुक से हो गये। और कह देने से मन का बोझ भी कुछ कम हुआ।

—बात जितनी जटिल है समाधान उससे कही सरल है। तुम अब यह चिन्ता मुझ पर छोडकर मेरे साथ घूमने चलो।

रेलवे ग्राउण्ड के नजदीक कुछ बच्चे खेल रहे थे। कामेश्वर बाबू ने बच्चो मे से दो-तीन को अपने पास बुला लिया। उनसे दो मिनट तक बातचीत करते रहे। फिर जयदयाल जी को लेकर आगे निकल गये। लौटती बार अपने घर ले गये और उनसे हारमोनियम सुना।

मौसम मे सर्दी तो थी ही, इधर तीन-चार रोज से रुक रुककर बूँदाबाँदी हो रही थी। दूर कही से बिजली अपनी चमक फेंकती। इसके उत्तर मे बादल कड कड गरजने लगते। इस प्रकार सर्दी ने अपने पूरे तेवर दिखाने शुरू कर दिये। घर मे गर्म कपडो का नितात अभाव था। इसलिए कुछ मोटे सस्ते कम्बल तथा बच्चो के कोट लाने भी जरूरी थे। किन्तु यह चिन्ता तो जमना के लिए मात्र स्थानीय चिन्ता थी। उसे दिन रात मनोज की फिक्र लगी रहती जो माँ की नजरो से दूर था। उस बचारे के पास तो कुछ भी नही है। उन्हें कितनी कितनी बार

सभी बारी-बारी से समझाते कि बम्बई मे ठण्ड जैसी कोई चीज नही होती, मगर जमना को कुछ नही जँचता। बस वही रट हाय मेरा लाल अकेला कैसे क्या करता होगा। चलो सर्दी न सही। मुझे उसकी बहुत याद आती है। उसे बुलवा दो।

—तार दे दूं, तेरी माँ बीमार है। जल्दी आओ। जयदयाल जी पूछते।

—न न इससे तो उसका चिडी जितना दिल बैठ जायेगा।

—तो लिख दें तेरी शादी कर रहे हैं। लडकी वाले आये हैं।

—इससे तो वह आता हो तो और नहीं आयेगा।

—तो तुम्हीं बताओ क्या कहकर बुलायें।

—क्या बसे बच्चे घर नही आते।

जयदयाल जी समझाने लगे—क्यो उसे परेशान करती हो। अभी गये हुए मुश्किल से आठ दस दिन हुए हैं। दूर का मामला है। अभी एक किस्म की नयी नौकरी है।

इस पर जमना रोने बैठ गयी—आपका माँ जैसा जिगरा होता तो पता चलता।

मगर यह क्या हुआ। शायद माँ के जिगरे ने काम किया। दूसरी सुबह पाँच बजे ही जोर-जोर से दरवाजा बजने लगा। दरवाजा खुला तो शोर मच गया—लो देख लो अपन जिगर के टुकडे को। यह स्वर जयदयाल जी का था। भाभी कितनी देर तक उसे छाती से चिपटाये रही। उधर भ्राजी भ्राजी कहकर बहन भाई हुडदग सा कर रहे थे।

खुशी से झूमते हुए हरमिलाप को कुछ नही सूझा तो बोला—जाकर बसी-सत्या को बता आऊँ कि हमारे भ्राजी आ गये है।

—इस वक्त सर्दी मे पाँच बजे? क्यो ऐसी क्या गज पडी है? अलका ने कहा।

—वह भी तो याद करते रहते हैं। कहते हैं तुम्हारे भ्राजी बहुत अच्छे हैं। हरमिलाप को यही उत्तर सूझा।

इस पर कुन्दन ने कहा—तो ठीक है। जा। इस अँधेरे मे। रास्ते मे तुझे चार बिल्लियाँ मिलेंगी। ऐन फस्ट क्लास आँखें चमकाती हुई।

—तो तू मेरे साथ चल।

—जिस दिन मेरा दिमाग खराब हो जायेगा, जरूर चलूगा।

यह सुनते ही हरमिलाप ने कुन्दन के जोर से मुक्का जड दिया। इस पर कुन्दन ने उसके गाल पर पूरे जोर की चपत जड दी।

दानो मनोज से लिपटते हुए चिल्ला रहे थे—बचाओ भ्राजी! बचाओ भ्राजी!

—तुम्हारा बस यही एक काम रह गया है। इसके लिए कोई पीरियड निश्चित कर लो। अलका ने कहा। साथ ही यह भी कहा कि स्टोव मे तेल कम है

जाकर भरो। मैं चाय बनाती हूँ।

मनोज ने बताया कि कासगज भी हमारी बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे मे पडता है जो बरेली के पास है। यहाँ की एक ड्यूटी निकल आयी सो थोडी तिक्डम लगाकर चला आया। उसने यह भी बताया कि कोशिश कर रहा हूँ अपनी रेलवे का कोई सा इधर का स्टेशन मिल जाये।

—उस दिन भगवान जी को प्रशाद चढाऊँगी। जमना ने कहा।

फिर दूसरी-तीसरी हर प्रकार की बातें होनी रही।

जयदयाल जी ने जमना को एक तरफ ले जाकर कहा—मुझे सवेरे नौ बजे वाली ट्रेन लेकर जाना है। तुम मनोज से आराम से बात कर लेना। मुझे लगता है कि सेठ काशीनाथ जी किसी भी दिन यहा आ सकते हैं। उनका सामान तो हमारे यहाँ अमानत पडा है। वह तो उन्हे सम्भलवा देंगे परन्तु मेरा ख्याल है तुम अपने लाडले को किसी तरह मना लोगी।

—बहुत चालाक हैं आप। आपके लौटने से पहले इस बारे मे मैं कोई बात नही करूँगी। उसका क्या भरोसा रूठ जाये या कोई जवाब ही न दे मुझे। आप का तो रौब होता है।

—भई झूठ क्यो बोलू। डर तो मुझे भी लगता है। सोच लेना, कैसे ठीक रहेगा।

स्कूल की छुटि्टयाँ आज ही शुरू हुई थी। दोपहर को सामान्य चक्कर के हिसाब से वसी यहाँ आया तो मनोज को देखकर खुश हुआ। बम्बई के हालचाल पूछता रहा।

अलका ने कहा—आज हम भ्राजी से पिक्चर देखेंगे। सत्या से कह देना। तुम दोनो को भी साथ चलना है। अच्छा रहे यही आकर तुम लोग भी खाना हमारे साथ खा लेना, खूब मजे रहेंगे।

वसी ने कहा—दीदी खाना तैयार कर रही थी। हम वही खा लेंगे। हाँ पिक्चर के लिए मैं कह दूगा।

—ठीक सवा दो ढाई के बीच यहाँ पहुँच जाना। तीन बजे से पहले हिन्द टाकीज पहुँच जाना है।

—समझ गया, कहकर वसी चल दिया।

दो बजे से पहले से ही यह लोग सत्या वसी की प्रतीक्षा करते रहे। पर वे नही आये। अन्त मे ढाई बजे वसी अकेला आ पहुँचा। कहा मैं तो चल सकता हूँ। दीदी नहीं आयेगी।

—क्यों ? अलका ने पूछा।

—उसके सिर मे दर्द है।

—सच ?

—क्या वह झूठ बोलेगी। बसी ने भोलेपन से उत्तर दिया। पिक्चर देखने की तो वह शौकीन है। पिक्चर मे तो सीन के साथ गाने सुनने को मिलते हैं।

सत्या के न आने से अलका का मन खराब हुआ। बोली—यह तो ठीक नहीं रहा।

मनोज ने उत्तर नही दिया परन्तु उसके चेहरे के भाव शून्य प्राय हो चले थे।

इधर बच्चे शोर मचा रहे थे—जल्दी चलो। जल्दी चलो। फिल्म शुरू हो जायेगी।

जैसे-तैसे वे घर से निकले। देरी तो हो ही चली थी। सत्या से अब मिलकर उसे तयार करना मुमकिन नही था। आती बार ही उसका हाल पूछेंगे, यह सोचकर वे सीधे सिनेमा हाल पहुँच गये।

मनोज ने अनुमान लगाया—जरूर सत्या ने बहाना बनाया है। समझदार है। वह क्यो चाहेगी कि मेरी तरह, वह भी किसी अनिश्चित स्थिति की शिकार होकर रह जाये, और मेरी ही तरह अधर मे झलती रहे। जब मैं नादान था अनचाहे ही मेरी जिन्दगी दाँव पर लग गयी। पर इतनी बडी होकर वह ऐसी नादानी जान-बूझकर क्यो करने लगी। मैंने उसे कुछ नही बताया होता तो बात दूसरी होती। पर मैं ऐसी घटिया बात क्योकर करता। मैं जो हूँ, जसा हूँ, सो हूँ।

ऐसी सकारात्मक सोच के बावजूद मनोज फिल्म कम देखता रहा और कलाई घडी ज्यादा। यहाँ तक कि उसका बरेली आने का उत्साह जैसे पिघल सा गया।

अलका से मनोज की अन्यमनस्कता छिपी न रह सकी। वापसी पर उसने कहा—अब चलकर देखें। सत्या को क्या हुआ है।

मनोज ने उत्तर दिया—कुछ नही हुआ। सीधे घर चलो।

मगर दूर से, सत्या अपने क्वाटर के दरवाजे पर दिख गयी। वह थाली लिए हुए थी। सब्जी आदि के छिलके किसी बछडे को खिला रही थी। उसने भी इन लोगो को आते देख लिया और वापस अन्दर जाने का उपक्रम करने लगी। उसकी यह सूक्ष्म क्रिया मनोज से छिपी न रही। उसने अलका से कहा—तुम हो आओ।

इतनी ही देर मे देखा सत्या, अन्दर थाली रख आयी है और कपाट के बीचो बीच खडी है। तब तक यह सब उसके निकट पहुँच ही चुके थे। कुन्दन, हरिया अपने घर की तरफ बढ गये—बसी भी उनके साथ हो लिया।

आगन मे वही बाँस की चारपाई बिछी थी, जो मनोज उनके लिए भी लाया था। सत्या और अलका उस पर बैठ गयी। एक छोटा मूढ़ा सत्या ने मनोज के लिए लाकर रख दिया।

मनोज ने लक्ष्य किया। सत्या की आँखो का निचला भाग कुछ उभरा हुआ है। वहाँ बहुत बारीक पपडी-सी जमी है। मनोज ने पूछा—क्यो क्या हुआ?

इसके उत्तर म सत्या की अँगुलियाँ सीधे वही पडी। वहा प्याज काट रही थी।

—मैं सिर दद के बारे म पूछ रहा हूँ।

—वह तो चलता ही रहता है।

—आज ज्यादा हो गया।

—कभी-कभी एसा हो जाता है।

—अगर सोचते रहो तो सिर दद जिन्दगी भर खत्म ही न हो।

अलका ने उसे टोका—कोई ढग की बात करो। सिर दद पर रिसच बक शुरू कर दिया। सत्या तूने एक बहुत अच्छी पिक्चर मिस कर दी।

—क्या खाक अच्छी थी। मनोज के स्वर मे खीज थी।

—आपने ध्यान से नही देखी होगी। आपका ध्यान कही और रहा होगा। अलका ने कहा।

अबकी सत्या ने ठीक से मनोज की ओर चेहरा घुमाया—आपका ध्यान क्या बम्बई मे लगा रहा।

मनोज ने उत्तर दिया—बम्बई मे मेरा कौन है?

तभी दरवाजे पर भारी जूतो की पदचाप सुनायी दी—वर्दी पहने लाला केदारनाथ किसी गाडी से लौटकर आये थे। उन्ह देखत ही मनोज उठ खडा हुआ। उनकी तरफ झुका और 'पैरी पैना चाचा जी' कहा। बदले मे केदारनाथ ने उसके सिर पर हाथ फेरा—जीदा रह। तेरे बाऊजी मिलते तो रहते हैं। तेरे आने का कुछ बताया ही नही।

—अचानक कासगज की ड्यूटी निकल आयी। दो रोज की छुट्टी ले ली। आज सवेरे ही पहुचा हूँ।

—बहुत अच्छा किया। चाय वाय भी पी कि नही।

सत्या ने कहा—बस अभी आये हैं। बना रही थी। वह उठ खडी हुई। केदारनाथ कपडे बदलकर आये। इधर उधर की बातें होती रही। चलत वक्त अलका न कहा—चाचा जी आज रात का सत्या वसी हमार यहाँ खाना खा लेंगे। आप भी आ जाइयेगा।

—तुम्हारे बाऊजी तो आज गाडी लेकर गये हुए है। हमसे कौन बात करगा। चाचा पर तरस आता हो तो दो फुलके भिजवा देना।

सत्या कुछ बोलना चाहती थी। शायद प्रतिरोध करना चाहती थी किन्तु उसे कुछ कहने का अवसर ही नही मिला।

सर्दियो के दिन होन के कारण अँधेरा तो हा ही चला था। आसपास जगह जगह पाकड के पेड थे जिन पर पक्षी लौटने लगे थे। अपने-अपने घोसलो मे जाने से पूव डालियो पर फुदकते हुए चहचहा रहे थे। सत्या के दरवाजे के बिलकुल करीब इसी प्रकार का पाकड का एक विशालकाय पेड था। वहाँ भी पक्षियो ने रौनक

लगा रखी थी। सत्या, अलका, मनोज को बाहर तक छोड़ने आयी तो स्वत कह उठी—भगवान का शुक्र, जो यह पेड वाला क्वाटर मिल गया। यह पक्षी दिल लगाये रहते हैं। बाऊजी जब तक ड्यूटी पर बाहर होते हैं, बसी जी का कोई ठिकाना नही रहता। कब मुह उठाकर किधर को चल दें पता नही।

उनको बातें करते देख, मनोज दो कदम आगे बढ गया था।

—तो तुम इन पछियो से गीत सीखती हो। कितना मीठा बोलते है, तुम्हारी तरह। अलका ने कहा।

—ज्यादा बनाओ नहीं, सत्या ने अलका के कन्धे पर हल्का-सा धौल जमाते हुए कहा, आदमी को जरा सा भी बोलते समय सामने, इधर उधर देखना पड़ता है। पक्षियो को मनुष्य की तरह सकोच या डर नही होता। वे उन्मुक्त और स्वच्छन्द होते हैं। कभी कभी दो चार तोते भी यहाँ आ बैठते हैं। उनका बोलना तो मन को छूता है। फिर लम्बी उड़ान भरकर न जाने कहाँ चले जाते हैं। मैं एकटक देखती रह जाती हूँ उनकी लम्बी उड़ान।

—कहो तो कोई तोता पकड़कर ला दू, अलका ने कहा, पाल ले फिर तेरा दिल लगा रहेगा।

—मरदान वाली मेरी बुआ कहती थी—तोता कभी किसी का होकर नही रहता।

—अब पाकिस्तानी तोतो को छोडो। यही वालो से दिल लगाओ। अलका की हँसी के साथ सत्या ने सुर मिलाया।

—यहाँ तो अब दिल लगते लगते ही लगेगा। वहाँ तो सभी अपने थे।

अन्दर से खाँसने के साथ लाला केदारनाथ का स्वर उभरा—तुम्हारी बातें खत्म नही हुई थी तो यही बठे रहने। सत्या तूने जाना ही है तो साथ ही चली जा। फिर तुझे पहुँचाने जाने का झझट रहेगा।

बातें खत्म न होती देख मनोज वापस इनके पास आ खड़ा हुआ था।

—ठीक है चाचा जी, अलका बोली, आपको किसी चीज की जरूरत हो तो बता दें।

—यसी दिखे तो भेज देना। सिगरेट मँगानी है।

—वह मैं ले आता हूँ, चाचा जी। मनोज ने कहा। झाड पूछा और चल दिया। अलका सत्या पूववत हसी-ठिठोली करती, वही खडी रही। फिर अलका ने कहा—हमारी लाइन से आगे, पहले ब्लाक के दूसरे क्वाटर मे कोई चड्ढा साहब आये हैं। साथ मे माँ है। बेचारी बहुत उदास है। कहती है अभी उनके रिश्तदारो मे से कोई हिन्दुस्तान नही पहुँचा। मुझे कई बार बुला चुकी है। चलेगी?

—यह कोई टाइम है जालिम कहते-कहते सत्या रुक गयी।

—अच्छा मैं चली जाती हूँ। दरवाजे पर मिलूगी। साथ ले लेना। इतना

कहती हुई वह चल दी। सत्या अकेली क्वाटर में थोड़ा आगे टहलने लगी।

इतने में मनोज लौट आया। सीधा अन्दर गया। चाचा जी को सिगरेट देकर बाहर आ गया। सत्या को वैसे ही अकेली टहलत देखकर पूछा—अलका कहाँ है?

सत्या बोली—सब आजाद पछी हैं। कौन किसकी परवाह करता है। पर अलका तो जालिम पुण्य कमाने चली गयी।

—कैसा पुण्य?

पाकिस्तान से यहाँ कोई नयी औरत आयी है। परेशान है। उसे ही दिलासा देने हमसे पहले चल पड़ी। हमें रास्ते में मिल जायेगी। चलिये।

दोनों चल पड़े।

मनोज बोला—तुम्ह भी तो दिलासा देती रहती होगी।

सत्या ने कहा—सचमुच वह अपनी तकलीफ भूलकर सबका ध्यान रखती है।

मनोज ने पूछा—क्या तुम यहाँ पर परेशान रहती हो?

सत्या ने उत्तर दिया—नयी जगह ऐसा ही होता है। वहाँ 'मरदान' में पूरी रिश्तेदारी थी। मन नहीं लगा तो वहीं चले गये। सभी से एक जगह पर मिलना हो जाता था।

मनोज ने समर्थन में गदन झुकाई—ठीक कहती हो। यहाँ आकर सब के सब बिखर गये। सभी अपना अपना ठिकाना ढूढ रहे हैं। एक दूसरे से अलग थलग बस रहे हैं। हाँ इससे एक फायदा भी हुआ है। सब नये लोगों से जुड़ेंगे।

एक क्षण चुप रहकर सत्या ने कहा—सबसे बड़ा लाभ आपका ही हुआ है जो उस लड़की से छिटक जाना चाहते हैं। वहाँ पर पूरी बिरादरी आप पर दबाव डालती तो क्या आप ऐसी जुरत करते?

—मैंने शुरू से ही कई बार बड़ी बहन जी से कहलवाया था। भाभी से भी कहता रहता था, मुझे नहीं करनी वहाँ शादी।

सत्या कुछ कुछ उदास होकर बोली—वजह? मुझे तो उस अनदेखी लड़की पर तरस आता है।

—कल को मेरे साथ वह तालमेल नहीं बैठा पाये तो यह तरस वाली बात जिन्दगी भर की हो जायेगी। बहुत बड़े बिजनेसमैन की नौकरो चाकरो वाली लड़की साधारण सी तनख्वाह म बिलकुल नहीं चला सकती। छोटे-छोटे रोड साइड रेलवे स्टेशनों पर सिर्फ रेलवे वालों की लड़कियाँ ही रात में अकेली दुकेली रह सकती हैं।

—आपने तो लगता है पूरी तरह फैसला ले रखा है।

मनोज ने माथे पर हाथ रखते हुए कहा—मेरी तरफ से तो पूरा ही समझो पर आगे की किसने देखी है। इतना कहकर वह शून्य में देखने लगा।

कदम आगे बढ रहे थे। तभी उन्हे एक क्वाटर के बाहर अलका खडी दिखलाई दी। वे तीनो साथ साथ अपने क्वाटर की तरफ बढने लगे।

अलका ने सत्या से कहा—तुम लोगो की आवाज यहाँ तक पहुँच रही थी।

किसी ने कुछ नही कहा तो अलका दुबारा बोली—क्या कह रहे थे भ्राजी ?

पता नही अब की प्रश्न किससे पूछा गया था। तब भी दोनो मौन बने रहे।

—ऐसी कौन-सी खुफिया मीटिंग चल रही है जिसे हम नही जान सकते। अलका फिर बोली।

—यह सिद्धान्तो की बातें कर रह थे। सत्या ने कहा।

—मैं सिफ बातें नही करता। अलका शायद तुझ याद हो। जब मैं बहुत छोटा था। हमारे सारे इलाके मे जिसे भी अपन बच्चो की अण्डर एज शादी करनी होती थी—वे सब रियासत बहावलपुर चले जाते और शादी कर आते। उस रियासत मे अग्रेजो का नियम लागू नही होता था। हमारी बुआ के लडके बालू को भी वही ले गये थे। सभी परिवार वाले गये लेकिन मैं अपनी दादी के पास रह गया। सभी देखने-सुनने वाले दग कि इस छोटे से लडके को देखिये।

—यह बात मैंने भाभी से सुन रखी है।

—तूने यह भी भाभी से सुना होगा, मैं तो बचपन की सगाई को सगाई ही नही मानता।

—इसी बात पर तो भाभी चीखती हैं। कैसा लडका है। हमारी नाक कटवायेगा।

—फिर भी एक बात बार-बार मेरे मन मे आती है। एक लम्बी साँस लेने के बाद, सत्या ने कहा—आखिर उस बेचारी का क्या कसूर ?

—अगर मैं या कोई और यह पूछे कि पाकिस्तान बनाने मे मेरी कोई सहमति नही थी फिर यह बेघर होने से लेकर इतनी बडी बडी यातनाएँ हमे क्या झेलनी पडी ? बिना गुनाह के, आखिर हमारे लिए यह सजाएँ किसन तजवीज की ? कौन है इसका जवाबदेह ? फसले ता हमेशा से बडे लाग लेते आये हैं। चाहे उनके बनाये कितने ही ऊटपटांग कानून हो। आम आदमी इसे भाग्य की चक्की कहकर पिसता रहा है। मनोज ने अपना वक्तव्य दे डाला।

इस पर अलका बहुत जोर जोर से हँसने लगी। हँसन से उसका पेट दोहरा होने लगा।

मनोज ने चिढकर कहा—इसमे भला हँसने की क्या बात है ?

अलका ने किसी प्रकार हँसी रोकते हुए उत्तर दिया—भ्राजी ! एक बात मैं देखती हूँ आप हो या कुन्दी, कोई भी विषय हो, उसे लेकर पाकिस्तान तक जरूर पहुँचा देंगे।

—मुमकिन है, जो चीज जिस आदमी के दिलो दिमाग पर छायी रहती है,

उसे पूरे माहौल मे वैसे ही रग दिखलायी देने लगते हैं। इसमे कुछ अजूबा नही, जिस पर हँसा जाये। अपने आपको सही ठहराने मे मनोज उलझने लगा।

सत्या बोली—मान लिया पाकिस्तान की माँग मानकर हमारे नेताओ ने हम दरबदर की ठोकरें खाने को छोड दिया। जब आप इसे अच्छी बात नहीं मानते तो आप भी बुजुर्गों के गलत निणय के कारण उस मासूम लडकी को सजा दें, यह भी समझ मे नही आता। तो फिर जिद के अलावा और यह क्या है?

अलका बोली—खैर, मैं इसे जिद नही मानती। भ्राजी का कहना ठीक हो सकता है। ऐसे अमीर खानदान की लडकी का शायद भ्राजी के साथ ठीक से एडजस्टमेंट न हो पाये। दोनो के भविष्य का सवाल है।

बातो बातो मे वे घर तक आ पहुचे। घर पहुँचकर सत्या और अलका खाना बनाने लगी।

मनोज अखबार देखने लगा। कुछ देर बाद बच्चे खेलकर वापस आ गये। खाना खाते समय और उसके बाद उस दिन वाला रग नही जम पाया। वसे कुछ गीत सत्या ने सुनाये जरूर। मनोज ने भी कुछ गाया। मगर किसी मे कुछ दम नही था। दम था तो बस हरिया की उस नज्म मे जो उसने अपनी शेखूपुरे वाली पोथी से रट रखी थी—

कहीं एक जगल मे रहता था शेर।
कि जिससे जबदस्त होते थे जेर।।
सुनो इक दिन का यह माजरा।
वह सोता था, जगल मे गाफिल पडा।।
इतने म वहाँ एक चूहा आ गया।
फुदकता हुआ शेर पर जा चढा ।।

आगे वह अटक गया और सबको, मास्टर साहब की तरह हाथ उठा उठाकर समझाने लगा—कभी किसी को भी तुच्छ नही समझना चाहिए।

उसके इस नाटक म सबने रस लिया। सब हँसते रहे।

मनोज, अलका, सत्या और बसी को उनके क्वाटर तक छोड आये।

दूसरे दिन मनोज को वापस बम्बई जाना था। जयदयाल जी सवेरे की गाडी से आ गये थे। तभी से पति पत्नी आपस में उलझ रहे थे। जयदयाल जी कह रहे थे—तुम मनोज से बात शुरू करो। उसे समाज की ऊँच नीच समझाओ, और किसी प्रकार मना लो। नही तो जग हँसाई होगी। मगर पहल करने की हिम्मत उसे जवाब दे गयी थी।

अन्तत अलका को बीच मे लिया गया।

उसने कहा—भ्राजी, बाऊजी मामी परशान हैं। कल को अगर सेठ काशीनाथ आ जायें तो उन्हें क्या जवाब दें। हमें ठीक से बता जाओ।

मनोज ने अपने कंधों को थोड़ा आगे-पीछे हिलाते हुए उत्तर दिया—और ठीक से कैसे बताऊँ, तुम्ही कहो। जब जब जवाब देता हूँ, भाभी कहती हैं—नादान है। मजाक कर रहा है। बाऊजी कहते हैं—अपने खानदान की इज्जत का ध्यान रखेगा। समझदारी से काम लेगा। फरमाबरदार बेटे का सबूत पेश करने के लिए एक ही झटके से कत्ल हो जाना तो आसानी से बर्दाश्त किया जा सकता है। मगर मैं समझता हूँ—किसी को किसी की पूरी जिन्दगी के साथ ऐसा खिलवाड नहीं करना चाहिए कि वह हमेशा तड़पता रहे।

—लो सुन लिया? जमना ने पति की ओर देखते हुए कहा।

—यह ऊँचे विचार मैंने तो पहले से सुन रखे हैं। मगर तुम भी तो पीछा नहीं छोड़ती। ठीक है आखिरी फैसला तो होना ही चाहिए। चाहे फिर वह सबके सामने नंगे हो जाने का ही क्यों न हो। जयदयाल जी का दम फूलने लगा था। हम कैसे मुंह दिखायेंगे पूरी बिरादरी को।

मनोज अपने तर्कों के आधार पर और भी बहुत सी बातें इसी सन्दर्भ में करता रहा और यह कहते हुए बात खत्म कर दी कि जो फैसला आपको करना है बेशक कर लें। आपको हक है। मुझसे पूछा तो मैंने अपनी मंशा बता दी।

उसी शाम को मनोज रवाना हो गया।

मन उचाट था। संशय और हताशा से घिरे पति-पत्नी कमरे में चारपाई पर बैठे थे। बाहर बादलों की हल्की गड़गड़ाहट और हवा से पत्तों और डालियों के आपस में उलझने बजने के स्वर रह रहकर सुनायी दे रहे थे। दरवाजे पर दस्तक हुई थी। कामेश्वर बाबू थे। उन्हें नमस्ते करती हुई जमना, साथ के कमरे में चली गयी थी।

कामेश्वर बाबू यूनिफार्म में थे। बोले—सीधा गाड़ी से उतरकर ही आ रहा हूँ।

—कुशल-मंगल तो है? जयदयाल जी ने पूछा, ऐसे मौसम में कष्ट किया।

—अजी पूछिये ही मत। मजा आ गया। पहले कुन्दन को बुलाइये।

कुन्दन आया तो उससे सम्बोधित हुए—सुनाओ क्या ठाठ हैं। मैं सिर्फ तुम्हारे लिए आया था। अब बिना डर के स्कूल आना। कोई शिकायत हो या कोई लड़का भी तंग करे तो सीधे हैडमास्टर साहब से जाकर कह देना। वे जरा रुके फिर बोले, जयदयाल जी मैं पूरी गांटियाँ फिट कर आया हूँ।

—क्या मतलब? जयदयाल जी ने पूछा।

—उसी दिन आपके सामने रेलवे ग्राउण्ड के नजदीक उन लड़कों से यही पता लगा लिया था। मुझे मालूम है छुट्टियाँ मिलते ही दोनों चन्दौसी भागते हैं।

टिकट कभी लेते नही। मैंने पण्डित जी और हैडमास्टर साहब को घर लिया। बहुतेरे गिड़गिड़ाये। सारा मामला समझ गये। बोले—आइन्दा से आपको कोई शिकायत नही मिलेगी। मैंने कहा, गाड़ी मेरे बाप की नही है, मगर स्कूल तो घर का है। आप लोग ही ऐसा बर्ताव करेंगे तो दूसरे बच्चे क्या सीखेंगे। कैसे शिक्षक हो? तुम लोग मजे से अपने घर मे रह रहे हो। थोड़ी कल्पना तो कर सकते हो, इन्ही लोगो को आजादी के लिए बलिदान देना पड़ा, इन पर कितनी मुसीबतें एक साथ टूट पड़ी। ज्यादातर लोगो को इनके साथ पूरी हमदर्दी है मगर तुम लोग शिक्षण संस्थान मे बैठकर ऐसा आचरण करते हो।

—इससे तो वे दोनो और चिढ़ सकते हैं। जयदयाल जी ने शका व्यक्त की।

—आप टी० टी० होकर भी इतने भोले हो। मैं इनकी हर नब्ज पहचानता हूँ। स्कूल मे बच्चो को नाश्ता मिलता है, उसमे से कमीशन बनाते हैं। दूध मे से सारी मलाई उतारकर घर मे मक्खन बनाते हैं। वे रुके और फिर बोले—इनका इंस्पेक्टर भी विदआउट टिकट चलता है। वह हमारे सामने क्या इन टीचरो का पक्ष लेगा? कहाँ से लायेगा इतनी हिम्मत।

कुन्दन बोल उठा—चाचा जी यह सब तो गलत बातें हो रही हैं।

कामेश्वर बाबू ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—तभी तो हमे भी टेढ़ी अँगुलियो से घी निकालना पड़ता है। अंग्रेजो के समय की अपेक्षा यह बिना टिकट यात्रा देखत ही देखते बढ़ी है। बेशक मुझसे लिखवा लो। अंग्रेजो का अंकुश हटते ही अब अपने देसी साहबो के कारण आने वाले समय मे यह प्रवृत्ति बढ़ती जायेगी। आजादी को सभी, 'घर का राज' समझने लगे हैं।

जमना चाय बना लायी। दरवाजे पर खड़ी होकर बोली—कुन्दन चाय ले लो।

जयदयाल जी चाय पीते पीते बोले—वाइफ बता रही थी, जो राशन रेलवे से हमे सस्ते रेट पर मिलता है जरूरत से बहुत ज्यादा होता है। हम तो बहुत कम लेते हैं। पड़ोसिने कहती है—पूरा लिया करो और हमे दे दिया करो। पता चला कि सारा का सारा बाजार म बीच के भाव' मे बेच देती हैं।

—कई दुकानो वाले तो खुद यही आकर खरीद ले जाते हैं। कामेश्वर बाबू बोले हर सुविधा का अनुचित लाभ उठाना तो कोई हमसे सीखे। कहते कहते वे उठ खड़े हुए, अब मुझे चलना चाहिए।

—खाना तैयार हो रहा है खाकर जाइयेगा। जयदयाल ने कहा। फिर पिछली बात का सन्दर्भ जोड़ते हुए बोले—पर मैं समझता हूँ, अब हमे सम्भल जाना चाहिए, आजादी मिली है । वे जरा से अटके।

बीच मे कुन्दन बोल उठा—मैं बताऊ। हमने स्कूल मे बहुत अच्छा भाषण सुना था। हिन्दी के बहुत से लफ्ज मैंने कापी मे भी उतार लिए हैं। कोई श्रीनिवासन साहब आये थे। हेडमास्टर साहब ने बताया—आपने गाधी जी के

साथ देश की आजादी के लिए बहुत काम किया था। उन्होंने फौरन हैडमास्टर साहब को टोका था। कहा—कर नही चुका आजादी का असली काम करने का समय तो अब आया है। यही काम करने मैं यहाँ पर आया हूँ। आप सब प्यारे बच्चा से यही आशा लेकर आया हूँ कि अब देश की बागडोर आप सबके हाथ मे है। अंग्रेज हमारे देश को तहस नहस कर गया है। जाते जाते भी भाइयो को भाइयो से अलग कर गया है। इतने बडे देश की धरती को तोडकर वह चला गया। अब हम सबको मिलकर अपने राष्ट्र का पुर्ननिमाण करना है। इसे और नही टूटने देना है। सब भाइयो को मिलकर रहना है। राष्ट्र की प्रगति के लिए दिन रात एक-जुट होकर मेहनत करनी है। बेईमानी, चालाकी और स्वाथ को तो अपने पास तक नहीं फटकने देना। सबके साथ हम ऐसा व्यवहार करें मानो वे हमारे ही घर के सदस्य हो। और भी बहुत सी बातें बतायी। कहकर कुन्दन चुप हो गया।

—तुम्हे तो सारा भाषण रट गया। हैडमास्टर साहब और तुम्हारे वह पण्डित जी भी सुन रहे होंगे ?

—हाँ, बहुत जोर जोर से ताली बजा रहे थे। हम सब बच्चो को भी कहा—तालियाँ बजाओ। लडके लडकिया ने खूब तालियाँ बजायी। बाकी सारे मास्टर साहबो ने भी जोर-जोर से तालियाँ बजायी। बहुत देर तक बजाते ही रहे।

इस पर कामेश्वर बाबू ने जोर का ठहाका लगाया—मदारी के खेल के बाद सभी तालियाँ बजाते हैं।

जयदयाल जी ने कहा—बस बस अब यही वक्त आ गया लगता है। आजादी के बाद तो अब सारे नेता, गाधी जी को छोडकर, पदो के लिए लडने झगडने लगे हैं। किसी को किसी का डर नही रहेगा। हाँ शरीफ आदमी हर एक से डरता रहेगा।

जयदयाल जी ने कहा—बजा फरमाते हैं आप। अब तो भाषण और तालियाँ सुनने को मिल रही हैं। मैं तो जिस स्टेशन पर गाडी लेकर पहुचता हूँ तो पाता हूँ वहाँ नेताओ की सभायें हो रही हैं। बताते हैं, हमने कैसे आजादी प्राप्त की। कोई कहता है—बिना तलवार के गाधी जी ने आजादी दिलवा दी। सुनकर दु ख होता है और हँसी भी आती है। दरअसल यह छुटभइये नेता और ज्यादातर श्रोता इतने बडे देश के सुरक्षित कोनो मे बठे रहे। ऐसे लोगो को जरूरत भी क्या है, सच्चाई पता लगाने की। गोलियो की बौछार क्या होती है। अपनी जमीन, अपने आत्मीय जनों से बिछोह की टीस, तलवार के बडे से बडे घावा से भी कितनी भयानक होती है। तलवार, फाँसी, बेडियाँ तो इनके लिए त से तलवार फ से फाँसी, ब से बडी से ज्यादा कुछ नही।

कामेश्वर बाबू बोले—अगर समय रहते देश को सही नेतृत्व नहीं मिला और इन बुलक्कडो पर अकुश नही लगा तो पुनर्निर्माण के नाम पर लूट खसोट का ऐसा

सैलाब आयेगा जो फिर किसी के रोके नहीं रुकेगा। और तब साधारण आदमी कहना शुरू कर देगा—इससे तो अंग्रेजों का शासन क्या बुरा था। वे रुके, ओह, बहुत देर हो गयी। बर्फीली हवा से बचने के लिए गर्दन पर मफलर लपेटते हुए कामेश्वर बाबू चल दिये। मगर दो कदम आगे बढ़कर मुड़े बोले—भाई साहब एक बात कहते-कहते रह जाता हूँ। बड़े लड़के की एक गम बण्डी सिलवायी थी, उसे तंग है। बिलकुल नयी है। बुरा न मानें तो कुन्दन पहन ले।

कहीं कामेश्वर बाबू का दिल खराब न हो, इसलिए जयदयाल जी ने कह दिया—क्या हर्ज है। बड़े भाई भी ही तो है।

कुन्दन उनके साथ चला गया और बण्डी ले आया। जमना ने उसे देखा तो आँखों में आँसू छलक आये। भरे गले से बोली—हे भगवान यह दिन देखने थे।

कुन्दन ने कहा—मैं तो बण्डी पहनता ही नहीं हूँ।

—तो लेने क्या चला गया। वे झल्ला पड़ी और पति की ओर देखकर बोली—खूब हैं आप। खैरात लेने लगे।

—इसे ही फौरन कह देना चाहिए था कि नहीं पहनता। इस जहालत से छूट जाते। मुझे तो मना करते हुए शर्म हो आयी। कामेश्वर बाबू मेरी इतनी इज्जत करते हैं। सबको कहते फिरते हैं—जयदयाल मेरे बड़े भाई साहब हैं।

—तो ठीक है कुन्दी पहनने की कोशिश कर। धीरे धीरे अच्छी लगने लगेगी। वे बोली।

समय अपनी निर्बाध गति से चल रहा था और इस दौर में इस परिवार के अनुभव बड़े विचित्र थे। कभी इन्हें लगता—समय नितांत निर्जीव हो गया है। मात्र रेंग रहा है। वे समय और ठण्ड मौसम की गिरफ्त में जकड़े जकड़े से कड़े और सख्त सख्त से होते चले जा रहे हैं। कभी लगता—सारे बादल छँट गये, सुहावनी धूप खिल गयी है और क्वाटर के साथ सटे हुए छोटे बगीचे के तमाम फूल एक साथ खिल उठे हैं। सब-कुछ नया नया ताजा-ताजा हो चला है। दिन करवट लेकर उठ बैठे हैं उनके लिए सुख सन्देश कहने के लिए। कभी-कभी वे अपने को थका हारा हुआ अनुभव कर रहे होते कि तभी मात्र एक छोटी-सी खबर से पूरे परिवार में चहल पहल और स्फूर्ति आ जाती।

जो भी घर का सदस्य बाहर से आता सभी उसकी तरफ उत्सुकता से देखते कि शायद अपने साथ कुछ नया कहने को समेट लाया हो। विशेष रूप से जब बाऊजी गाड़ी से आते तो प्रायः कहने को अपने साथ साधारण अथवा महत्वपूर्ण कुछ न कुछ जरूर लाते—आज फलाना रावलपिंडी वाला मिला था। आज अलीगढ़ में मुझे एक ट्रेन-क्लर्क सब्जीमण्डी ले गया—वहाँ क्या देखता हूँ, शेखूपुर

वाला मालूलाल सब्जी की बहुत बडी दुकान जमाये है और दूसरा चन्दनलाल था, ना। वह मूगफली का गाडा चला रहा है। आज हरदोई मे एक पुराना दोस्त मिल गया। वह बन्नू मे पोस्टमास्टर था। यही पोस्टिंग हो गयी। उसने कई लोगो के बारे मे बताया कि कौन कहाँ पहुँच गया और क्या क्या कर रहा है। कइयो को तो उसने बताया कि दगा मे मारे गये।

कभी बताते आज तो पूरी दो स्पेशल ट्रेनें देखी, मुसलमानो की। पाकिस्तान जाती हुई। वे घबराये हुए बिलकुल गुमसुम थे। और बाहर खडे यहाँ वाले लोग हँस रहे थे। उन पर फब्तियाँ कस रहे थे। कुछ तो गन्दी गन्दी गालियाँ बककर अपनी शर्मो हया को उतार बैठे थे जोश के नाम पर।

बलवा बोली—बकवास करना तो बुरी बात है। पर उनको जाना ही चाहिए। अपना हिस्सा ले लिया। अब उनका यहाँ क्या काम।

—तुम कैसे कह सकती हो कि इन्ही ने अपना हिस्सा माँगा था। हो सकता है यह पाकिस्तान बनने के खिलाफ भी रहे हो। हम लोगों से ज्यादा इन उखडते हुआ का दुख दर्द कौन समझ सकता है जो घर से बेघर हुए हैं। शुक्र है, बरेली म तो शाति है।

किसी बहुत निकट-सम्बन्धी के सकुशल हिन्दुस्तान पहुँचने का समाचार सुनते तो उस दिन जश्न का सा माहौल पूरे घर मे छाया रहता और कुछ नही तो बेर और मूगफली की 'फीस्ट' होने लगती। बुरे समाचार घर को विषाद से भर देते। उस दिन ता कुछ खाने को मन नही करता।

घर मे जब कोई नया सामान आता तो बच्चे ऐसी उछल कूद मचाते कि जमना बरबस कह उठती—ऐसे कर रहे हैं जैसे ये चीजें पहली बार देखी हो। पाकिस्तान वाली यही चीज, इससे लाख दर्जे कीमती और खूबसूरत थी।

बाबू जयदयाल को गुस्सा आ जाता—बच्चे खुश हो रहे हैं। इससे अच्छी बात हमारे लिए और क्या हो सकती है। बच्चो को चहकता हुआ देखकर तुम्हें तकलीफ हाती है। कसी माँ हो?

कुन्दन माँ से लिपट जाता—हमारी भाभी बहुत अच्छी है। मुसलमान भी बहुत अच्छे थे। हमारा पुराना सडा गला माल असबाब लूट लिया। तभी तो इन नयी चीजो को लेने का मौका मिला है। नयी चीजें आखिर नयी होती हैं।

दरअसल एक एक करके घर का जरूरी सामान लगातार आने लगा था। रेलवे ने रिफ्यूजी एडवास दिया था। पर इससे मात्र गुजारा करने का साधारण सामान लाया जा सकता था। बस वही आ रहा था। बच्चे फिर से खुश होते।

—अरे वाह! आज तो बाउजी दो नयी नयी फोल्डिंग कुर्सियाँ लाये हैं। क्या शानदार हैं—हरे रग की।

ऐसे ही किसी चीज के आने पर जहाँ बच्चे खुशी से उछलने लगते, जमना

इनकी तुलना पाकिस्तान की उन चीजो से करने से बाज नही आती। जो उसने कभी थोडे थोडे रुपए छोडकर बडी हसरत से सहेजी थी। आज कुर्सियां आयीं तो बोली—टीन की कुर्सियां। इनमे क्या जान है। हमारे आबनूस के सोफा सेट को इस वक्त न जाने कौन रौंद रहा होगा।

जयदयाल कहते—तू हर वक्त वही गाथा लेकर बैठ जाती है। सबको दुखी करती है।

—एक पर मैं बैठूंगा। एक पर हरिया। कुन्दन ने कहा।

—कल एक फोल्डिंग टेबल भी आयेगी। बाऊजी बच्चों के साथ मिल गये।

—हां बाऊजी! बढिया 'चीन वाले कप' लेकर आइये। भाभी उसी मे चाय डालकर टेबल पर रखेंगी। वैसे ही लाना जसे शेखूपुरा मे थे।

वैसे ही बेटे, चाइना क्ले' के प्याले, बाऊजी बात को तालते और ठीक जगह पर रखते हुए कहते, अभी नही। थोडा रुकना पडेगा। पर एक दिन जरूर सब कुछ वैसा का-वैसा बन जायेगा। सहसा वे एकदम मौन हो जाते और सोचने लगते। मनुष्य को 'वैसे का वैसा' की चाह क्या लगी रहती है। यही शायद मनुष्य के संताप का मूल कारण है। 'और और' और 'सामर्थ्य से बाहर की चीज' ले आने की अकुलाहट भी उसी प्रकार हमारे दुख का कारण बनती रहती है।

बदलते हालात म हर विस्थापित को व्यक्तिगत स्तर पर पूरी तरह कमर कसकर हर छोटी-बडी समस्या के लिए जूझना पड रहा था। संघर्ष करना पड रहा था। उसे तो चुनाव-ही-चुनाव करने थे—प्रात का, शहर का, गली-मुहल्ले का और जीवनयापन के लिए धन्धे का। चुनाव दर चुनाव। अपने-आपको जमाना और नयी जगहों पर सम्मानपूर्वक तनकर खडा होना था।

उधर प्रशासन के सामने भी बहुत भारी और तरह तरह की चुनौतियां थी। सामाजिक और राजनतिक स्तर पर उसे इन चुनौतियों का दिन रात सामना करना पड रहा था—करोडो विस्थापितो को पहले शिविरो मे जगह देना और उनके राशन-पानी की व्यवस्था व उनका रख रखाव करना। ऊपर से महामारी का डर। उन्हें फिर से बसाने और रोजगार मुहैया कराने की समस्या। इतने बडे इन्तजाम मे असन्तोष को नियन्त्रण मे रखना प्रशासन की बहुत बडी जिम्मेदारी थी। लगता, असन्तोष का जसे सलाब उमडा पड रहा है। हालांकि यह असन्तोष व्यक्ति, अपने अपने धरातल पर अनुभव कर रहा था और इसे सहने को अभिशप्त था। अधिकतर लोग इसे 'अपना भाग्य' अथवा पूर्व जन्मो मे किये गये पापो की सजा कहते। दूसरे कई इस पूरी तरह से एक राजनैतिक साजिश कहते। अपने साथ किया गया असहनीय अपमान [illegible]। अप[illegible] की

खातिर देश को तोड़ दिया है। बंगालियो पंजाबियो-सिंधियो को रौंद डाला है। औंधे मुँह ऐसे गिरा दिया है कि वह कभी सम्भलकर उठ न सकें। यह उनकी किस्मत थी जो पाकिस्तान से बचकर आ गये, ऐसे ऐसे जख्म लेकर जो ता जिन्दगी उन्हे सालते रहेंगे।

ऐसे कुछ लोग एकजुट होकर 'अपनी जगह' बनाने के लिए 'कुछ घर' तक उजाड़ देने मे कोई 'अधर्म' नही मानते थे।

सरकार को ऐसे ही तत्वो से अधिक सावधान रहने की सख्त जरूरत थी कि कही किसी प्रकार का कोई बवण्डर न उठ खड़ा हो। दंगा फसाद न हो जाये क्योकि इधर के बहुत से नागरिको को विस्थापितो के साथ पूरी सहानुभूति थी। वे उनके तर्कों से सहमत थे। उनका कहना था जब जमीन पर बँटवारा हो ही गया तो अपनी अपनी जमीन पर जाओ। नही जाओगे तो हम भगायेंगे, जसे पाकिस्तानियो ने हिंदुओ को भगाया है।

गाधीजी जगह जगह जाकर सबको शात कर रहे थे। शाति के प्रवचन दे रहे थे। रघुपति राघव राजा राम ईश्वर अल्हा तेरा नाम, की महत्ता समझा रहे थे। लोगो के हृदय परिवर्तन के लिए बार-बार अनशन पर बैठ जाते थे। वे व्यथित थे। वे शारीरिक रूप से इतने दुबल होने के बावजूद अपना सुख चन भुलाकर दिन रात यात्राएँ कर रहे थे।

इधर जवाहरलाल नेहरू प्रधानमन्त्री की कुर्सी पर आसीन हो चुके थे। उनकी भाग-दौड़ एक सजग प्रहरी की तरह थी। कही कोई किसी प्रकार का अनिष्ट न घटे जिससे दूसरे देशों मे भारत की बदनामी न हो जाये इसके लिए वे अपने दोस्तो की लामबन्दी किये हुए थे। उनका एक ही कहना था कि हम सबने मिलकर आजादी की लम्बी जग लड़ी है। हमने फतह हासिल की है। इसमे जितना योग दान और बलिदान हिंदुओ का है, उतना ही मुसलमानो का है। यह क्यो जायें। हमें यहाँ सबको भाइयो की तरह मिल जुलकर रहना है। इस हिंदुस्तान की धरती को राम राज्य जैसा स्वग बनाना है। स्वग यूँ ही नही बनता। इसके लिए एक एक बाशिन्दे को दिन रात कमर कसकर कड़ी-से कड़ी मेहनत करने की जरूरत है। इसलिए आराम हराम है।

अधिकाश वर्गों ने 'आराम हराम है' को एक राष्ट्रीय नारे की तरह माना। इसके प्रति पूण आस्था दर्शायी। मगर कुछ लोग इसे मात्र 'पाखड' कहकर हँसते। कि खुद तो राजा बन बैठा। बाकियो को त्याग की शिक्षा देता है।

इसके अतिरिक्त विवाद का कारण बनी, नेहरू जी की वह अपील, जो वे समाचार पत्रो से तथा रेडियो द्वारा बार बार प्रसारित कर रहे थे—मुसलमान भाई जो पाकिस्तान चले गये हैं, भयमुक्त होकर लौट आयें। उन्हे यहाँ की सरकार पूरी सुरक्षा की गारण्टी देती है। उन्हें उनका सब कुछ जमीन जायदाद वापस

मिलेगी।

बहुत से लोगो का मानना था कि इसमे गलत क्या है। दोनो सरकारो ने अल्पसंख्यको को उनकी जानोमाल की हिफाजत की गारण्टी दी थी। अगर पाकिस्तान सरकार इसका पालन नही कर रही तो इसका यह मतलब तो कतई नही है कि हम भी वायदा खिलाफी करें। अपने नतिक मूल्या से गिरें। दूसरी बात मुसलमान भाइयो मे राष्ट्र भक्ति की कोई कमी नही थी उन्होने भी इसके लिए अपनी जानें गँवायी। जेलो की यातनायें सही।

जब जिन्ना ने पाकिस्तान की मांग रखी तो छागला साहब जो जिन्ना साहब के शागिद थे न जिन्ना से बोलना तक बन्द कर दिया। इस छागला साहब के अतिरिक्त अब्दुल कलाम आजाद, जाकिर हुसैन, वगैरह वगैरह भारत माँ के सपूतो की कमी कहाँ थी। ऐसे लोगो ने तो पाकिस्तान नही माँगा था फिर वह वहाँ क्यो जायें।

दूसरे पक्ष के लोग अपनी बात पर बल देते कि ऐसे नीतिगत मामलो मे एक एक आदमी की राय का खयाल रखना नामुमकिन होता है। जिन्ना और लियाकत अली हमारे भाई थे। हम तो मानते हैं कि वे अब भी हमारे भाई हैं, मगर भाइयो मे जब जमीन जायदाद का बँटवारा हो जाता है तो कोई भी भाई दूसरे भाई के बच्चो को अपने यहाँ पालना पोसना गवारा नही करता। भया तुम अपने घर खुश। हम अपने घर खुश।

ऐसी चर्चाएँ उन दिनो आम बात थी। चौराहो पर, पान की दुकान के इद गिर्द। विशेष रूप से गाडियो मे। जहाँ भी चार आदमी मिलते यही बातें ले बठते, देश के भविष्य को लेकर, अपनी अपनी चिन्ताएँ व्यक्त करते कि ऐसी तक विहीन असगत नीतियो, ऊपर से लूट खसोट के चलते, देश के भविष्य की तस्वीर स्वच्छ कैसे बन पायेगी।

कुछ समय बाद बाबू जयदयाल जी जब जब डयूटी से घर आते तो पत्नी से कहते—मैंने आज एक साथ दो दो स्पेशल ट्रेन देखी जो मुसलमानों को पाकिस्तान से वापस यहाँ ले आयी। जसे यह लोग लदकर पाकिस्तान गये थे, वसे ही वापस लौट रहे हैं।

—यह तो सरासर गलत है, जमना कहती ठीक है, किसी को डरा धमकाकर मत भगाओ। जसे हमे भगाया गया था। मगर एक दफा जो अपनी मर्जी से राजी खुशी चले गये हैं उन्हें वापस बुलाने की क्या तुक है। ऐसी कौन सी गर्ज पडी है?

जयदयाल जी उत्तर देते—भई लौटने की हिम्मत भी तो चाहिए। अगर लियाकत अली साहब या जिन्ना साहब हम लोगो को बुलाएँ तो क्या तुम वापस लौटने को तयार हो जाओगी।

—वे बुलायें! ऊँह सवाल ही पैदा नही होता।

—मान लो बुला लें ?

—उन्ही की मर्जी से तो हम वहाँ से खदेड़े गये है। फिर भला वापस क्यो बुलाने लगे।

—मुझे मेरे सवाल का दो टूक जवाब दो। हाँ या न।

जमना कन्धे उचकाकर उत्तर देती—मेरा दिमाग खराब है जो बच्चो के साथ जलती आग मे फिर से कूदू। हम उन्ही लोगो पर भरोसा कैसे कर सकते हैं कि अबकी कुछ नही कहेगे।

—बस-बस जयदयाल जो उसे बीच मे टोक देते—उन्हे, हमारे नेताओ पर एतबार है और साथ ही जोखिम उठाने की कुव्वत है।

बहसो का ऐसा सिलसिला चारो तरफ, हर स्तर पर कायम था जो टूटने मे नही आ रहा था।

इधर हर शहर मे विस्थापितो की सख्या मे दिनोदिन वृद्धि होती जा रही थी। जगह के लिए मारा मारी थी। हर आदमी को टिकने के लिए जमीन का टुकडा चाहिए, चाहे वह फिर कितना ही छोटा या टूटा फूटा क्यो न हो। व्यक्ति तो आसमान मे घर बसा नही सकता और न उसे वहाँ खुराक ही हासिल होती है। अगर उसका पेट भरा हो सिर्फ तभी वह आसमान की खूबसूरती का जायजा ले सकता है।

इन लौटते हुए जत्थो की आम लोगो मे प्रतिकूल प्रतिक्रिया हो रही थी। एक सुबह, अखबार की सुर्खियो मे छपी खबर ने कुन्दन को चौंका दिया। चौंका क्या दिया, उसे लगा, इस अखबार ने उसे पूरी तरह डराकर हिला दिया है। उसने पढा—यू० पी० के कई शहरो मे दगे हो गये है। इन दगो के कई कारण भी अखबार ने गिनाये थे। जो मुसलमान अपने शहरो को लौटे थे, उन्होने पाया कि उनके मकानो पर हिन्दू विस्थापितो ने कब्जा जमा रखा है। दूसरे कुछ स्थानीय लोगो ने भी विस्थापितो के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए उन्हे उकसाया था—बोल दो हमला। हम तुम्हारे साथ हैं।

मगर सुखद स्थिति यह थी कि पुलिस प्रशासन फौरन से पेशतर हरकत मे आ गया था और इस आग पर काबू पा लिया था। बहुत से लोगो का मानना था कि यह पक्षपात है। पूरा अन्याय है। जो लोग पजाब सिंध से आये हैं, वह कहाँ रहेंगे। क्या खायेंगे। उन्हे मकान और दुकाने चाहिए। कौन देगा यह सब। इस मामले मे पजाब जबदस्त रहा। वहाँ पर लोगो ने 'अपनी जगह बना ली थी।

सरकार की ओर से लगातार घोषणाओ पर घोषणायें हो रही थी। मुजरिमो के साथ सख्ती से निपटा जायेगा। किसी को किसी का हक छीनने की कतई इजाजत

नहीं दी जायगी। सब्र और धैर्य से सब समस्याओं का हल निकालने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। लौट हुए मुसलमानों को, उनके घर, दुकानें, वापस दिलायी जायेंगी। हिन्दू विस्थापितों का मुआवजे की उचित रकम मिलेगी।

कई कचहरियों में 'क्लेम फार्म' मिलने शुरू हो गये थे। कुछ लोगों ने अपनी जमीन जायदाद की अनाप शनाप तफसील दर्ज करा दी थी जितना वे छोड़ आये थे, उससे कहीं ज्यादा का क्लेम कर दिया था कि पूरा कौन देता है। काट छांटकर उन्हें विशेष मिलने की आशा नहीं थी और न ही उन्हें क्लेम दफ्तर की उस चेतावनी की परवाह थी जिसमें कहा गया था कि इसकी ताईद पाकिस्तान गवर्नमेंट से की जायेगी और गलत पाये जाने पर दण्डात्मक कारवाई होगी। ऊंह कौन पूछता है, और कौन बताता है। लेकिन अधिकतर भीरू या ईमानदार लोग बहुत सोच समझकर, सम्भल सम्भलकर, एक दूसरों से या कार्यालय वालों से पूछ पाछकर फार्म जमा कर रहे थे कि कुछ भी अधिक या गलत न दर्शाया जाये।

कुछ लोग तो ऐसे भी थे, जिन्हें यह कहते सुना गया—लानत है, ऐसी सरकार से कुछ लेना। लौटा दें हमारी असली जमीन। हमारे मारे गये रिश्तेदार। लौटा सकें तो लौटायें ना हमारे पुराने साथियों को। हमारे भाईचारे को। भाइयों भाइयों को आपस में बांटकर अब यह कौन-सी खरात बांट रहे हैं। भगवान की लीलाएं सुनी थीं। इन्सान की लीलाएं देख रहे हैं हिश।

यह वह दौर था, जब कहीं पर भी, जगह-जगह आजादी की गर्माहट देखने को मिल जाती—धनाढ्यों की हवेलियों में सरकारी कार्यालयों में, स्कूलों, कालिजों में, धर्म संस्थानों में, छोटी बड़ी दुकानों में, यहां तक कि सड़क के किनारे पटरियों पर भी, आजादी के गुणगान गाये जा रहे थे। लेकिन सब अपने अपने स्तर पर। अपने अपने ढंग से। अपनी अपनी 'विशिष्ट भावनाओं' के अनुकूल। सरकारी कार्यालयों को और शिक्षण संस्थानों को फण्ड अलाट होता। वहां सरकारी कार्यालयों में जाम भी टकराते, फिल्मी गानों के गजलों के और ऊट-पटांग अश्लील स्वर भी छूटते, वहीं शिक्षण संस्थाओं में शराब की बुराइयों पर, भाषण दिये जाते। देशभक्ति के सहगान होते। बच्चों को हर बुराई से दूर रहकर अच्छा नागरिक बनने, मुश्किल से मिली इस स्वतन्त्रता को बचाये रखने के लिए मर मिटने के लिए प्रेरित किया जाता। बाद में महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू राजेन्द्र बाबू सरदार पटेल आदि की 'जय जय'—'जय हो' के नारे लगवाये जाते। मगर इनमें रासबिहारी बोस, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, शहीदे आजम भगतसिंह राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद, मौलाना बरकतुल्ला, अशफाकउल्ला खां, बिस्मिल आदि आदि अनेक नाम लुप्त प्राय रहते। कुन्दन ने ऐसे कई नामों

के बारे मे सुन रखा था जिन्होने आजादी के लिए अपूर्व साहस का परिचय दिया था। वन्देमातरम बोलते हुए हँसते-हँसते फाँसी के फदो को चूमकर अपने प्राणो का बलिदान दिया था।

एक बार उसने थोडा साहस बटोरकर हैडमास्टर साहब से यही बात पूछी थी। हैडमास्टर साहब ने अबकी उसे डाँटा नही था। अपने आपको भडकने से भी बचाये रखा था—अच्छा तुम उन नये पजाबी टी० टी० के लडके हो ना। हो तो समझदार। पर सभी बातें बच्चो को बतायी नही जा सकती। यह पालिसी की बातें होती हैं। हम अपने अपने हिसाब से तो चल नही सकते। गवनमेंट का जैसा रुख होगा हमे और पूरे स्कूल को उसी के अनुसार चलना होगा। पहले अग्रेजो के अनुसार। अब अपने स्वतन्त्र शासन के अनुसार। हाँ एक बात और। बाद के इतिहास मे उन्ही का ज्यादा जिक्र होगा—देख लेना।

कुन्दन ठीक से कुछ समझ न सका। उसे स तोष इसी बात का रहा कि वह अपनी बात कह पाया है और हैडमास्टर साहब ने उसे डाँटा भी नही है। उसे पहचाना भी है।

धनाढय और खास तौर से नव धनाढय, ये लोग तो आये दिन, अपनी हवेलियो या बँगलो मे पार्टियाँ दे रहे थे। ऐसे लोग पहले भी ऐसी पार्टियाँ देते थे। वह पार्टियाँ अग्रेज अफसरो के लिए होती थी। वे उनकी अगवानी से लेकर उनको छोडने तक उनकी मोटर कारो के पीछे पीछे चलने थे। कोई ठेका या फिर 'सर, रायबहादुर जसा कोई खिताब पाने के लिए उनकी हाजिरी मे रहते थे। किसी राष्ट्रभक्त को दुत्कारने और उसे पकडवाने मे उनकी राष्ट्रभक्ति' थी। अब मामूली से रद्दोबदल के साथ उनका वही पुराना 'सस्कार' बरकरार था। वे आये दिन नये अफसरो प्रशासको को आजादी के जश्नो मे अपने यहाँ बुला-बुला कर कृताथ हो रहे थे। मांस, शराब गम गाने, नत्यागनायें, गये रात तक उन सबका साथ देती।

मन्दिरो गुरुद्वारो मे आरती पाठ के बाद 'भारत माता की जय' का उद्घोष होता। दुकानदार ग्राहक को और और माल दिखाने की गरज से रोकता और कहता —बाबूजी सेठजी एक गन्ने का गिलास पीते जाओ आजादी के गुण गाते जाओ। चीज लेना न लेना आपकी मर्जी पर। दो दोस्त सडक पर मिलते तो साथ सटे किसी खोचे वाले से आधा-आधा कप चाय पीते और इसे आजादी का जश्न कहते।

इनमे बहुत ज्यादा तादाद ऐसे लोगो की थी जिन्होने गुलामी का जीवन बडे सहज ढग से बिना किसी शारीरिक अथवा मानसिक कष्ट के मजे से बिताया था और आजादी का मीठा फल कैसा होगा इसकी उन्होने कभी कोई सही कल्पना तक नही की थी। हाँ कुछ एक फूलकर इतना जरूर कहते—हमने आजादी ली है। अब मजे ही मजे हैं। अपना मुल्क आजाद है। जसे आजादी के मिलते ही

सारी-की सारी समस्याओं का हल आप से आप हो गया है।

कुन्दन और उसके साथियों को भी बड़े मजे आ रहे थे। वे हमेशा शाम को इण्डियन रेलवे इस्टीटयूट जाते थे। वहाँ पर पिंग पाँग या कैरम बोर्ड खेलते थे। कभी कभी अगर बड़े सदस्य नहीं आये होते तो बिलियर्ड को भी छूने का अवसर मिल जाता। निकट ही इगलिश (यूरोपियन) इस्टीटयूट थी, पर वहाँ किसी को नजदीक फटकने की अनुमति नहीं थी। मगर बच्चे तो बच्चे ठहरे। वे चुपके से अँधेरे के साये में कभी कभी वहाँ पहुँच ही जाते। बाहर दीवारों से सटकर चोरी चोरी देखते। बड़े बड़े साफ सुथरे हॉल। हर हाल में बड़ी बड़ी दीवार घड़ियाँ। अन्दर जगमगाती रोशनी। मेजों पर पैग। आस-पास बैठे अंग्रेजों के मुह में सिगार या पाइप। ऊपर उड़ता धुआँ। ताश, कैरम या कुछ दूसरे खेल। परन्तु यहाँ तो कोई खास आकर्षण नहीं था। यहाँ पर बच्चे बहुत कम रुकते। वे तो तख्तों के फर्श वाले, नाचघर की तरफ बढ़ते। मुह को बड़ी बड़ी खिड़कियों के शीशों से सटाते तो नहीं, जरा दूरी बनाये, वहाँ पर थिरकती-नाचती मेमों को देखते। वे रेशमी चमकीले परिधानों में होतीं। कोई कोई कंधों और टाँगों से नगी होती। प्राय जोड़ी बनाकर किसी अंग्रेजी रिकार्ड की धुन पर नाचती हुई मुस्कराती रहती। कोई कोई शरारती लड़का—हाय मेरी जान थोड़ा स्कर्ट और ऊपर उठा ले, फुसफुसाता और भाग खड़ा होता। और फिर वे वापस अपनी इंडियन इस्टीटयूट या घरों को चल देते।

उस दिन फिर बच्चों को इंडियन इस्टीटयूट में नहीं घुसने दिया गया। (उस दिन थोड़े थोड़े अन्तराल से आ जाते थे) बाहर एक नौजवान, तितली वाली नकटायी लगाये शानदार नीले रंग का गर्म सूट पहने खड़ा था—बेटोऽ उसने लम्बे स्वर को सुरीला बनाते हुए कहा, आज नहीं। आज फिर अन्दर हमारे अफसरान 'इंडिपेंडेंस सैलिब्रेट' करने जा रहे हैं। आज नहीं बेटो आज नहीं। कल को आना।

कुन्दन वापस लौटने लगा तो सुशील ने कहा—चल बे इसे क्या देखता है। चलो इगलिश इस्टीटयूट की तरफ। मेमों को स्कर्टों में देखेंगे। क्यों शफी ?

—यैस सर। शफी ने जोर से कहा जैसे हाजिरी बोल रहा हो।

तब सभी लड़के, सुशील के पीछे पीछे चल दिये। इगलिश इस्टीटयूट थोड़ी दूरी पर ही था। मुख्य द्वार से जरा दूर वर्दी पहने अर्दली ने उन्हें सल्यूट मारा। मुस्कराया, फिर हल्के से उसी मुस्कराहट के साथ आँख मार दी। शायद वह चुपके से अन्दर जाकर एक पैग डकार आया था।

—क्या बात है ताऊ, शफी ने भी उसे आँख मारकर जवाब तलब किया, बड़े खुश नजर आ रहे हो ?

—आओ-आओ डरो नहीं, अर्दली ने कहा—अब तो अपना राज आ गया

है। इस इन्स्टीटयूट पर अपना ही राज छाने वाला है। वह जबान पर पूरा दबाव डालते हुए आगे बोला, साले दोगले कुछ ही दिनो के मेहमान हैं। बडे हरामी हैं। बडो बद्तमीजी से पुकारते और हुक्म देते थे। अब जाकर घुसो इग्लण्ड की मे। उसन अग्रेजो को गाली दी तो सभी लडके खीं खी करके हँस पडे।

कुन्दन ने कहा ताऊ, अब गाली देकर अपनी जबान क्यो खराब करते हो, फिर सहसा चुप हो गया जैसे कुछ उदास हो गया हो या सोच मे पड गया हो।

अदली ने उसकी पीठ थपथपायी—लौंडे तुम समझदार लगते हो।

कुन्दन के मुह से निकला—बुरा मत मानना ताऊ। अफसर चाहे अग्रेज हो या हिन्दुस्तानी, अपने मातहत से गलत तरीके से ही बोलेगा।

अदली एक लम्बी 'हूँ ' करके रह गया।

घर लौटते वक्त कुछ और लडके भी आ मिले। हुल्लड मचाते हुए एक-दूसरे को धकियाते रहे—मजा आ जायेगा अब। आह इगलिश इन्स्टीटयूट मे खेलेंगे। क्या बडे बडे साफ सुथरे हॉल हैं। हर एक हाल मे बडी बडी घडियो के पैंडुलम झूलते हैं। बडे बडे बल्बो की रोशनी। सारा चमकीला सामान जगमगाता है।

—पर अब इन सबका क्या फायदा ?

—क्या ?

—अब वहाँ नाचेगा कौन ?

—तेरी अम्मा।

—भक्क साले। तेरी अम्मा।

—मेरी अम्मा तो बहुत मोटी मोटी है।

—मेरी भी। वैसे हम सभी की ऐसी ही हैं। हाथ का घेरा बनाते हुए एक ने कहा।

—पूछकर देखना तो क्या नाचेंगी ?

वे सब एक-दूसरे को छेडते हुए उछलने लगे।

मगर कुन्दन मुह लटकाये चल रहा था।

—अबे तुझे क्या हो गया। तुझसे तो किसी ने मजाक भी नही किया। शफी ने कुन्दन का कधा पकडते हुए कहा।

सुशील बोला—जिसे तू नेक लडका कहता है ना, इसे ही इन प्यारी प्यारी खूबसूरत मेमो के चले जाने का सबसे ज्यादा गम है।

शफी ने कहा—कुछ तो बोल यार। क्या तुझे इगलिश इस्टीटयूट मिलने की खुशी नही हो रही ?

—वह बात नही।

—तो क्या बात है ?

—तुम समझ नही सकोगे।

शफी समझ गया, कुन्दन उदास है। बोला—फिर भी यह।

कुन्दन ने उत्तर दिया—अगर इन अंग्रेजो का जन्म यहीं हुआ होगा तो इन्हें इग्लण्ड जाने से बडी तकलीफ होगी।

शफी ने कहा—यह बात ठीक है। हमारे मौसा-मौसी और बुआ और उनके बच्चे पाकिस्तान जाते वक्त बहुत-बहुत रोये थे। हम सब भी कई दिनो तक रोते रहे थे। घटना को याद करते हुए उसका स्वर रुआँसा हो आया।

कुन्दन ने कहा—कितनी सर्दी पडने लगी है, और अँधेरा भी हो चला है। जल्दी से खाना खाकर आ जाना।

ये तीनो मित्र रात को बारी बारी से किसी एक के क्वाटर मे साथ साथ पढ़ते थे।।

बावजूद इस आजादी की गरमाहट के दिन आगे सरकते हुए अपनी झोली मे बर्फीली हवाएँ भर रहे थे। प्राय हर रात को एक-दो परिवार शालें, कम्बल लपेटे कुन्दन के माता पिता के पास आ बैठते। उनमे नये पुराने सभी तरह के लोग होते तो कई विस्थापित भी होते। यदि कोई इस प्रकार का विस्थापित परिवार आता तो उन्हे थोडी राहत मिलती। वे उनसे उनका हालचाल और भविष्य का कार्यक्रम पूछते। वरन्न वे हर रोज अपनी कहानी कई कई बार दोहरा दोहराकर थक चुके थे। सुनाते हुए उनके घाव भी हरे हो उठते। बोरियत भी होती। मगर सहानुभूति रखने वालो के साथ औपचारिकता तो निभानी ही पडती। जिस दिन कोई विस्थापित परिवार आता, उस दिन वहाँ भीड कुछ बढ जाती।

नये आये हर विस्थापित के पास एक नयी और विलक्षण कहानी होती। मूल स्वर की वेदना के अतिरिक्त उनमे विविधता और चौकाने और भयभीत करने वाली बातें होती जिनसे सुनने वाला का कलेजा हिल उठता। हैवानियत के नगे नजारो की कल्पना मात्र से सिर लज्जा से झुक जाता।

आज से स्कूल मे क्लास टैस्ट शुरू होने थे। कुन्दन सबसे पहले उठकर पढ़ने बैठ गया था। समय उसने नही देखा था। बस जब पेशाब करने के लिए आँगन से गुजरा था तो निगाह आसमान की ओर उठी थी। कुछ आखिरी तारे डूबने से पहले टिमटिमा रहे थ। सहसा उसे कुछ अर्सा पहले उस उल्का के टूटने की याद हो आयी जो उसने पकिस्तान की सीमा के एक अन्जान स्टेशन पर देखा था। उस भयकर दृश्य की याद आते ही उसकी रगें जैसे चटखने लगी। तभी बहुत जोर से धडाम धडाम का स्वर उभरा। वह डर गया। यह फिर क्या होने लगा। इस भयावनी

गर्जना से सारे परिवार वाले भी उठ बैठे।

—क्या हुआ, जमना ने अलसाई आँखें मलते हुए इधर उधर देखा। जयदयाल जी घर पर नही थे। कुंदन ने थोडा सोचते हुए किंचित डरे हुए स्वर मे कहा—जरूर कोई माल डिब्बा डिरेल हुआ है। यह ड्राइवर कितनी लापरवाही से जोर जोर से शंटिग करते हैं।

—हाँ यही हुआ होगा, अलका बोली।

—जाकर देखता हूँ। कुन्दन ने कहा।

—तू क्या देखेगा। तू कोई स्टेशन मास्टर या यार्ड मास्टर लगा हुआ है। हरिया बोला, क्या पता किसी ने तोप दाग दी हो।

भाई की बात पर बिना ध्यान दिये, कुंदन 'ऊँह' करता हुआ बाहर निकल गया। देखा, बहुत से लोग टूटी हुई दीवार के रास्ते छोटी लाइन (मीटर गेज) की तरफ भागे जा रहे हैं। वहाँ पर सैंड हम्प से टकराकर माल डिब्बा आधा झुका हुआ जैसे अधर मे झूल रहा था।

निकट ही कोई यात्री खड़ा अपनी ऊनी टोपी और कोट झाड रहा था। कुछ लोग इस काम मे उसकी सहायता कर रहे हैं और दिलासा दे रहे थे। बच गये बाबा! भगवान का धन्यवाद दो। आसपास उसका बिस्तरबन्द और बडा झोला और दूसरा कुछ सामान बिखरा पड़ा था। लोग उन्हे इकट्ठा कर रहे थे।

—कहाँ जाना है आपको? किसी ने पूछा।

—रेलवे क्वाटरो मे।

—कहाँ से आये हो? कोई दूसरा पूछ रहा था।

—अब तो दिल्ली से।

—तो पहले ?

—पहले पाकिस्तान से बचकर आ गये। अब गाडी से बच गया। उस यात्री की साँस तेज चल रही थी। वह आगे बोला—डिब्बा सूत भर छुआ ही था कि मैं लुढक पडा।

अब तक भी साँस की तेजी मे कमी नही आयी थी पर वह सम्भल चुका था। चोट नही आयी थी। बस हाथ की मामूली खरोच को सहला रहा था।

—चलिये मेरे साथ, एक सिपाही वहाँ पहुचते ही बोला—पता है लाइनें क्रास करना जुर्म है।

—अब क्यो परेशान करते हो जी। किसी न कहा।

—आप कानून मे मत पड़ें। सिपाही ने अपने कन्धे के फीतो पर हाथ फेरते हुए कहा।

यात्री ने अपनी टोपी उतारी तो कुंदन ने पहचान लिया, वह उनके पैर छूने लगा। वे सेठ काशीनाथ थे।

सिपाही कुन्दन को पहचानता था। बोला—अच्छा तो तुम्हारे घर आये हैं। ले जाओ इन्हें। हम तो यूँ ही कह रहे थे। कानून तो आखिर कानून है।

कुन्दन ने उनका कुछ सामान सम्भाला। वे दोनों क्वार्टर की तरफ बढ़ लिए।

घर पहुँचकर कुन्दन ने खुशी खुशी सबको सूचित किया—देखो तो कौन आये हैं।

जमना ने उन्हें देखा। पहचाना तो धक्का लगा। जैसे कोई पुलिसमन उसके गिरफ्तारी वारण्ट लेकर आ गया हो।

वह उनसे दूर घूंघट की ओट लेकर दूसरी चारपाई पर बैठ गयी और उनसे धीरे धीरे हालचाल जानने लगी।

सेठजी ने बताया। वे सब एक भाड़े के ट्रक द्वारा कोई दो महीने पहले हिन्दुस्तान पहुँच गये थे। पहले अमृतसर। फिर जालन्धर, लुधियाना थोड़ा थोड़ा रुककर किस्मत आजमाते ग्वालियर पहुँच गये। वहाँ भी कुछ काम नहीं जमा तो अब दिल्ली आ पहुंचे हैं। पटरियों पर खोखे लगा लगाकर रिफ्यूजियों ने दुकानों की कतारें-दर कतारें खड़ी कर रखी हैं। उन्हीं खोखों में एक खोखा हमें भी मिल गया है। आपके दामाद को 'बिरला मिल' में नौकरी मिल गयी है।

—सब ठीक तो हैं ना।

—हाँ ठीक ही समझो। अब सम्भल रहे हैं। दरअसल हम लोगों ने बहुत धक्के खाये। आपके छोटा दोहता मही को सर्दी लग गयी। वह ग्वालियर में ही जाता रहा।

यह सुनकर जमना फफक-फफककर रो पड़ी। अलका भी रोने लगी। कुन्दन, छुरिया भी रोने लगे।

—सब ऊपर वाले की माया सेठजी ने कहा, वहाँ की जलती आग से उसे बचा लाये जिसके हिस्से जो मिट्टी लिखी है। लगता है बाऊजी घर नहीं हैं, उन्होंने दुखद प्रसंग को पलटने के लिए इधर उधर देखते हुए पूछा।

बाऊजी गाड़ी लेकर गये हुए हैं। दुपहर के बाद आयेंगे, अलका ने उत्तर दिया, पानी गर्म होने का रखा है। आप नहा धो लें।

नित्य कार्यों से निवृत्त होकर, पूजा पाठ करने के बाद सेठजी के सामने नाश्ता रखा गया तो उन्होंने लेने से इन्कार कर दिया—धी (बेटी) के घर का अन्न, जल नहीं लूंगा।

—छोड़िये भाई साहब पुरानी बातें। सब पाकिस्तान ही छोड़ आये हैं। जमना ने उसी प्रकार धीरे से घूंघट की ओट लेकर कहा, पता नहीं आगे क्या क्या लिखा है।

—पाकिस्तान बनने का यह मतलब तो नहीं, हम अपने रीति रिवाज छोड़ देंगे।

—पर रिश्ते नातो, इज्जत लिहाज मे बहुत बदलाव आ रहा है। मैं तो यही देख रही हूँ। आप नाश्ता लीजिए।

बडी मुश्किल से लालाजी ने बस एक कप चाय पी और जयदयाल जी के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

एक पडोसन को पता लगा तो वह लाला काशीनाथ जी के लिए अच्छा खासा खाना बना लायी। जमना और अलका आपस मे हँसने लगी कि देखो हमने यहाँ आकर किसी पडोसी का खाना नही खाया। अब लालाजी की खातर-तवाजो हो रही है।

जब जयदयाल जी गाडी से आये तो लाला जी को देखकर उनका रग उड सा गया जैसे अभी उन्हें कठघरे मे खडा कर दिया जायेगा और उनसे जवाबतलबी की जायेगी। वे लालाजी की औपचारिक बातो की ओर ठीक से ध्यान नही जुटा पा रहे थे। दौहने की मृत्यु के समाचार ने उन्हे बुरी तरह विचलित कर दिया। वे देर तक मौन बठे रहे मगर बीच-बीच मे जवाब-तलबी पर मन ही मन सोचते रहे कसे, क्या क्या बोलेंगे इसका अभ्यास सा करते जा रहे थे। यह सिलसिला वर्दी बदलने, हाथ-मुह धोने, खाने-पीने तक चलता रहा। आखिर वह क्षण आ ही गया जब लालाजी असली मकसद की ओर बढे—मनोज कहाँ है ? कैसा है ?

—ठीक ठाक है। बम्बई मे पोस्टिंग हुई है। इधर नजदीक आने की कोशिश कर रहा है।

—बहुत अच्छा है। सब धीरे धीरे सम्भल रहे हैं। बुरे दिन जल्दी खत्म होंगे।

—यह तो कुदरत का नियम है। जयदयाल जी ने कहा फिर बक्सो की तरफ (जिनमे पखे थे) इशारा करते हुए कहा—वह आपकी अमानत रखी है। इन्हे सम्भाल लें।

—बाऊजी, बस मे भी आपकी अमानत सम्भालने की अज लेकर आपके पास आया हू। आपकी बेश कीमती अमानत को हम सारे जोखम उठाकर गोलियो की बौछार से निकाल लाये हैं। अब बराए मेहरबानी शुभ मुहूरत निकलवाकर, अपनी शरण मे ले लेवें।

बस-बस बस, वही बात आ पहुँची। वही क्षण आन पहुँचा। परीक्षा की घडी का सामना करने का समय जितना दिल धडकाने वाला होता है। आपने कितने ही जवाब रट रखे हो लेकिन इम्तिहान तो आखिर इम्तिहान है। बस बस बस। यह शब्द जयदयाल जी के अन्दर उनके तमाम शरीर की रगो को अन्दर ही अन्दर चटखा रहे थे। बस बस बस के द्वारा वह कहना चाहते थे कि लालाजी बस और कुछ मत कहो और कुछ सुना नही जाता, मुझसे। मैं कुछ जवाब देने लायक हूँ ही नही।

उन्हें अपने मन का आखिरी जुमला ही उचित लगा। उन्होंने हड़बड़ी में वही कह डाला—लालाजी मैं कुछ जवाब देने लायक नहीं हूँ।

लाला काशीनाथ जी ने सहज भाव से पूछा—क्यों कितनी देरी लगेगी। अब तो कुछ दिक्कत नहीं होनी चाहिए।

—मैं क्या कहूं। मनोज नहीं मानता।

—हम लोगों के बच्चे शर्मीले होते हैं। होना तो यह चाहिए था, जो दूसरे नौजवानों ने किया।

—मैं समझा नहीं ? जयदयाल जी का दिमाग ठीक से दौड़ने में असमर्थ था।

आपको ध्यान होना चाहिए। वहाँ बहुत से नौजवानों ने अपने हाथ (बराबर) की नौजवान लड़कियों का हाथ, देखते ही देखते ऐसे ही थाम लिया था। नजदीक के मन्दिरों में फेरे ले डाले थे। फिर उन्हें धर्मपत्नी के रूप में उस जलती आग से निकालने का जिम्मा बरबस ही ले लिया था। हालांकि इससे पूर्व उनकी शादी की किसी ने कल्पना तक न की थी। बस हमारे नौजवानों ने वीर बहादुरों जैसी चुनौती ले ली थी।

—हाँ हाँ ऐसे कुछ वाकयात मैंने भी देखे सुने थे। जयदयाल जी ने लालाजी के वक्तव्य का अनुमोदन किया। फिर किसी गहरी सोच में डूब गये। एक तो वो नौजवान बहादुर लड़के जिन्होंने अपनी मिसाल खुद कायम की और इधर अपना यह लाडला।

लाला काशीनाथ कह रहे थे—एक बार तो हमने भी सोचा आखिर तो इसी की है। ब्याहता न सही कुड़माई तो हुई है। मनोज के हाथ में बेटी का हाथ थमा दें। ले सम्भाल।

—ऐसा कर देते तो मुझ कुछ ऐतराज न होता। जयदयाल जी ने कहा और सोचने लगे। काश ऐसा हो ही गया होता तो वे कितने खुश और उन्मुक्त होते।

सेठजी कुछ उतावलेपन से कहे जा रहे थे—पर हमने सोचा पहले ही मनोज के कन्धों पर एक नौजवान बहन का बोझा है, इसलिए उसे ऐसे मौके पर, और परेशानी में डालना जायज नहीं।

—लेकिन अब वह हमारी, आपकी परेशानी को समझ ही नहीं रहा। जयदयाल जी ने किसी तरह कहा।

—चलो कोई बात नहीं। पहले उसका बम्बई से इधर का तबादला हो लेने दें।

—पर वह तो साफ मना करता है कि यहाँ शादी नहीं करूँगा। जयदयाल जी ने यह वाक्य ऐसे पूर्ण किया जैसे जबान पर बैठे बिच्छू को बाहर उगल दिया हो।

—हूं यह भला कैसे हो सकता है ?

—मैं शर्मिन्दा हूँ।

—अब हममे क्या कमी आ गयी। मकान, जमीन भले ही वहाँ रह गये। मगर धन-दौलत हम बचा लाये हैं। यकीन करें। आपको किसी चीज की कमी नही अखरेगी।

—आप मुझे इस तरह से और शर्मिन्दा न करें। जयदयाल जी ने हाथ जोडते हुए कहा।

—हमारी बेटी मे क्या नुक्स पैदा हो गया। किसी से पूछ लें। बिलकुल सही सलामत सिर्फ हमारे साथ ही आयी है। कहते-कहते लालाजी का स्वर एकदम रुआँसा हो गया, जिसे सुनकर कोई भी सहम जाता।

—ऐसा हरगिज नही सोचना लाला जी। मुझ पर लानत है। आपका मन दुखाया। पर क्या करू मैं? मैं मजबूर हूँ, कहते कहते जयदयाल जी सिसक पडे उन्होने लालाजी के पैर पकड लिए।

लाला जी गुमसुम थे। फिर भी यत्नपूर्वक उन्हें कंधो से पकडकर ऊपर उठाने लगे।

मुंडेर पर न जाने कहाँ कहाँ से आकर बहुत सारे कव्वे इकट्ठे हो गये। वह काँव-काँव चिल्लाये जा रहे थे।

थोडी दूरी पर बैठे तमाम घर वाले यह दृश्य देख रहे थे। कुन्दन का मूड उखड गया। उससे बाऊजी का रोना नही सहा गया। इसके लिए वह लालाजी को दोषी मानने लगा। मगर इसमे कही भाभी और बाऊजी की भागीदारी भी तो जरूर है। फिर भी अगर लाला जी न आते तो बाऊजी इतने दुखी न होते।

वह बीच मे आ गया और कव्वो को उडाते हुए अपने पूरे दमखम के साथ लाला जी को लक्ष्य करके बोला—बचपन की सगाई भी कोई सगाई होती है। अगर होती है तो ऐसी ही होती है। इसे टूटना ही चाहिए। भ्राजी को क्या समझ

वाक्य पूरा होता कि इससे पूर्व एक करारा तमाचा उसके मुलायम साँवले गाल पर पडा —बदतमीज, नालायक औलाद। तुमने बडो के बीच बोलने की यही तहज़ीब सीखी है। यह भाभी थी। उनकी नजर मे जैसे सारे अवसाद की जड, कुन्दन ही था। कुन्दन बुरी तरह से रो उठा। अलका ने उसे अपनी ओर खीचकर सीने से लगा लिया—वीर बडो की बातें बडे जानें।

दस पन्द्रह मिनट तक कोई नही बोला। सर्वत्र सूनापन छाया रहा। हाँ कुछ कव्वे अब भी मुंडेर पर रह रहकर बैठने-उडते रहे। काँव काँव करते रहे। माहौल को और बदमजा बनाते रहे।

आखिर एक दफा फिर लाला जी बोले। अबकी उनका मुह जमना की ओर था—बहन तुम ही कुछ कहो। कुछ उपाय करो।

जमना ने धीरे-से उत्तर दिया—मैं क्या कह सकती हूँ।

लाला जी ने कहा—आप ही इन्हें और मनोज को समझाइये।

—सच मानिये भाई साहब! बहुत समझा चुके उस नालायक को। क्यों हमारी नाक कटवाने पर तुला है। न माने तो फाँसी तो नहीं दे सकते। जमना की जबान जैसे छिल रही थी।

—आपके मन में कोई और बात हो तो खुलकर कह दें।

—हमारे मन में और कुछ भी नहीं है यकीन मानिये। हम खुद शर्मिंदा हैं।

—इससे क्या होता है। इस तरह तो हमारी लड़की की बदनामी होगी।

—जमाना बहुत आगे बढ़ रहा है। पहले वाली बातें नहीं। अबकी उत्तर अलका ने दिया।

बिना उसकी ओर ध्यान दिये, लाला जी जयदयाल जी से सम्बोधित हुए—कहिये तो आपके बड़े भाई साहब पोखर दास जी या आत्माराम जी से कहलवा दूँ।

—किसी से कुछ कहलवाने से कुछ नहीं होना। आप तो बस मनोज से 'हाँ' कहलवा दीजिये और दूसरे रोज शादी कर दीजिये।

—फिर भी एक बार और कोशिश कर देखिये। लाला जी की आवाज में करुणा थी।

इससे आर्द्र होकर जमना ने कहा—बेशक यह कोशिश वाला काम अब आप खुद ही कर देखिये। अगर वह मान जाता है तो सच, आपसे बढ़कर हमें खुशी होगी। हम तो ऐसे एसे जवाब देता है क्या बताऊँ, कहते हुए भी शर्म आती है।

—अब वह भी कह डालिये। सेठ जी ने मन को पक्का करके पूछा।

जमना ने मुह को कुछ और झुका लिया और बोली—कहता है, बरतन मँजवाने के लिए बेशक ले आओ। इस तरह कल को लड़की दुखी हो तब हम और आप सभी दुखी होंगे।

इसके बाद सेठ काशीनाथ, एक आह भरकर चुप हो गये। बिना एक गिलास पानी पिये शाम को अपने बक्से लेकर चले गये।

उनके चले जाने के बाद भी कई दिनों तक वातावरण बड़ा बोझिल बना रहा। जयदयाल जी यही कहते—मुझे भगवान कभी माफ नहीं करेंगे।

चौमासे का मौसम। धूप छाँव, हवा, घुटन, अँधियारा, रोशनी के रोगन में समाये छोटे बड़े दिनों का रूप रंग। इस रंग में रस घोलते, आल्हा ऊदल के भरपूर मस्ती लिए लम्बे पतले हाँफते घटते बढ़ते चीखते बेशुमार स्वर। स्वर बूढ़ों के, अधेड़ों, युवकों और बच्चों के। पाकड़ और पीपल के पेड़ों के नीचे माचों पर ढोलकों की थापों पर, मजीरों से छनती हुई यह आवाजें दिन भर मस्ती बिखेरती रहतीं—

आल्हा-ऊदल बडे लड़िया
इनकी बात कही न जाये
—तेरा बाप होगा। गधा उल्लू हरामी
जिस खेत मे ऊदल गरजे
हाथी खेल छोड भग जायें
—तू उल्लू के पिल्ले की दुम
—अबे दूगा एक झापड, नीच कर्मों के योगी

कुन्दन और उसकी टोली के लड़के आपस मे तकरार कर रहे थे। मामूली सी बात को लेकर उनके स्वर इतने ऊँचे हो उठे थे कि आल्हा ऊदल मण्डली के स्वरो को काटने लगे थे—बोल साले चलेगा या नही ?

और इधर इन लडको की बहस पर भी रह रहकर आल्हा-ऊदल सवार हो रहे थे।

तुम न भगियो समर भूमि से
चाहे तन धजी धजी उड जाय

कुन्दन कह रहा था—चाहे इगलिश इस्टीटयूट हो। अब छोडो। और पढाई मे लगो।

—हाँ, अब वहाँ मेमे जो दिखलायी नही देती, तो पढाई याद आन लगी शरीफ़जादो को।

—हाय जानी ! वह स्कट वाली कहाँ गयी, इगलण्ड या फिनलैण्ट। मन उदास कर गयी इन लौंडो का।

राग-दोष बरदाश्त नही हुआ, मडली के एक बूढ़े को। वह लडको को ॥ दी-ग-दी गालियाँ देने लगा—भागो साला जाकर अपनी अपनी माँ के मे घुस जाओ।

इतना सुनना था कि आपस मे झगडते हुए लडको मे 'एकता भावना लहरा गयी। पहले शफी ने मोर्चा खोला। उसी बूढे की लाठी उठा ली और हवा मे भाँजते हुए बोला—बुढ्ढ़ अगर अब भी तेरी अम्मा जिन्दा है तो लो, 'उसी में' तुझे पहुँचा आता हूँ।

कुन्दन ने उससे लाठी छीन ली। बोला—फिर भी बुजुर्ग है। मरने वाला। अपन इसकी मौत का इल्जाम अपने माथे क्यो लें।

शफी ने कहा—तो वायदा कर, तू इसे आज पाकिस्तान वाली गाडी मे ठूँस आयेगा। वह फिर से बूढ़े की तरफ लपका।

मैलू चाचा जो झकाझक सफेद कुर्ता, धोती पहने था, बीच मे आ गया। बोला—काहे अपन मगज खराब करत हो। ई बुढ़ऊ तो भाँग चढ़ाये बाले। तुम तो हाउस समाहेंऊ। आपन झगडा हमी प उतारन चले आये। खूब ! आवा अब

हमरे संगे बइठा, खाउआ खपुआ।

फिर क्या ? सभी तरंग में आ गये और झूमने लगे—

देश छोड़कर परदेसों में तेरा ध्यान समाया आय
मुद्दत बीत गयी सगटा म बेड़ा पार लगाओ आय।
या तो मेहर करो दामा पर अपना दरशन करवायें,
नहीं स्वामी लौट यहाँ से जायें अपने जिले सवारे जायें।

जितनी ही देर तक जाओ ध्यान के साथ सुरे बेसुरे चीखों अग स्वरा के संग 'आल्हा ऊदल' चलता रहा।

वहाँ से उठने के बाद लड़कों में फिर वही विवाद शुरू हो गया। सुनील ने सुमन से कहा—तुम्हें इन्स्टीट्यूट चलना पड़ेगा, नहीं तो उठाकर ले जाऊँगा।

—अच्छा! गाँव में अपना घर चलूँगा। इतना मन में तो चल ही रहे हैं। आज और नहीं।

लेकिन आज वहाँ पहुँचकर ही वे विस्फारित नेत्रों से देखते ही रह गये। क्या यह वही पुराविदान इन्स्टीट्यूट है या इतिहास के उजड़े हुए महल की कहानी। वहाँ न तो कोई वर्दी में सन्तरी था और न ही आसपास कहीं भी कोई माली काम कर रहा था। अन्दर कमरों में जाकर क्या देखते हैं चारों तरफ कोनों में मूँगफली और भुने हुए चनों के छिलके बिखरे पड़े हैं। साथ ही जगह-जगह बीड़ियों के अधजले टोंटे पड़े हैं। सफाई नाम की चीज नदारद। यह तो इंडियन इंस्टीट्यूट हो गया। सारे माइकों कहाँ गयी। क्या चाबी चली गयी। वे सोचते रहे। एक दूसरे से पूछते रहे। हाँ पूरे इन्स्टीट्यूट में सिर्फ एक चीज़ अब भी स्पष्ट रही थी।

उनका मन थोड़ा-सा भी रुख बदलने को नहीं हुआ। दुखी मन से एक-दूसरे का हाथ थामे वे लौट पड़े।

--सारी हैड क्वाटर मुरादाबाद भेज दी गयी कि अब किसी तरह की फिजूलखर्ची नही चलेगी।

—इससे क्या बचत होगी ? शफी ने पूछा।

अदली ने अपना रटा हुआ वाक्य हवा मे हाथ लहराते हुए बोला—सिपल लिविंग, हाई थिंकिग। यही अपना स्टडड है।

उसकी 'एक्टिग' देखकर लडके हँसने लगे, मगर एक कचोट मन पर बनी रही। कसा स्टैंडड ?

अपना स्टैंडड कुछ दिनो मे स्कूल मे भी दिखना शुरू हो गया। यह लोग विक्टोरिया रेलवे स्कूल मे पढ़ते थे। वहाँ आधी छुटटी मे एक पाव दूध चार पूरियाँ सब्जी और कोई सा एक फल मिला करता था। बरतन स्कूल की तरफ से सबको बँटे हुए थे। इन सबके एवज मे उनसे महीने के मात्र आठ आने लिए जाते थे। परन्तु धीरे-धीरे यह रकम बढती रही और खुराक घटती चली गयी। अत मे उन्हें सिफ थोडे से भीगे हुए चने मिलते और इन चनो के लिए उनसे दो रुपये वसूल किये जाते।

छात्र-छात्राएँ हैरान। यह क्या हुआ। वे आपस मे बहुत माथा पच्ची करते। अग्रेज तो अपने नही थे फिर भी हमारी भूख सेहत का ध्यान रखत। हमे खुश देखना चाहते थे। वे सामने नही आते थे। अब तो बहुत सारे नेता स्कूल चले आते हैं। भाषण देत है—पूर देश को आप सब बच्चो से आशाएँ बँधी है। देश को आगे ले जाने की जिम्मेदारी बच्चो की है। इन छोटे छोटे कधो पर बहुत-बहुत बोझा ढोने की ताकत आयेगी।

हैडमास्टर साहब भी चने बँटवाते समय यही कहा करत कि ऐसे ही भीगे चने खाकर घाडा कितना ताकतवर हो जाता है। कितना बोझा ढोता है।

तब से बच्चे एक दूसरे को घोडा घोडा कहकर चिढाते। एक दूसरे का पीछा करते। आधे से ज्यादा चने, दौड लगाते लगाते गिरा देते। वह उन्हे खारी-खारी, अजीब-सी गध लिए बदमजा लगते। वे इधर उधर थूकते हुए, पहले वाले नाश्ते दूध, फल, पूरिया को याद करते। मुह मे पानी भर आता। तब सुशील नीलेश, उर्मिला, कई बच्चे अनायास अग्रेजी शासन को याद करते—अग्रेज बादशाह आदमी थे। बच्चा का खयाल रखते थे।

कुदन उन्हें 'भूखा' कहता—अग्रज जालिम थे। हमारे गाधी जी, लाला लाजपतराय पर लाठियाँ बरसाते थे। अपनी गलियो पार्कों से गुजरने तक नही देते थे। आजादी माँगने वाला, वन्देमातरम कहने वालो को फाँसी पर चढा देते थे। जेल से हमारे नेता सन्देश भेजते। गुलामी की घी चुपडी से आजादी की सूखी रोटी अच्छी होती है ।

सुशील उसे बीच मे टोकता तो बेटा खाओ आजादी के भीगे चन। कल से

गाय को डालने वाली सूखी रोटियाँ ला दूगा। खाना।

कुन्दन पलटकर जवाब देता—आजादी की खातिर हमने बहुतेरी ठोकरें और ऐसी रोटियाँ खायी। अब तुम लोग भी ऐसी चीजो का स्वाद लो और आजादी की थोडी कीमत चुकाओ।

हरिशकर कहता—मानना पडेगा, कुन्दन बातें अच्छे ढग से कर सकता है। नेतागिरी करेगा। भाषण दिया करेगा।

दूसरे दिन से लडको ने चने लेने से इन्कार कर दिया कि नही खायेंगे। हम घोडे नही हैं।

इस पर उन्हे बेंतो की सजा दी गयी।

कुन्दन ने कह दिया—जब हमारे स्वतन्त्रता सेनानी जेलो मे भूख हडताल करते थे तो उन्हे भी मार पडती थी।

सुनकर हैडमास्टर साहब उबल पडे—कौन बोला ? देखा कुन्दन है तो बेत को यू ही हवा म लहराते हुए कहा—चलो बाकियो को माफ किया। चने ले लिया करो भाई। पैसे तो कटेंगे ही।



30 जनवरी 1948।

शाम का धुधलका छाने लगा था। सर्दी बढने लगी थी। कॉलोनी मे अभी तक फुटबाल का खेल चल रहा था—हर दिन की तरह।

हरिशकर स्कूल की फुटबाल टीम का कैप्टिन था। फुटबाल उसी के कब्जे मे रहती थी। अक्सर वह इसे घर ले आता था। शाम होते ही मुहल्ले के सारे लडके उसके घर पर जैसे धावा बोल देते, निकल। निकाल। बाहर आ, लेकर। अगर हरिशकर जरा आना-कानी करता तो लडके पूरे तैश मे आ जाते—अबे निकाल ना। क्या तेरे बाप की है। हरिशकर भी शान मे आ जाता। नही देता फुटबाल। क्या कर लोगे। लडके कहते, बतायें क्या कर लेंगे।

बाकी लडके बोलते—हाय हाय। सत्यानाश हो।

हरिशकर दरवाजा बन्द कर लेता—भौंको और भौंको।

बाहर उसी तरह—हाय हाय मुर्दाबाद के नारे लग रहे होते।

माँ कहती—क्या गालियाँ खा रहा है। देनी तो तुझे है ही।

हरिशकर कहता—वाह यह नारेबाजी यह प्रदशन नेता लोगो के दरवाजो पर होते हैं। इसमे कितनी शान है। फिर वह अपने आँगन मे से ही फुटबाल को पैर स उछाकर कॉलोनी में फेंक देता।

आवाजें आतीं—हरिशकर जिन्दाबाद। अबे अब तू भी निकल आ। जोर की

तरह न शरमा।

लगभग खेल की शुरुआत ऐसे ही होती। फिर सारे लड़के दो टीमों में बँट जाते। कभी कभी फुटबाल क्वाटरों में जा गिरती। औरतें गालियाँ निकालने लगतीं। रँडुओ, हरामियो। लड़के खी खी करके हँसने लगते। औरतें और चिढ़ जातीं—नहीं देती बाल। माँ को बुलाकर लाओ। उसी का लड़का कहता—तू ही तो अम्मा जान है मेरी। ला।

—अच्छा तो तू भी शामिल है इन गुण्डों में।

फिर से सारे लड़के मुर्दाबाद के नारे लगाने को तैयार हो जाते। औरत—मयानाश लो, कहती हुई बॉल फेंक देती।

उस दिन कुन्दन और शफी पाकिस्तानी टीम के हैड थे। उनकी टीम जीत गयी तो पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगने लगे। कुछ लड़कों ने इसका विरोध किया। कुन्दन ने भी कहा—यह गलत है। शफी ने कहा—तो फिर तू पाकिस्तानी टीम में क्यों आता है। दिल तो तेरा पाकिस्तान में है।

—हाँ है। इसमें क्या शक है। पर तू तो मुसलमान होने के नाते पाकिस्तान में दिल रखता है।

—हाँ इसमें क्या शक है।

—तो भाग जा पाकिस्तान।

—तू भाग साले तेरा ही घर वहाँ पर है। मेरा थोड़े ही है।

देखते देखते दोनों मित्रों में हाथापाई, फिर पत्थरबाजी की नौबत आ गयी। दोनों के माथे से खून बहने लगा। लोग बाहर आकर बीच-बचाव करने लगे। एक आर० पी० एफ० का सिपाही वहाँ आ गया। वह शफी के बाप से किसी बात पर रंजिश रखता था। कहने लगा—तुम लोग हो ही शातिर। चलो मेरे साथ। कहता हुआ शफी को घसीटने लगा।

कुन्दन शफी से लिपट गया—नहीं-नहीं यह मेरा सबसे प्यारा दोस्त है।

—वह कैसे! अभी तो इससे बुरी तरह से झगड़ रहे थे। एक आदमी हँसा।

—यह हमारा अपना मामला है। किसी को दखल देने की जरूरत नहीं।

—वाह खूब, इतना प्यार कैसे उमड़ा पड़ रहा है।

—शफी की शक्ल, शेखूपुरे वाले मजूर से मिलती है जो मेरा पक्का दोस्त था। कुन्दन ने खुलासा किया।

सभी लोग हँसने लगे। दोनों दोस्त हाथों में हाथ लिए वहाँ से खिसक रहे थे कि तभी वहाँ पर बुरी तरह से दहशत फैल गयी। कोई आदमी स्टेशन की तरफ से आया और भीड़ के बीच आकर फुसफुसाने लगा—सुना है गांधी जी की हत्या हो गयी।

—हैं कैसे इससे अधिक कुछ पूछते नहीं बन रहा था।

—सुना है किसी ने उन्हें सुबह गोली मार दी। शायद कोई पंजाबी था।

—अब पंजाबियों की खैर नहीं।

तभी दो और आदमी वहाँ आये और कहने लगे—कोई कहता है मुसलमान था। कोई कहता है संघ का आदमी था। पर यह बात पक्की है कि उनको गोली मार दी गयी है दिल्ली के बिरला मन्दिर में।

—उन्होंने किसी का क्या बिगाड़ा था।

मुहल्ले में बिजली नहीं थी। कुछ लोग रेडियो सुनने शहर की तरफ चले गये। ज्यादातर लोग उदास परेशान अपने अपने घरों में जा दुबके।

दूसरे रोज कॉलोनी में पुलिस आयी और ढूंढ ढूंढकर हर उस आदमी, लड़के को पकड़ पकड़कर साथ ले गयी जो आर० एस० एस० के सदस्य थे।

कुन्दन के घर भी पुलिस आयी तो कुन्दन डर गया। इन्स्पेक्टर के साथ चार सिपाही थे। कहा—कुन्दन तुम्हें हमारे साथ थाने चलना होगा।

—इसने क्या किया ? जमना ने सहमते हुए पूछा।

— यह भी तो संघ में जाता है।

कुन्दन ने कहा—मैं संघ में नहीं जाता। शुरू शुरू में दो तीन बार गया था। मुझे वहाँ के संघ वाले अच्छे नहीं लगे। बदनाम, बदचलन हैं। फिर मैं कभी नहीं गया।

—यह सब वहीं कहना।

अलका और हरमिलाप रोने लगे। जमना भी विलाप करने लगी—पाकिस्तान तो पाकिस्तान अब हमें हिन्दुस्तान वाले भी नहीं जीने देंगे। हे भगवान हम अब कहाँ जायें ?

इतने में और औरतें भी मुहल्ले के बीचों बीच आकर छाती कूटने लगीं—हाय सत्यानाश हो ! क्या हमारे आदमियों और इन मासूम बच्चों ने गांधी को मारा है ?

—बहन जी हमें जो आर्डर हुआ है, हमें वही करने दीजिये। हम हुक्म के गुलाम हैं। हमारे काम में अड़चन डाली तो हमसे बुरा कोई न होगा, हाँ । एकदम लम्बे सिपाही ने पतले स्वर में हाथ हवा में लहराते हुए कहा।

मुहल्ले के दो बड़े आदमियों, चार युवकों तथा पाँच बच्चों को पुलिस अपने साथ ले गयी।

इतने लोगों को पुलिस की हिरासत में जाते देखा, तो जमना को कुछ कुछ तसल्ली हुई। वह पाकिस्तान से बेदखल होते वक्त अपार भीड़ को देखकर तथा उनकी तकलीफों को देख सुनकर, कहा करती थी—जो सबके साथ वही हमारे साथ। यह सब अकेले के साथ हो तो आदमी सोच-सोचकर ही मर जाये। उसे फिर से अपने उन्हीं वाक्यों की याद हो आयी—जो सबके साथ वही हमारे साथ।

हे बसी वाले लाज रखना।

फिर सारा महल्ला इकट्ठा होकर, पूरी स्थिति से निपटने तथा इस मुसीबत पर विचार करने लगा। कुछ लोग अपने रसूख वालो को साथ लेकर कोतवाली की तरफ चल दिये।

बाऊजी टूर पर थे। हरमिलाप, अलका और जमना पर उदासी छायी रही। वह बाऊजी के आने की प्रतीक्षा करते रहे। बस बार बार घड़ी देखते और दरवाजे तक हो आते।

साढ़े तीन बजे जयदयाल जी घर पहुँचे तो हरमिलाप उनसे लिपटकर सिसकने लगा।

—क्या हुआ? क्या भाभी ने मारा? वे पूछ ही रहे थे तो जमना को भी रोते पाया।

फिर किसी बुरी सूचना की आशका से वे काँप गये। कोई उनके प्रश्नो का उत्तर नही दे रहा था। अन्त मे अलका ने ही उन्हे बताया कि कुन्दन को पुलिस पकड़कर ले गयी है।

यह सुनकर तो वे और विचलित हो उठे—क्या किसी से मार पिटाई हो गयी?

जमना ने उन्हे धीरे धीरे पूरी बात बतायी—नही कॉलोनी के सभी सघ वालो को भी ले गयी।

जयदयाल जी बोले—हाँ, रास्ते मे मैंने भी सुना तो था कि पुलिस आर० एस० एस० वालो की धर पकड कर रही है। पर अपने कुन्दन ने तो कब का सघ मे जाना छोड रखा था।

—किसी ने उसका भी नाम बोल दिया होगा। जो भी पकडा जाता, वह एक दो के और नाम भी ले लेता है।

तभी आँगन की तरफ से दस्तक हुई। देखा बाहर दो आदमी खड़े थे। एक बोला—अच्छा बाबू जी आ गये हैं। हम तो बहन जी को तसल्ली देने आय थे। कोतवाली से ही होकर आ रहे हैं। शाम तक बच्चो को छोड देंगे। वे बता रहे थे इस बार तो उन्हें सबको पकडना ही पडता है। फिर छटाई कर करके धीरे-धीरे छोडते रहते हैं। दो एक सघ के बडे पदाधिकारियो को रोककर साथियो को रिहा कर देंगे।

मगर शाम तक किसी को चैन कहाँ सर्दियो मे यू ही अधेरा जल्दी छाने लगता है। बाबू जयदयाल जी ने वर्दी उतारी। दूसरे कपडे पहन। रेलवे मजिस्ट्रेट के पास पहुचे। माथे से थाडे गजे गोरे रग के मजिस्ट्रेट कश्मीरी ब्राह्मण वृद्धिराजा थे। उन्होने जयदयाल जी को तसल्ली दी, कहा—बेशक मेरा नाम चुपके स ले लेना। मगर मेरा साथ चलना ठीक नही।

—मैं समझता हूँ जी, इस बात को। कानून को, फिर जरा अटके, पर कानून का यह कौन-सा दस्तूर है। हत्या बिरला मन्दिर दिल्ली में हो रही है और बच्चे बरेली के पकड़े जा रहे हैं।

—आखिर इंटरनेशनल फेम की हस्ती को गोली मारी गयी है। कोई मामूली बात तो नहीं हुई। आगे देखिये कहाँ कहाँ से किस किस को नहीं पकड़ा जाता। आपकी मनोदशा देखकर इस वक्त आपसे कोई बहस नहीं करना चाहता। कानून तो कानून के तरीके से ही चलेंगे। उन्होंने जबरदस्ती एक प्याला चाय पिलाकर ही उन्हें भेजा।

जयदयाल जी फिर से अपने रेलवे क्वाटर आ गये। वहाँ से और कई लोग उनके साथ कोतवाली रवाना हुए। रास्ते में एक चक्कर आपस में बहस-सी होती रही कि यह बहुत बुरा हुआ। क्यों लोग कानून को अपने हाथ में लेते हैं। गांधी जी कोई ऐसी-वैसी हस्ती थे। वह तो दया की जीती-जागती मूर्ति थे। जो कुछ भी हुआ बहुत बुरा हुआ। मगर अब जो कुछ भी होने वाला है, उससे भी बुरा होने वाला है। बहुत से निर्दोष लोग धर लिए जायेंगे।

कोतवाली इंचार्ज ने उन सबसे हाथ जोड़कर कहा—आप सब हमारे प्रबुद्ध नागरिक हैं। रात हो रही है। हमें और भी काम करने हैं। आज तो आप लोग जाइये। अभी तो और भी गिरफ्तारियाँ होनी हैं। दिल्ली से वायरलेस सन्देश आया है, एक जाँच अधिकारी आयेगा, तभी इन लोगों को छोड़ा जायेगा।

वह जयदयाल जी को भी थोड़ा जानता था। उन्हें एक तरफ ले जाकर बोला—समझिये मेरा बच्चा है। घर पर ही बैठा है। एक को तो छोड़ नहीं सकते। सरकार पंजाबियों, सिंधियों पर ही ज्यादा शक कर रही है! बेचारे गांधी जी पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये दिलवाने के चक्कर में मारे गये।

जयदयाल जी की जबान न चाहते हुए भी तल्ख हो गयी—चार आने[1] का भी वह कांग्रेसी नहीं था। फिर भी हर वक्त कांग्रेस पर दबाव। गवर्नमेंट पर दबाव। हर वक्त अनशन। हर वक्त मरने की धमकियाँ। वाह गांधी बाबा।

उन्हें बातें करता देख बाकी लोग चले गये कि शायद अकेले कुछ कर लें।

इंचार्ज ने धीरे से कहा—आप ठीक फरमाते हैं जी। पर इस वक्त आपका यह सब कहना, आपके लिए भी मुसीबत बन सकता है। आपका बच्चा अभी गवर्नमेंट कस्टडी में है। समझे आप।

जयदयाल जी ने धीरे से मुस्कराने की कोशिश की—कुछ भी हो, उन्हें इस

---

1 उस समय कांग्रेस पार्टी का सदस्यता शुल्क मात्र चार आने था। आजादी का लक्ष्य पा लेने के बाद गांधी जी कांग्रेस पार्टी के बने रहने का औचित्य नहीं मानते थे अतः वे इसकी सदस्यता से अलग हो गये थे।

तरह गोली से उड़ा देना तो दरिंदगी की निशानी है। अंग्रेज भी उनकी इज्जत करते थे।

—जी हाँ, जी हाँ ! कोई भी अपने किये की सजा से बच नही सकता। अपनी वर्दी पर हाथ मारते हुए वो जाने कौन सी रौ मे बह चला था कि तभी बाहर किसी जीप के रुकने की आवाज सुनायी दी। वह उधर ही को लपका।

जयदयाल जी एक मिनट तक यू ही खड़े सोचते रहे। उनके पास अब कहने करने को कुछ नही था। अत निराश भाव से बायी तरफ के छोटे गेट से बाहर आ गये।

उन्हे अकेला, घर मे प्रवेश करते देखकर, जमना बिलख पड़ी—क्या हुआ मेरे लाल को। लाये क्यो नही उसे।

—अभी उन्हे अपनी कागजी कारवाइयाँ पूरी करनी हैं। किसी को भी तो अभी नही छोड़ा। कल दिल्ली से कोई बड़ा अफसर आयेगा। वह जाँच करेगा। आर्डर करेगा, तभी छोड़ेंगे।

जमना अपना दिमाग लड़ाते हुए फिर बोलने लगी—यहाँ के बच्चो का चाल चलन, यहाँ के अफसर जानते हैं या दिल्ली के अफसर ? सब झूठ है। आपको टरका दिया। हाय मेरे लाल का क्या होगा। कैसे मुश्किल से जलती आग से निकालकर लायी थी।

जयदयाल जी ड्यूटी से थके हुए आये थे आते ही दौड़ धूप शुरू हो गयी थी। दमे से साँस फूल गयी। वे चारपाई पर गिर पड़े।

अलका पानी का गिलास भर लायी। मुह पोछने के लिए छोटा तौलिया उन्हें दिया।

जयदयाल जी उसी प्रकार बड़बड़ाने लगे—औरतें क्या समझें, कानून क्या होता है। दस्तखत तो बड़ा अफसर ही करता है, चाहे वो कुछ भी न जानता हो। काम तो उसी दस्तखत के सहारे ही होते हैं। हम जानते हैं। हम सरकारी नौकर हैं। तुम औरतें घर पर बैठी सिर्फ रो सकती हो।

इन बातो का सिलसिला चल ही रहा था कि ऐसी ही बातो का दूसरा दौर दरवाजे पर आ पहुँचा। *कामेश्वर बाबू थे और भी स्टाफ के चार-पाँच लोग साथ* थे। जिस जिसको भी इस घटना का पता चला, चले आ रहे थे।

जयदयाल जी ने कहा—हम लोग सिर्फ अपनी तकलीफ, अपने दर्द की बात करते हैं। इतना बड़ा प्रशासनतन्त्र है। उन्हे तो अपने अफसरो के हुक्म के मुताबिक चलना पड़ेगा। मैं खुद अपना आपा खो बैठा और समाज की महान हस्ती के बारे मे कुछ अनाप शनाप बोल बैठा। बस को इसी महात्मा की मन्दिरो

मे मूर्ति बनाकर पूजा होगी। इनकी समाधि पर विदेशी भी आकर फूल-मालायें चढायेंगे।

—यह तो है, एक विस्थापित बोला—जिन्ना साहब की मजार बनेगी तब वहाँ विदेशी, बल्कि अपने मुल्क के लीडर भी फूल-मालायें चढायेंगे, जिसने न जमीन को बख्शा न इसान को। यह तो सरकारी नीतियाँ रीतियाँ होती हैं। इनको निभाना ही पडता है, चाहे मन मे उसके लिए गाली ही क्यो न हो।

—आखिर गाधी जैसे व्यक्ति को महात्मा का दर्जा ऐसे तो नही मिला। ललित किशोर, जैसे आत्म मथन के स्वर मे बोले।

कामेश्वर बाबू बोले—पब्लिसिटी का जमाना है, ऊपर से भेड चाल। वसे भी मानव को देवता बना देना हम लोगो की परम्परा रही है। एक अच्छे आदमी की तरह उनमे बहुत सी खूबियो के साथ-साथ कुछ कमजोरियाँ भी थी। हाँ राजनीति मे न आते तो सन्त अच्छे थे।

एक लडका जो किसी तरह गिरफ्तारी से बच निकला था। बोला—हाँ कुछ लोग तो उन्हें भगतसिंह को फाँसी से न बचाने का दोषी मानते हैं। अग्रेजो का पुलिस मैन और क्रातिकारियो का दुश्मन कहते हैं। जब स्वतन्त्रता आन्दोलन पूरी तेजी पर होता, वे अनशन पर बैठकर उसमे ठण्डा पानी डाल देते। इससे अग्रेज ज्यादा देर तक हिन्दुस्तान मे टिके रहे। न जाने और क्या-क्या कहते हैं।

उसी लडके का साथी गिरिजा शकर जो इतिहास और राजनीति मे रुचि रखता था। बोला—लोग-बाग तो बेसिर पैर की भी हाँकते हैं।

आर्य मूर्ति ने कहना शुरू किया। वे अक्सर सभाओ मे लम्बे भाषण दिया करते थे—हो सकता है, तुम अपने हिसाब से ठीक कहते हो। इन बातो के कोई मजबूत सबूत या तो होते नही या अपने स्वार्थवश इन सबूतो को ढका भी जाता है, मगर एक बात स्पष्ट है कि कोइ भी बात बिलकुल आधारहीन भी नही होती, जो जनमानस पर छा जाती है उसमे दम होता है। हाँ, सामान्य व्यक्ति का मस्तिष्क इतना तेज नही होता और न ही उसकी स्मरण शक्ति, तारीखो, घटनाओ, दस्तावेजों को ब्योरेवार याद रख सकती है। ऐसे लोग दूसरे पक्ष के तर्कों का सही सही उत्तर दे पाने मे असमर्थ रहते है इसीलिए उनकी बातो को बेसिर पर की कहकर उडा दिया जाता है जबकि उनकी बात की पृष्ठभूमि भी बहुत गहरी होती है। अपनी सभ्यता, सस्कृति, नतिक मूल्यो आदि पर आधारित। इसी को कहते हैं लोकवाद का महत्व।

—हाँ, इस हिसाब से तो आप ठीक ही फरमाते हैं गिरिजा शकर बोला—एक काबिल वकील अपने मुवक्किल को कोट से बाइज्जत बरी करवा लाता है, सिर्फ तर्कों के आधार पर। मगर तब भी आपने देखा होगा लोग, मुजरिम को मुजरिम ही मानते हैं। उसके वकील को भी कोई-कोई अच्छी निगाह से नहीं

देख पाता। आम आदमी के पास वकीलो जैसे तर्क या कानूनी दाँव पेच कहा हो सकते हैं। वैसे हर चीज का सबूत हुआ भी नही करता।

देर हो गयी तो सब लोग उठ खडे हुए। जयदयाल जी और साथ ही हरमिलाप उन्हें छोडने बाहर तक आये। तब फिर से वही बातें शुरू हो गयी। कुछ और लोग भी आ गये। वे सब क्वाटरो की लम्बी दो पक्तियो के बीच खडे रहे। तूफान मेल के इजन ने प्लेटफाम पर पहुँचकर बुरी तरह से चिघाडना शुरू कर दिया।

—अरे तो साढे बारह बज गये। बाबू जयदयाल ने कहा। वे और प्राय सभी स्टाफ वाले इजनो की ह्विसलो को बडे आराम से पहचानते थे। बाते और लम्बी खिंचती चली जा रही थी। बेचैनी का आलम। सभी का यही लग रहा था। घर जाकर बेचनी पीछा नही छोडेगी। नीद नही आयेगी। फिर शाहजहाँपुर पैसेंजर का इजन गजने लगा। यानी डेढ बजे से ऊपर का समय हो गया। तब सभी अपने अपने क्वार्टर की तरफ धीमे कदमो से चल दिये।

जमना, अलका अभी तक जाग रही थी। एक-दूसरे को तसल्ली दे रही थी। वही बेडा पार लगायेगा, जिसने पाकिस्तान से निकाला है। हम कौन हैं, सोचने वाले। पर बच्चा है। डर जायेगा। अकेला है। कहाँ अकेला है। कितने दूसरे लोग है। और बच्चे भी हैं। एक दूसरे को देखकर हौसला बढा रहता है। पर पुलिस वाला का रुख और पूछताछ का ढग बडा खराब होता है। पर यह तो सबके साथ है। हम अकेले थोडे ही हैं।

बाबू जयदयाल ने घर मे कदम रखा तो जमना ने कहा—कुछ कीजिये। थोडा-बहुत ले देकर, छुडवा लाइये मेरे लाल को।

—क्या पागलो की सी बातें करती हो। ऐसे मे क्या कोई कुछ लेने की हिम्मत कर सकता है। फिर क्या जुर्म किया है उसने। पता है इसका उल्टा असर पडता है। फिर तो उनकी चाँदी हो जायेगी। वे सभी से कुछ-न-कुछ वसूल करने लगेंगे।

दूसरा दिन और दूसरी रात भी ऐसे ही गुजरी। तीसरे दिन आठ बजे के करीब सभी बच्चे, युवक घर आ पहुँचे। जमना ने कुन्दन को सीने से लगा लिया और रोने लगी—चल कपडे बदल। क्या शक्ल निकल आयी है। हाय रे, यह गरदन कन्धो पर लाल लाल फफोले—क्या पुलिस ने मारा?

—नही-नही, यह तो चाचाजी वाली बंडी पहनने से हुए हैं।

—ऊँह अलका जरा अटकी, हाँ हाईजीन की किताब मे लिखा था—मन की मर्जी के खिलाफ पहनने से एलर्जी हो जाती है।

बाबू जयदयाल भी घर पर ही थे। उन्होने छुट्टी ले रखी थी। दौड भाग करनी होती थी। कचहरी, कोतवाली, बडे लोगो के बँगलो के चक्कर। इस दौरान घूम फिरकर वही चर्चाएँ। कैसा शासन आ गया है। किसी को भी तो नही बख्शा। और-तो-और परम राष्ट्रवादी नेता वीर सावरकर तक को गिरफ्तार कर लिया।

शाम के वक्त भी वैसी चर्चाएँ, किन्तु थोड़े दूसरे ढंग से। कुन्दन के क्वाटर पर कुछ लोगों की महफिल जम रही थी। सबने, विशेष रूप से जेल से लौटे हुए बड़ी चुहलबाजी से अपने-अपने संस्मरण सुना रहे थे और एक-दूसरे को नीचा दिखा रहे थे।

नीलेश बोला—पूछताछ तो खूब करते थे। किस किसको जानते हो। सर सब पासक का नाम बताओ। पूछते हुए सिपाही डण्डा घुमा रहा था। घबराकर मेरे मुंह से निकला—अच्छा मास्साब कल याद करके बताऊँगा। वह हँसने लगा।

सुशील बोला—पूछते थे गांधीजी को कभी देखा है? दिल्ली में तुम्हारा कौन कौन है। फिर जयदयाल जी से कहने लगा—ताऊ-ताऊ कुन्दन ने तो इन्सपेक्टर के पाँव पकड़ लिए थे।

—भक्क! कुन्दन ने उसे धमकाया, तू कैसे समझ सकता है इन बातों को।

थोड़ा रुकने के बाद कुन्दन फिर बोला—कितनी देर रात तक तो बारी बारी सबकी पेशी होती रही। जब सोने का मौका दिया तो भी नींद नहीं आ रही थी। पुरानी बातें याद आती रहीं। सुबह चार के घण्टे सुनायी देने के बाद नींद आयी तो सपने शुरू हो गये।

इन्सपेक्टर ने उठाया—वह एकदम सफेद कपड़े पहने हुए था। डील डौल शेखूपुरे वाले स्टेशन मास्टर गोकुल चाचाजी वाला। मैं आँखें मलता हुआ, उनके पाँव छूने लगा। और सच में पूछ भी बैठा—चाचाजी! आपको तो मुसलमानों ने शेखूपुरे स्टेशन पर मार डाला था। पुलिस की नौकरी कैसे मिल गयी।

वे हँसने लगे। बोले—बच्चे तुम्हें गलतफहमी हुई है। बस इतनी-सी बात थी।

सब हँसने लगे तो कुन्दन बोला—मैंने माफी माँगने के लिए पाँव थोड़े ही छुए थे।

जमना ने आह भरी। बाबू जयदयाल भी अपनी उदासी न छिपा सके। क्या से क्या हो गया। पुराने स्टेशन, पुराने लोग, पुरानी यादें, मन मस्तिष्क पर छाकर कचोटने लगीं।



गर्मियों की छुट्टियाँ हुईं। पन्द्रह रोज ही पूर्व सूबेदार रोशनलाल कराची से समुद्री रास्ते से बम्बई पहुँच गये थे। इससे सिर्फ चार रोज पहले मनोज का तबादला, बम्बई से कासगज हो चुका था। इस प्रकार साला जीजा की आपस में मुलाकात नहीं हो पायी थी।

चिट्ठी आयी थी कि सूबेदार साहब जल्द ही अलका को लेने आने वाले हैं।

सरकारी रिहाइश मिलते ही, वे आ जायेंगे।

अलका का कहना था, हमे बार बार छुट्टियाँ नही मिलती। भाजी की शादी कर ही दो। दिल्ली से सुमित्रा जीजी और जीजाजी को बुला लो।

बाबू जयदयाल ने कहा—मनोज ने तो शादी के लिए मना कर दिया है। मना लो। मेरी खुशकिस्मती। पाप से निजात पा जाऊँगा।

—क्या नादानी की बातें करते है आप? जमना ने कहा, वहाँ थोडे ही होगी।

—तो फिर?

अलका बोली—सत्या के साथ तैयार हो जायेंगे।

—यह कैसे सोच लिया, तुमने? बाबू जयदयाल ने चकित होकर पूछा। वह हरामी, केदारनाथ उसके यहाँ मुमकिन नही।

जमना ने कहा—उसे छोडो। यह इन्ही लोगो का चलाया हुआ चक्कर है। आप आदमियो को क्या पता।

बाबू जयदयाल ने कहा—तब तो लाला केदारनाथ को भी पता नही होगा। पियक्कड कही का।

जमना ने कहा—हो सकता है, हो, हो सकता है न भी हो। आप बात करोगे तो पता चल जायेगा।

बाबू जयदयाल ने कहा—नही। लडकी वाले को ही पहल करनी चाहिए।

जमना ने कहा—छोडिये, यह लडकी लडके वाली पुरानी बातें। शादी हो जाये तो मुद्दतो की थकावट दूर हो जायेगी। चहल पहल से घर मे रौनक लौट आयेगी। है ना।

यह बाते सुनकर बाबू जयदयाल को अजीब सा लगा। मानो यह बातें मात्र बातें न होकर बहुत विचित्र सी जानकारी हो। जानकारी से बढकर बहुत बडा रहस्य हो, जिसका पटाक्षेप आज अचानक उनके सम्मुख आ खुला है।

इन बच्चो का क्रियाकलाप, उनके सम्मुख, इस रूप मे भी, किसी दिन आ प्रकट होगा, उन्होने कल्पना भी नही की थी। अब क्या हो? वह सोचते रह गये।

फिर भी मन के किसी कोने मे हलकी-सी गुदगुदी भी हुई। सत्या जैसी स्वस्थ गोरी चिट्टी लडकी। ऊपर से सुरीले गीत गाने वाली। ऐसी लडकी का पुत्रवधू बनकर घर मे आना वाकई रौनक का आना हुआ। इसमे बुरा क्या है। गुदगुदी के साथ उत्साह भी उपजा।

वे हर रोज इन्ही बातो को लेकर सोचते और प्राय हर रोज जमना उनसे पूछती—वहाँ तक पहुँचे। आप तो बस बरेली ही बैठे हैं। कम-से कम कासगज तक तो हो आते। हो सकता है हमारा सोचा हुआ गलत ही हो।

आखिर एक दिन बाबू जयदयाल छुट्टी लेकर कासगज के लिए चल पडे कि पहले मनोज के मन को टटोल लिया जाये। ताकि इस बार भी कोई गलत कदम

न पड़ जाये।

यहाँ तक तो उन्होंने सब अनुकूल ही पाया। मगर वापस बरेली पहुँचकर, उनकी कल्पना में, बार-बार, सामा केदारनाथ एक बहुत बड़े पत्थर की तरह आकर अड़ जाता। इस खोरी दे (ससुरे) से माथा कौन मारे।

—न बाबा न। उसके सामने मैं एक बार तो शैतान भी भाग पड़ा हो।

केदारनाथ थोड़े लापरवाह किस्म के शख्स थे। कुछ-कुछ अक्खड़ भी। चौड़े आकार का सख्त चेहरा। मुस्कराते तो लगता कहीं से हँसी का टुकड़ा लाकर चिपका दिया है। बच्चों को नियन्त्रण में रखने के नाम पर भी सख्त जबान रखते थे। अपने को ऊँचे खानदान का तथा मरदान का पठान बताते थे। अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझते थे। अपने साथियों से थोड़ा अलग चलने में अपनी शान मानते थे। इसीलिए वे दूसरों की नजरों में 'अक्खड़' कहलाते थे। मौका बेमौका उनको एक पग की जरूरत पड़ती रहती थी। खास तौर से रात को। कई बार, रात की ड्यूटी में यात्रियों की टिकटें चैक करने की बजाय, गार्ड करेज में या फर्स्टक्लास में ऊपर की बर्थ पर बत्ती बुझाये पड़े मिलते।

बाबू जयदयाल, उसका रहन सहन, पीना पिलाना और इस झूठी नवाबी अकड़ को नापसन्द करते थे। उन्होंने सोचा लड़के वालों की तरफ से प्रस्ताव सुनकर उसकी अकड़ आसमान तक जा पहुँचेगी। फिर उसका कोई भरोसा नहीं कि क्या कह बैठे।

अपनी इस सोच के तहत बाबू जयदयाल जी फिर से कई रोज तक अपने तक ही बने रहे मगर अब की जमना तो जैसे हाथ धोकर पीछे पड़ गयी। जब भी मौका मिलता वही प्रश्न—मिले कि नहीं। कोई बात हुई? उनकी कौन-सी ड्यूटी चल रही है? स्टेशन पर या गाड़ी में तो मिलते ही होंगे।

एक दिन तंग आकर बाबू जयदयाल ने अपने मन की कह दी—दरअसल मुझे वह आदमी पसन्द नहीं है। मुझे ही क्या, कोई भी पसन्द नहीं करता।

जमना ने उत्तर दिया—जिसे आप पसन्द करते थे। उसकी लड़की को मनोज ने पसन्द नहीं किया। हमें केदारनाथ लाख नापसन्द हो, मगर बच्चों की खुशी तो देखनी ही पड़ती है। सत्या गाती कितना बढ़िया है। गायक ससुर को गायिका बहू मिल जायेगी तो पूरा घर चहचहा उठेगा। आपको कितना अर्सा हुआ कुछ गाकर ही नहीं सुनाया।

— सच कहूँ सारा सामान एक तरफ—मेरा ग्रामोफोन, हारमोनियम एक तरफ। ये दोनों चीजें आ जाती तो बस। बिना हारमोनियम, मेरा गाने का मूड नहीं करता।

—दहेज मे हारमोनियम ही माँग लेना।

—तौबा! मेरी तो उस कपटी से बात करन की हिम्मत नही पडती मैं और किसी से कुछ माँगू ?

—बस लडकी माँग लीजिए।

—और किसी से कहा तो उससे वह भी दू। इस शराबिए से हरगिज नही।

—तब ठीक है, मैं ही बात कर लेती हूँ। बच्चो की खुशी की खातिर। मुझे उनकी ड्यूटी बताओ

—अलीगढ से दोपहर की गाडी से आयेगा।

शाम को जब जमना, घर वापस लौटी तो चेहरा जैसे किसी ने छीलकर रख दिया था। कितनी अच्छी (शाइस्ता) साडी से वे अपने आपको ओढ ढककर गयी थी। घूघट की ओट लेकर साथ ही बसो का भी जरा आगे खडा कर बात शुरु की थी। मगर उन्हे तो लाला केदारनाथ ने उसे बीच आँगन नगा कर दिया था।

—अपनी बहू को कितने गहने पहनाओगी। है क्या तुम्हारे पास? लडका? खूबसूरत लडका? यह तो लडकियो का-सी खूबसूरती है। मुझे अपनी लाडली के लिए पक्का पीडा गबरू चाहिए। पठान सा मजबूत। सुना है, पाकिस्तानी लीडर पाकिस्तान लेकर पछता रहे हैं और जवाहरलाल नेहरू की मिन्नतें कर रहे हैं—खता माफ करो। हमे अपने मे शामिल कर लो। फिर एक मजबूत पहाड-सा बडा असली हिंदुस्तान मिलकर बना ले।

ऐसे मे मैं तो वही मरदान मे ही जाकर अपनी लाडो के हाथ पीले करूँगा। माई तू अपना काम कर।

सत्या बीच मे आयी और जितना उस बेचारी मे दम था, पया (पिता) का कमरे की तरफ खीचने लगी। बस नही चला तो फफक फफककर रोने लगी।

पति को यह सब बताते बताते जमना रोने लगी।

—सोरी दा (ससुरा) बाबू जयदयाल ने जले भुन स्वर से यही शब्द लाला केदारनाथ के लिए इस्तेमाल किया।

थोडा रुककर बोले—चलो खेल खत्म हुआ, फिर से लम्बी साँस खींचते हुए कहा अच्छा हुआ। बहुत अच्छा। आजमा आयी। मौका लगेगा तो उस कमीने को सबके सामने जलील करूँगा मगर लोग यह भी तो कह सकते हैं, तुम भी कैसे आदमी हो जो उस लुच्चे के पास अपनी औरत को भेज दिया।

उस रात का खाना बेस्वाद रहा। पूरा परिवार ऐसा निराश हुआ जैसे उनसे फिर कोई चीज छीन ली गयी हो।

इसी प्रकार तीन दिन और बीत गये। चुपचाप।

चौथे दिन सवरे छ बजे कुण्डी बजने लगी। दरवाजा खोला तो लाला केदारनाथ था। आते ही बाबू जयदयाल के कदमो मे लोट गया और कान पकडन लगा—क्या करूँ हिम्मत ही नही पड रही थी। पर मेरा क्या कसूर! मैंने कुछ भी नही कहा। आप जानते हैं, मैं दिल का कितना पाक साफ हूँ। यह तो दो घूट, जीभ पर चिपकी रह गयी थी, वही ऊल-जलूल बडबडाती रही। भरजाइये फिर भी अगर मेरा दोष मानती हो तो मुझे माफ कर दो, नही तो मैं अभी सीधा नरक मे चला जाऊँगा। तुम तो मेरी रक्षा करने आयी थी। मेरी लाज ढकने आयी थी। तुम देवी हो। परो पडता हूँ। और सचमुच मे वह जमना के पैरो मे लोट गया।

—बस बस बहुत हो चुका, बाबू जयदयाल ने कहा, सीधे से उठकर कुर्सी पर बठो। लगता है अब भी कुछ चढ़ा रखी है।

—न-न न, वह फिर से कान पकडने लगा—सचमुच मुझसे लिखवा लो और उसे बेशक डी० एस० मुरादाबाद (तत्कालीन रेलवे जोन का सबसे बडा अफसर) का भेज दो अगर मैंने पी हुई हो। दरअसल उस दिन मैंने कुछ देर ही पहले सपना देखा था। हिन्दुस्तान पाकिस्तान एक हो गये है। और मेरे पास अपना पूरा सोना चाँदी वापस आ गया है। वरना सच मे मेरे पास भी क्या है। दो घूट दो मिनटो के लिए हमे शानो शौकत से भर देते है। मोई (मरी) मे जितना बुराइयाँ क्यो न हो। चन्द लम्हो क लिए बादशाह तो बना ही देती है। कहो तो आज शाम को हो जाय? ड्यूटी तो नही।

बाबू जयदयाल ने जमना की तरफ आँख मारी—क्या?

केदारनाथ ने फिर उसी झोक मे कहना शुरू कर दिया—बिना माँ की बच्ची। मैं ड्यूटी पर बाहर। पीछे से कोई ऊपर-नीचे की बात हो जाय। तुम्ही बेडा पार लगाओ, ताकि मैं बेफिक्र हो

—हाँ बेफिक्र होकर पी सकू। बाबू जयदयाल ने उसे बीच मे टोकते हुए जोडा।

—अब छोडो जी। जमना न पति को इशारा किया, मान जाओ।

बाबू जयदयाल ने कहा—तुम औरतो का मिजाज भी कसा होता है, पल मे रत्ती, पल मे मासा।

उस दिन घर मे फिर से चहल पहल होने लगी जसे अभी से शादी का सा वातावरण बनने लगा।

स्थितियाँ अनुकूल नही थी। अनुकूल बनाने के लिए जद्दोजहद बरकरार थी। अपने अपने तरीके से, अपने-अपने धरातल पर, जिस
स्थापित करना था। यह एक लम्बी प्रक्रिया थी, मगर,

कोई विकल्प भी नही था।

यहाँ आये लगभग डेढ साल तो हो ही चुका था। सब-कुछ पहले जैसा हासिल करने म तो बहुत समय लगेगा। तो अब ज्यादा इतजार किस बात का। फिर भी डेढ महीना बाद का मुहूत पण्डित जी ने निकाल दिया। तब तक शायद कुछ और रिश्तेदारो का भी पता चल जाय—मगर उम्मीद नही थी कि भीड होगी या पुराने ढग की रौनक होगी।

अब तक सब सम्बधियो का पूरा पता ठिकाना भी नही था। सब बिखरे हुए थे। अलग अलग शहरो मे। ऐसे मे अपन नये जमते कामो को बीच मे छोडकर कौन आता है। ऐसा भी सुनने मे आता था कि जिस व्यापारिक वग ने शरणार्थियो की बढ-चढकर सहायता की थी, वही वग अब उनसे ईर्ष्या करने लगा था कि इन पजाबियो ने हमारा बिजनेस ही ठप्प कर दिया। अपनी वाकपटुता, होशियारी, व्यवहार-कुशलता से हमारे ग्राहक ही हमसे छीन लिए। और ता और कुछ ने तो दिनो दिनो मे इतना कमा लिया, जितने की हम कभी कल्पना भी नही कर सकते थे।

ऐसे ही कुछ कारण थे जो, पहला वग, नये वग को उखेडन पर आमादा था। उनकी दुकानो ठिकानो को नाजायज करार देकर उन्ह फिर से विस्थापित करन पर तुला था। इससे साधारण आय वाले लोग तो बहुत डरे सहमे हुए थ। ऐसे मे कौन शादी मे आता है, उन्होने सोचा था।

मगर ऐसी आशकाए सवथा निर्मूल सिद्ध हुइ।

जो जिस हाल मे भी था, मनोज की शादी की खबर मिलते ही चल पडा और जिस जिस सम्बन्धी को बता सकता था, बताता आया। वह भी पीछे पीछे बरेली, बाबू जयदयाल जी के दौलत खाने अकेला या बच्चो के साथ आ पहुँचा।

नही आये तो बेदी साहब। उनके परिवार का कोई भी सदस्य नही आया। हालाँकि पूरी उम्मीद थी, क्योकि बेदी साहब ने शुरू से ही वायदा कर रखा था कि वे मनोज की शादी पर जरूर आयेंगे। अन्त मे फिरोजपुर से एक लिफाफा आया। बडी उत्सुकता स लिफाफा खोलकर पत्र पढा गया। ओह यह तो बहुत बुरा हुआ। बेदी साहब के घर चोरी हो गयी। चोर सारे का सारा सामान लूट ले गये। बेदी साहब के न आने का यही कारण था। जानकर सबको बहुत अफसोस हुआ।

लेकिन इस समाचार को सुनकर कुन्दन नाचने उछलने लगा। उसे देखकर हरमिलाप भी उसी प्रकार हुल्लड करने लगा। दोनो भाई कह रहे थे—अहा मजा आ गया। खूब मजा आया।

बाऊजी ने उन्हें डाँटा—यह क्या बेहूदगी है। किस चीज का मजा आ रहा है।

कुन्दन ने उत्तर दिया—आपके सामने नही कहा होगा। बेदी साहब बार-

बार कहते थे—देखा मेरी हलाल मेहनत की कमाई थी, जो मैं पाकिस्तान बनने से पहले ही अपना सारा सामान ले आया।

अब अलका भी धीरे से मुस्कराते हुए कुन्दन की तरफ इशारा करके बोली—इसे सब बातें याद रहती हैं। इसका मतलब तो यही था कि बाकी इतने सारे लोगों का हराम का माल था जो पाकिस्तान में लुट गया।

जमना ने सबको डाँटा—चलो चुप रहो। हम कौन हैं, हराम-हलाल का फैसला करने वाले।

कुन्दन फिर भी बोले बिना न रह सका—तो भगवान ने ठीक किया ?

हरमिलाप बाऊजी की डाँट से बचने के लिए इधर उधर देखते हुए फुसफुसाया—नहीं-नहीं चोर ने। चोर ने।

दरअसल इस शादी के बहाने लम्बी मुद्दत बाद, सबको आपस में मिल बैठकर सुख-दुख बाँटना था। रोना-हँसना था। विशेष रूप से महिलाएँ, जैसे ही मिलतीं एक-दूसरे के गले लग-लगकर जोर-जोर से रोतीं, मौतों पर या अन्तहीन मुसीबतों पर, जो उन्होंने झेली थीं। कुछ तो अपने शहरों पीरों का नाम ले लेकर रोती रहतीं। कुछ समय बाद हँसने लगतीं। एक-दूसरे को गुदगुदाने लगतीं। पुरानी स्मृतियों में साझेदारी करतीं। कहतीं हम भी कितनी मूढ़ हैं जो इतनी खुशी के मौके पर रोने लग गयी थीं। हमारे मनोज की शादी है। शायद इस हिन्दुस्तान की धरती पर हमारे खानदान की पहली शादी।

कुछ आदमी गुट बना बनाकर ताश के पत्ते फैलाये रहते। हुक्का गुड़गुड़ाये रहते।

साथ का क्वाटर सैनेटरी इन्स्पेक्टर ने खाली किया था। उनका ट्रांसफर हो गया था। बाबू जयदयाल ने उसे घेर लिया। उसका अलॉटमेंट रुकवा लिया। दूसरा पी० डब्ल्यू० आई० से कहकर सामने दो टैंट गड़वा लिए। इस प्रकार जगह की कोई कमी नहीं थी। फिर भी अधिकतर लोग मुख्य क्वाटर में ही जमे रहते।

कैप्टन चरणजीत भी आ पहुँचा। वह मनोज का चचेरा भाई था। उसने बताया—मुझे तो यहाँ हिन्दुस्तान पहुँचे सिर्फ चार ही रोज हुए हैं।

सभी को बड़ी जिज्ञासा हुई—यह कैसे ? इतना लम्बा वक्त कहाँ गुजारा ?

कैप्टन चरणजीत ने बताया—हम तो सिंगापुर ही अटक गये थे। हमें जबरदस्ती पाकिस्तान भेज रहे थे।

—ऐसा किसलिए ? मनोज ने पूछा।

—हम लोग तो वर्ड वार (विश्व युद्ध) से पहले ही बर्मा, जापान, अफगानिस्तान, सिंगापुर कई कई मुल्कों में भटकते फिरे थे। हमारे बहुत से साथी मारे गये। शान्ति कायम होने पर भी शान्ति कहाँ थी। अजीबोगरीब कई तरह के

चक्कर।

कुन्दन और हरमिलाप को तो फौजियो की ऐसी बातें बहुत भाती थी। वे दोनो हर वक्त कुरेद कुरेदकर सारी घटनायें जान लेना चाहते थे—कैप्टन चरणजीत क जरा रुकते ही कु दन ने पूछा—फिर क्या बखेडा खडा हो गया था ?

चरणजीत भी कई कई वर्षों बाद अपने आत्मजनो से मिला था। उसे बच्चो के बीच बैठना और उनकी जिज्ञासाओ को शान्त करना बहुत रुचिकर लगता था। यह आगे और आगे बताता रहता। हर, 'क्यो' और 'कसे' का उत्तर विस्तार से देता।

—एक नही कई कई बखेडे थे। कही मतको के परिवार वाला को इत्तिला देना। लापता सैनिको की जगह जगह तलाश। युद्ध बं दया की बीसा समस्याएँ। उनकी अदला-बदली। युद्ध अपराधियो पर मुकदमे भी दायर हो रहे थ। बहुत सी बातें तो हमसे छिपायी जाती थीं कि कही फौज बगावत न कर दे।

—पाकिस्तान बनने का आपको कैसे पता चला ? हरिया ने पूछा।

—रेडियो से या अखबारो से ? कुन्दन ने पूछा।

—अग्रेज हुकूमत हमे रेडियो, अखबार से बहुत दूर रखती थी। चरणजीत ने कहा—हमे तो 1947 के आखिरी महीनो मे बताया कि तुम्हारे देश का बँटवारा हो चुका है। बोलो तुम्हे अब कहाँ जाना है ? हि दुस्तान या पाकिस्तान। लिख कर दो।

—तो आपने क्या कहा ?

—हम सबने अपने-अपने शहरो कस्बो के बारे मे पूछा कि वे कहाँ गये ? मुझे पता चला कि जिला मुजफ्फरगढ तो पाकिस्तान बन गया है तो मैंने झट फाम लिया और उसमे 'पाकिस्तान भरकर दे दिया। मैंने ही क्या लगभग सभी फौजियो ने एसा ही किया। जिधर जिसका घर बार था, उसने उसी हिसाब से मुल्क माँगा।

—हाँ भाजी यह तो है ही, कु दन बोला, अपना घर कौन छोडता है। यह चाहे कही भी हो। आखिर मे आदमी लौटता तो अपने घर को ही है। और मकान अपनी जगह छोडकर और कही को चल नही देता।

—बिलकुल ठीक कहते हो। चरणजीत ने जसे शाबाशी दी।

—यही सोचकर ही तो बाउजी ने पाकिस्तान भर दिया था। इसमें हि दू होना या मुसलमान होने की बात तो कोई सोच भी नही सकता था।

कप्टन चरणजीत आगे बताने लगा।

—बस फिर क्या था, वही उसी रात अफसरो ने बीच मे लाइन खीच दी। दोनों तरफ टैटो की लाइनें थी। एक तरफ पाकिस्तान जाने वाले सनिक थे। और दूसरी तरफ हिन्दुस्तान जाने वाले।

—तब तो आपको पाकिस्तान जाने वालो के साथ रखा गया होगा। हरिया ने पूछा।

—ऐसा मैं अकेला थोड़े ही था। दिन बीतते रहे। मेरा सिर तो उस दिन चकरा गया, जब एक अपना जान-पहचान वाला मुसलमान अफसर हिन्दुस्तान से लौटा और उसने बताया कि तुम्हारे वालदेन और दीगर सारे रिश्तेदार तो पाकिस्तान छोड़ गये। सच तो यह है बरखुर्दार उन्हें मार-कूटकर हिन्दुस्तान भागने को मजबूर कर दिया गया। घर की औरतो की इज्जत और जान किसको प्यारी नही होती। ऐसे में मकान, सामान को कौन देखता है।

—फिर क्या हुआ? आप हिन्दुस्तान वाले टैंट मे घुस गये होंगे? कुन्दन ने पूछा।

—फौज क्या बच्चो का खेल है। बच्चू, फौज मे भर्ती हो तो पता चले। कितना डिस्पिलन होता है वहाँ। ऊपर से फिर अंग्रेज अफसर। तौबा-तौबा। बहुत मिन्नतें की। बहुत समझाया। उनका कहना था—तुम सबकी फाइलें आगे जा चुकी हैं। यहाँ कुछ नही हो सकता। एक बार तो पाकिस्तान जाना ही पड़ेगा।

मैंने कहा—वहाँ, अब हमारा क्या काम। हम मारे भी जा सकते हैं।

—फिर क्या हुआ? क्या कहा उसने। कुन्दन ने उत्सुकता से पूछा।

—फिर आखिर हम लोगो ने एप्लीकेशन लिखी। उसकी कई-कई कापियाँ की। वह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के दूतावासो, गृह मन्त्रालयो और फौजी छावनियो को भेजी गयी। लगातार यह लिखा-पढ़ी चलती रही। इन बातो मे और देरी होती रही।

अब जाकर दरख्वास्त कबूल हुई। और तभी मैं छह रोज पहले यहाँ आ पाया हूँ।

कुन्दन और हरमिलाप को यह जानकारी काफी रोचक और रोमांचक लगती। बिलकुल किस्से कहानियो की तरह।

वह इन बातो को इसी ढंग से अपने कई कई मित्रो को सुनाते फिरते। पता है जब हिरोशिमा मे ऐटम बम गिराया, तब हमारे कप्तान भाई साहब जापान में ही थे।

सुशील कहता—वाह क्या कहने तुम्हारे भाई साहब के कितने देशो की सैर कर आये है। मैं भी घर से भागकर फौज मे भर्ती हो जाता हूँ।

शफी कहता—तू तो बस यही कर सकता है जो कर रहा है, घर से चीजें चुरायी और बेच दी। घर आये, बाप के दोस्त की साइकिल लौंडो को दो आने की बजाय छः पैसे घंटा में किराये पर उठा दी।

सुशील खी खी' कर हँसने लगता। कहता—हम यह भी तो देखने की अक्ल रखते हैं कि कौन आदमी कितना गप्पोड़ी और चिपटू है। कितनी देर के लिए

किसकी साइकिल किराये पर दी जा सकती है। 'हां-हां' कहकर वह फिर से हँसने लगता। वह ताऊ तो गप्पबाजी मे मस्ती ले रहा है। अन्दर बैठे उस शख्स को क्या मालूम कि उसकी साइकिल किराये पर चल रही है।

सभी समवेत स्वरो से हँसते हुए एक दूसरे को गुदगुदाने लगते और लोटपोट होने लगत।

शफी कहता—कुछ भी हो कुन्दन मैं भी कभी तुम्हारे पाकिस्तान जरूर जाऊँगा। जिन-जिन शहरो की तू इतनी तारीफ करता है उनके बिछोह मे मरा जाता है, जरूर देखकर आऊँगा। तुम्हारा करोड लालीसन, किला शेखूपुरा, लाइलपुर, पेशावर, सबजर। लिस्ट बनाकर दे देना मुझे, उन शहरो की।

कुन्दन कहता—मैं खुद तेरे साथ चलूँगा। वहाँ की गलियो मे घुमाऊँगा। वहाँ तुम्हें मजीद, मन्जूर, शकील, शौकत से मिलवाऊँगा। देखना, मुझे तो मुझे, तुम्हे देखकर भी वे कितने खुश होते हैं। बहुत अच्छे हैं वो सब।

सुशील कहता—वाह मजा आ जायेगा। मुझे भी साथ ले लेना। मैं तुम दोनो को भी एक एक साइकिल उठाकर दे दूगा। अपन सीमा पार। फिर कौन ढढ पाता है। गेएँ, साले बाप के दोस्त, अपनी साइकिलो को।

ऐसी कल्पनाओ मे विचरते उन्हे खासी गुदगुदी होती।

और यह बात सही है कि ये तीनो दोस्त घर से भाग लिए थे। लेकिन उन दिनो नही। मनोज सत्या की शादी हो चुकने के लगभग डेढ दो वष बाद। वह भी सीमा पार के किसी शहर—किला शेखूपुरा, लाहौर, लाइलपुर, पेशावर न भागकर बम्बई भाग खडे हुए थे।

शादी उम्मीद से बढकर अच्छे ढग से सुख शातिपूवक सम्पन्न हुई थी। पूरे दमखम और रौनक के साथ। वहाँ आने वाले प्राय प्रत्येक सम्बन्धी न कहा था—कभी हमारे पास आओ। खुद नही आओ तो कम से-कम बच्चो को तो जरूर भेजना। ऐसा न हो कि पाकिस्तान बनने से रिश्ते ही कट जायें। जमना ने कहा था—छोटे बच्चो को अकेला कैसे भेज सकती हूँ। इस पर कुन्दन ने मजाक-मजाक मे उन्हे कहा था—देखना किसी दिन हम लोग चुपके से भागकर आपके पास आ जायेंगे।

इस तरह से यह भागने वाली कहानी, बहुत लम्बी रोमाचक और बाद की है, पर शायद इस 'भागने के बीज उन्ही, शादी के दिनो मे पड चुके थे।

सभी बच्चो के घरवाले माथा पकडकर बठ गये। फिर एक-दूसरे के माथे पर इल्जाम रखने लगे कि तुम्हारे ही बेटवा ने हमारे वाले को बरगलाया है। वह तो बहुत सीधा है। सबके घरो से कुछ-न कुछ चीजें और रुपये गायब थे। शफी की

अम्मा, जमना से कहती—तेरा कुन्दन तो सीधा है। मेरा शफी भी निहायत खानदानी शरीफ है। यह सुशील ही लोफर है। हर वक्त कोई-न कोई खुराफात किये रहता था। उसे कौन नही जानता।

सुशील की माँ जमना से कहती—मुसलमान होते ही ऐसे हैं। वे दोनो औरतें जब मिल बैठती तो जमना और उसके लड़के के बारे मे जाने क्या-क्या कहतीं कि अब यह लोग कही टिककर नही रह सकेंगे।

आदमी लोग एक दूसरे को बदनाम करने की बजाय अपने अपने तरीको स पता लगाने की कोशिश कर रहे थे। फौरन पुलिस मे नही जा रहे थे कि देखो, शायद जल्दी लौट आयें। चलो तीनो साथ ही हैं ना।

मुहल्ले की औरतें कुरेद कुरेदकर पूछती—बाप ने डाँटा तो नही था। और कोई खास बात तो नही हुई थी। हाय कितने होनहार लौंडे थे। पर तीन जने इकट्ठे भागे। बदशगुन हुआ ना।

दो एक औरतो की सलाह पर वे निकट के एक ज्योतिषी के पास पहुची।

ज्योतिषी बहुत देर तक एक स्लेट पर, कई तरह के हिसाब लिखता लगाता रहा। अन्त मे बोला—हमसे बेशक लिखवा लो। यह तीनो परम मित्र ऐक्टर बनने के लिए बम्बई भागे है। इन तीनो मे स किसी एक का वहाँ कोई रिश्तदार भी है।

उन दिनो लड़को का फिल्मे देख देखकर बम्बई भागना, वहाँ धक्के खाने के बाद मुह लटकाकर घर लौटना आम बात थी। इसलिए कइयो के अनुसार इसमे घबरान जैसी कोई बात नही थी।

पर जमना कहती—मेरा कुन्दन तो एसा हो ही नही सकता। तक्दीर मे जो धक्के लिखे है उन्ह कौन रोक सकता है। पहले हम सब पाकिस्तान से धकेले गये। फिर हानी ने उसे जेल मे भज दिया और अब पता नही कौन सी महाशक्ति ने उस एक बार फिर घर से बाहर कर दिया है। वरना मेरा कुन्दन तो खरा सोना है। दोस्ती भी ढग के लड़को के साथ रखता है। बच्चे पड़ोसी बच्चो स न खेलें तो कहाँ जायें।

चौथे रोज परेशान होकर तीनो बच्चो के पिता पुलिस मे रपट लिखाने की सोच रहे थे कि तभी बाबू जयदयाल को बम्बई से तार मिला—कुन्दन विद टू फ्रेंड रीचड सेफ्ली—लटर फालोज—अलका।

तार को पाते ही दिल की धड़कनो मे जो ज्वार पैदा हुआ था, अब विषयवस्तु स परिचित होन पर धीरे धीरे शात हो चला। चेहरो की रगत लौट आयी। एक लम्बी साँस लेती हुई जमना के मुह से निकला—चलो जहाँ रहें, सुखी रहें जरा सा रुककर फिर बोली—देखो और तो कुछ नही लिखा?

—तार है तार। तार मे इतना ही लिखा होता है। खत आयेगा। उसमें सब

कुछ होगा।

इस उत्तर को सुनकर उन्होंने फिर सन्तोष व्यक्त किया—बस बस, मुझे इतना ही चाहिए।

□ □

किला शेखूपुरा मे—

एक लड़की थी—बिमला। बहुत ही खूबसूरत शक्ल वाली। सलोनी। बहुत ही धीरे और कम बोलने वाली। उसकी बहुत बडी, काली घनी पलको वाली आँखें थीं, जो निरन्तर नीचे ऊपर होती रहती थी। कुन्दन को लगता शायद वह इन्ही आँखो के द्वारा ही बोलती है। वह गुपचुप अलका के साथ लगी रहती। कुन्दन को पता नही चलता, वह क्या बोलती थी। वह कभी कभी उसके थोड़े मोटे गुलाबी होठो की तरफ देख लिया करता था। होठ बहुत कम खुलते थे। इसीलिए कुन्दन को लगता, वह आँखो से बोलती है। बिमला इतनी आकर्षक क्यो है। अपने गोरे-चिट्टे रंग के कारण। चमकीले गालो और चौडे माथे के कारण। या सिर्फ आँखो के कारण। कुन्दन की समझ मे कुछ न आता और स्पष्ट रूप से वह इन बातों को सोच पाने या समझ पाने की, इतने छोटे से दिल के सहारे क्षमता भी कहाँ रखता था। बिमला जो थी सो थी। बिमला बिमला थी। बस। काले घने बालो की चोटी उसकी पीठ पर झूलती रहती थी।

बिमला क्या थी। तब तो तब, अब भी समझ मे न आने वाली अबूझ पहेली सी थी, कुन्दन के अंतरजगत मे। ज्यादा-से-ज्यादा थोडी-बडी गुडिया।

और कुन्दन? बहुत छोटा था। बिमला से कही छोटा।

बिमला का यह पूरा अधूरा नक्शा, तो बरेली आकर ही कुन्दन के मन मे उभरकर आकार सा लेने लगा था। उन दिनो जब मनोज की शादी हो रही थी सभी परिवार वाले इकट्ठे हुए थे। वे सब हर समय पुरानी घटनाओ और परि-चितो की यादो को लेकर बैठ जाते। एक-दूसरे को बतलाते सुनाते। सुनाते-सुनाते उन्ही यादो मे खो जाते। कभी हँसते तो कभी उनकी आँखें नम हो जाती। अलका और किसी को याद करे या न करे अपनी दो सहेलियो जनक और बिमला को अवश्य याद करती रहती। उनसे अपने आत्मीय सम्बन्धो की ऊँचाइयाँ दर्शाती रहती। सुन सुनकर कुन्दन को लगता जसे जनक और बिमला इस धरती की लड़कियाँ न होकर आसमान की परियाँ हो। जो अब इतनी ऊँची उड़ गयी थी कि दिखलायी नही देती थी। जहाँ तक जनक की उसे याद है वह तो काली और कुछ सख्त चेहरे मोहरे वाली लडकी थी। सोम्यता उस सख्त चेहरे से भी टपकती थी। पर बिमला की बात निराली थी। बिमला और जनक की तुलना की बात ही

फिजूल है। कहाँ जमन और कहाँ विमला। विमला को अगर सचमुच की परी कहा जाता तो भी कुन्दन मान जाता। बल्कि अब तो पुरानी यादो के सहारे, वह उसे परियो की रानी मानने लगा था। शेखूपुरे मे वह इन बातो की व्याख्या नही कर सकता था। और अब भी कहाँ? यह सब बातें तो अब उसके मन मे पैदा हो रही थी जब अलका उसका (विमला का) गुणगान करने लगती। जब वह उसका जिक्र करती कुन्दन सब खेल भूलकर कान लगाकर अलका के साथ सटकर बैठ जाता, जैसे परियो की कहानी सुन रहा हो।

क्या विमला जादूगरनी थी? कुन्दन सोचता है। तब अचानक एक दिन शेखूपुरे मे उसके पूरे-के-पूरे बदन मे क्या हो गया था। एक आनन्ददायी हलचल सी मच गयी थी। उसके माथे से लेकर अँगुलियो तक मे चटाख चटाख होने लगी थी। छोटा सा दिल धक धक बोलने लगा था।

विमला उससे बहुत बड़ी थी। ठीक उसकी दीदी अलका के बराबर। अलका की क्लास मे ही तो पढती थी। बड़ी थी तभी तो अलका की सहेली थी। और वह खुद जरा-सा, उसके सामने क्या था।

उस दिन की कोई तारीख तो नही कुन्दन के पास, मगर वह दिन उसे कभी नही भूलता। वह दिन उसके मन मस्तिष्क पर आज भी दिन रात छाया हुआ है। उस दिन अलका ने कहा था—कुन्दी जरा इधर आ, जाकर विमला को तो बुला ला।

कुन्दी ने विमला का दरवाजा खटखटाया था। दरवाजा विमला ने ही खोला था। उसे देखकर गुलाबी होठ हलके से खुले थे। काली घनी पलकें हवा के साथ जैसे हिली थीं। वही काली बड़ी बड़ी आँखें कुन्दन की तरफ उठी थी। आँखो ने ही शायद पूछा था—कहो क्या है?

—मैनजी बुलाती हैं। कुन्दन का स्वर बहुत भारी हो गया था। वह मन्त्र मुग्ध सा खड़ा रह गया था।

—अच्छा। आती हूँ। आँखें बोली थी।

वह उसके जाने की प्रतीक्षा मे दरवाजे की चौखट मे देव प्रतिमा बन गयी थी। कुछ क्षणो तक गरदन उठाकर उसे निहारता निहारता वह पलटकर भाग खड़ा हुआ था।

बहुत देर तक कुन्दन सोचता रहा था—यह सब क्या हुआ? उसकी समझ मे कुछ नही आया। भागता भागता अलका के पास पहुँचा और बताया—कह आया हूँ। आ रही है। दिल उसका अब भी बेकाबू धड़क रहा था। शायद भागने की वजह से नही हुआ था यह सब। एक-आध बार उसने सिर उठाकर यह जानने की कोशिश की थी कि विमला आयी कि नही और इसी कोशिश और सोच के बीच उठती सूक्ष्म तरगो का पकड़ने मे वह असमर्थ रहा था। भय और पुलक का

विचित्र सा समावेश था, अन्तर व बाह्य जगत में। तितली के से उड़ने जैसा।

यहाँ बरेली आकर कुन्दन को कभी कभी यह आभास होने लगता कि शायद यह किसी लड़की की तरफ उसका आकर्षण था। तब तो उसकी मानसिक दशा और भी बिगड़ जाती। वह पाप बोध ग्रस्त होने लगता। वे इतनी बड़ी। मेरी दीदी के बराबर। मेरी दीदी जैसी। दीदी। यह पाप मुझे जरूर चढ़ेगा, अगर यही सब था तो ।

तो भी वह अलका से, बिमला का कोई प्रसंग हाथ से न जाने देता। एक दफा अलका ने कह भी दिया—बिमला, बिमला। बहुत अच्छी लगती है तुझे। मिल जाये तो क्या शादी कर लेगा उससे।

इसके बाद कुन्दन बिमला का नाम कभी अपनी जबान पर नहीं लाया।

अपनी आर्थिक सीमाओं में मनोज सत्या की शादी धूम धाम से हुई थी। रिश्तेदार धीरे धीरे अपने नये ठिकानों या ठिकाना की तलाश में चले गये थे। अलका भी, इस शादी से खुश खुश, भाई भरजाई को बम्बई आने का निमन्त्रण देती हुई अपने पति सूबेदार रोशनलाल के साथ चली गयी थी।

मगर यहाँ बम्बई में उसका मन नहीं लग रहा था। वह प्राय हर रोज पत्र लिख रही थी बरेली में भी और कासगंज में भी। भाई को लिखती—भाजी। तुम्हारा तो बम्बई देखा हुआ है। मेरी प्यारी-प्यारी नयी-नयी भरजाई को भी बम्बई दिखा जाओ। हमें समुद्र किनारे बहुत खूबसूरत बढ़िया फ्लैट मिला है।

कोई बाबू वाडेकर थे बुकिंग क्लर्क चर्चगेट पर। उनके विरुद्ध टिकटों की हेराफेरी के आरोप में विभागीय जाँच चल रही थी। स्टेशन मास्टर कासगंज के नाम तार आया। बतौर गवाह मनोज को फौरन बम्बई भेजा जाये। केस उन दिनों का था जब मनोज बम्बई में बुकिंग आफिस में काम कर रहा था।

एक पथ दो काज वाली बात हो गयी। सर की सर ड्यूटी की ड्यूटी। ड्यूटी के साथ मनोज ने थोड़ी छुट्टी भी जोड़ ली। खूब खातिरदारी हुई सत्या की। ननद ने सारे चाव पूरे किये। अलका ने उन्हें मजे से खूब घुमाया फिराया। पलक झपकते ही दिन पंछी बन उड़ गये।

फिर से अलका को वही उदासी घेरने लगती। सवेरे से लेकर शाम तक सूबेदार साहब अफसरों मातहतों और दूसरे कामों में घिरे रहते। अलका को नयी जगह, नयी भाषा, अलग सी सभ्यता, पड़ोसियों का रहन सहन, माफिक नहीं आ रहा था। वह और तो कुछ न कर सकती, बस खत लिखती रहती। सबके नाम। अलग अलग खत। हरमिलाप और कुन्दन का तो वह बहुत ही रोचक खत लिखती। लम्बे-लम्बे खत, उनमें बम्बई की चकाचौंध के किस्से होते। बड़े-बड़े

ब्यूटी पालरज के वर्णन होते। जुहू, मालाबार हिल और एलीफेंटा केव। बड़े-बड़े रेस्टोरेंटस, होटलो मे विदेशियो का जमावाड़ा। और भी बहुत अजीबो-गरीब चौंकाने वाली बातें लिखती। लिखती कि बड़े भाई साहब, भरजाई तो सब देख गये हैं। तुम लोग भी किसी तरह आ जाओ।

दोनो भाई ऐसी परीलोक-सी कहानियो को पढ़कर उड़कर बम्बई पहुँच जाना चाहते। पर कैसे? बाऊजी, भाभी (माँ) से कहते तो नकारात्मक उत्तर मिलता। भाभी कहतीं—बहुत उम्र पड़ी है घूमने फिरने की। सीधे से पढ़ो लिखो। कुछ बनकर दिखाओ। अभी इतने छोटे हो अकेला भी तो नही भेज सकती। हाँ, कोई ढग का साथ मिले तो सोच भी लू।

दरअसल इन दोनो भाइयो मे इतना हौसला भी नही था कि अकेले इतनी लम्बी यात्रा कर सकें। हरमिलाप तो एकदम डरपोक था। कुन्दन भी ऐसी हिम्मत नही रखता था। वह अभी तक उस डरावनी यात्रा से उबर नहीं पाया था जो उसने लायलपुर से अकेले, अलग डिब्बे मे एक बक्से पर बैठकर ठेठ हिन्दुस्तान तक की थी।

वह हरमिलाप से कहता—क्या है बम्बई? फिर कभी देख लिया जायगा। हाँ भनजी के लिए मन उदास होता है। इसलिए भी मेरा मन ज्यादा उदास हो जाता है कि वह बेचारी हम सबके लिए उदास है। हमे क्या लेना बम्बई से।

डेढ़ साल गुजर गया। तब भी अलका के उदासी भरे पत्रो की रफ्तार बदस्तूर जारी थी।

एक बार अलका ने कुन्दन को एक ऐसा पत्र लिखा जिसे पढ़ते ही कुन्दन को लगा जैसे उसके पूरे शरीर मे रक्त सचार की गति सौ गुना बढ़ गयी है। फिर धीरे धीरे सारा वातावरण सगीतमय हो उठा है। पूरे स्नायुमडल मे मिठास घुलने लगी है। दूर देश से उड़कर उसके दिमाग म, बिमला आकर बैठ गयी है। वह बिमला की याद मे खो गया।

अलका ने लिखा था—यहाँ हमारे साथ एक मुहल्ला है। वहाँ एक विस्थापित परिवार रहता है। वे लोग घर मे भी और बाहर जाकर कपड़ा बेचते हैं। कहते हैं कमाई ठीक हो जाती है। हाँ, उस परिवार मे एक लड़की है, बिलकुल बिमला जसी। नाम पूछा तो आकाशी बताया। अगर वह बहुत छोटी न होती तो सचमुच मैं उसे बिमला ही समझ बैठती। इससे तुम अनुमान लगा सकते हो कि उसकी सूरत बिमला से कितनी मिलती होगी।

वह खत पढ़ने के बाद तो कुन्दन, दिन रात बम्बई जाने के सपने देखने लगा। दिन रात सपनो मे बिमला दिखलायी देने लगी। वह उस बिमला जैसी आकाशी को भी देखने की कोशिश करता। फिर भी वहाँ सिर्फ बिमला ही होती—दुबली पतली शटापो खेलती हुई। कीक्ली डालती हुई। पींग झूलती हुई। आकाशी,

नही बिमला। बिमला नही आकाशी। वह उसे जल्दी-से-जल्दी, बस एक नजर भरकर देख लेना चाहता था।

पर इस बात को उसने सीने में कसकर दबाकर रख लिया। किसी से कुछ कहा नही।

कुंदन के लिए यह संगीतमय अवरोहण स्थिति थी जिसकी उसके पास कोई भी मूत व्याख्या नही थी। यह स्थिति बहुत लम्बी खिंचती गयी। अब वह एक क्लास और आगे बढ गया था। अपने आपको ज्यादा बडा और ज्यादा समझदार समझने लगा था। अलका दीदी के खतूत उसी रफ्तार और तफसील के साथ आते थे। वह दीदी के हर पत्र मे आकाशी को ढूढता। अगर वह न मिलती तो पत्र की दूसरी सारी की सारी चुटकीली सरस बातें भी उसे नीरस लगने लगती। कभी कभी तो दीदी बहुत पतला पतला मलमल का रूमाल भी कागज मे तह कर रख देती। तब बिना आकाशी, वह रूमाल भी बेजान-सा लगने लगता।



डी० ए० वी० स्कूल का प्रागण।

अकेली मत जाइयो राधे, जमना के तीर ओ राधे ?
तू गगा की मौज, मैं जमना की धारा

वेदप्रकाश का लरजता स्वर अपने साथियो को मोह रहा था।

रामप्रकाश स्कूल के सामने वाले मकान की सुहेला नाम की लडकी से एक पुराना घडा माँग लाया था। वह (रामप्रकाश) घडा बजाने में उस्ताद था। इसलिए उस्तादो (मास्टर साहबो) को वह कुछ नही समझता था। जैसे वह (रामप्रकाश) सारे मास्टरो की निगाह मे अव्वल दर्जे का नालायक था। उसी तरह रामप्रकाश की निगाह मे भी सारे मास्टर जाहिल थे, क्योकि किताबें पढाने के अलावा उन्हें कुछ नही आता था। न गाना आता था और न बजाना। न वे वेदप्रकाश की तरह गुणी थे न रामप्रकाश की तरह। और न नाच ही सकते थे।

इतवार का दिन था। मास्टर साहब ने सब छात्रो को कोर्स पूरा कराने के लिए बुलाया था। किसी कारणवश वे नही आ पाये थे। कुछ लडके वापस घर जाने की सोचने लगे तो यह गाने-बजाने की महफिल चल निकली। तब सभी उस रग मे रगने लगे। स्कूल के बडे मुख्य द्वार से सटी हुई दीवार के सहारे झाडियो के झुरमुट मे यह जश्न चल रहा था। बहुत से लडके 'वाह-वाह, 'वाह' कहते हुए तालियाँ पीट रहे थे तो कुछ 'वाह वेदू', ओए-ओए रफी के बापू', मार डाला रे' चीख रहे थे। तो कुछ उसे 'जीभ चाटू', 'उस्ताद शहामत गज वाले कहकर चिढा

रहे थे। कुछ लड़के केंदू के साथ नाच रहे थे। और कुछ भौंडे तरीके से एक्टिंग कर रहे थे।

मिलेगी ना मंजिल तुम्हें बिन खिवैया
डुबो देंगे किश्ती तुम्हें ढूंढ लेंगे ।

के लम्बे लहराते हुए स्वरों के साथ जसे ही वेदप्रकाश ने गाना खत्म किया, दो-तीन लड़कों ने उसे ऊपर उठाया। अपने कन्धों पर डालकर, झूमने लगे बावरों की तरह। जमाना 'बैजू बावरा' (फिल्म) का था। हर कोई इस फिल्म की ज्यादा से ज्यादा दीवानगी दिखा, अपने आपको 'शुद्ध एक्टर' सिद्ध करना चाहता था।

—क्यों बे, ठीक से बता तू मुझे अपने साथ लेगा या नहीं? रामप्रकाश, वेदप्रकाश से दो टूक उत्तर चाह रहा था, जसे उसका भविष्य वेद के उत्तर पर ही टिका हो।

वेदप्रकाश ने सकारात्मक उत्तर दिया—मैंने मना कब किया है। आदमी अपनों को नहीं रखेगा तो क्या परायों को लेकर चाटेगा।

अच्छा वेद यह बता, केंदू ने पूछा (गांधी जी की हत्या के बाद इसका नाम केंदू पड़ गया था। उसका असली नाम चेतन था। वह तो कभी संघ में गया ही नहीं था। बस तुलसी ने उसका नाम ले लिया था। सिर्फ साथ के लिए। बाद में थोड़ी सी लड़ाई के बाद इन दोनों की दोस्ती और भी प्रगाढ़ हो गयी थी। वे एक-दूसरे का 'जेल के साथी' कहने लग थे। इस दोस्ती के लिए वे गांधी जी को दुआएँ देते थे। दोनों ही दो रोज के लिए साथ साथ हवालात में रहे थे। हवालात में और भी कई-कई लड़के रहे थे मगर केंदू नाम सिर्फ चेतन का ही पड़ा था।) तू एक्टर बनेगा तो प्लेबक सिंगर किसे रखेगा। रफी को या मुकेश को?

वेद ने कहा—हमारा दिमाग खराब हुआ है। वह हमारे सामने हैं क्या चीज? हमी एक्टिंग करेंगे और हमी खुद गायेंगे। हाँ, रामनाथ की जरूरत पड़ सकती है।

रामनाथ ने यह सिद्ध करने के लिए कि वह भी अच्छा गा सकता है, फौरन गाने लगा — ओ दुनिया के रखवाले

लड़के फिर से 'वाह वाह' 'वाह वाह' करने लगे।

जब रामनाथ 'जीवन संग तूफान बनाया ।

तक पहुँचा तो वेद ने कहा—ऐक्सीलेंट शाबाश रामा शेरे और खींच हाँ जरा और खींच। रामनाथ ने 'अब तो नीर बहा ले ओ अब तो ' उसका साँस इतना फूला कि एक तरह से चीख-सी निकल गयी। सब लड़के 'हें हें' करके हँसने लगे। रामनाथ अपनी झेंप मिटाने के लिए वेद की तरफ झपटा—भक्क साले। जानकर हमारा गाना खराब करवाता है।

वेद ने रामनाथ की तरफ इशारा करते हुए कहा—समझे इसे जरूरत पड़ेगी, प्लेबक की। वसे यह एक्टर तो अव्वल ही रहेगा। अच्छा रामनाथ जरा राजकपूर

की एक्टिंग करके दिखा। रामनाथ पिछली झेंप भूलकर मुह बिचका बिचकाकर 'बाबू साहब, बाबू साहब स्त्री (इस्तरी) कर लूगा। यह तो हमारा खानदानी पेशा है।' डायलॉग बोलकर आगे पीछे भटकने लगा। उसके घने काले बाल सीधे खडे रहते थे। उन पर हाथ फेरता हुआ बैठ गया—या अल्लाह।

मास्टर साहब आ गये थे। ज्यादातर छात्र कक्षाओ मे आ चुके थे। चन्द एक अब भी फिल्म जगत मे खोये हुए थे।

एजाज कह रहा था—अगर मुझसे सच पूछो तो मैं ? मैं तो बस एक्टर बनते-बनते रह गया। उन फिल्म वालो का एक ही नियम है कि अकेले मत आओ। आओ तो एक लडकी भी साथ मे लाओ।

—ऐसा क्यो ? सुशील ने पूछा।

—है तो है। यह फिल्म लाइन वालो का सिद्धान्त है। वह इस सिद्धान्त को नही तोडते। हम लोग कौन हैं पूछने वाले। खैर मेरे साथ कादिरा थी। हमारी किस्मत अच्छी है कि हमे पृथ्वीराज कपूर मिल गये। मैंने झट से उनकी कार का दरवाजा खोला। बाहर खडा-खडा उनके कदमो मे लोट गया। मैंने उन्हें बताया कि हम लोग बरेली से आये हैं। सुनकर बडे खुश हुए। बरेली बहुत अच्छा शहर है। हम एक बार गये थे। एक हफ्ते बाद मिलना। उन्होने बरेली के बाँसो का ही हाल पूछा कि अबकी फसल कैसी हुई। सुनकर मैं हैरान हुआ। हँसी भी आयी और फिर मैं समझ गया कि उन्होने यह फिल्मी फुलझडी छोडी है। चलो हम इस काबिल तो समझा।

—तो तुम वापस क्यो आ गये ? शफी ने पूछा।

—कादिरा साली घबरा गयी। जिधर भी हम लोग जाते, उधर ही को काली वर्दी मे पुलिस वाले दिखते। जरूर यह सी० आई० डी० पुलिस वाले थे। कादिरा ने मुझे डरा दिया। हम वापस भाग लिए। पता नही क्यो पृथ्वीराज कपूर साहब भी बम्बई से भाग लिए थे। तब उनके इन्तजार मे और रुकते तो पूरे पैसे खत्म हो जाते और भीख माँगनी पडती।

ऐसी खुराफातें आये दिन होती रहती। जैसे विचार गोष्ठियो का सचालन हो रहा हो। स्थान कोई भी हो सकता था। सडको के किनारे। स्कूल के बाहर। मुहल्ले के किसी पेड के नीचे या रलवे ग्राउण्ड मे। बम्बई फिल्म जगत के किस्से सुनाने वाले, अपने किस्सों को पूरा नमक मसाला लगाकर प्रमाणित बनाने का प्रयास करते, जिन्हें सुन सुनकर दूसरे लड़को का मन बुरी तरह मचलने लगता।

कंदू कहता—मुझे तो बेशक नर्गिस बतन माँजने के लिए रख ले।

मकबूल कहता—मैं श्यामा के घर मे झाडू लगाने को तयार हूँ। माली रख तो ले हमे एक बार।

नेकू आह भरता—मौका तो दे। हम उसके कपडे धो धोकर जिन्दगी गुजार

लेंगे।

शफी मेहता—मुझे तो बस सुरैया मालिश कराने के लिए रख ले तो मेरा जीवन सफल हो जाये।

—भक्क साले, इस काम के लिए क्या हम मर गये हैं। तेरे तो हाथ इतने खुरदरे हैं कि नाजुक बदन छिल जाये। तब सुनील झट से बोलता।

समय तेजी से गुजरता जा रहा था। वे एक एक क्लास और आगे बढ़ गये थे। मगर ऐसी बातों में लेशमात्र भी कमी नहीं आती थी। सुशील और शफी, बम्बई भागने की योजनायें बनाते। उन्हें क्रियान्वित रूप देने का मन बनाते। कहते ऐसे ही तो आदमी में मजबूती आती है। वह जिन्दगी में कुछ कर गुजरता है। वरना पड़े रहो बरेली में। सड़ते रहो एक ही जगह।

शफी मेहता—पर रगड़ा तो लड़की का है। कौन चलेगी हमारे साथ।

कुन्दन उन्हें तसल्ली देता—इसकी तुम फिक्र मत करो। वहीं बम्बई में हमारी दीदी के आसपास बहुत सी लड़कियाँ रहती हैं। उन्हीं में से दो-तीन को ले लेंगे। पर वह आकाशी का नाम जबान पर नहीं लाता। इस नाम को अपने दिल में ही सँजोए रखता। उसका मन तो एक्टर बनने का नहीं था।

वह तो बम्बई जाकर बस एक झलक आकाशी को देख लेना चाहता था। वह आकाशी जो विमला जैसी थी। विमला। वह आकाशी के माध्यम से विमला तक पहुँचना चाहता था।

इस पहुँच के लिए अपने दोस्तों को इस्तेमाल करना चाहता था। एक विमला हो तो सौ-सौ एक्ट्रेसें उसके सामने पानी भरें। बस सेंथुपुरे वाली विमला मिल जाये। एक्ट्रेसों से क्या लेना देना। अब विमला को नहीं तो आकाशी को तो देखा ही जा सकता है।

फिर काफी विचार विमर्श के बाद एक दिन सुशील ने एक ज्योतिषी को सवा पाँच आने दिये। खूब बढ़िया मुहूर्त निकलवाया। तीनों मित्र भाग छूटे।

उन्हें खाने पर बुलाया। उन सब लोगो के बीच, जो लोग भी सीमा पार से आये हुए थे। उनके मुंह मे लगभग एक से वाक्य होने—हमारे साथ बहुत बुरा हुआ। हमारे पजाब मे तो यह रिवाज नही था कि इक डग (टाइम) रोटी खिलायी छुट्टी। नहीं-नहीं दोपहर और रात दोनो बार खाना खाना पडेगा । सिंध मे तो हम लोग ऐसा-ऐसा करते थे। कुछ व्यापारी तो पजाब सिंध वगैरह को जैसे भूल चुके थे। वे औद्योगिक घरानो की श्रेणी की ओर पैर पसार रहे थे। उन जसे लोगों के हिसाब से वही बात कि आठ-दस साल और पहले पाकिस्तान बन जाता तो उनके कैरियर (भविष्य) के लिए और शुभ रहता। परन्तु अधिकतर विस्थापितो का छोटा-मोटा व्यापार हर वक्त बीच मझधार डोलता रहता। उनके मुह से प्राय 'मारे गये' शब्द निकलता। पता नही किस किसको गालियाँ देते। अपने नसीबो को। भगवान को। जिन्ना नेहरू को।

आकाशी का परिवार भी साधारण परिवार था। माँ पाकिस्तान मे मारी गयी थी। वह अपन पिता, चाचा और चाची के साथ रह रही थी। दोनो भाइयो को बिलकुल फुरसत नही थी। वे दिन रात अपने आपको जमाने मे जद्दोजहद कर रहे थे। आकाशी की चाची बहुत अच्छी थी। आकाशी को बहुत प्यार से रखती। कुन्दन को भी यह बहुत अच्छी लगती। वह कुन्दन, आकाशी के साथ उन्ही की उम्र की बन जाती। बतियाती, खेलती, और रसोई या सिलाई वगरह के कामो में लग जाती। कुन्दन, आकाशी के साथ पढाई, स्कूल और खेलो की बातें करता रहता।

कुन्दन प्राय सुस्ती, थकावट जुकाम आदि का बहाना बनाकर, सैर को न जाता। 'आकाशी के घर रह लूगा' कहकर रास्ते मे लटक जाता। बाकी सब लोग बाजार चौपाटी जुहू आदि की सैर कर आते।

एक दिन अलका ने पूछ ही लिया—क्यो कसी लगी आकाशी ?

—अच्छी है, पर तुमने तो लिखा था—बिलकुल बिमला की तरह है। बताओ कसे है, बिमला की तरह। कहाँ बिमला और कहाँ यह आकाशी ?

—ठीक पूछा, तुमने, अलका समझाने के लहजे मे बोल रही थी, कहाँ बिमला, मेरी उम्र जितनी, और कहाँ यह आकाशी तेरी उम्र से भी कम। बोल, करा दू तेरी शादी। बेशक देख लेना बडी होकर बिमला जैसी ही निकल आयेगी।

—हिश , कुन्दन ने मुह सिकोड़ा। साथ ही शरीर मे हल्की-सी गुदगुदी उठी। वह कल्पना मे फिर से आकाशी को देखे बिना न रह सका, जब वह थोडी और बडी हो जायेगी। बिलकुल बिमला की तरह बडी-बडी आँखों से बातें करने वाली बिमला। मोटे मोटे गुलाबी होठो से छलती मुस्कान से मानो वह एकबारगी नहा उठा।

फिर अपनी भावनाओ पर नियन्त्रण पाता हुआ बोला, बस-बस मैं तो ऐसे

लेंगे।

शफी कहता—मुझे तो बस सुरैया मालिश कराने के लिए रख ले तो मेरा जीवन सफल हो जाये।

—मधक साले, इस काम के लिए क्या हम मर गये हैं। तेरे तो हाथ इतने खुरदरे हैं कि नाजुक बदन छिल जाये। तब सुनील झट से बोलता।

समय तेजी से गुजरता जा रहा था। वे एक एक क्लास और आगे बढ़ गये थे। मगर ऐसी बातों में लेशमात्र भी कमी नहीं आती थी। सुशील और शफी, बम्बई भागने की योजनायें बनाते। उन्हें क्रियान्वित रूप देने का मन बनाते। कहते ऐसे ही तो आदमी में मजबूती आती है। वह जिन्दगी में कुछ कर गुजरता है। वरना पड़े रहो बरेली में। सड़ते रहो एक ही जगह।

शफी कहता—पर रगड़ा तो लड़की का है। कौन चलेगी हमारे साथ।

कुन्दन उन्हें तसल्ली देता—इसकी तुम फिक्र मत करो। वहीं बम्बई में हमारी दीदी के आसपास बहुत सी लड़कियाँ रहती हैं। उन्हीं में से दो-तीन को ले लेंगे। पर वह आकाशी का नाम जबान पर नहीं लाता। इस नाम को अपने दिल में ही सँजोए रखता। उसका मन तो एक्टर बनने का नहीं था।

वह तो बम्बई जाकर बस एक झलक आकाशी को देख लेना चाहता था। वह आकाशी जो बिमला जैसी थी। बिमला। वह आकाशी के माध्यम से बिमला तक पहुँचना चाहता था।

इस 'पहुँच' के लिए अपने दोस्तों को इस्तेमाल करना चाहता था। एक बिमला हो तो सौ-सौ एक्ट्रेसें उसके सामने पानी भरें। बस शेखूपुरे वाली बिमला मिल जाये। एक्ट्रेसों से क्या लेना देना। अब बिमला को नहीं तो आकाशी को तो देखा ही जा सकता है।

फिर काफी विचार विमर्श के बाद एक दिन सुशील ने एक ज्योतिषी को सवा पाँच आने दिये। खूब बढ़िया मुहूर्त निकलवाया। तीनों मित्र भाग छूटे।

अलका दीदी ने इन तीनों को बुरी तरह से डाँटा। विशेष रूप से शफी को—तू तो इन सबसे बड़ा है। अक्ल होनी चाहिए। मगर डाँट से ज्यादा प्यार कहीं बढ़ कर किया। झट से पति को बरेली तार देने को कहा। अच्छी तरह से बम्बई की सैर करायी। रेस्टॉरेंट में ले गयी। समुद्र के किनारे दौड़ाया। आर्मी कैंटीन से सबको उपहार दिलवाये। मिलिट्री क्लबों में सबसे मिलवाया। प्राय हर तबके के लोगों से कुन्दन के जीजाजी की अच्छी जान पहचान थी। कई परिवार वालों ने

उन्हे खाने पर बुलाया। उन सब लोगो के बीच, जो लोग भी सीमा पार से आये हुए थे। उनके मुंह मे लगभग एक से वाक्य होते—हमारे साथ बहुत बुरा हुआ। हमारे पजाब मे तो यह रिवाज नही था कि इक डग (टाइम) रोटी खिलायी छुट्टी। नही नही दोपहर और रात दोनो बार खाना खाना पडेगा । सिंध मे तो हम लोग ऐसा ऐसा करते थे। कुछ व्यापारी तो पजाब सिंध वगरह को जैसे भूल चुके थे। वे औद्योगिक घरानो की श्रेणी की ओर पैर पसार रहे थे। उन जसे लोगो के हिसाब से वही बात कि आठ दस साल और पहले पाकिस्तान बन जाता तो उनके कॅरियर (भविष्य) के लिए और शुभ रहता। परन्तु अधिकतर विस्थापितो का छोटा मोटा व्यापार हर वक्त बीच मझधार डोलता रहता। उनके मुह से प्राय 'मारे गये' शब्द निकलता। पता नही किस किसको गालियाँ देते। अपने नसीबो को। भगवान को। जिन्ना नेहरू को।

आकाशी का परिवार भी साधारण परिवार था। माँ पाकिस्तान मे मारी गयी थी। वह अपने पिता, चाचा और चाची के साथ रह रही थी। दोनो भाइयो को बिलकुल फुर्सत नही थी। वे दिन रात अपने आपको जमाने मे जद्दोजहद कर रहे थे। आकाशी की चाची बहुत अच्छी थी। आकाशी को बहुत प्यार से रखती। कुन्दन को भी यह बहुत अच्छी लगती। वह कुन्दन, आकाशी के साथ उन्ही की उम्र की बन जाती। बतियाती, खेलती, और रसोई या सिलाई वगरह के कामो मे लग जाती। कुन्दन, आकाशी के साथ पढाई, स्कूल और खेलो की बातें करता रहता।

कुन्दन प्राय सुस्ती, थकावट जुकाम आदि का बहाना बनाकर, सर को न जाता। 'आकाशी के घर रह लूगा' कहकर रास्ते मे सटक जाता। बाकी सब लोग बाजार चोपाटी जुहू आदि की सैर कर आते।

एक दिन अलका ने पूछ ही लिया—क्यो कैसी लगी आकाशी ?

—अच्छी है, पर तुमने तो लिखा था—बिलकुल बिमला की तरह है। बताओ कैसे है, बिमला की तरह। कहाँ बिमला और कहाँ यह आकाशी ?

—ठीक पूछा, तुमने, अलका समझाने के लहजे मे बोल रही थी, कहाँ बिमला, मेरी उम्र जितनी, और कहाँ यह आकाशी तेरी उम्र से भी कम। बोल, करा दू तेरी शादी। बेशक देख लेना बडी होकर बिमला जसी ही निकल आयेगी।

—हिश , कुन्दन ने मुह सिकोडा। साथ ही शरीर मे हल्की-सी गुदगुदी उठी। वह कल्पना मे फिर से आकाशी को देखे बिना न रह सका, जब वह थोडी और बडी हो जायेगी। बिलकुल बिमला की तरह बडी-बडी आँखो से बातें करने वाली, बिमला। मोटे मोटे गुलाबी होठो से छनती मुस्कान से मानो वह एकबारगी नहा उठा।

फिर अपनी भावनाओ पर नियन्त्रण पाता हुआ बोला, बस-बस मैं तो ऐसे

ही जरा आकाशी का देखने यहाँ चला आया था। और यह मेरे दोनों दोस्त एक्टर बनने।

अलका कुछ नहीं बोली। उसकी ओर देखकर थोड़ा थोड़ा मुस्कराती रही।

—सच भैनजी, सच। कुछ देर बाद कुन्दन फिर बोला—इन्हें किसी भी तरह एक्टर बनवा दो। उम्र भर तुम्हारे गुण गायेंगे। इससे बरेली का नाम भी रोशन होगा।

अलका और कुन्दन में यह बातचीत चल रही थी। उधर सुशील और शफी बाहर खड़े समुद्र की ओर देख रहे थे। अलका ने उन्हें भी बुला लिया।

—तो तुम लोग यहाँ एक्टर बनने आये थे।

—फिर किसलिए आये हैं। दीदी आप तो समझती हैं। शफी ने कहा।

अलका ने सबको सम्बोधित किया—बम्बई को महानगर कहा जाता है। यहाँ किसी आदमी के पास बड़े से बड़े एक्टर को देखने की भी फुर्सत नहीं है। जब तुम लोग आये हो तो मैं चाहूँगी, कोई अरमान दिल में रखकर न जाओ।

सुशील बोला—आप तो दीदी बस हमें मिलवा दीजिये।

अलका ने कहा—यहाँ हमारी जान-पहचान के दो-तीन लोग हैं जिन्हें कभी कभी किसी फिल्म में काम मिल जाता है। उनके साथ भेज दूंगी। हिम्मत है तो बात कर देखो। और नहीं तो स्टूडियो और शूटिंग देख ही आओगे।

यह लोग दो बार जाकर स्टूडियो देख आये थे।

—बस और नहीं। अब हम वापस जायेंगे। शफी ने कहा।

सबके चेहरे उतरे हुए थे।

सुशील बोला—यहाँ तो गंदगी भरी पड़ी है। किसी की कोई इज्जत नहीं। हम लोगों ने स्टूडियो से दूर एक रेस्टोरेन्ट में कई एक्स्ट्रा कलाकार लड़कियों को देखा। अजीब तरीके से बदन ढके हुए, एक एक कप चाय के लिए तरसती मरती हैं। बस सारा दिन बैठी रहती हैं, इस आस में कि शायद उन्हें कोई किसी छोटे मोटे रोल के लिए बुला ले। आखिर में थककर चूर हो जाती हैं और देर रात को घर लौट पाती हैं।

—हाँ दीदी, शफी बोला—पूरी जलालत की जिन्दगी है। कई लोगों ने ऐसी ऐसी बातें बतायीं जिन्हें कहते हुए भी शर्म आती है।

अलका हँस दी—तुम सब तो बहुत सयाने लड़के हो जो इतनी जल्दी समझ गये। वरना कई बच्चे तो बड़े अड़ियल होते हैं। पूरी तरह बरबाद होकर ही दम लेते हैं।

कुन्दन मुस्कराता रहा। वह दूसरी बार उनके साथ गया ही नहीं था। रास्ते में आकाशी का घर पड़ता था। वहीं रुक गया था। इस बार टाँगों में दर्द होने का बहाना करके घूमने की बजाये आकाशी के साथ करम खेलने रुक गया था।

दो रोज बाद ही सेना का एक ट्रक उत्तर प्रदेश जा रहा था। जीजा जी ने उसी ट्रक में तीनों को बरेली भिजवाने की व्यवस्था करा दी।

अलका ने आँसू बहाते हुए उन्हें विदाई दी। बोली—घर से इस तरह से भागना कितनी बुरी बात है। पर चलो, इस तरह कुछ समय के लिए मेरा मन भी लग गया। तुमने बम्बई की सैर कर ली। ठीक वक्त पर आ लिए। अब तो हमारा तबादला देहरादून हो गया है। वह तो बरेली के नजदीक है। सब जने वहाँ जरूर आना।

—जरूर आयेंगे दीदी। शफो भी आँसू बहा रहा था। तुम तो सगी दीदी से बढ़कर हो।

सुशील ने भी आँखें पोंछते हुए कहा—अबकी हम घर वालों से पूछकर आयेंगे।

कुंदन कुछ नहीं बोल रहा था। उदास उदास बस इधर-उधर देख रहा था। तभी उसे दूर से आकाशी आती दिख गयी। उसे लगा अब उसकी यात्रा ठीक से कटेगी।



जिस तरह बम्बई पहुँचने पर इन लड़कों को पहले अलका दीदी तथा जीजा जी की नाराजगी और डाँट का सामना करना पड़ा था और बाद में प्यार और ममत्व मिला था, लगभग वापस बरेली पहुँचने पर भी ऐसा ही सलूक हुआ इन सबके साथ। बाद में पता चला था कि सुशील का स्वागत तो उसके बाप ने जूता से किया था और माँ ने हल्दी और हलुए से।

मगर दोस्त आखिर दोस्त होते हैं। उनको इन तीनों की हिम्मत पर नाज था। उनका स्वागत' देखने लायक था। जैसे यह लोग हज यात्रा से लौटे हों। बार-बार इनके गलों में बाँह डालकर, अपने कंधों पर बैठा लेते। इनके लिए जिंदाबाद के नारे लगाते। तब इन सबके सामने माँ बाप की डाँट फटकार बेमतलब-बेसूद हो गयी थी। उत्साहित होकर यह तीनों, अपने दोस्तों से अपनी रोमांचक यात्रा के एक-एक क्षण का वर्णन बड़ी बारीकी से करते।

आखिर उन दोस्तों की दिलचस्पी भी तो एक्टर बनने में थी। वे भी राजकपूर, दिलीप कुमार, करण दीवान, देवानन्द बनने की हसरत पालते थे। इसलिए प्यार उड़ेलते उँडेलते गुस्सा करने लगते—तो सालों हमें क्यों नहीं भगवाया।

कुन्दन क्या करता? वह जानता था, दोस्तों से बिगाड़ बहुत बुरी चीज होती है। इसलिए उनके मिले शिक्वे सर माथे पर रखता—अबकी बार जरा ढंग से भागेंगे। उस वक्त तो थोड़ी जल्दी में थे।

।-नीच, सच्चाइ, मजाक को समझने की
बचपना बहुत दूर तक भी उनसे चिपटा
। नाजुक मिजाज, पिद्दी-सा लड़का।
कुछ दोस्त तो उम्र के साथ थोड़ी ऊँचन पर भी वह 'वही' था। वह तो जब
स्थिति में आ रहे थे, लेकिन कइयों का ठेठापता। और जब उसे मालूम हुआ कि
रहता है। ऐसा ही एक लड़का था, चीनूोज ठण्डी आहें भरता। अपने सीन को
नाक, मुंह बहता। साल डेढ़ साल गुजर जाव पकड़ता और फिर उनसे अपने सिर
भी मिलता, बाकायदा भागने की 'रट' मक अबकी बार पाकिस्तान भागने का
नूरजहाँ, पाकिस्तान जा चुकी है तो हर र
छोटे-छोटे हाथो से मलता। दोस्तों के पी खातिर दोस्त, दोस्त का दिल नही
पर हाथ रखवाकर कसमें खिलवाता ।हूा-सा हो तो उसका खास ख्याल रखा
प्रोग्राम बनायेंगे।
दोस्त तो दोस्त होते हैं। दोस्तों कसकता।
तोड़ते। और फिर अगर दोस्त का दिल न बहुत उदास था। वह अपने कोस की
जाता है। पकिस्तान के नक्शे में चुन चुनकर अपने
मगर ऐसा बहुत दिनों तक नहीं चल चीनू आ पहुंचा। आते ही, आदत के
एक दिन कुन्दन का दिल न जाने क्यों राम बना रहे हो?
पुरानी एटलस खोलकर बैठा हुआ था। प नहीं क्या हुआ, आप से आप उसका
शहरों को तलाश रहा था। तभी वहाँ र जड़ दिया। चीनू रोने लगा।
मुताबिक पूछने लगा—बोलो, कब का प्रो म्मलता तो धीरे-से उसके गले में हाथ
कुन्दन की आँखें भरी हुई थीं। पत तो कलिज में आ गया। तुझे तो बस
हाथ उठा और एक तमाचा चीनू के गाल नहीं कि बम्बई तो भागा जा सकता है,
कुन्दन भी सिसकने लगा। थोड़ा ।ागा जा सकता तो मैं कुदियाँ करोड़,
डालता हुआ बोला—बेवकूफ, साला। भता।
एक नूरजहाँ की पड़ी है। इतनी भी खबरमे भीग आयी। शायद उसमें पहली बार
पाकिस्तान नहीं। अगर वहाँ आसानी से के दुःख को समझा।
पेशावर, सक्खर, जिला शेखूपुरा न हो अक्या की तरफ चले गये।
इतना सुनते ही चीनू की आँखें फिर
कुछ बदलाव-सा आया और उसने कुन्दन
दोनों एक दूसरे का हाथ थामे, बअ का दायरा बढ़ने लगा था। लोगों को
हो चली थी। बम्बई यात्रा से उसके
सी लौटने पर, एक घटना ने उसके मन-
समय के साथ, धीरे धीरे कुन्दन में, समा
देखने समझने की क्षमता भी परिपक्व गली कूचे कूचे और बाजारों में यूँ ही
अनुभवों में विस्तार हुआ था। यहाँ मर
मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ी थी।
एक अधपगला सरदार था। गल

घूमता फिरता था। किसी को भी गालियाँ देने लगता। अखबार वालो को। नेताओ को। हिन्दू, सिक्खो को देखकर कुछ ज्यादा ही बिदक पडता—बोले सो निहाल—ले गये कलासो नू नाल। हे खें खें हें खी खो' उसकी विद्रूप हँसी सबका दिल हिला देने वाली होती। फिर पता भी नहीं चलता कि वह हँसी कब रोने मे तबदील हो जाती। रोते रोते कहता—लाओ मेरी कैलासो। लौटा दो।

कुन्दन ने पाया कि वह सरदार, शफी के घर रह रहा था। वह पहले से बहुत सामान्य था। शफी के अब्बू रजाक साहब कहते—मैं इन सब लोगो का गुनाहगार हूँ। फिर भी इस नेक बख्त ने मेरे यहाँ रहना कबूल किया है। हिन्दू और सिक्खो ने इसकी हरचन्द मदद करनी चाही थी, पर यह चूककर आखिर मेरे साथ आ गया था। हे परवरदिगार, हम सब पर रहमो-करम रखना।

बम्बई से लौटे हुए कुन्दन को जब मुश्किल से छ महीने हुए थे, तभी जीजा जी स्थानातरित होकर देहरादून आ गये थे। देहरादून बम्बई के मुकाबले बरेली से बहुत ही पास पडता था। वह जब-तब अकेला या हरमिलाप को साथ लेकर छुट्टियो मे वहाँ चला जाता। दोनो भाई खेलते-कूदते, सैर करते, ढलानो पर से साइकिलें फिसलाते। आमो के दिन होते तो रस्सी मे पत्थर बाँधकर पेडो की शाखाओ मे उलझाकर कच्चे पक्के आम गिराते रहते। ऐसे जगली आम, जिन्हें अधिक खाना कठिन होता तो भी मुकाबले म आकर सख्या बढाते रहते।

कभी वह भाई भरजाई के घर कासगज, माहरेरा चला जाता। वहाँ से मथुरा, वृन्दावन भी घूम आता। उसके ताऊजी डाक विभाग मे थे। पाकिस्तान से आने के बाद उनकी नियुक्ति कासिमपुर पावर हाऊस मे हुई थी। इस कस्बे मे वे सब पोस्ट मास्टर लगे थे। एक विशेष घटना के कारण अब कुन्दन ने बहुत पहले से वहाँ जाना बिलकुल बन्द कर दिया था। वह यहाँ तो बहुत पहले आया-जाया करता था। वहाँ वह शहतूतो-जामुनो के पेडो पर चढकर बठा रहता। वह अकेला नही होता। कस्बे के लम्बे धडगे छोकरे होते जो प्राय अधनगे से घूमते रहते थे। वे कुन्दन को साथ लेकर तलैयो की ओर निकल पडते। वहाँ छोटी-छोटी मछलियाँ पकडते, जिनसे इतनी बदबू उठती कि वह उन्हे वही फेंक देता। उन्हे तडपता हुआ देखता तो किसी टूटे हुए घडे मे पानी भरकर उन्हें डाल देता। घर ले जाने पर उसे ताऊजी बुरी तरह से डाँटते। वह उन्हे लेकर लडको की मिन्नतें करता कि वही इन्हे रख लें। लडके लेना भी चाहते पर कुन्दन को तग करने मे उन्हे मजा आता। वे इनकार कर देते। कुन्दन किसी तरह वही टूटा मटका सहेजता सम्भालता, उसी बावडी तक पहुँचता। मछलियो को उसमें डाल देता। इस झमेले से उसे सतोष होता—अच्छा ही हुआ। ताऊजी ने डाँटा। लडको ने लेने से मना कर

दिया। इस तरह बेचारी मछलियों को उनका ठेठ घर तो मिल गया।

ताऊजी उसे बहुत प्यार से रखते थे, पर डाँटते भी खूब थे। उन्हें उसकी ऐसे अनपढ़ गँवार लड़कों की संगत पर एतराज था। तब ताई जी उसका पक्ष लेती—यहाँ गाँव में फिर किसके साथ खेले ?

ताऊजी अपनी बात दोहराते—तुम नहीं जानती, यहाँ के लड़के कितने लफंग-बदमाश हैं।

अपनी उम्र के हिसाब से ही कुन्दन लफंग-बदमाश शब्दों की व्याख्या करने का यत्न करता। मार काट, दंगा फसाद, चोरी चकारी, जैसी हरकतें तो यह लोग नहीं करते, तब यह बदमाश कैसे हुए। गाँव में रहकर और गरीबी की वजह से यह लोग पूरी तरह से पढ़ लिख नहीं पाते। खेतों में काम करके पशुओं को चराकर अपने माँ बाप की सहायता करते हैं। साधारण मैले या फटे हुए कपड़े पहनते हैं तो क्या इससे ये लोग बदमाश लफंग हो गये ?

कुन्दन पर इन अलमस्त फक्कड़ लड़कों का एक अजीब-सा मोहपाश छाया रहता था। शाम को अक्सर टीलों पर बैठकर यह लोग देवी-देवताओं और लोक नायकों के या चोली लहंगा वाले गीत गाते। कोई कोई अपने घर से ढोलक-मजीरे भी उठा लाता। खूब रंग जमता।

कभी कभी भरी दोपहरी में कुन्दन भी इनके साथ घूमता। दौड़ लगाता। पेड़ों की छाँव में या पेड़ों पर चढ़कर उनके साथ बैठता। वे लोग तोता मैना अलिफ लैला वगैरह की कहानियाँ कहते। कुन्दन से भी शहर स्कूल के किस्से सुनते।

अब कई रोज से कुन्दन घर से नहीं निकल सका था। एक दिन, ताऊजी कार्यालय में व्यस्त थे। दुपहर का समय था। ताई जी सुस्ता रही थी। उन्हीं से आधी अधूरी सहमति लेकर घर से भाग छूटा और उन्हीं लड़कों की संगत में जा शामिल हुआ।

कई दिना बाद उसे आया देख सबने उसका हालचाल पूछा और कहा कि हमने तो समझा था कि शायद तुम वापस शहर चले गये हो।

इधर उधर की बातें चल निकलीं। फिर नच्छू नामक गठे हुए शरीर के लड़के ने पूछ ही लिया—जब तुम यहीं थे तो आये क्यों नहीं ?

कुन्दन ने उत्तर दिया—ताऊजी आने नहीं देते।

उसने फिर प्रश्न किया—क्यों नहीं आने देते ?

कुन्दन ने उसी सरलता से कह दिया—वे कहते हैं यहाँ के ये सारे लड़के बदमाश हैं।

इस पर लच्छू सबके सामने लम्बी जीभ लपलपाकर, फिस्स फिस्स करके

हँसने लगा।

उसे ऐसा करते देख, बाकी लडके भी हँसने लगे।

एक लड़के ने कुन्दन की तरफ इशारा करते हुए कहा—इसे कुछ पता नहीं। इसे बताओ। बदमाश तो बडे लोग होते है।

लच्छू बोला—हाँ, तेरे ताऊजी ताई जी भी बदमाश हैं। हम सबके माँ बाप भी बदमाशी करते हैं। वरना हम लोग पदा न होते। यह देख, कहते कहते उसने गदले खाकी सफो वाली कोई किताब उसके सामने खोल दी। यह सब करते हैं हमारे माँ बाप। तस्वीरें देखकर कुन्दन डर गया था। उसे अजीब-सी सिहरन हुई थी। फिर वह वहाँ से भाग खडा हुआ था। एक साँस ऊपर एक सास नीचे। वह भागता हुआ घर लौटा था। वह लगातार दरवाजा खटखटा रहा था। दफ्तर की तरफ से भी दरवाजा बन्द था। उसने फिर से दरवाजा खटखटाया। बहुत देर बाद दरवाजा खुला था। इस गर्मी की भरी दुपहरी मे बिना बिजली के मकान मे क्या वे सचमुच इतनी गहरी नीद मे सो रहे थे। नही तो फिर क्या सचमुच ताऊजी, ताई जी मिलकर ।

यह वाकया बहुत पहले का है। गर्मियो की छुट्टियो के दिन थे। तब वास्तव मे कुन्दन आज की उम्र से बहुत छोटा था।

इसके तीसरे या चौथे दिन, उसने बडे अप्रत्यक्ष रूप मे लच्छू के सामन उसी पुस्तक को देखने की इच्छा व्यक्त की थी। फिर से एक जुगुप्सा भाव उपजा था।

इसके बाद वह कासिमपुर और नही ठहर सका था। (और न फिर कभी यहाँ आने का नाम ही न लिया।) छुट्टियाँ बाकी थी। अभी बरेली जाना नही चाहता था। इसलिए अलीगढ चचेरी बहन के घर चला गया था। पहले भी दो-चार बार अलीगढ आ चुका था। उसे अलीगढ भी बहुत भाता था। बहन के छोटे बच्चो के साथ उसका मन लगा रहता था। उन्हें खिलाते खिलाते और हँसाते मे ही कितना अच्छा वक्त गुजर जाता। जीजा जी भी उसे पूरे शहर मे घुमाते सैर कराते। वह कभी कभी यू ही बेमतलब बाजारो मुहल्लो में अकेला भी घूमता फिरता और पुरानी सनक के मुताबिक इनका मिलान अपने छूट गये शहरो की गलियों-बाजारों से करने लगता।

आयु बढने के साथ, अब वह अपने को खासा समझदार और 'बड़ा' मानने लगा था। पिछली बातो से हमेशा उबरने की कोशिश करता, फिर भी कासिमपुर वाली घटना यदा-कदा याद आ जाती। जनक विमला या आकाशी जसी सुन्दर सम्माननीय सहकिया के साथ एसी गन्दी हरकता की कल्पना करन से उसे भय होता। तथा वह इसे पाप समझता। 'प्यार' और 'वासना' म अन्तर करने का

प्रोफेसर साहब को तरस आ गया। बोले—बाऊजी इसका मन है तो पढ़ने दीजिये इसे। पढने मे होशियार भी है। मैं इसे कुछ ट्यूशन दिलवा दूगा। अपना खर्चा खुद निकाल लेगा।

प्रोफेसर सक्सेना की बात से तेजभान को खीज हुई। उन्होने कधे उचकाते हुए कहा—कौन सी दुनिया मे रह रहे हैं आप लोग। आप बेशक इसे एम० ए० करा दीजिये। मगर तब भी इसे चपरासीगीरी तक नही मिलेगी। आज मौका है। कल मेरी बात याद करके पछतायेंगे।

प्रोफेसर साहब ने कुन्दन के कधे पर हाथ रखकर कहा—साहब गलत नही कहते। आज ही न जाने कितने पढे लिखे लडके निकम्मे घूम रहे हैं। तुम एक बार सर्विस जॉइन कर लो। फिर सर्विस के दौरान धीरे धीरे पढ़ते रहना।

तेजभान जी और प्रोफेसर विश्वम्भर प्रसाद की बहस थोडी देर चली थी। वे जल्दी ही निष्कर्ष तक पहुंच गये थे। इस बहस मे जयदयाल जी कुछ नही बोले थे। कुदन को लगा कि बाऊजी एकदम से बेबस हो गये हैं। उसे उनकी मजबूरी पर तरस सा आने लगा। फिर अन्त तक वह भी चुप बना रहा। यही 'चुप्पी' उसकी 'मौन सहमति' थी।

कुन्दन को इस साटर की नौकरी मे बहुत मेहनत करनी पडती थी। दिन रात गाडियो मे डाक को सम्भालना छॅटना और गन्तव्य तक पहुँचाने मे पूरी सतकता बरतना। कही कोई कमी न रह जाये और उसके कारण किसी भी अनजान की हानि न हो जाये। उसके कारण यदि किसी का अहित होता है, तो वह इसे ही 'पाप' मानता। उसके सम्मुख पाप पुण्य की परिभाषाएँ प्रचलित अर्थों से जरा हट कर थी। उसके दूसरे सहकर्मी किसी बात को गम्भीरता से नही लेते थे। बल्कि वे भी ड्राइवर, गार्ड, पुलिस आदि की तरह ही बिना टिक्ट यात्रियो को अपने (आर० एम० एस०) के डिब्बे मे सुलाकर ले जाते और पसे बना लेते। ठीक है अपनी करनी अपने साथ। वह अकेला किस किसका विरोध कर सकता है। ऐसा सोचकर मात्र अपनी ड्यूटी को निष्ठापूर्वक करता रहता।

नौकरी क्या लगी, कुन्दन के घर लडकी वाले आने लगे। कई पुराने शहरो की जान पहचान वाले, कई बिलकुल अनजान लोग, जिनके बारे म वह कतई नही जानता था। बाऊजी के पत्रो से उसे यह सब पता चलता रहता था। अपने भाई साहब के अनुभवो से वह बहुत कुछ सीख चुका था। इसलिए वह 'कही भी शादी के लिए हामी नही भर रहा था। एक ही सोच कि विवाह' क्यो आवश्यक है। बिना शादी आम आदमी का हमारे समाज मे क्या रुतबा है। फिर ऐसे 'लडके-लडकी' क बधन से उसे दहशत सी होने लगती जो एक-दूसरे को जानते-समझते

ही नही। इसे वह मजाक समझता। लेकिन यह 'मजाक' सवत्र था। ज्यादा-से ज्यादा, बस एक बार चाय पर एक दूसरे' को देख लो।

इस परिपाटी के विरुद्ध उसके मन मे घोर असन्तोष था। 'कोट शिप' असम्भव थी। इस प्रकार इन बातो रिश्तो को लेकर साढे तीन साल हो चले। अब तक कुन्दन ने प्राइवेट बी० ए० कर ली थी और उसकी पदोन्नति भी हो चुकी थी। उसका मुख्यालय रेवाडी था। अब भी विभागीय कार्यों से उसे दूर दराज के स्टशनो पर जाना पडता था। एक दो बार वह लुधियाना भी हो आया और लक्ष्मण हलवाइ से भी मिला था। वह तो वहाँ बार बार जाना चाहता था क्योकि दोनो को अतीत स्मति म खो जाने मे अच्छा लगता था। किन्तु लुधियाना की ड्यूटी बहुत कम निकलती थी। बस दीवाली, नववष स देशो का आदान प्रदान हो जाता था।

केतकी कुन्दन की रिश्ते की बुआ थी। बचपन मे ही कुन्दन उनकी पढाई लिखाई से बहुत प्रभावित था। जिस जमाने मे उसे दूर दूर तक कोई भी दूसरी औरत थोडी पढी लिखी नही दिखती थी, उस जमाने मे केतकी बुआ छोटी छोटी लडकियो का पढाती थी। इससे भी बढकर वे ज्ञान और समाज सुधार की बातें करती थी। इसीलिए शुरु से ही कुन्दन केतकी बुआ की बहुत इज्जत करता था।

इन दिनो केतकी रोहतक के एक सरकारी स्कूल मे प्रधानाचार्या लगी हुइ थी। पति और पत्नी पाकिस्तान मे अलग अलग शहरो मे नियुक्त थे। पति का आज तक कोई पता ठिकाना नही। अब तो वह सिफ सब्र का घूट पीकर समय काट रही थी। अपनी छोटी सी गहस्थी और स्कूल मे व्यस्त थी।

अचानक एक दिन कुन्दन को रेवाडी मे (जहाँ वो कायरत था) केतकी बुआ का पत्र मिला। उन्होंने उसे बुलाया था। कुन्दन इन दिनो उनके सम्पक मे नही था। इसलिए आश्चर्य हुआ कि उन्हें उसका पता कहाँ से मिला।

रोहतक पहुँचकर कुन्दन को पूरी बात समझ मे आ गयी। उसका पता केतकी को बाऊजी ने दिया था। मुद्दा वही शादी का था। वे तो कुन्दन को कह-कहकर, एक तरह से हार चुके थे। वे जानते थे, कुन्दन अपनी केतकी बुआ के विचारो से प्रभावित है। उनका सम्मान करता है। केतकी के कहने-समझाने से शायद कोई बात बन जाये। अत केतकी ही अब उनके लिए एक छोटा सा सम्बल थी।

कुन्दन अपने तर्कों को, हथियार की तरह मानता था। उन्ही को लेकर बुआ के सामने खडा हो गया—बिना ठीक जान-पहचान के तथा एक दूसरे के विचारो, भावनाओ को समझे बगर, शादियाँ तो खूब होती हैं। पर आप क्या सोचती हैं—क्या यह ठीक है।

केतकी बुआ ने बडे दुलार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—यूरोप का

कुन्दन रेवाड़ी वापस आ गया और ड्यूटी करने लगा। स्टाफ वाले पूछते रहे कि बुआ ने क्यों बुलाया था? पर इस विषय में उसने किसी से कोई बात नहीं की। इतना ही कहा—ऐसे ही, कोई खास बात नहीं थी। फिर भी वह मन की बात किसी को बताना जरूर चाहता था। यह बात भ्रमप्रकाश से विश्लेषण सहित कहना चाहता था। यहाँ रेवाड़ी में वही उसका प्रिय मित्र था। वह लम्बी छुट्टी पर चल रहा था। नाम तो उसका ब्रह्मप्रकाश था, मगर वह बात को पेचीदा बनाकर बहुत लम्बी खींचता। मुख्य बात के कितने कितने अनुभाग कर देता। उन अनुभागों को भी अ ब स श्रेणियों म बाँटने लगता। उनकी बहुत सी बारीकियों में विचरण करने लगता कि बात का पूरी तरह से कचूमर निकल जाता। तब वह स्वय ही असल मुद्दे की गलियों में भटकता हुआ सब कुछ भूल जाता। अपनी लम्बी जीभ से होठ चाटते हुए कर्कश स्वर में पूछता—हाँ बोलो! मैं क्या कह रहा था? जैसे सामने वाले से पूछ न रहा हो, डाँट ज्यादा रहा हो।

इसीलिए कुन्दन ने उसका नाम भ्रमप्रकाश डाल रखा था। भ्रमप्रकाश अपनी बाँहें अजीब अन्दाज से ऊपर उठाता, फिर उन्हें हवा में लहराते हुए कुन्दन के गले में डाल देता। उसकी बाँहों और डाट में भी कुन्दन को अपनत्व प्राप्त होता। कुछ देर बाद ब्रह्मप्रकाश उलझनों को सुलझा भी लेता और अन्त में ऐसी पते की बात कह डालता कि सभी प्रभावित हो जाते।

कुन्दन एक एक दिन, गिन गिनकर काट रहा था। आखिर एक सुबह उसके कमरे में भ्रम का प्रकाश हुआ। वह माथे को हथेलियों से मलने लगा और आँखें फाड़कर देखने लगा। जैसे भूत प्रवेश कर रहा हो। दरवाजा तो खुला ही पड़ा था। कुन्दन पैरों पर चादर डाले चारपाई पर सिरहाने की टेक लिए चाय पी रहा था। उसे देखते ही कुन्दन ने बड़े उत्साह से कहा—कैसी मनहूस शक्ल निकल आयी है।

ब्रह्मप्रकाश ने अलसाये स्वर में उत्तर दिया—जितने रोज भी बाहर रहा, सवेरे शाम तेरी शक्ल को याद करता रहा—यह उसी का असर हो सकता है।

कुन्दन हँसता हुआ उठ खड़ा हुआ। उससे गले मिला। फिर से चाय बनायी।

शाम को ब्रह्म फिर से आकर उसे उलझने लगा—वाह उस्ताद, हमीं को लटका दे गये। अपनी बात पक्की कर आये रोहतक में।

—कौन बकता है?

—तुम्हारे सिवा सभी बकते हैं। बेटे जबान को जरा सीधा रखना सीखो और बक जाओ।

तब कुन्दन ने, रोहतक से केतकी बुआ का बुलावा और वहाँ पहुँचकर उनसे बातचीत का वृतांत सविस्तार कह सुनाया। फिर बोला—लोग भी गजब हैं। सच मैंने किसी से जिक्र तक नहीं किया। फिर भी न जाने कैसे यह दूसरों के क्रिया-कलापों की भनक पा लेने में माहिर हैं।

—उन्हें छोडो और अपनी हाँको, ब्रह्मप्रकाश बोला—ऐसे बस सोचते रहे तो बेटा सारी उमरिया यूं ही बीत रात हो जायेगी।

—तो क्या हुआ। क्या जरूरत है, शादी की?

सुनकर ब्रह्मप्रकाश, धीरे धीरे मुस्कराने लगा।

—इसमें भला हँसने की क्या बात है! कुन्दन ने थोडा चिढ़कर कहा।

अबकी ब्रह्मप्रकाश कुटिल भाव से हँसने लगा, तो कुन्दन ने उसे डाँटते हुए कहा—ज्यादा भ्रम फैलाने की कोशिश मत करो।

—तो सुनो, ब्रह्मप्रकाश ने लम्बी साँस खींचते हुए कहा—शादी की जरूरत हरएक को होती है। दृष्टांत सहित सुनाता हूँ। जरा दिल थामकर सुनना बरखुदार, श्रद्धापूर्वक।

—आगे बढो। कुन्दन ने रौब से कहा।

ब्रह्मप्रकाश ने कहना शुरू किया—दिल्ली में उस आदमी से मुझे मिलवाया गया।

—किस आदमी से? कुन्दन ने पूछा।

—जिसने शादी की है।

—तुम भ्रम फैलाने से बाज नहीं आओगे। फूट लो यहाँ से।

ब्रह्मप्रकाश ने कहा—आदमी में सब्र का माद्दा होना चाहिए। तुम भी चिन्तन करना। वह आदमी पाकिस्तान से पूरी तरह से उजडकर आया था। साथ में सिर्फ एक जवाँ बेटी को ला सका था। वह दिल्ली में फलों की रेहडी लगाने लगा। काम चल निकला तो दुकान बना ली। पडास में ही एक औरत रहती थी। अडोस-पडोस का काम करती थी। किसी प्रकार अपने लडके को कालेज में दाखिला दिला दिया। उस आदमी की तरह इस औरत के भी बाकी सदस्य पाकिस्तान में मारे गये थे। थोडा समय गुजरा। एक दिन फल वाला, उस औरत के पास आया और बोला—बीबी! तेरा लडका बडा होनहार है। उसकी शादी मेरी लडकी के साथ कर दे। उसकी पढ़ाई लिखाई वगैरह का जिम्मा मेरा रहा। औरत मान गयी।

मुश्किल से छः महीने गुजरे होंगे कि एक दिन वह फिर उस औरत के पास पहुँचा और कहा—पहले तेरे लडके का हाथ माँगने आया था, अबकी तेरा।

सुनकर औरत अनियन्त्रित हो उठी—फिटे मुह। फिर जरा रुककर कहा, यह क्या कह रहे हो। तुम तो समधी जी हो। लोग क्या कहेंगे?

वह बोला—मारो गोली लोगों को। अकेले अकेले रहकर हम दोनों अपनी जिन्दगी क्या बरबाद करें?

थोडा समय तो लगा मगर उन दोनों की भी शादी हो गयी। लोग बाग हँसे और फिर आहिस्ता-आहिस्ता चुप हो गये।

कुन्दन रेवाड़ी वापस आ गया और ड्यूटी करने लगा। स्टाफ वाले पूछते रहे कि बुआ ने क्यों बुलाया था? पर इस विषय मे उसने किसी से कोई बात नही की। इतना ही कहा—ऐसे ही, कोई खास बात नही थी। फिर भी वह मन की बात किसी को बताना जरूर चाहता था। यह बात भ्रमप्रकाश से विश्लेषण सहित कहना चाहता था। यहाँ रेवाड़ी मे वही उसका प्रिय मित्र था। वह लम्बी छुट्टी पर चल रहा था। नाम तो उसका ब्रह्मप्रकाश था, मगर वह बात को पचीदा बनाकर बहुत लम्बी खीचता। मुख्य बात के कितने कितने अनुभाग कर देता। उन अनुभागो को भी अ ब स श्रेणियो मे बाँटने लगता। उनकी बहुत सी बारीकियों में विचरण करने लगता कि बात का पूरी तरह से कचूमर निकल जाता। तब वह स्वयं ही असल मुद्दे की गलियों में भटकता हुआ सब कुछ भूल जाता। अपनी लम्बी जीभ से होठ चाटते हुए ककश स्वर मे पूछता—हाँ बोलो! मैं क्या कह रहा था? जैसे सामने वाले से पूछ न रहा हो, डाँट ज्यादा रहा हो।

इसीलिए कुन्दन ने उसका नाम भ्रमप्रकाश डाल रखा था। भ्रमप्रकाश अपनी बाँहे अजीब अन्दाज से ऊपर उठाता, फिर उन्हें हवा मे लहराते हुए कुन्दन के गले मे डाल देता। उसकी बाँहो और डाट मे भी कुन्दन को अपनत्व प्राप्त होता। कुछ देर बाद ब्रह्मप्रकाश उलझनो को सुलझा भी लेता और अन्त मे ऐसी पते की बात कह डालता कि सभी प्रभावित हो जाते।

कुन्दन एक एक दिन, गिन गिनकर काट रहा था। आखिर एक सुबह उसके कमरे मे भ्रम का प्रकाश हुआ। वह माथे को हथेलियो से मलने लगा और आँखें फाड़कर देखने लगा। जसे भूत प्रवेश कर रहा हो। दरवाजा तो खुला ही पडा था। कुन्दन पैरो पर चादर डाले चारपाई पर सिरहाने की टेक लिए चाय पी रहा था। उसे देखते ही कुन्दन ने बड़े उत्साह से कहा—कैसी मनहूस शक्ल निकल आयी है।

ब्रह्मप्रकाश ने अलसाये स्वर म उत्तर दिया—जितने रोज भी बाहर रहा, सवेरे-शाम तेरी शक्ल को याद करता रहा—यह उसी का असर हो सकता है।

कुन्दन हँसता हुआ उठ खड़ा हुआ। उससे गले मिला। फिर से चाय बनायी।

शाम को ब्रह्म फिर से आकर उसे उलझने लगा—वाह उस्ताद, हमीं को लटका दे गये। अपनी बात पक्की कर आये रोहतक मे।

—कौन बकता है?

—तुम्हारे सिवा सभी बकते हैं। बेटे जबान को जरा सीधा रखना सीखो और बक जाओ।

तब कुन्दन ने, रोहतक से केतकी बुआ का बुलावा और वहाँ पहुँचकर उनसे बातचीत का वृतांत सविस्तार कह सुनाया। फिर बोला—लोग भी गजब हैं। सच मैंने किसी से जिक्र तक नही किया। फिर भी न जाने कैसे यह दूसरा के क्रिया कलापो की भनक पा लेने मे माहिर हैं।

—उन्हें छोड़ो और अपनी हाँको, ब्रह्मप्रकाश बोला—ऐसे बस सोचते रहे तो बेटा सारी उमरिया यूं ही बीत राग हो जायेगी।

—तो क्या हुआ। क्या जरूरत है, शादी की ?

सुनकर ब्रह्मप्रकाश, धीरे धीरे मुस्कराने लगा।

—इसमे भला हँसने की क्या बात है। कुन्दन ने थोड़ा चिढ़कर कहा।

अबकी ब्रह्मप्रकाश कुटिल भाव से हँसने लगा, तो कुन्दन ने उसे डाँटते हुए कहा—ज्यादा भ्रम फैलाने की कोशिश मत करो।

—तो सुनो, ब्रह्मप्रकाश ने लम्बी साँस खीचते हुए कहा—शादी की जरूरत हरएक को होती है। दृष्टात सहित सुनाता हूँ। जरा दिल थामकर सुनना बरखुर्दार, श्रद्धापूर्वक।

—आगे बढ़ो। कुन्दन ने रौब से कहा।

ब्रह्मप्रकाश ने कहना शुरू किया—दिल्ली मे उस आदमी से मुझे मिलवाया गया।

—किस आदमी से ? कुन्दन ने पूछा।

—जिसने शादी की है।

—तुम भ्रम फैलाने से बाज नही आओगे। फूट लो यहाँ से।

ब्रह्मप्रकाश ने कहा—आदमी मे सब्र का माद्दा होना चाहिए। तुम भी चिन्तन करना। वह आदमी पाकिस्तान से पूरी तरह से उजडकर आया था। साथ म सिर्फ एक जवाँ बेटी को ला सका था। वह दिल्ली मे फलो की रेहड़ी लगाने लगा। काम चल निकला तो दुकान बना ली। पडोस मे ही एक औरत रहती थी। अडोस-पडोस का काम करती थी। किसी प्रकार अपने लडके को कालेज मे दाखिला दिला दिया। उस आदमी की तरह इस औरत के भी बाकी सदस्य पाकिस्तान मे मारे गये थे। थोड़ा समय गुजरा। एक दिन फल वाला, उस औरत के पास आया और बोला—बीबी ! तेरा लडका बडा होनहार है। तू उसकी शादी मेरी लडकी के साथ कर दे। उसकी पढ़ाई लिखाई वगरह का जिम्मा मेरा रहा। औरत मान गयी।

मुश्किल से छ महीने गुजरे होगे कि एक दिन वह फिर उस औरत के पास पहुँचा और कहा—पहले तेरे लडके का हाथ माँगने आया था, अबकी तेरा।

सुनकर औरत अनियन्त्रित हो उठी—फिटे मुह। फिर जरा रुककर कहा, यह क्या कह रहे हो। तुम तो समधी जी हो। लोग क्या कहेगे ?

वह बोला—मारो गोली लोगो को। अकेले अकेले रहकर हम दोनो अपनी जिन्दगी क्या बरबाद करें ?

थोड़ा समय तो लगा मगर उन दोनो की भी शादी हो गयी। लोग बाग हँसे और फिर आहिस्ता आहिस्ता चुप हो गये।

—ठीक उसी तरह साले तू भी पहले हंसा था और अब चुप्पा होने लगा। कुन्दन ने उसके पेट मे अंगुली चुभाते हुए कहा, इसमे बुरा क्या है। दोनो एक-दूसरे को जानते परखते थे। ठीक किया। तू क्या जलता है?

ब्रह्म ने उत्तर दिया—मैं जलता नही खुश हूँ कि पाकिस्तान के कारुणिक प्रसगो म कोई हास्य प्रसग तो उभरा।

चलो अच्छा है। लोग रूढ़ियो से कुछ तो बाहर आयें। आजाद देश मे अपन तौर तरीके से जीने के अधिकार के प्रति भी सजग हो।

ब्रह्मप्रकाश और कुन्दन के हर तरह के वार्तालाप चलते रहत।

चन्द लोगा के स्वच्छ सोच मात्र से ही कोई मुल्क सोना नही बन जाता। सामाजिक, आर्थिक प्रगति के लिए कडी मेहनत और स्वानुशासन की आवश्यकता होती है। शिक्षा का यदि जीवन के मूलभूत सस्कारो से ही विलग कर दिया जाये, स्वार्थी, असामाजिक विघटनकारी शक्तिया पर कोई अकुश ही न रहे ता राष्ट्र का क्या हश्र होगा। कई बार अखबार पढते पढते तो दोनो भावुक मित्रा के जसे होश गुम हो जाते। जिन लीडरो ने अपना सब कुछ त्यागकर आजादी की लडाई लडी थी, उन्ही मे से कई लीडर सत्ता म आते ही अपना पूरा रग बदलने लगे थे। कुर्सी प्राप्त करते ही इतनी जल्दी कोई इस हद तक जा सकता है, सहज विश्वास नहीं होता, तो क्या सारे अखबार झूठ लिख रहे थे। बार बार सत्ता में बने रहन के लिए जनता का मन जीतने की बजाय, वे सिफ, अपनी जेबें भरने पर लगे हुए थे। भाई भतीजावाद का बोल-बाला था। रिश्वतखोरी, नेताओ का, डाकुओ, गुण्डो को सरक्षण दना, आम चीज हो गयी थी। तब कौन किस पर अकुश लगा सकता है। देखते-ही देखते आम लोग भी चालाक चापलूस हो चले थे। वे अपना काम निकलवाने मे एक दूसरे से बढ चढकर हर तरह के हथकडे अपनाने लगे थे। कुन्दन ने यह भी पढ रखा था—भ्रष्टाचार, ऊपर से नीचे की ओर आता है। यथा राजा तथा प्रजा। दिन ब दिन दलितो, महिलाओ पर दिल दहलाने वाले समाचारो से अखबार भरने लगे थे।

एक दिन कुन्दन अखबार पढते पढ़ते चौंक उठा। समाचार लुधियाने की एक युवती के, दहेज-हत्या के षडयन्त्र से बच निकलन का था। और युवती के पति अमर की मौत का सनसनी-खेज ब्यौरा दिया हुआ था। लडकी पर मुकदमा चल रहा था। लडकी का नाम लक्ष्मी लिखा था जिसे लुधियाने के मशहूर हलवाई लक्ष्मण की भतीजी बताया गया था। अखबार ने लक्ष्मी को 'बहादुर लडकी' लिखा था।

यह समाचार पढकर कुन्दन रुक न सका। लुधियाना के लिए चल पडा। वह आये दिन दहेज हत्याओ के हृदय विदारक विवरण पढता-सुनता आ रहा था। जिन्हें लोग 'आम बात' और नारी की दैवगति कहने लगे थे। और ज्यादा वक्त गुजरने पर इन्हें सिर्फ किस्से-कहानियो की तरह पढने लगे थे। पर वह ऐसी बहादुर लडकी को देखना चाहता था जिसने अपना बचाव कर लिया था। असली मकसद लक्ष्मण हलवाई के सुख दुख मे काम आना तो था ही।

लक्ष्मण की मन स्थिति ठीक नही थी। दूसरा कुन्दन वहाँ बहुत अर्से बाद गया था। इसलिए भी लक्ष्मण उसे एकाएक पहचान न सका। पहचाना तो बहुत देर तक सीने से लगाकर खडा रहा। फिर सबके हाल-चाल पूछता हुआ बोला—देखा मैंने एक दिन कहा था ना। तू होनहार निकलेगा। अब तक तो कही अफसर लग गया होगा? जिस सीमा तक बन सका, लक्ष्मण, कुन्दन के आने पर उत्साह प्रकट करता रहा। मगर बुझा स्वर तो बुझा ही होता है। उसने कुन्दन के सम्मुख अपनी उदासी का कारण छिपाये रखा। उसके घर कुछ और लोग भी आये हुए थे। कुन्दन को नहाने धोने का कहकर वह, दूसरे लोगो मे व्यस्त हो गया।

नाश्ते के समय, कुन्दन ने लक्ष्मण को पास बुलाकर, अपने यहाँ आने और उनकी भतीजी के बारे मे पूछा।

इससे लक्ष्मण को थोडी ढाढस मिली। बोला—अपने आखिर अपने होते है। तू बचपन मे कौन से पल मे जाने अनजाने मेरा इतना अपना बन गया था कि हमारी मुसीबत का अखबार मे ही पढकर फौरन चला आया।

कुन्दन थोडा भावुक होकर बोल पडा—चाचा आपने उस थोडे से वक्त मे इतना ज्यादा अपनापन देकर मुझे हमेशा के लिए अपना बना लिया था। दुकान को खाली छोडकर मुझे अस्पताल ले गये थे। मुझे कितनी तसल्ली मिली थी आपसे। हाँ अब बताइये, हुआ क्या।

लक्ष्मण ने धीरे धीरे बताना शुरू किया—मेरी सगी भतीजी है। मैंने ही न जाने किस मनहूस घडी में रिश्ता तय कराया था। मैंने तो ठीक ठाक घर बार और लडका देखकर भाई साहब को लिखा था कि खानदानी घर है। मगर बाद मे देखा वही पूरा खानदानी घर राक्षसी पर उतर आया है। आये दिन और और पैसे की माँग। दहेज की कमी का रोना और लडकी से मार-पीट।

इतने मे लक्ष्मण के भाई साहब वहाँ आकर बिलखने लगे—कलमुही ने हमे कही मुह दिखाने लायक न रखा। शास्त्रो मे पति को देव तुल्य कहा गया है। इससे तो उसी के हाथो खुद मर जाती तो कुल की मर्यादा रह जाती।

कुन्दन उन्हें गौर से देखता रहा। तभी आस पडोस के कुछ और लोग भी वहीं आकर बैठ गये। वे धीमे स्वर मे आपस मे बातचीत कर रहे थे और भाई साहब को दिलासा दे रहे थे—आप चिन्ता न करें। हम गवाही देंगे। वह छूट जायेगी।

—मैं तो कहता हूँ, उसे फाँसी हो ही जाये। नही तो आगे उसकी सारी जिन्दगी नरक बन जायेगी।

उधर दो-तीन रिश्तेदार औरतें गले लगकर विलाप कर रही थी। कुछ औरतें एक दूसरे के कानो मे धीरे-से भेदभरी बातें उँडेल रही थी।

कुन्दन, लक्ष्मण को थोडा अलग ले गया और पूछा—क्या आपके भाई साहब बम्बई रहते हैं?

—हाँ, तू उन्हे कैसे जानता है।

—इनकी एक लडकी का नाम आकाशी है?

—हाँ पर तू उसी ने तो कहते कहते लक्ष्मण का गला भरने लगा।

कुन्दन एकदम भावविह्वल हो उठा। चिन्तित स्वर मे बीच म टोकते हुए बोला —तो आकाशी ने? पर अखबार मे तो लक्ष्मी लिखा था।

—लक्ष्मण ने उसाँस भरते हुए उत्तर दिया—यह लक्ष्मी, ससुराल वालो का दिया हुआ नाम है। उन्हे तो धन लक्ष्मी चाहिए थी। और उसी से अपने लडके अमर की हत्या करवा बैठे। समझे आकाशी ने ही पति की हत्या की है।

कुन्दन के स्वर मे तेजी आ गयी—तो क्या उस राक्षस के हाथो खुद मारी जाती? ठीक किया। बहादुर लडकी। मैं उसकी इज्जत करता हूँ।

—पर तू आकाशी को कैसे जानता है।

—बम्बई मे मेरी बहन जी जीजा जी रहते थे। इनका मकान नजदीक पडता था। हम वहाँ आते जाते थे। मैं आकाशी को जानता हूँ। वह गलत काम कर ही नहीं सकती।

पाँच रोज बाद सुनवायी थी। कुन्दन वहाँ आसपास के चार-पाँच औरत आदमियो से मिला। उनके अनुसार लक्ष्मी (आकाशी) तो देवी का रूप है जो चण्डी देवी बन गयी। हमसे पूछा गया तो हम उसके पक्ष मे गवाही देंगे।

इसके बाद कुन्दन वकील से भी मिला। वह देखने मे सीधा सादा नवयुवक था। छोटा कद। चौडी छाती। बाल एकदम से पीछे को कढ़े हुए। बहुत कम बोलता था। नाम था, रजन।

कुन्दन ने रजन से आकाशी के पक्ष के विषय मे पूछा।

रजन ने गम्भीर स्वर मे धीरे से उत्तर दिया—आप बस देखते जाइये बाबू साहब। बाकी किसी बात की चिन्ता नहीं। उसका सगा बाप ही उसका मनो बल गिरा रहा है। आप भी हमारी सहायता कर सकते हैं। हो सके तो उसके पाप बोध को निकाल बाहर करें।

कुन्दन ने कहा—उसने कोई पाप नही किया।

—प्लीज उससे कहिये कि पूरे आत्मविश्वास से सवालो के जवाब दे बाकी मैं सब सम्भाल लूगा। नया जरूर हूँ, हाँ, यदि यह मुकदमा हार गया तो वकालत

छोड दूगा।

कुन्दन ने सोचा रजन साहब कुछ ओवर कान्फिडेंट (अतिविश्रम्भी) है। दुश्मन को कभी कमजोर नही समझना चाहिए। फिर भी उसकी दो बातो मे बहुत दम लगा। वह पहले लक्ष्मण से मिला और कहा कि आप किसी भी सूरत से अपने भाई साहब को आकाशी से न मिलने दें। रजन वकील साहब से मिल लिया हूँ। सब कुछ ठीक हो जायेगा। मैं भी सुनवायी वाले दिन जरूर आ जाऊँगा।

फिर वह जेल मे आकाशी से मिलने गया। कुन्दन को पहचान लेने पर भी वह भावशून्य बनी रही। उसके यहा तक अचानक आ पहुँचने की भी जैसे कोई विशेष प्रतिक्रिया उसके मुखमण्डल पर नही दिखी। तो भी कुन्दन ने उसे सक्षेप मे सब कुछ बताने को कहा। जब वह नही बोली तो कहा—तुम वास्तव मे बहुत बहादुर हो। फिर घुमा फिराकर उसी बात को कई तरीके से कहता रहा कि तुमने बिलकुल ठीक किया है। मैं तुम्हारी बहादुरी की दाद देता हू।

थोडे समय बाद, आकाशी के जकडे हुए होठो मे धीरे धीरे हरकत हुई—मैंने उसे मारा नही, पर जज के सामने कह दूगी कि हाँ मैंने उसे मार डाला।

—तुम ऐसा नही कहोगी।

—मैं ऐसा ही कहूँगी, क्योकि मुझे उसके मरने का अफसोस नही है। मैं तो खुद ही एक बार मर जाना चाहती थी ताकि रोज रोज की जलालत से पिंड छूटे। अब भी मेरे लिए वसी ही हालत है। इसलिए जज से कहूँगी। मुझे फाँसी की सजा दे दीजिये। मैं जीना नही चाहती।

कुन्दन बोला—जीना मरना हमारे हाथ मे नही है। तुम वही सब कहोगी जो हमारे वकील साहब तुम्हे समझायेंगे। आकाशी तुम्हें मेरी कसम।

—मुझे कसमे मत खिलाओ। छोड दो मुझे मेरी हालत पर।

—देखो, अपने पर, अपने वकील पर और फिर मुझ पर विश्वास रखो, आकाशी। कहते-कहते कुन्दन भावुक हो उठा। उसने आकाशी की पतली नम अंगुलियाँ पकड ली, मैं सुनायी वाले दिन आऊगा। मैंने अगर तुम्हें कमजोर पाया तो मेरा भरोसा पूरी दुनिया से ही उठ जायेगा। कुछ भी उलटा-सुलटा मत कह जाना। याद रखना—तुम्हे मेरी कसम है।

कुन्दन रेवाडी जाने से पहले, सीधा बाऊजी, भाभी के पास जा पहुँचा। कुन्दन को इस प्रकार अकस्मात आया देख उन्हें आश्चर्यमिश्रित उत्सुकता हुई। जमना अधिक देर तक अपने को काबू मे न रख सकी। पूछने लगी—क्या कुछ, तय हुआ। कई दिन पहले तुझे तेरी केतकी बुआ ने बुलाया था। गये थे न उनके पास। या अभी अभी होकर आ रहे हो। वहाँ गया तो होगा ही। क्या कहा उन्होंने। वे

हड़बड़ी मे बोले जा रही थी।

कुंदन ने कोई उत्तर नही दिया।

बार बार पूछने पर, कुंदन कुछ ऊँची आवाज मे बोल उठा—हाँ, हाँ मैंने तय कर लिया है।

—शुक्र है। मेरे भोलेनाथ! इसे अक्ल दी, भाभी खुश होते हुए बोली, चलो किसी की तो मानी। हमसे अच्छी केतकी ही सही। हमे भी उसी पर भरोसा था।

जब कुंदन ने पूरी बात का खुलासा किया तो जमना को जैसे सीने मे चोट-सी लगी। उसने अपनी छाती पर हल्का-सा मुक्का मारा—तो तू क्या एक विधवा से शादी कर लेगा। आप भी सुन रहे है? क्या नीद मे हैं?

जयदयाल जी बोले—सुन रहा हूँ। अब बोलने का हक हमसे छिन गया। बड़े भाई ने एक गुल खिलाकर बाप की मटटी पलीद की थी। यह साहबजादा भी उसी का होनहार भाई है। यह भी पीछे क्यो रहे।

दुपहर के खाने के समय अब भाभी उसे बड़े दुलार से, समाज, बिरादरी की ऊँच नीच समझाती रही। यह भी कहा कि अच्छी खानदानी लड़कियो का कोई अकाल तो नही पड गया जो किसी की पडी हुई जूठन पर मुह मारने पर उतावला हो रहा है।

बाऊजी ने जरा दूसरे ढग से समझाया कि मान लो उस लडकी मे और कई गुण हो पर तैश मे आ जाने का ऐब तो जग जाहिर है। ऐसी लडकी किसी भी फैमिली मे एडजेस्ट नही कर सकती। कल को मतभेद होने पर तुम पर भी हाथ उठा सकती है।

परन्तु कुंदन के लिए ऐसे तर्कों का कोई अर्थ नही था। पहली बार थोड़े सलीके से उसका मन कही टिका था। वहाँ से पीछे हटने का सवाल नही था। वहाँ यथार्थ भी था। वहाँ आदर्श भी था। वहाँ कल्पना की मीठी रोमांचक उड़ान भी थी। एक डूबती हुई नायिका को बीच दरिया से निकाल लाने जैसा जोखिम भरा लुत्फ भी था। सामने सद्य स्नाता आकाशी खडी थी।

कुन्दन ने कोई उत्तर नही दिया तो भाभी ने बार-बार कहा—कुछ तो बोल।

अबकी कुंदन ने धीरे-से कहा—हमे खुद ही अपना सलूक सही रखना चाहिए। इसी से दूसरो पर असर होता है। शिक्षा देने से नही। आकाशी को मैंने बम्बई मे देखा था। उसमे कोई नुक्स नही है।

जमना कुछ और सोचने लगी तो जयदयाल जी उसे अलग ले गये—क्या उलझती है। इस वक्त उस पर जजबात हावी है। हमने कह दिया। बाद मे ठण्डे मन से, विचार करेगा। और क्या पता, उसके घर वाले भी विधवा शादी को मानते हैं कि नही। लडकी भी, मेरे खयाल से, वह खुद कभी राजी नही होगी। और सबसे बडी बात उसे फाँसी होती है या लम्बी सजा। इसलिए हमें अभी से

परेशान होने की जरूरत नही।

यह सब सुनकर जमना काफी हद तक आश्वस्त हुई। फिर भी उसके मुँह से एक आह निकली—भगवान भली करना। हम क्यो किसी के बारे मे बुरा सोचें। यह लडका अपने आप ठोकर खाकर वापस लौटेगा।

कुन्दन फिर से ब्रह्मप्रकाश की शरण मे जा पहुँचा।

ब्रह्मप्रकाश ने कहा—न बाबा न। कल को अगर उसने तेरा कत्ल कर दिया तो मैं कहीं का न रहूँगा।

कुन्दन ने माथा पकड लिया—पता नही मैं बेवकूफ क्या बार बार भ्रम के जालो मे आ फँसता हू।

—तो चढ जा बेटे, सूली पर। ब्रह्मप्रकाश ने हँसते हुए कहा—मेरा मतलब स्पष्ट है कि तुम्हारी आकाशी वाकई एक जादूगरनी कातिल है। तू उसके माया-जाल की गिरफ्त में कैद है। ऐसे मे मेरे जैसे यारो के लिए, तेरे पास वक्त ही कहाँ बचेगा।

—तू कोई भी बात सीधे से नही कह सकता?

—और कैसे कहूँ। बहादुर बच्चे मोर्चे से खाली हाथ नही लौटते। वाहे गुरुजी की फतेह।

कुन्दन ने देखा, अदालत का कमरा, सचमुच किसी फिल्मी दृश्य की भाँति, खचाखच भरा था।

आकाशी आयी। उसकी नजरें सबसे पहले कुन्दन से मिली। कुन्दन ने, दूर से ही, मौन भाषा मे उसे वही सब कुछ दोहरा दिया जो कुछ दिन पहले कह गया था।

जिरह शुरू हुई।

वादी पक्ष का वकील भी बडी आयु का नही था। उसके सिर पर चुटिया स्पष्ट दिखलायी दे रही थी। वह बहस आरम्भ करने से पूर्व भारतीय नारी की आचार सहिता, उसके कर्तव्य, आचरण, पतिव्रता धर्म पर भाषण देने लगा। वह अभी सावित्री, पार्वती, अनुसूया आदि की इतिहास सूची लेकर आगे बढना चाहता था कि प्रतिवादी वकील रजन ने टोका कि अदालत का समय नष्ट किया जा रहा है। इन बातो की यहाँ कतई जरूरत नही है।

—जरूरत है मी लार्ड। वादी, वकील ने ठीक फिल्मी स्टाइल से आवाज मे लोच भरते हुए कहा—अपने सास्कृतिक मूल्यो की अवहेलना कर कोई समाज

जिन्दा नही रह सकता। ऐसे विवादो को इसी परिप्रेक्ष्य मे रखकर ही सुलझाया जा सकता है। यदि लक्ष्मी (आकाशी) चाहती तो अपनी सघवा शक्ति से पति का धन लोभ ।

तब की जज ने टोका—आप अपने गवाह पेश कीजिये।

मृतक के माँ बाप बारी बारी से, कठघरे मे आये। दोनो का बयान एक ही था कि कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द था। साथ मे रसोई लगती है। उसे भी बन्द कर लिया गया। हमारा लडका चीख रहा था। जब तक हमने दरवाजा तोडा लडके की कलाई की नसो और गदन से बहुत सारा खून बह चुका था। इसी लडकी ने हमारे लडके को मार डाला।

तभी अचानक वहीं एक बारह चौदह साल का लडका फूट फूटकर रोने लगा —नही नही।

—तुम कुछ कहना चाहते हो ? न्यायमूर्ति ने पूछा।

लडके ने 'हाँ' मे गदन हिलायी।

यह लडका आकाशी का देवर था। रजन ने उसे बोलने को प्रोत्साहित किया। माँ बाप ने उसे डाँटा तो जज ने उन्हें चुप करा दिया। लडके के बाल सुलभ बयान से स्पष्ट हो गया कि भाभी तो बहुत दयालु है। भाई उसे मारता रहता था। माँ बाप छुडवाने के बजाय भाभी को भूखा प्यासा रखते थे।

आकाशी ने अपने बयान मे कहा—मैं तो अपने पिता से रुपये माँगते-माँगते और इनके जुल्म सहते-सहते तग आ गयी थी। इससे एक ही बार मर जाना चाहती थी। मगर पता नहीं उस रात मार सहते-सहते प्रतिवाद करने लगी। छुरा उनके हाथ से मेरे हाथ मे आ गया। वही स्वय मेरे ऊपर झुके हुए छुरे से टकराते चले गये। नशे की हालत मे थे।

पुलिस ने कमरे से शराब की बोतलें भी बरामद की थी। जो इस समय पोस्ट मार्टम रिपोर्ट के साथ, बतौर सबूत पेश की गयी।

चार पडोसियो ने भी लक्ष्मी के बयान की ताईद की, कि रात ग्यारह बजे उन्होने शोर सुनकर गली की खिडकी को ठोकरें मारकर खोला था। नशे मे धुत्त, अमर, छुरा पकडे लक्ष्मी पर झुका हुआ था, इससे पूव आये दिन लक्ष्मी से मार-पीट की वारदातें सारा मुहल्ला जानता है।

कुछ और गवाहियो की औपचारिकता पूरी करने के बाद न्यायमूर्ति ने फैसला सुनाया।

धारा 100 (आई० पी० सी०) के तहत लक्ष्मी (आकाशी) को बाइज्जत बरी कर दिया गया।

मगर आकाशी छटपटा रही थी। उससे चला नही जा रहा था। कटे हुए वृक्ष की भाँति गिरने को हुई कि तभी उसका देवर उससे आ लिपटा और खुद वे साथ-साथ आकाशी का भी रुलाने लगा।

जहाँ अधिकतर परिजन दोनो को दिलासा देकर चुप कराने का प्रयास कर रहे थे, वहाँ आकाशी की सास उसे 'कुलटा', 'चुड़ैल' आदि कहकर और प्रताड़ित करने लगी—अब यह नाटक छोड। अपनी छाती पीटती हुई सबको सुना सुनाकर कह रही थी—घर चलकर सारी उम्र रोती रहना। तेरे लिए अब और रह ही क्या गया है।

कुन्दन ने जरा आगे बढकर कहा—यह अब वहाँ नही जायेगी।

—तू कौन है रे ?

चारो तरफ बहुत भीड हो रही थी। उसी भीड मे से कोई छिपी घातिराना आवाज सुनाई दी—कोई पुराना आशिक लगता है।

कुन्दन ने उधर ध्यान नही दिया। उधर से गुजरती हुई एक टैक्सी को रोक लिया। आकाशी और उसके पिता आदि को लक्ष्मण के घर भेज दिया। वह लक्ष्मण चाचा के साथ पैदल चलता रहा। उसने लक्ष्मण चाचा को इस बात के लिए राजी कर लिया कि वह आकाशी को कही और नही भेजेंगे। बम्बई भी नही।

लक्ष्मण चाचा तुरन्त कुछ कह पाने की स्थिति मे नही थे। रह-रहकर अगोछे के किनारे से आँखें पोछते रहे। फिर धीरे से कहा—ठीक है, जैसे तू राय दे। हम तो लुट चुके।

—थोडा वक्त गुजरने पर सब सम्भल जायेगा। कुन्दन धीरे धीरे बोल रहा था। लक्ष्मण ने सिर उठाकर देखा। कुन्दन की आँखें झुकी हुई थी।

कुन्दन लुधियाना मे एक रोज और रहा फिर रेवाडी चला आया। वहाँ भी उससे टिका न गया तो बाऊजी भाभी के पास चला गया। फिर कासगज। फिर बहन जी के पास देहरादून। फिर लुधियाना। इस प्रकार एक महीने तक वह जहाँ-तहाँ लगातार भटकता रहा। केतकी बुआ के पास भी हो आया। पर कही भी तीन रोज से ज्यादा टिककर न बैठ सका।

मन की बेचैनी ही उसे दरबदर भटकन पर जैसे मजबूर कर रही थी। इस बहाने वह अपनो परायो के साथ अपनी रूढ़ियो को भी परख लेना चाहता था। साथ ही समय के साथ आयी सामाजिक परिवतन की हल्की-सी आहट से भी परिचित हो जाना चाहता था। अपने घर वाले, आकाशी के घर वाले टस से मस नही हो रहे थे। हाँ, लक्ष्मण चाचा और केतकी बुआ उसकी हिमायत करन को तैयार थे। मगर इससे क्या ? स्वय आकाशी ही उसका प्रस्ताव मानने से इनकार

कर रही थी। उसका कहना था। वह अभागिन, अभिशप्त है। पहले माँ गयी। फिर ऐसा पति मिला । मैं अपना दुर्भाग्य किसी पर लादना नहीं चाहती। कुलीन घर की औरतें दूसरी शादी नहीं करती।

तो वह किसको परख रहा है। किसका इम्तिहान ले रहा है। नहीं। शायद वह अपने—बगाना का नहीं, खुद अपनी शिनाख्त करने म मसरूफ है। इसी सिलसिले में वेजारी की हद तक जा पहुँचा है।

अब जीजा जी का अस्थाई तबादला कोटा हो चुका था। यह वहाँ अलका दीदी के पास जा पहुँचा। अलका उसे प्यार भरे स्वर म डाँटती रही—क्या शक्ल बना रखी है। दीवाना हुआ है क्या ? अरे बेवकूफ ऐसी बात नहीं कि मैं तेरी भावनाओं को न समझती होऊँ। लेकिन जमाने, अपने घरों और प्रक्टिल चीजों को जिन्दगी से अलग करके नहीं देखा जाता। तेरा आदर्शवाद इन बातों से मेल नहीं खाता।

कुन्दन ने कहा—समझ में नहीं आता क्यो नहीं।

—तू तो खुद ही कह रहा है कि आकाशी भी राजी नहीं हो रही। आकाशी को मैं अच्छी तरह से जानती हूँ। वह किसी का अहसान नहीं लेती थी। शुरू से ही बहुत शीलवान और स्वाभिमानी लड़की है।

कुन्दन ने फिर धीरे से कहा—यही सब तो मुझे चाहिए।

अलका ने उत्तर दिया—पर वह तो यही सोचती होगी कि एक तो यह धर्म सगत नहीं है दूसरा तू उस पर तरस खाकर उससे शादी कर रहा है।

—ऐसा नहीं है भैनजी। यह समझ लो कि मैं और कहीं शादी कर ही नहीं सकता।

—आखिर तुझे शेखूपुरे वाली विमला ही पसन्द आयी।

—चलो यही समझ लो, कुन्दन ने तनकर कहा, अलका ने लक्ष्य किया, उस तने हुए चेहरे में से लाज की क्षीण रेखाएँ स्पष्ट ही दृष्टिगोचर हो रही हैं।

—ठीक है। तुम्हारे जीजा जी 'प्रैक्टिस' से लौट आयें। मैं जल्दी आकर बाऊजी भाभी जी से बात करूँगी। आकाशी को भी किसी तरह मना लूँगी। अब तो खुश।

जब अलका, भाभी (माँ) के पास पहुँची तो बाऊजी घर पर नहीं थे। पता चला, केतकी बुआ पहले से ही आयी हुई है। उस समय बुआ नहा रही थी। भाभी ने अलका से कहा—यह तो बहुत बुरा हुआ। हमने तो सोचा था, केतकी कुन्दी को ठीक राह दिखायेगी। यह तो उसी की तरफदारी करने लगी। न जाने कैसी-कैसी तकरीरें करने बैठ जाती है कि वक्त के साथ पुरानी बातें छोड़नी होंगी। तभी

समाज तरक्की करेगा ' औरत की हालत मे सुधार आयेगा। पता नही क्या लफ्ज बोलती है जैसे क्लास ले रही हो। मैंने बहस की तो यहाँ तक कह डाला कि लडका-लडकी अपने आप कचहरी में जाकर शादी कर लें तब आपकी क्या इज्जत रह जायेगी। लो सुन लो बात।

अलका ने कहा—लगता है हमे ही झुकना पडेगा। पर वह लडकी ही नही मानेगी तो

भाभी ने कुछ कहना चाहा, इससे पहले केतकी बुआ गोले वालो के साथ आ पहुँची। अलका के सिर पर हाथ फेरती हुई बोली—मैं लुधियाना से होकर आ रही हूँ। उसे समझा आयी हूँ। फालतू के ढकोसलो से बाहर आयें। देखती नहीं हमारे यहाँ के लोग, अकेली औरत को किस निगाह से देखते हैं। विधवा औरत को धम कम की दुहाई देने वाली, यही औरतें शुभ कार्यों मे नही आने देती। इससे बडा अभिशाप उस बेचारी के लिए और क्या होगा। लगता है वह मान जायेगी। आज शाम को ही लक्ष्मण भाई साहब अपनी भाभी, भाई को लेकर आ रहे है।

शाम को माहौल पूरी तरह गर्माया रहा। बाऊजी भी आ गये थे और लुधियाना वाले भी। बहस अपने खास मुद्दे से फिसलने लगती तो केतकी बुआ सम्भाल लेती। लक्ष्मण तथा अलका के कारण बाकियो के स्वरो मे भी थोडा बदलाव आने लगा।

फिर भी आकाशी की चाची ने कहा—विधवा विवाह घोर पाप है। यह शास्त्रो के खिलाफ है।

लक्ष्मण झट से बोल पडा—भरजाई तुमने कितने शास्त्र पढ रखे हैं। जब भाई साहब की पहली वोटी (पत्नी) की मौत हुई थी, तब इन्होंने दूसरी शादी क्यो की ?

—आदमियो की बात और है।

—तुमने रडुए से शादी रचाकर आदमी की जिन्दगी बना दी और तुम्ही खुद औरतो की जिन्दगी खराब करने पर तुली हुई हो। आकाशी को चैन से जीने दो।

वे चुप हो गयी, तो लक्ष्मण के भाई साहब बोले—है तो यह सब गलत ही, जब आप सब समझदार एक तरफ हो गये हो। कुन्दन के बाऊजी भी कुछ नही बोल रहे तो यही सही। फिर भी एक बार जन्म-कुण्डली जरूर मिला लो।

अबकी कुन्दन बोल पडा—ठीक है, जरूर मिलवा लीजिये—पर क्या पहली बार आपने जन्म कुण्डली नही मिलायी थी ?

वे लम्बी साँस खीचते हुए बोले—मिलायी तो थी बरखुर्दार लेकिन किस्मत

को कौन बदल सकता है।

कुंदन हँसने लगा—अबकी हमें ही किस्मत आजमाइशी का मौका दीजिये।

सभी ने एक क्षण के लिए कुछ सोचा और मुस्कराने लगे।

हाँ, हरमिलाप खुलकर हँस पड़ा—यह पक्का ढीठ है। किसी भी तरह अपनी बात मनवा ही लेता है।

फिर भी वहम मिटाने के लिए जन्म-पत्रियाँ मिलवा ली गयीं।

इसके बाद शुभ मुहूर्त देखा गया। चार महीने बाद एक सादे समारोह में, आकाशी और कुंदन कृष्ण प्रणय-सूत्र में बँध गये।

तीसरा भाग

ढलान

सपनो की कहानी विचित्र है। आदमी की नियति सपने बुनना है। सपने बनते हैं। सपने बिगडते हैं। सपने ढहकर चकनाचूर होते हैं। फिर इन्ही विखण्डित अशो से अकुर फूट निकलते है। फिर से नये सपनो का मन ससार लहराने लगता है। नव निर्माण का यही उदभव स्थल, मानव समाज को जीने, आगे बढने और निरन्तर आशावान बने रहने को प्रेरित करता है।

कुन्दन के पास आकाशी आ गयी है जसे आकाश से चन्द्रिका आ गयी है, कि जसे शेखूपुरे वाली बिमला आ गयी है, कि जैसे वह पूरा किला शेखूपुरा, पेशावर सक्खर और अपने तमाम अच्छे अच्छे शहर उठा लाया है, कि अपने बचपन को लौटा लाया है।

वह आकाशी से चहक चहककर अपने बचपन की, पुराने शहरो की, पुराने दोस्तो की, छोटी से छोटी बातें करता है। तितलियाँ, चिडियाँ, गिलहरियाँ दिखाता है कि कसे हम लोग इनके पीछे भागते थे। फूलो, पेडो, पहाडो व रेगिस्तानो के विषय मे अपना सम्पूर्ण ज्ञान पिटारा, आकाशी के सामने खोलकर बैठ जाता है। छोटे-छोटे सुख आकाशी के सग बाँटना चाहता है—तू भी कुछ कह।

पर आकाशी ? क्या करे आकाशी ? क्या कहे आकाशी ?

कुन्दन फिर से शुरू हो जाता—तू भी तो मेरी तरह, अपनी सहेलिया के साथ खेलती, पशु-पक्षियों का पीछा करती होगी। तेरी लहराती हुई चाल तो परियो को मात करने वाली है। कुछ तो कहो ना।

आकाशी कहती—हाँ। आकाशी कहती—ठीक है।

कुन्दन के ज्यादा जोर देने पर आकाशी उत्तर देती—अब आप कह रहे है, तो ठीक ही कह रहे होगे।

ऐसी भावनाशून्य वाणी सुनकर, कभी कभी कुन्दन भय से अन्दर ही अन्दर काँप सा उठता। कही कोई गलत चुनाव तो नही हो गया ? यह आकाशी मेरे लिए तो मेरा बचपन है। मेरा सब कुछ है। परन्तु इसके लिए मैं क्या हू ? एक फटी हुई या रौंदी हुई तस्वीर, जिसकी आकाशी को न तो कोई जरूरत थी न खास चाह। कही मैं इसके गले जबरदस्ती तो नही आन पडा। ऐसा सोचते सोचते, मन एक नामालूम बोझ तले दबने लगता।

कुछ दिन बाद कुन्दन फिर अपने बडबोलेपन पर उतर आता। आकाशी से

अनुकूल प्रतिक्रिया न पाकर फिर से निराश हो जाता। इसी प्रकार समय गुजरता रहा।

एक दिन अचानक, केतकी बुआ का आगमन हुआ। वे उन दोनो के लिए तरह-तरह के उपहार लायी थी। उन्होंने कुन्दन से बढ़कर आकाशी को प्यार दिया। आकाशी भी बढ़-बढ़कर उनकी आवभगत मे लग गयी। फिर भी कुन्दन को उसकी बातो-हँसी मे स्वाभाविकता की कमी अखरती रही।

आखिरकार एक दिन कुन्दन बुआ से, आकाशी की गैरहाजिरी मे, उसकी मन स्थिति का वर्णन कर बैठा—कहीं हमने या इसने गलत निर्णय तो नही ले लिया।

केतकी ने सधे स्वर मे उत्तर दिया—वैसे तो तुम बहुत सयाने बनते हो फिर भी, 'ऐ मेरे प्यारे वतन, ऐ मेरे बिछड़े चमन' जैसे गाने सुनकर उदास हो जाते हो हालांकि कितना लम्बा अर्सा गुजर चुका है, फिर भी अपने घर से बेघर होने से पीड़ित होते रहते हो। तब यह क्यो नही सोच पाते कि इस बेचारी की घर गृहस्थी कसे तहस नहस हुई है। अपनी मनोग्रन्थियो से उबरने मे इसे समय तो चाहिए ही। तुम धैर्य से काम लो। दोनो भ्रमण पर निकल जाओ। खूब घूमो फिरो।

कुन्दन ने, केतकी बुआ के सुझाव को, गम्भीरता से लिया। कुछ रोज तक सोचता रहा, उसे कहाँ जाना चाहिए। उसने आकाशी की सलाह चाही कहाँ चला जाये। पिकनिक स्पाट्स पर या धार्मिक स्थलो की यात्रा की जाये। आकाशी पूर्ववत उदासीन बनी रही—क्या जरूरत है। फिर बार बार पूछने पर एक दिन बोली—जहाँ आप उचित समझें।

अब कुन्दन के पास, अकेले निर्णय लेने के सिवाय दूसरा चारा नही था। मगर कौन से रमणीय स्थल हो सकते हैं, जहाँ जाना चाहिए। अथवा जाया जा सकता है। एक एक करके उसके मस्तिष्क मे शुरू से अब तक के कई शहरो के चित्र उभरने लगे। ननकाना साहब, सच्चा सौदा पेशावर की कुण्डी जहाँ पांडव आकर रुके थे। काश कि वह आकाशी को पेशावर ले जा सकता वहाँ के बाड़ा-बंगले के आधा आधा सेर के आड़ू व कंधारी अनार खिला सकता। पेशावर से गाड़ी मे बैठकर वे दोनो, सात अंधेरी सुरंगो से होते हुए लंडी कोतल, दर्रा खैबर तक पहुँच सकते। पहाड़ और प्रकृति से भरापूरा वातावरण देखकर आकाशी अपनी सारी उदासी भूल जाती। या फिर वह आकाशी को किला शेखूपुरा की बारहदरी हिरण मिनार दिखला सकता। हाँ, वहाँ का बड़ा किला नहीं देखने देता। वहाँ तो सुना है सुरक्षा का झाँसा देकर फौज ने ही न जाने कितने हिन्दुओ को तहखानो मे लगा कर गोलियों से भून डाला था।

उसने अपने आपको ऊलजलूल खयालों से निकाला और आकाशी से कहा—हम देहरादून चलेंगे। वहाँ तो बड़े आराम से जाया जा सकता है।

लम्बी छुट्टी कर पहले वे देहरादून ही गये। कुन्दन आकाशी को कैंटोनमेंट एरिया ले गया। उसे वे पेड़ दिखलाये, जिनसे वह और उसका छोटा भाई जगसी आम तोड़ा करते थे। परेड ग्राउंड, जहाँ वे साइकिल सीखते थे। नहाने के लिए गुच्चू-पानी झरने और सहस्त्र धारा भी गये, जहाँ गंधकयुक्त पानी है। वहाँ आकाशी का मन खूब लगा। इसके बाद वह उसे बरेली ले आया। अपना क्वाटर, विक्टोरिया रेलवे स्कूल दिखाता रहा। हिंद टाकीज मे कोई नयी फिल्म देखी। वह आकाशी को यह बताना नही भूला कि यहाँ हमने 'दहेज', 'महल' और 'आन' जसी फिल्मे देखी थी।

यहाँ तक तो आकाशी ने सहन कर लिया, मगर अलीगढ़ पहुँचकर आकाशी को बहुत निराशा हुई। अचल तालाब, सराय हकीम, मदार गेट और पतली पतली गलियाँ। क्या करे वह इनका। कुन्दन समझ गया कि इन सब गलियो मुहल्लो का आकाशी के लिए कोई महत्व नही हो सकता।

आकाशी की जिद पर कुन्दन फौरन घर लौट आया। ब्रह्मप्रकाश ने उसे डाँटना शुरू कर दिया कि अभी तुम्हारी सात छुट्टियाँ पड़ी हैं, लौट क्यो आये। जब उसके सामने स्थिति स्पष्ट हुई तो उसने कुन्दन को और भी बुरी तरह से डाँटना शुरू कर दिया—क्या है बरेली, अलीगढ मे। क्यो ले गया भाभी को वहा? चलो अबकी माफ किया। ड्यूटी ले लो। चार महीने बाद तुम दोनो को अजमेर भेजूगा। वहाँ ओरटेशन कालेज की तरफ मेरा एक अमीर सहपाठी शानदार बँगला बनवा रहा है। पहले वहाँ सात दिन तक सिर्फ तुम दोनो रहोगे और ऐश करोगे। समझे।

आकाशी थोड़ी थोड़ी सम्भलने लगी थी। चार महीने गुजरते ही ब्रह्मप्रकाश ने दोनो के सामने हाथ फैलाते हुए, अदा के साथ कहा—हुजूर, नया बँगला। आप दोनो के स्वागत मे खड़ा प्रतीक्षा कर रहा है। कुन्दन कृष्ण जी आपकी छुट्टी सैंक्शन हो गयी हैं। दफा हो जाइये यहाँ से। सुनकर आकाशी भी हसने लगी।

अजमेर पहुँचकर जब दोनो ने नये बँगले मे प्रवेश किया तो उन्हे पता लगते देर न लगी कि बँगला किसी दोस्त का नही बल्कि खुद ब्रह्मप्रकाश के पिता ने बनवाया है यानि ब्रह्मप्रकाश का ही हुआ। यहाँ भी साला भ्रम फैलाने से नही चूका।

ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती के सालाना उर्स थे। पूरे शहर मे और दरगाह के आसपास खूब भीड थी। देश विदेश से जायरीन (तीर्थ यात्री) आये हुए थे।

कुन्दन की रुचि पाकिस्तान से आये लोगो मे थी। उसने एक किशोर को देखा जो बडी उत्सुकता से इधर उधर नजर दौडा रहा था। कुन्दन उसके निकट पहुँचा—कहिये जनाब क्या देख रहे हैं, उसने दोस्ताना अन्दाज से बातचीत करनी

शुरू कर दी, भाई आपका नाम क्या है ?

—जी मैं मन्जूर हूँ। लड़के ने ससंकोच उत्तर दिया।

—मन्जूर, ओह कितना प्यारा नाम है, उसे अपने बचपन के दोस्त मन्जूर की याद आ गयी, तो मन्जूर साहब आप कहाँ से तशरीफ लाये हैं।

—हैदराबाद सिंध से। लड़के का संकोच बना हुआ था।

सुनकर कुन्दन को किंचित निराशा हुई। फिर भी उसी स्वर में बोला—कैसा लगता है अजमेर ?

आकाशी ने धीरे से कुन्दन का हाथ खींचा कि आगे चलो।

इतने में एक औरत वहाँ पर आ गयी—क्या माजरा है बेटे ? पता नहीं उसने 'बेटे' शब्द मन्जूर के लिए इस्तेमाल किया था या कुन्दन के लिए।

कुन्दन ने जरा हिचकते हुए पूछ ही लिया—क्या यह आपके साहबजादे हैं ? बड़े चाव के साथ मेले का लुत्फ ले रहे हैं।

औरत ने आह भरते हुए कहा—हाँ बेटे, मैं ही इसे सब कुछ दिखा-समझा रही हूँ। कभी हम खुद यहीं इसी इलाके में रहते थे। इन्हीं रास्तों से गुजरते थे। अपना पुश्तैनी मकान भी इसे दिखला लायी हूँ। वक्त की मार ने हमसे सब छीन लिया।

आकाशी ने अपना संकोच तोड़ते हुए कहा—सुनते हैं। सियासत ने, भाइयों भाइयों को जुदा कर डाला।

औरत मुस्करायी—यह जुमला तो मुहावरा हो चला है बेटी ! बस मेरे दो सगे भाई अब भी राजस्थान में ही हैं। सोचती हूँ अच्छा रहता अगर यहाँ की सरकार ने भी पाकिस्तान की सरकार की तरह सख्ती जुल्म से हम सभी को ही खदेड़ दिया होता। इससे हम सभी रिश्तेदार एक जगह तो होते। अब हालत यह है कि किसी के सुख-दुःख में तो क्या, बड़े से-बड़े हादसे में भी शरीक नहीं हो सकते। जंग छिड़ जाये तो वीजा खारिज। पहले से आये हुए लोगों को नजरबन्दी में ले लो। हाय अल्लाह बहुत बुरा हुआ।

कुन्दन ने पूछा—कोई पंजाब से भी आया हुआ है ?

—क्यों नहीं। मुल्क के हर सूबे से लोग आते हैं। इतना पाक उर्स है। ढूंढो तो हर तबके का आदमी मिल जायेगा।

कुन्दन चाहता था, उसे कोई जिला शेखूपुरे या लायलपुर या शोरकोट से आया हुआ मिल जाये। पूछते पूछते उसे अपने ठेठ गाँव का एक आदमी, अपनी बीवी के साथ मिल गया। कुन्दन के जेहन में अपने गाँव की याद बहुत धुंधली थी। वहाँ वह बहुत कम रहा था, गिनी चुनी छुट्टियों में। भाभी, बड़ी बहन जी से सुनी-सुनायी बातों के आधार पर उसकी याद किसी हद तक ताजा बनी हुई थी। इससे वह अपने दिमाग में वहाँ का नक्शा बनाता रहता। वहाँ पीर लालीसन

बाबा की मजार थी। हिन्दू मुसलमान सभी के आराध्य। औरतें, मद मनौती माँगते। मजार पर चादर चढाते। वहाँ चौदहवी का मेला लगता। मेले मे ही उसने अपनी बाँह पर चाँद-तारा खुदवाया था। अपने वतन की वह निशानी चौबीसों घण्टे उसके साथ थी।

उन्हें देखकर वह बहुत भावुक हो उठा। कल्पना मे खो गया कि यह लोग उन्ही छोटी-बडी गलियो और पुराने ढर्रे के बाजारो से गुजरते होंगे जहाँ वह मामा जी के कन्धे पर बैठकर पहुँच जाता था और तले हुए बैंगन खाता था। कभी उसने वहाँ अपने छोटे छोटे पाँव रखें थे। वह उन दोनो से घुल मिलकर बातें करने लगा—वही तो रहते थे हमारे चाचा जी, ताऊजी, मामा जी व बाऊजी, फिर पूछा—क्या अब भी वहाँ महल्ला राजाराम है?

औरत ने उसके कधे पर हाथ रखते हुए कहा—हाँ, हाँ अब भी, उस पूरे इलाके को राजाराम मुहल्ला ही कहते हैं। हमारा मकान उधर ही है।

—हमारा वहाँ बहुत लम्बे चौडे सहन वाला मकान है, जिसमे चौबीस माचे आ सकते हैं। भाभी बताती है। वह उनसे अपनी आचलिक बोली मे बतिया रहा था।

क्या नाम है तुम्हारे वालिदन का। आदमी का स्वर भी भावुक हो चला था।

—बाऊजी जयदयाल जी, जमना भाभी, मेरे ताऊ लाला पोखरदास

औरत ने वहाँ की रीति के मुताबिक (अति आत्मजनो का) कुन्दन का हाथ पकड़कर चूमा और कहा—हमने अपने बडो से यह नाम सुन रखे हैं।

—अच्छा भाईजान, कुन्दन उस आदमी से मुखातिब हुआ, आप मेरा एक काम करेंगे?

—क्या नही। कहिये तो बरखुर्दार।

—मैं यहाँ से एक चादर खरीदकर आपको दे देता हूँ। आप बजाए मेहरबानी उसे हमारे लालीसन बाबा की मजार पर चढा देना।

—जरूर, जरूर। तुम मुझे अपना पता लिखकर दे दो ताकि चादर चढाने के बाद तुम्हारी तसल्ली के लिए तुम्हें इत्तिला कर सकू।

औरत बोली—मेरा दिल करता है। तुम्हारी भाभी से भी मिलकर जाती, पर मजबूरी है। हमारे वीजा की तारीख कल तक खत्म होने वाली है। खुदा ने चाहा तो फिर मिलेंगे।

इस सारे दृश्य की साक्षी (लगभग मौन) आकाशी थी, जो कभी मद मद मुस्कराती रही तो कभी इन लोगो की अति भावुकता पर कुन्दन को देखकर कटाक्ष करती रही।

जब उन लोगो को चादर देकर वे दोनो एक होटल मे खाना खा रहे थे, तब आकाशी ने पूछ ही लिया—वाह आज तो आप एकदम आस्तिक हो गये। आपका

तो देवी-देवताओ, पीरो पर कोई विश्वास है ही नही।

यह इस समय आस्था अनास्था, विश्वास आदि से परे, बारिश मे नहाये स्वच्छ उन्मुक्त आसमान मे उड़ान भर रहा था। वह बस खुश था। इस खुशी का इजहार उसने आकाशी की तरफ मुस्कराकर किया।

ऐसी बात नही थी कि आकाशी इस सबका तात्पय न समझती हो। अब धीरे धीरे वह कुन्दन के जज्बात और रुझान से पूरी तरह वाकिफ हो चली थी।

समय तजी से आगे बढ रहा था। आजाद देश निरन्तर अपने पुन निर्माण मे सलग्न था। पाँच वर्षीय योजनाएँ बन चल रही थी। भाखड़ा डैम, और न जाने क्या-क्या, ताप बिजली घर, दैत्य कायें कम्प्यूटर लग रहे थे। इन सब आँकड़ो के आधार पर सरकार राष्ट्र की उन्नति दर्शा रही थी, परन्तु आम आदमी के हाथ सूने दिख रहे थे। व्यापक पैमाने पर नेताओ, गुण्डो की लूट-खसोट, अन्याय शोषण को देखकर लोग-बाग इसे दूसरी गुलामी की सज्ञा देने लगे थे। कोई-कोई तो यहाँ तक कह देता—इससे तो अगरेजी शासन अच्छा था।

भ्रष्टाचार, आतकवाद का बोलबाला होने लगा था। राष्ट्रीय पर्व मात्र सरकारी रस्म अदायगी बनकर रह गये थे।

अग्रेजो के जमाने की तरह अब भी यदा कदा साम्प्रदायिक दगे भड़क उठते थे। मुस्लिम लीग पार्टी जिसने धरती के दो फाड़ कर दिये थे, अब भी हिन्दुस्तान इडियन मुस्लिम लीग के नाम से अस्तित्व मे कायम थी।

आतकवाद की घटनायें बढ चली थी। आतकवाद सिर्फ भारत-पाकिस्तान की ही नही, विश्व समस्या बन रहा था।

ऐसे तजी से बिगड़ते हुए हालात को देखकर कुन्दन, समय रहते भरपूर जीवन जी लेना चाहता था। कुछ वष पूव उसने विभागीय परीक्षा पास कर ली थी, और अफसर बन गया था। उसकी गृहस्थी जम गयी थी। आकाशी पूणत प्रकृतिस्थ हो गयी थी। उनके एक बेटा और एक बेटी बड़े हो चले थ।

घर-गृहस्थी तथा कार्यालय की भाग-दौड़ के बावजूद मन उसी प्रकार चचल था। अब भी उसका मन होता, अकेला या बच्चो के साथ देहरादून चला जाता। बरेली जाकर, पुराने मुहल्ले बाजार देखता। बचपन के यार दोस्तो से मिलता। एक बार फिरोजपुर भी हो आया। पर उसकी यह चाह इन सीमाओ का अतिक्रमण कर पाकिस्तान जाकर अपने शहरो को देखने की थी। हाँ, एक बार वह अपने दो सिख मित्रो त्रिलोकसिंह और निरजनसिंह के साथ 'पजा साहब' जरूर हो आया था परन्तु उन्हें वही से तुरन्त लौटना पड़ा था। उन्नीस सौ पैसठ मे भारत पाक युद्ध छिड़ने के आसार बन गये थे।

आकाशी, उसके घूमने-फिरने मे कभी अड़चन नही बनती थी, बल्कि सहयोग ही करती थी।

युद्ध समाप्त हो चुका था। बन्दी सैनिकों की अदला-बदली भी प्राय पूरी हो चुकी थी। आये दिन दोनो देशो के बीच शिखर वार्तायें और समझौते-ही-समझौते हो रहे थे। हर क्षेत्र म दोनो देश उदार नीतियाँ अपनाने का वचन दे रहे थे। कुल मिलाकर ऊपर से शान्ति का सा वातावरण बन चला था।

कल किसने देखा है? कुन्दन डेढ साल की मेहनत के बाद, पासपोर्ट-वीजा की व्यवस्था करने मे सफल हो गया।

निश्चित दिन वह आकाशी और बच्चो को लेकर विमान मे बैठ गया। विमान ने उडान भरी। वह पूरी तरह से आंदोलित हो रहा था।

अपने बच्चो की ओर देखते हुए कुन्दन कह रहा था—तुम्हारे देखते-ही-देखते यह विमान पाकिस्तान की सीमा मे प्रवेश कर जायगा। दूर ही कितना है, अपना मुल्क।

बेटी ने बडे भोलेपन से पूछा—अपना मुल्क? वह कैसे?

—हाँ देखना, हमारा असली मुल्क तो वही है, जहाँ मैं पैदा हुआ था। मैं तुम लोगों को सब कुछ बताऊँगा। सब कुछ दिखाऊँगा।

बच्चे समझने की चेष्टा मे, बडी मासूमियत से अपने पिता की ओर देख रहे थे।

बिना इस ओर ध्यान दिये कि उनकी बातो को बच्चे ठीक से समझ पा रहे हैं या नही कुन्दन भावातिरेक मे बह चला था—यह यात्रा कितनी सुखद और रोमांचकारी है शायद तुम बाद मे समझोगे। पहले हमारा हवाई जहाज लाहौर म उतरेगा। लाहौर म। इसलिए पहले तुम्हें लाहौर दिखाऊँगा। बाद मे एक एक करके बाकी शहर।

शाम का समय था। विमान से भी अधिक तीव्र गति से कुन्दन की भावनायें दौड रही थी। बचपन के सारे नजारे केन्द्रित होकर, उसके मन ससार मे, एक एक कर छाये जा रहे थे। सवेगो का कही आर पार नही था। दिल की धड़कन बेतहाशा बढ़ गयी थी।

लाहौर आने वाला था। लाहौर आ रहा था।

हवाई अड्डे पर जैसे ही विमान उतरने को हुआ, कुन्दन ने खिड़की से झाँकने की चेष्टा की। जब पहले-पहले मनोज भाई साहब की लाहौर मे नौकरी लगी थी तब वह उनके साथ आकर लाहौर मे कितना घूमा फिरा था। अनारकली, माल रोड। फिर और भी कई बार यहाँ सर-सपाटे पर आया था।

यह कितने रोमांच के पल थे। ओह लाहौर। मेरा देश। मेरा असली वतन। मेरे अपने शहर। उन्ही शहरो की गलियो म फिर से घूम फिरकर उन्हें पहचानूगा।

उन गलियों मुहल्लो को अपनी पहचान दूगा। कहूगा—देख लो, मैं कुन्दन कुएं नही कुदी, फिर से आ गया। तुम्हारे पास। तुम्हारा मेहमान बनकर।

तभी न जाने क्या हुआ। एक जबरदस्त विस्फोट। दिल दहलाने वाला हिचकोला। धमाके के साथ विमान पृथ्वी से जा टकराया।

बाहर कोलाहल था।

—मारे गये।

—नही-नही बच गये।

—बस जमीन ही टूटी है।

—ओह! कितनी बडी खाई बन गयी है।

